सितंबर १९४३ : प्रथम संस्करण
मूल्य-सजिल्द साढ़े छः रुपये

हिन्दी के प्राचीन और नवीन

कथा एवं काव्य-साहित्य को

सादर—

प्रकाश—

महाकाव्य के विषय में जो भी चिन्ता हुई है वह सब सत्तरहवीं, अट्टारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दि में ही हुई है। सोलहवीं शताब्दि में 'एपिक' शब्द के उतने गम्भीर अर्थ न लगाये गये थे जितने कि बाद में! नये समालोचकों ने (विशेषतया इटली के) ग्रीक की पढ़ाई के आरम्भ के बाद 'एपिक' शब्द का एक नये ही अर्थ में प्रयोग करना शुरू किया! 'एपिक' के माने अब श्रेष्ठ-काव्य के होने लगे और पुराने लैटिन-समालोचकों की उक्तियाँ अब उतनी प्रामाणिक न रह गईं जितनी कि 'ऐरिस्टॉटिल' या अन्य यूनानी समालोचकों की! यही कारण है कि उन्हीं दिनों से 'एपिक' और 'रोमांस' इन दो शब्दों का एक अन्तर होता आ रहा है। इस छोटी-सी पुस्तक में श्री गोपीकृष्ण जी 'गोपेश' ने जो संकलन किया है उसी से हमें इसका स्पष्ट परिचय मिल जायेगा। गोपीकृष्ण जी ने केवल पाश्चात्य-महाकाव्यों का ही संकलन नहीं किया है, प्रत्युत उन्होंने प्राच्य—आदि-गाथाओं में से प्रसिद्ध ईरानी-कवि 'फ़िरदौसी' का 'शाहनामा' भी अपने ग्रंथ में रक्खा है।

इतने गम्भीर विषय पर दो-चार शब्दों में विचार भी क्या किया जा सकता है! किंतु, इतना अवश्य है कि इतने दिनों की खोज के बाद भी यूनानी-महाकाव्य के लेखक 'होमर' के विषय में बहुत-सी बातें सुस्पष्ट नहीं मालूम पड़तीं। सबको आश्चर्य यह हुआ है कि कैसे प्रभु ईसा के दस शताब्दि पूर्व किसी देश में, किसी एक कवि को कला के इतने विशुद्ध-रूप का ज्ञान हो गया और कैसे उसकी कला ने इतनी पूर्णता प्राप्त कर ली! यह भी मानना पड़ेगा कि होमर के दो महाकाव्य एक-दूसरे से बिल्कुल पृथक हैं, क्योंकि पाश्चात्य-पंडितों ने यह बात स्वीकार की है कि 'इलियड' में कवि ने एक रूप स्पष्ट कर दिखाया है और 'ऑडिसी' में बिल्कुल ही दूसरा, यहाँ तक कि कई-एक पंडितों ने तो यह भी कहा है कि 'ऑडिसी' पहिली रोमैंटिक-कविता है और काव्य के दोनों महान श्रोत एक ही हृदय से निसृत हुये हैं। परन्तु साधारण पाठकों को यह, सम्भवतः, उतना सहज-स्वीकार्य न होगा क्योंकि वे कहेंगे कि एक का विषय-केन्द्र है यूनानी और ट्रोजन के रूप में दो सभ्यताओं का संघर्ष और दूसरे का प्राणाधार है अनोखी बातों का एक अनोखा संसार, जैसे 'पॉलिफ़ेमस' की गुफ़ा का वर्णन आदि। फिर भी, सच तो यह है कि जीवन के ताने-बाने दोनों में ही एक-से मालूम पड़ते हैं, पात्र भी बहुत-कुछ एक ही हैं और चरित्र-नायक 'यूलिसीज़' या 'ऑडिसियस' तो दोनों में ही आये हैं। शायद यह कहना अनुचित न होगा कि 'एपिक' का विशेष विषय वीरता, ऐतिहासिक दृष्टिकोण, सभ्यता का सम्पूर्ण चित्र, आदर्श नर-नारी के चरित्र होने पर भी साधारण जीवन-से अधिक घनिष्ट-रूप से सम्बद्ध रहता है, किन्तु 'रोमांस' जीवन के कुछ अंशों को छूने के बाद भी अपने को साधारण जीवन से अलग ही रखता है।

हाँ, 'रोमांस' की उत्पत्ति का कोई भी समय निश्चित-रूप से नहीं बतलाया जा सकता क्योंकि यह तो कोई एक सुस्पष्ट मनोवृत्ति है ही नहीं, परन्तु 'रोमांस' के जो दो अंग विशेष महत्वपूर्ण माने गये हैं वे हैं, 'रहस्य' और 'प्रेम'। इसीलिये तेरहवीं या चौदहवीं शताब्दि के बाद के कवि-पिता-'चासर' जैसे कवियों को एक विशेष कला-सम्बन्धी कठिनाई का सामना करना पड़ा। वे लैटिन के 'वरजिल' के महाकाव्य को अच्छी तरह जानते थे और अब उनके देश और अन्य प्रदेशों में रोमैंटिक महाकाव्यों की सृष्टि होने के कारण एक प्रश्न उनके मन में यह उठा कि वे किसको आदर्श मानें। इसी कारण 'कवि-पिता' ने 'ट्रायलस ऐंड क्रेसिडा' भी लिखी है जिसमें उन्होंने पुरानी यूनानी और लैटिन कथा सामग्रियों का उपयोग करते हुये एक रोमैंटिक-रस की सृष्टि की है! इस पर भी 'कैन्टरबरी टेल्स' उनकी श्रेष्ठ कृति मानी गई है! इसमें हर प्रकार के गल्प एक ही स्थान पर संचित किये गये हैं।

उपरोक्त कथनानुसार 'एपिक' का शुद्ध-रूप इटैलियन-समालोचकों द्वारा सोलहवीं शताब्दि में निर्धारित किया गया। इसमें अवश्य ही उनकी अपनी बहुत-सी ग़लतियाँ थीं, क्योंकि यूनानी-साहित्य पर उनका पूर्ण अधिकार न था। इंग्लिश के 'सिडनी' या 'महाकवि-स्पेंसर' जैसे सर्व प्रथम आलोचकों ने इस इटैलियन-रूप को देखा तो, किंतु इसे स्वीकार न किया। अपने पूर्ववर्त्ती इटैलियन-कवि 'ऐरिऑस्टो' और 'टैसो' को 'स्पेंसर' ने अपनी आँखों के आगे रक्खा और इसीलिये उनकी 'फ़ेयरी क्वीन' 'रोमैंटिक एपिक' कहलाती है और उनके शिष्य 'मिल्टन' द्वारा रचित 'पैराडाइज़ लॉस्ट' पहिली बार 'ग्रीक-एपिक' का शुद्ध रूप हमारे सामने उपस्थित करती है! इसके बाद ही और भी सरल होने की चेष्टा करते हुये 'मिल्टन' ने 'पैराडाइज़ रिगेंड' की रचना की! किन्तु सच तो ये है कि 'स्पेंसर' की 'फ़ेयरी क्वीन' और 'मिल्टन' की 'पैराडाइज़-लॉस्ट' में ही 'इंग्लिश-एपिक' का पूर्ण और शुद्ध-रूप पाया जाता है।

'एपिक' के और भी कितने ही रूप हैं। उनमें से 'शाहनामा' पाठकों के सम्मुख है। इसमें यही चिन्त्य विषय है कि कवि ने एक ईरानी-सभ्यता के क्रम-विकास पर ध्यान देने का प्रयत्न कम किया है, उसने एक वीर-वंशावली प्रस्तुत करने और उसके गुण-कीर्त्तन करने की ही चेष्टा अधिक की है। इसका कारण स्पष्ट है। तत्कालीन राजाओं के दरबारों में कवियों का एक विशेष सम्प्रदाय था, जिनका कार्य था सम्राट की सुख्याति का गुणगान करना और इसी के अन्तर्गत उनके देश, आचार-विचार, धर्म और सभ्यता के सब से अधिक महत्वपूर्ण अंगों पर बीच-बीच में दृष्टिपात करना।

(कहा गया है कि 'एपिक-रचना' के लिये केवल सामग्री ही नहीं चाहिये बल्कि चाहिये समाज की एक विशिष्ट व्यवस्था और अवस्था और 'कवि' के मन में एक विशेष आन्तरिक आस्था। यही नहीं बल्कि उसकी भाषा में एक असाधारण ओजस्विता, तेजस्विता, शक्ति और गाम्भीर्य का होना भी आवश्यक है।) बहुत से अंग्रेज़ी समालोचकों का कहना है कि फ़्रांस के साहित्य में किसी श्रेष्ठ 'एपिक' के न रचे-जाने का साफ़ कारण यह है कि वहाँ के धर्म-सम्बन्धी विरोधों की तेज़ आँधी और उसके बाद की शिथिलता, दोनों ही, साहित्य को कुछ दूसरे ही क्षेत्रों

अनुवादक की ओर से--

बात है पिछली जुलाई की। एक दिन कुछ यों ही बातचीत चल रही थी कि आदरणीय प्रो० रघुपति सहाय 'फ़िराक़' ने मेरा ध्यान अनुवादों की ओर आकृष्ट किया और कहा कि उपन्यासों और कहानियों के अलावा कितनी ही ऐसी चीज़ें हैं जिनका अँग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद होना अच्छा क्या, बहुत अच्छा रहेगा। इस पर मैं उत्सुक हो उठा और मैंने एक हज़ार नहीं, ऐसे एक ग्रंथ का नाम जानना चाहा। उत्तर में वे उठे और अन्दर के कमरे से एक मोटा-सा 'वॉल्यूम' उठा लाये, 'The Book of Epic'! मैंने उसे इधर देखा, उधर देखा और यह कार्य कर डालने का पक्का इरादा कर लिया।

अब किताब घर आ गई और दूसरे दिन से काम शुरू हो गया। किन्तु दो दिन अनुवाद करने के बाद ही मैंने अनुभव किया कि यह काम उतना आसान नहीं है। जितना कि लोग समझते हैं, और यह कि इस क्षेत्र के अन्तरिक्ष की सीमा-रेखा छू-आने के लिये कितना ख़ून पानी कर देना पड़ता है यह केवल वही समझ सकता है जिसने एक बार अनुवाद करने के लिये कोई पुस्तक खोलकर अपने सामने रक्खी हो और सोचा हो कि व्यर्थ में बेईमानी भी क्यों की जाये आख़िर!

ख़ैर, तो कठिनाइयाँ कई तरह की सामने आईं, जिनमें कहावतों, मुहाविरों, मिश्रित-वाक्यों और अभिव्यंजनाओं की मुश्किलें काफ़ी अहेम रहीं। बात यह कि हर भाषा का और इस नाते हर भाषा के साहित्य का अपना एक व्यक्तित्व होता है यानी यह कि हर भाषा की अपनी कहावतें होती हैं, अपने मुहाविरे होते हैं, अपनी अभिव्यंजनायें और अपनी शैलियाँ होती हैं, जिनको ज्यों का त्यों दूसरी भाषा में ढाल देना बहुत आसान नहीं है। फिर, यह कठिनाइयाँ कई गुनी हो जाती हैं जब प्रश्न अँग्रेज़ी साहित्य का आता है, क्योंकि इससे कौन इन्कार करेगा कि अँग्रेज़ी साहित्य विशेषतया समृद्ध एवं भरा-पुरा कहा ही नहीं जाता, बल्कि है भी!

हाँ, तो काम तो करना ही था, अतएव मुश्किलें आसान की गईं—कहावतों, मुहाविरों और अभिव्यंजनाओं की समस्या हल की गई। फल यह हुआ कि कहीं-कहीं कई वाक्यों को एक वाक्य में गूंथ देना पड़ा और कहीं कहीं एक ही वाक्य के लिये कई वाक्यों की रचना करनी पड़ी, किंतु ऐसा करते समय सीमाओं का ध्यान प्रतिक्षण रहा-आया और इस बात की ओर विशेष ध्यान दिया गया कि 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' न रखना हो तो भी क्या हुआ, कहीं ऐसा न हो कि या तो अनुवाद छायानुवाद हो जाये अथवा यह कि पाठक खीझ उठे और परेशान हो जाये—बात साफ़ है कि कथा-वस्तु एक विशिष्ट प्रकार की थी और हर क़दम आँख खोलकर ही आगे बढ़ाना था।

परन्तु बात यहीं ख़तम नहीं हुई ! आगे विदेशी नामों के उच्चारण का रोग सामने आया किन्तु श्रद्धेय डॉक्टर पी० ई० दस्तूर यम० ए०, डी० लिट० ने सहायता दी और समस्या हल हो गई। इतना ही नहीं, प्रत्युत इस बात को विशेष महत्व दिया गया कि इटली महाकाव्य में इटली नामों के इटैलियन उच्चारण ही दिये जाते हैं और ऐसा ही सर्वत्र किया जाता है ! यहाँ यह बात देना आवश्यक है कि इन विदेशी नामों के वे उच्चारण भी दिये जा सकते थे जो साधारणतया अंग्रेज़ी में प्रचलित हैं और जैसा कि सामान्य-रूप से किया जाता है, मगर 'डॉक्टर साहब' को इनका मूलरूप दिया जाना ही अधिक रुचा !

तीसरी बार पौराणिक प्रसंगों की दिक़्क़त सामने आई और वह भी किसी प्रकार हल की गई !

× ×

इस भाँति किसी प्रकार कार्य समाप्त हुआ। किन्तु, क्षोभ है कि स्थानाभाव के कारण यहाँ केवल ८ महाकाव्य ही लिये जा सके और इस प्रकार सबसे अधिक प्रचलित और लोकप्रिय कथाओं को ही इस ग्रंथ में स्थान दिया जा सका। आगे फिर कभी औरों की बात भी सोची जायेगी। इस बार जो कुछ है, जैसा कुछ है, आपके सम्मुख है !

अब कृतज्ञता- प्रकाशन का कार्य शेष है; श्रद्धेय प्रो० 'फ़िराक' ने मुझे इस ओर प्रवृत्त किया, आदरणीय डॉ० दस्तूर ने नामों के कार्य में मेरी अमूल्य सहायता की; माननीय प्रोफ़ेसर-यम० डी० देव ने बहुत व्यस्त रहने के बाद भी ग्रंथ के लिये 'प्रकाश' लिखने का समय निकाला; साहित्य-भवन-लिमिटेड के प्राण श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने इसका इतना सुन्दर प्रकाशन कर इसमें चार चाँद लगाने की कोशिश की, और, इनके अतिरिक्त, मेरे-अपने कई गुरुजनों और मित्रों ने इसमें सक्रिय-रूप से उत्साह दिखलाया। मैं इन सब का हृदय से आभारी हूँ, यद्यपि इस प्रकार के शिष्टाचार और दिखावे में मेरी आस्था नहीं के बराबर है और, गोकि उनमें से कई का उल्लेख कर और उनके प्रति कृतज्ञता-प्रकट कर मैंने अपनी चर्चा की और अपना एहसान गाया है, फिर भी !

अधिक क्या कहूँ !

अनुवादक—

परन्तु बात यहीं ख़तम नहीं हुई ! आगे विदेशी नामों के
किंतु श्रद्धेय डॉक्टर पी० ई० दस्तूर यम० ए०, डी० लिट० ने सहाय
गई। इतना ही नहीं, प्रत्युत इस बात को विशेष महत्व दिया गया।
नामों के इटैलियन उच्चारण ही दिये जाते हैं और ऐसा ही सर्वत्र कि
देना आवश्यक है कि इन विदेशी नामों के वे उच्चारण भी दिये ज
अंग्रेज़ी में प्रचलित हैं और जैसा कि सामान्य-रूप से किया जाता है
इनका मूलरूप दिया जाना ही अधिक रुचा !

तीसरी बार पौराणिक प्रसंगों की दिक़्क़त सामने आई
की गई !

×

इस भाँति किसी प्रकार कार्य समाप्त हुआ। किन्तु, क्षोभ
यहाँ केवल ८ महाकाव्य ही लिये जा सके और इस प्रकार सबसे श्र
कथाओं को ही इस ग्रंथ में स्थान दिया जा सका। आगे फिर
जावेगी। इस बार जो कुछ है, जैसा कुछ है, आपके सम्मुख है !

अब कृतज्ञता- प्रकाशन का कार्य शेष है; श्रद्धेय प्रो०
किया, आदरणीय डॉ० दस्तूर ने नामों के कार्य में मेरी अमूल्य स
यस० डी० देव ने बहुत व्यस्त रहने के बाद भी ग्रंथ के लिये 'प्रका
साहित्य-भवन-लिमिटेड के प्राण श्री पुरुषोत्तमदास टंडन ने इसक
इसमें चार चांद लगाने की कोशिश की, और, इनके अतिरिक्त,
मित्रों ने इसमें सक्रिय-रूप से उत्साह दिखलाया। मैं इन सब का ह
प्रकार के शिष्टाचार और दिखावे में मेरी आस्था नहीं के बराब
का उल्लेख कर और उनके प्रति कृतज्ञता-प्रकट कर मैंने अपनी
माना है, फिर भी !

अधिक क्या कहूँ !



यूनानी महाकाव्य–

संसार के महानतम महाकाव्य 'इलियड' और 'आडिसी' का लेखक 'होमर' या 'मेलिसिजिनीज़' बतलाया जाता है। १०५० और ८५० ई० के बीच का कोई समय इसका जीवन काल कहा जाता है। ईसा के पूर्व की दूसरी शताब्दि से अब तक यह प्रश्न रहा है कि 'होमर' इन महाकाव्यों का रचयिता है अथवा पुराने कवि-चारण-गायकों की भाँति उस समय की इन प्रमुख गाथाओं का गायक-मात्र! इस समस्या को लेकर काफी वाद-विवाद भी चलता रहा है।

सम्भवतः 'इलियड' की मूल घटनायें ११०० ई० पू० के आस-पास घटीं, और ज्ञात होता है कि 'वीर गाथा युग' अथवा यूनानी साहित्य के दूसरे युग में यानी ६०० ई० पू० के अंतिम वर्षों में 'पिसिस्ट्रैटस' ने 'होमर' की कविताओं को क्रमबद्ध कर उन्हें एक रूप देने का निश्चय किया।

यह बिल्कुल सत्य और स्पष्ट है कि 'इलियड' का कथानक अपने पूर्व की गाथाओं से अनुप्राणित है अथवा, कम से कम, उनका आधार लेकर तो चला ही है, क्योंकि इस तरह के पहले प्रयास में इतनी पूर्णता और सौष्ठव असम्भव है। इसके अलावा हम इससे पूर्व के कई छोटे-बड़े वीर गाथाओं के अस्तित्व से अवगत भी हैं जो या तो लुप्त हो चुके हैं या अस्त-व्यस्त-रूप में मिलते हैं।

इन उपलब्ध गाथाओं में अधिकांश किसी न किसी प्रकार ट्राय के युद्ध से सम्बंधित हैं, अतः हम इन्हें 'ट्राजन-चक्र' भी कहते हैं। 'साइप्रस' के 'स्टैसियस' अथवा 'मिलेटस' के 'आर्सटिनस' की 'साइप्रिया' के ११ भाग इनमें प्रमुख हैं। 'जूपिटर' के 'थीटिस' से निराशाजनक प्रणय का, 'पिलियस से उसके विवाह का, सोने के सेव की रोमाचकारी कथा का, 'पेरिस' के निर्णय का, 'हैलेन' के भागने का, यूनानी सेनाओं के संगठन का और ट्राजन युद्ध के प्रथम नौ वर्षों की घटनाओं का इनमें विशेष वर्णन है। 'इलियड' में इनका अनुकरण किया गया है। कथानक 'एकीलीज़' के उत्तेजित होने की स्थिति से आरम्भ होता है और 'हेक्टर' की अन्त्येष्टि-क्रिया पर समाप्त होता है।

हम इससे ट्राजन-युद्ध की कथा के उस परिणाम पर नहीं पहुँचते जिसका आरम्भ 'आर्कटिनस' ने 'इथियोपिया' के पांच भागों में किया है। ट्राजनों की सहायता के लिये 'अमेज़न्स' की महारानी 'पैंथिसीलिया' के आगमन की चर्चा करने के बाद कवि ऐकीलीज़-द्वारा उसके मारे जाने का विवरण देता है और तब बदले में 'अपोलो' और 'पेरिस' के द्वारा 'एकीलीज़' के वध का वर्णन करता है। 'एकीलीज़' के कवच को लेने की इच्छा के कारण 'ऐजैक्स' और 'यूलिसीज़' के बीच छिड़े उत्तेजक विवाद पर इसकी समाप्ति होती है।

बड़े प्रसन्न होते हैं। एक क्षण बाद दोनों भाई लड़ाई के मैदान में पहुंचते और लड़ाई में जुटते हैं कि यूनानियों के पैर उखड़ने लगते हैं। इसी बीच में अपोलो और मिनर्वा विरोधी ट्राजनों के साथ होकर उनके द्वारा यह प्रस्ताव करवाने का निश्चय करते हैं कि अब एक-एक वीर अकेले-अकेले अपने प्रतिद्वंद्वी से लड़ें। वे ट्राजनों को इस प्रकार का प्रस्ताव करने के लिये प्रेरित करते हैं और इसके बाद स्वयं, इस संघर्ष का निरीक्षण करने के लिये, गिद्धों के रूप में एक ऊँचे पेड़ पर छिप-बैठते हैं।

हेक्टर कुछ समय के लिये युद्ध स्थगित कर यूनानियों को ललकारता है कि उनमें से जिसमें भी साहस हो आगे आये और उससे व्यक्तिगत रूप से लड़े, किन्तु शर्त यह है कि विजित का शस्त्र हो विजेता का पुरस्कार हो और वीर-गति प्राप्त करने के बाद पराजित वीर की अन्त्येष्टि क्रिया सम्मानपूर्वक की जाय। यूनानी 'हेक्टर' की चुनौती सुनते और चिंतित हो उठते हैं! वे जानते हैं कि एकीलीज़ के अतिरिक्त उनमें और कोई दूसरा ऐसा नहीं है जो हेक्टर से लोहा ले सके। इस प्रकार वे संकल्प-विकल्प में पड़े हुये हैं कि नौ वीर आगे आते हैं और इनमें ऐजैक्स हेक्टर का सामना करने के लिये चुन लिया जाता है। इस भाँति ऐजैक्स को एक अपने को विशेषतया शौर्यवान प्रमाणित करने का एक अवसर मिलता है, अतएव वह आनन्द से फूला नहीं समाता और डींगें मारता हुआ, बड़े आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ता है। किन्तु हेक्टर पर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता और वह द्वंद-युद्ध आरम्भ कर देता है। कहना न होगा कि वह द्वंद-युद्ध किसी भी एक निश्चित परिणाम पर नहीं पहुँच पाता कि युद्ध-घोषक रात्रि होने की, द्वंद के प्रातःकाल तक स्थगित होने की और दोनों वीरों के बराबर उतरने की घोषणा करता है।

किन्तु ऐजैक्स अपने को विजयी समझता, अपनी विजय पर गर्व करता और एक भोज में भाग लेने के पहले इसके लिये जूपिटर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। यथासमय भोज आरम्भ होता है और यूनानी भोजन में तल्लीन हो जाते हैं। इस समय सुन्दर और उपयुक्त अवसर समझकर नेस्टर यूनानियों को सलाह देता है कि उन्हें चारों ओर मिट्टी की दीवारें उठाकर अपने ख़ेमों को सुरक्षित कर लेना चाहिये! इसी समय, दूसरी ओर, ट्राजनों में एक बहस छिड़ जाती है और एक समस्या सामने आती है कि क्या यह बुद्धिमानी न होगी कि वे सन्धि-भंग के लिये यूनानियों से क्षमा माँग लें और सारे मालख़ज़ानों के साथ हेलेन उन्हें सौंप दें!......वाद-विवाद कुछ देर तक चलता है कि पेरिस क्रोध से लाल हो-उठता है और प्रस्ताव अस्वीकार कर देता है। इस पर प्रायम सारे ट्राजनों से प्रस्ताव करता है कि लड़ाई एक निश्चित समय के लिये स्थगित कर दी जाय ताकि गत-वीरों की अन्त्येष्टि-क्रिया की जा सके।

प्रायम का यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत होता है। सवेरा होने को है कि ट्राजनों के युद्ध-घोषक एगेमेम्नान के तम्बू में जाते हैं। वे सारा प्रस्ताव ज्यों का त्यों उसके सामने रख देते हैं और कहते हैं कि ट्राजन हेलेन के अतिरिक्त कुछ भी हरजाने के रूप में भेंट कर सकते हैं।

ने कितने ही कवियों को कवि बनाया है; इस प्रकार की प्रेरणा के अभाव में वे शायद वैसा कुछ भी न लिख पाते ! लैटिन, यूनानी, फ्रांसीसी, जर्मन तथा अंग्रेज़ी आदि भाषाओं के कवियों ने सिकन्दर की ज़िन्दगी और उसकी मौत को आधार मानकर कितनी ही आख्यायिकायें रचीं हैं। इनमें से अधिकांश के मूल में ११० ई० पू० के 'कैलिस्थिनीज़' की वह कविता है जिसमें यह प्रमाणित करने का प्रयत्न किया गया है कि सिकन्दर मिश्र के देवता 'जूपिटर एमा' के प्रतिनिधि के रूप में अवतरित हुआ था या, कम-से-कम, उसके पुरोहित 'नेक्टेनिबस' से तो सम्बद्ध वह अवश्य ही था !

इस प्रकार ट्राय की कथा का अनेक कथानकों और कथोपकथनों में तो प्रयोग हुआ ही है, लैटिन में भी इसकी आवृत्तियाँ होती रही हैं। योरप के मध्य-युग में यह बड़ी प्रिय रही है। विशेषतया फ्रांस इस पर सदैव ही मुग्ध रहा है, जहाँ 'बेनुआ दि सेमुआ' के 'रोमा दि त्रुआ' और उसके 'रोमा द्रि एलेग्ज़ेंडर' ने तत्कालीन 'लार्ड्स' और 'लेडीज़' का आवश्यकता से अधिक अनुरंजन किया है।

ट्राय की कथा अथवा सिकन्दर की जीवन के साहसिक घटनाओं पर आधारित कृतियों के अतिरिक्त १०२२ पंक्तियों की यूनानी-भाषा की 'हेसियड' की 'थिआगनी में हमें यूनानी-धर्म कथा संक्षिप्त परिचय मिलता है ! इसमें यूनानी-देवताओं के उद्भव और उनके व्यापारों की कथायें हैं,—उसमें संसार की सृष्टि से सम्बन्धित यूनानियों के विश्वास और उनके अपने सिद्धांत भी हैं।

बाद के यूनानी-ग्रंथों में 'शील्ड आफ हेराक्लीज़' और 'योआई' अथवा 'कैटेलाग-आफ दि बियोशियन हीरोइन्स' प्रमुख हैं। इन बियोशियन वीरांगनाओं से ही उपदेवताओं और योद्धाओं का जन्म हुआ माना गया है।

१९४ ई० पू० में 'सिकन्दरिया में एपोलोनियस रोडियस' ने 'आरगोनाटिका' की रचना की। इसमें उसने सोने के लिये प्रसिद्ध चेत्रों की खोज में निकले आरगोनाटकों के नेता 'जेसन' के साहसपूर्ण कृत्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उसमें काव्य के मनहर रङ्ग भरने के अथक प्रयत्न किये, किन्तु जनता पर इस कविता का कुछ भी प्रभाव न पड़ा। कवि ने निराश होकर 'रोड्स' की राह ली। यहाँ उसने इसे दूसरी बार लिखकर पर्याप्त यश लाभ किया।

'बेट्राकोमियोमॉकिया' या 'मेढकों और चुहियों में युद्ध' यूनानी भाषा की हास्य-रस-प्रधान, प्रमुख लम्बी कविता है। कहा जाता है कि इसकी भी रचना होमर ने की थी, किन्तु खेद है कि इसकी कुछ पंक्तियां ही मिलती हैं, जिनसे पूरे काव्य का बहुत थोड़ा परिचय मिलता है।

हो उठता है और इस प्रकार देवताओं से कृपा और सहायता की प्रार्थना करता है कि इसी क्षण एक गरुड़ ऊपर उड़ता नज़र आता है! वह यूनानियों की बलि-वेदी पर एक मेमना डाल देता है। इस भाँति इस शकुन से यूनानियों में नये साहस और नवीन वीरता का संचार होता है। ग्रीस का धनुर्धारी ट्यूसर अपने तीर के अचूक निशानों से ट्राजनों की सेना में खलबली मचा देता है! इस नई स्थिति से हेक्टर चिन्तित हो-उठता है और कोई चारा न देखकर उसे एक चट्टान फेंककर मारता है। वह उसके नीचे दब जाता है और फिर किसी तरह जान बचाकर शीघ्रता से यूनानी ख़ेमों में भाग आता है।

जूनो और मिनर्वा अपने शरणागतों की सहायता करने के लिये अधीर हो उठती है और उन्हें जुपिटर की इस आज्ञा का ध्यान नहीं देता कि उन्हें किसी भी पक्ष की सहायता नहीं करनी है। अतएव वे उनके भाग्य के लिये जाने को तैयार होती ही हैं कि जुपिटर उन्हें रोक देता है और विश्वास दिलाता है कि जब तक एकीलीज़ का मित्र पेट्रोक्लस वीर गति को प्राप्त नहीं होता और जब तक उसकी मौत का बदला लेने के लिये एकीलीज़ उत्तेजित होकर आगे नहीं आता तबतक यूनानी बराबर हारते रहेंगे।

आख़िर सूरज डूब जाता है, दिन समाप्त हो जाता है और दिन के साथ उस दिन का युद्ध भी! अब यूनानी अपने ख़ेमों में विश्राम करते हैं, किन्तु, ट्राजन, इस डर से कि कहीं यूनानी रातोंरात भाग न निकलें, खाई के समीप के खुले मैदान में ही सारे दिन की थकान मिटाते हैं।

पर्व नौ—

इस समय यूनानी अपने भविष्य के लिए इतने चिन्तित हैं कि एगेमेम्नान अपने तम्बू में सारे सभासदों को एकत्रित करता है और परामर्श करता है। इस सभा में उसका गला रुंध जाता है, उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं और वह बहुत दुखी होकर प्रस्ताव करता है कि यदि वे अपने प्राण बचाना चाहते हैं तो उन्हें आँख बचाकर निकल भागना चाहिये, क्योंकि बचाव की कोई और सूरत नज़र नहीं आती! परन्तु इस कायरता के विचार-मात्र से डायोमिडीज़ क्रोध के मारे काँपने लगता है और इस कटुता से इस प्रस्ताव का विरोध करता है कि यूनानी अंतिम रात तक लड़ाई के मैदान में डटे रहने का संकल्प करते हैं। इसके बाद ही नेस्टर के सुझाव पर एगेमेम्नान एकीलीज़ के अपमान का प्रायश्चित करने, उससे क्षमा माँगने और उसे कितने ही बहुमूल्य उपहार भेंट करने का निश्चय करता है। वह सन्देशवाहक बुलवाता और एकीलीज़ के पास सन्देश भेजता है कि यदि वह पिछली बातों को भूल कर केवल यूनानियों की सहायता करेगा तो वह उस बन्दिनी को तो उसे दे ही देगा, अपनी एक पुत्री का विवाह भी उससे कर देगा! ....दूतों के साथ यूलिसीज़ तथा अन्य योद्धा भी हैं।

चाँदनी रात है! चाँदी की चादर सारे ख़ेमों पर समान-रूप से फैली हुई है कि वे सब तम्बुओं के बीच से गुज़रते हैं और उनकी निगाह एकीलीज़ पर पड़ती है। वह अपने मित्र पेट्रोक्लस

'इलियड'-परिचय–

देवताओं के राजा और समुद्र की एक देवी थीटिस में प्रेम संयोग स्थापित होने के कुछ ही समय बाद जूपिटर को किसी ने बतलाया कि थीटिस से उत्पन्न पुत्र उससे कहीं अधिक महान होगा। जूपिटर ने इस भविष्य वाणी से बहुत क्षुब्ध होकर थीटिस का साथ छोड़ दिया किन्तु थीटिस को सान्त्वनां देने के विचार से उसने यह निश्चय किया कि उसका विवाह थिसैली के सम्राट पिलियस से करा दिया जाय और उस विवाह-समारोह में सारे देवता भाग लें।

जूपिटर ने अपने निश्चय को कार्य रूप में परिणित किया और विवाहोत्सव चलने लगा। सहसा ही वैमनस्य की देवी ने भोज के समय एक सोने का सेव सबके सामने पेश किया। इस सेव पर लिखा था—'सुन्दरतम के लिये या सर्व-सुन्दर को'। अब प्रश्न उठा कि यह किसे दिया जाय। यह प्रश्न उठते ही इस सेव पर देवताओं की रानी जूनो, बुद्धिमता की देवी मिनर्वा और सौन्दर्य की देवी वीनस, तीनों ने अपना-अपना अधिकार बतलाया और इसे लेकर लड़ना-झगड़ना आरम्भ कर दिया!

देवताओं ने इस झगड़े में बीच-बचाव करने से आनाकानी की! फलतः झगड़ा बढ़ता ही गया। अन्त में ट्राय के राजा का बेटा पेरिस इस कार्य के लिये चुना गया कि वह बताये कि उन तीनों में कौन सर्व सुन्दरी होने के कारण उस सेव की सच्ची अधिकारिणी है!

पेरिस एक विचित्र प्राणी था। उसके जन्म के पूर्व भविष्य-वाणी हुई कि उसके कारण ही ट्रॉय का पतन होगा, अतएव यह निश्चय किया गया कि पैदा होते ही उसे पहाड़ पर ले-जाकर मार डाला जाय, और जन्म होने के बाद इसी अभिप्राय से लोग उसे पहाड़ पर ले भी गये, पर इसी समय कुछ गरड़िये उधर आ-निकले और उन्होंने उसके प्राण बचा लिये।

यह प्रसंग छिड़ा था कि इसी समय पेरिस को जूनों ने संसारिक शक्ति, मिनर्वा ने अनन्त ज्ञान, और वीनस ने अपूर्व सुन्दरी पत्नी भेंट करने का वचन दिया। पेरिस को वीनस की भेंट पसन्द आई और उसने 'सौन्दर्य का पुरस्कार' वीनस को दे दिया! अब प्रश्न आया कि वीनस अपने वचन की पूर्ति करे, अतएव उसने पेरिस से आग्रह किया कि वह पहले ट्राय जाकर उसकी प्रतीक्षा कर रहे अपने परिवार वालों से मिले और फिर यूनान जाये और जूपिटर और लीडा की पुत्री और स्पार्टा के राजा मेनेलाउस की पत्नी हेलेन को उड़ा लाये! उसने हेलेन के अपूर्व सौन्दर्य की चर्चा करते हुए पेरिस को बतलाया कि उसे देखते ही मनुष्य सिहर-उठता है, इसीलिये उसके असंख्यक प्रेमी हैं, किन्तु उसके सौतेले पिता ने इन सभी प्रेमियों से वचन ले लिया

तलवार के घाट उतार देते हैं। शीघ्र ही वे इन घोड़ों पर अधिकार कर लेते हैं और इनके साथ सुरक्षित रूप से भाग भी निकलते हैं। वे जानते हैं कि मिनर्वा की कृपा और सहायता के कारण ही यह सब कुछ सम्भव हो सका है, अतएव वे उसके प्रति आदर प्रकट करते और उसका आभार स्वीकार करते हैं!

वे अपने ख़ेमों में पहुँचते हैं। यहाँ नेस्टर उनकी प्रतीक्षा करता रहा है। वह देखता है कि उसके साथी संकट और उदासी से छुटकारा ही नहीं पा गये हैं, प्रत्युत उन्होंने 'रेसस' के घोड़ों जैसी निधि भी प्राप्त कर ली है, अतः वह प्रसन्नता से फूला नहीं समाता और उनसे विश्राम करने का आग्रह करता है। नेस्टर जानता है कि उन्होंने जी-तोड़ परिश्रम किया है और उन्हें आराम करना चाहिये। वह नहीं चाहता कि वे इस श्रम के कारण दूसरे दिन लड़ न सकें और उनका सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाये!

पर्व ग्यारह

सवेरा होता है और जूपिटर वैमनस्य की देवी को यूनानियों को जगा-देने का आदेश देता है। देवी आदेश का पालन करती है। फलस्वरूप यूनानी उठ-बैठते हैं और जैसे ही तैयार होकर लड़ाई के मैदान में आते हैं आकाश में एक वज्र लहराने लगता है। उन्हें इसका अर्थ समझते ज़रा भी देर नहीं लगती कि जूपिटर की आज्ञा है और उन्हें तुरन्त ही युद्ध आरम्भ कर देना चाहिये! .....

युद्ध आरम्भ होता है और हेक्टर की वीरता और उसके शौर्य एवं उत्साह से प्रेरणा लेकर ट्रॉजन भूखे भेड़ियों की तरह अपने शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं। किन्तु इस सारे उत्साह और सारी हिम्मत के रहते हुए भी यूनानी उन्हें 'स्कियान-द्वार' तक खदेड़ देते हैं। अब ट्राजन हतोत्साहित होने लगते हैं! उन्हें इस स्थिति में देख कर जूपिटर हेक्टर को सचेत करता है कि यदि एक बार एगेमेम्नान घायल हो गया तो लड़ाई का रुख़ पलट जायेगा और यूनानियों की हार आरम्भ हो जायेगी, अतएव उसे किसी प्रकार एगेमेम्नान पर चोट करनी चाहिये। हेक्टर आश्वस्त होता है। थोड़ी ही देर में एक भाला एगेमेम्नान को लगता है और वह आहत होकर अपने तम्बू की ओर चल देता है हेक्टर इस घटना से लाभ उठाता है। वह अपने वीरों में नये सिर से जोश भरता है और वे इतने उग्र हो उठते हैं कि बदले में यूनानियों को बहुत दूर तक खदेड़ देते है। इसी क्रम में डायोमिडीज़ और यूलिसीज़ भी घायल हो जाते हैं। नेस्टर उन्हें अपने ख़ेमे में ले आता है।

इस समय एकीलीज़ एक दूर के जहाज़ के अगले हिस्से पर उदास बैटा है कि उसकी दृष्टिनेस्टर पर पड़ती है। वह उत्सुक हो उठता है और पेट्रॉक्लस से घायल वीरों के नाम मालूम करआने का आग्रह करता है! पेट्रॉक्लस तुरन्त ही उठ-खड़ा होता है! वह यूनानियों के बीच पहुँचता ही है कि वे उससे मृत साथियों की बहुत लम्बी-चौड़ी संख्या की चर्चा करते हैं और देश और देशवासियों के नाम पर यूनानियों-की सहायता के करने के लिये एकीलीज़ को विवश करने का अनुरोध

पर्व चार—

यहाँ कवि पाठकों को द्वंद्व-स्थल से ओलिम्पस पर्वत पर ले आता है। इस बीच वहाँ सारे देवता एकत्रित रहते हैं। वे द्वंद्व-युद्ध के समाप्त होते ही एक दूसरे पर ताने कसने लगते और कभी यूनानियों और कभी ट्राजनों को बुरा-भला कहने लगते हैं। शीघ्र ही जूपिटर मिनर्वा को आदेश देता है कि वह पृथ्वी पर जाये और कुछ ऐसा करे कि सन्धि भंग हो जाय!

मिनर्वा धरती पर आती है, एक योद्धा का रूप धारण करती है और एक ट्राजन धनुषधारी को मेनेलाउस पर तीर चलाने को उत्तेजित करती है। ट्राजन तुरन्त ही मेनेलाउस को लक्ष्य कर तीर चलाता है और मेनेलाउस घायल हो जाता है। उसके घायल होते ही एगेमेम्नान आवेश में आ जाता है और ट्राजनों से इस सन्धि-भंग का बदला लेने के लिए चंचल हो उठता है। इधर उस ट्राजन-वीर को भड़काने के बाद मिनर्वा यूनानियों के दल में आती है और उसकी प्रेरणा से यूनानी सेना लड़ाई के मैदान की ओर कूच करती है।

युद्ध होता है। रक्त की नदी बह चलती है। घायल योद्धा पृथ्वी पर गिरते हैं और उनके गिरने की ध्वनि से उनके नीचे की धरती काँप उठती है। रथ दौड़ते हैं तो ऐसा घोर रव होता है कि बादल गरजने लगते हैं, बिजली कड़कने लगती है। यद्यपि पहले ऐसा मालूम होता है कि मैदान यूनानियों के ही हाथ रहेगा तथापि थोड़ी देर बाद ही ट्राजन भी नये उत्साह और नई लगन से लड़ाई में जुट जाते हैं। बात यों होती है कि सूर्य का देवता अपोलो ट्राजनों को बतलाता है कि एकीलीज़, जिससे वे सबसे अधिक डरते हैं, इस समय यूनानियों के साथ नहीं है, अतएव वे बेधड़क होकर शत्रु से लोहा ले सकते हैं।

पर्व पांच—

युद्ध की भयंकरता को देख-समझ कर मिनर्वा युद्ध के देवता मार्स को समर-स्थल से दूर ले जाती है और उसे समझाती है कि मरणशील मनुष्यों को अपना झगड़ा अपने आपही बिना किसी की सहायता के तय करना चाहिए! मार्स उसकी बात मान लेता और लड़ाई से अपना हाथ खींच लेता है।

अब अनेक द्वंद्व-युद्ध होते हैं, अनेक जानें जाती हैं और कितनी ही आश्चर्यजनक घटनायें घटती हैं। इसी बीच में मिनर्वा कुछ ऐसी युक्ति करती है कि यूनानी-वीर डायोमिडीज़ का घाव तुरन्त ही पुर जाता है। वह फिर लड़ाई में जुट जाता है और तब तक लड़ता रहता है जब तक कि वीनस का बेटा इनीयस एक धनुषधारी को उसकी विनाशकारी गति रोकने का आदेश नहीं देता! किन्तु यह धनुषधारी अपना काम पूरा करने के पहिले ही मार डाला जाता है। इस समय सहसा ही ऐसा प्रतीत होता है कि डायोमिडीज़ स्वयं इनीयस की जान का गाहक हो जायेगा, अतएव वीनस इनीयस को युद्ध-स्थल से बहुत दूर खींच-ले जाती है! किन्तु, वह इनीयस की रक्षा में व्यस्त है कि डायोमिडीज़ वीनस का हाथ घायल कर देता है। फल यह

उन्मत्त हो-उठता है और शत्रुओं को खरी-खोटी सुनाने लगता है।

पाठकों को याद होगा कि इस बार रक्तपात की जड़ स्वयं पेरिस ही है।

पर्व चौदह—

फिर कुछ ट्राजन यूनानी खेमों में घुस आते हैं और उनमें एक अजब उदासी छा जाती है कि नेस्टर उस स्थान की ओर कदम बढ़ाता है जहाँ घायल एगेमेम्नान यूलिसीज़ और डायोमिडीज़ बैठे हुये हैं और उत्सुक और-व्यग्र-हृदय से लड़ाई का निरीक्षण कर रहे हैं। वह इस समय फिर अपना मत दोहराता है कि वे शीघ्र ही एक दूसरे से सदा के लिए बिछुड़ने वाले हैं। किन्तु यूलिसीज़ और डायोमिडीज़ इस विचार को उपेक्षा और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं और अपने घावों की ज़रा भी चिन्ता न कर शत्रु को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए तैयार हो जाते हैं!

इस प्रकार यूनानियों के दुबारा साहस संचित करने से देवताओं की रानी जूनो बड़ी प्रसन्न होती है, परन्तु दूसरे ही क्षण आशंकित हो उठती है कि कहीं ऐसा न हो कि जूपिटर फिर ट्राजनों की ओर से लड़ाई में हस्तक्षेप करे! वह इस समस्या पर विचार करती है और एक क्षण बाद निद्रा के देवता एवं अपने छल छद्मपूर्ण हावों-भावों की सहायता से जूपिटर को बेहोश करने के लिए चल पड़ती है। इधर वह जूपिटर को बेहोश करना चाहती है कि उसे किसी बात का ध्यान ही न रहे और उधर निद्रा के देवता के द्वारा यूनानियों से कहला देती है कि उन्हें देवताओं के राजा की इस ग़फ़लत और बेहोशी से लाभ उठाना चाहिये!

जूनो अपने प्रयत्न में सफल होती है और उसकी कृपा से यूनानी तब तक निश्चिंत होकर भयंकर युद्ध करते हैं जब तक कि ऐजेक्स एक शिला फेंककर नहीं मारता और हेक्टर उसके नीचे दब नहीं जाता! किन्तु, इसके पहले कि ऐजेक्स और उसके साथी इस शिकार को अपने जाल में फांसे, हेक्टर के साथी उसकी प्राण-रक्षा के लिये पहुँच जाते और उसे बचा लेते हैं! वे उसे तुरन्त ही एक नदी के किनारे ले जाते हैं और उसके शीतल जल की सहायता से उसे होश में ले आते हैं।

पर्व पन्द्रह—

इस प्रकार थोड़े समय के लिए इस नेता के सहयोग और उसकी सहायता से वंचित होते ही ट्राजन फिर उस स्थान पर लौट आने के लिए मजबूर हो जाते हैं जहाँ उन्होंने एक बार अपने रथ छोड़े हैं। इस समय वे बड़े परीशान हैं और सोच नहीं पाते कि क्या करें। अंत में वे निराश हो जाते हैं और लड़ाई का मैदान छोड़कर भाग-निकलने का इरादा करते हैं। किन्तु इतने ही में जूपिटर होश में आ जाता है और होश में आते ही एक पल में सारे षडयन्त्र की कल्पना कर लेता है। वह जूनो को जी भर फटकारता है, किन्तु वह सारा दोष 'नेप्च्यून के सिर मढ़ देती और उसे ही सारे जाल के लिये ज़िम्मेदार ठहराती है। जूपिटर और कोई चारा न

पर हमला करना ही चाहता है कि उसका पुत्र सरपेडन उसे द्वंद-युद्ध के लिए ललकारता है।

जूपिटर जानता है कि यह लड़ाई हेक्टर के पुत्र के लिए घातक सिद्ध होगी, अतः वह कुछ ऐसा करता है कि आसमान से पृथ्वी पर ख़ूनी ओस पड़ने लगती है। इसके बाद वह उसका शव लाने के लिए निद्रा और मृत्यु को पृथ्वी पर भेजता है और उन्हें आदेश देता है कि चूँकि वह पिता की भाँति ही उस वीर को अंतिम बार चूमना चाहता है, अतएव वे उसका शव पहले ओलिम्पस पर लायें और तब ले जाकर लीसिया* में दफनायें।......युद्ध चलता रहता है और जैसे ही सरपेडन का वध होता है, उसकी लाश के अधिकार को लेकर एक नया झगड़ा खड़ा हो जाता है। फल यह होता है कि उसका कवच यूनानियों को मिलता है और उसका शव अपोलो को। अपोलो उसे ले जाता, युद्ध के पंक को धोकर उसे विशुद्ध करता और 'निद्रा' और 'मृत्यु' को सौंप देता है।

इसी बीच में पेट्रॉक्लस नये सिरे से ट्राजनों का पीछा करता और ट्राय की प्राचीरों को ढहा देना चाहता है, किन्तु एपोलो उसे सचेत करता है कि ट्राय न उसके हाथ का शिकार होगा और न उसके मित्र के हाथ का। इसके बाद ही हेक्टर और पेट्रॉक्लस में द्वंद-युद्ध होता है। इस द्वंद के बीच में अपोलो अकस्मात् पेट्रॉक्लस का शिरस्त्राण खीच लेता और इस प्रकार विरोधी के घातक प्रहारों के लिए उसका सिर नंगा कर देता है। पेट्रॉक्लस बुरी तरह घायल हो जाता है और जान लेता है कि अब उसका बचना असम्भव है, अतएव वह घोषित करता है कि यदि देवता उसके साथ छल न करते तो वह निश्चित रूप से विजयी होता, किन्तु इसपर भी कुछ नहीं बिगड़ा है, क्योंकि उसके इस प्रकार प्राण त्यागने की बात सुनते ही एकीलीज़ उसकी मौत का बदला अवश्य लेगा। किन्तु हेक्टर उसके इन वाक्यों से पूरी तरह अप्रभावित और अछूता रहकर ऐसे असंदिग्ध वीर-शत्रु पर विजय प्राप्त करने के कारण आनन्द से फूला नहीं समाता। वह कामना करता है कि एकीलीज़ का रथ और उसके घोड़े उसे मिल जायें और इसके लिये बहुत हाथ-पैर भी मारता है, किन्तु वे उसके हाथ नहीं आते क्योंकि आटोमेडॉन नामक सारथी उन्हें लेकर भाग-निकलता है।

पर्व सत्तरह—

मेनेलाउस देखता है कि पेट्रॉक्लस परास्त होकर गिर पड़ा है, अतएव शत्रु से उसके शरीर और उसके कवच को प्राप्त करने के लिये वह आगे आता है। इसपर हेक्टर एकीलीज़ के रथ को हस्तगत करने के व्यर्थ प्रयास त्याग देता है और उसके शव पर अपना दावा जताने के लिये लौट पड़ता है। तुरन्त ही मेनेलाउस और ऐजैक्स उस पर हमला करते हैं और इस प्रकार पेट्रॉक्लस के शव को लेकर भी एक भयंकर युद्ध होता है।

सहसा ही एक बड़े ही हृदय-द्रावक दृश्य के कारण वातावरण उदास हो-उठता है। सब की निगाह एक साथ ही एकीलीज़ के घोड़ों पर पड़ती है और सब बड़े दुखी हो उठते है।

*यूनान का एक स्थान जहाँ सरपेडन दफ़नाया जाता है।

बड़े प्रसन्न होते हैं। एक क्षण बाद दोनों भाई लड़ाई के मैदान में पहुंचते और लड़ाई में जुटते ही हैं कि यूनानियों के पैर उखड़ने लगते हैं। इसी बीच में अपोलो और मिनर्वा विरोधी ट्राजनों के साथ होकर उनके द्वारा यह प्रस्ताव करवाने का निश्चय करते हैं कि अब एक-एक वीर अकेले-अकेले अपने प्रतिद्वंदी से लड़ें। वे ट्राजनों को इस प्रकार का प्रस्ताव करने के लिये प्रेरित करते हैं और इसके बाद स्वयं, इस संघर्ष का निरीक्षण करने के लिये, गिद्धों के रूप में एक ऊँचे पेड़ पर छिप-बैठते हैं।

हैक्टर कुछ समय के लिये युद्ध स्थगित कर यूनानियों को ललकारता है कि उनमें से जिसमें भी साहस हो आगे आये और उससे व्यक्तिगत रूप से लड़े, किन्तु शर्त यह है कि विजित का शस्त्र हो विजेता का पुरस्कार हो और वीर-गति प्राप्त करने के बाद पराजित वीर की अन्त्येष्टि क्रिया सम्मानपूर्वक की जाय। यूनानी 'हैक्टर' की चुनौती सुनते और चिंतित हो उठते हैं! वे जानते हैं कि एकीलीज़ के अतिरिक्त उनमें और कोई दूसरा ऐसा नहीं है जो हैक्टर से लोहा ले सके। इस प्रकार वे संकल्प-विकल्प में पड़े हुये हैं कि नौ वीर आगे आते हैं और इनमें ऐजैक्स हैक्टर का सामना करने के लिये चुन लिया जाता है। इस भांति ऐजैक्स को एक अपने को विशेषतया शौर्यवान प्रमाणित करने का एक अवसर मिलता है, अतएव वह आनन्द से फूला नहीं समाता और डींगें मारता हुआ, बड़े आत्म-विश्वास के साथ आगे बढ़ता है। किन्तु हैक्टर पर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता और वह द्वंद-युद्ध आरम्भ कर देता है। कहना न होगा कि यह द्वंद-युद्ध किसी भी एक निश्चित परिणाम पर नहीं पहुँच पाता कि युद्ध-घोषक रात्रि होने की, द्वंद के प्रातःकाल तक स्थगित होने की और दोनों वीरों के बराबर उतरने की घोषणा करता है।

किन्तु ऐजैक्स अपने को विजयी समझता, अपनी विजय पर गर्व करता और एक भोज में भाग लेने के पहले इसके लिये जूपिटर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। यथासमय भोज आरम्भ होता है और यूनानी भोजन में तल्लीन हो जाते हैं। इस समय सुन्दर और उपयुक्त अवसर समझकर नेस्टर यूनानियों को सलाह देता है कि उन्हें चारों ओर मिट्टी की दीवारें उठाकर अपने खेमों को सुरक्षित कर लेना चाहिये! इसी समय, दूसरी ओर, ट्राजनों में एक बहस छिड़ जाती है और एक समस्या सामने आती है कि क्या यह बुद्धिमानी न होगी कि वे सन्धि-भंग के लिये यूनानियों से क्षमा माँग ले और सारे मालख़ज़ानों के साथ हेलेन उन्हें सौंप दें!......वाद-विवाद कुछ देर तक चलता है कि पेरिस क्रोध से लाल हो-उठता है और प्रस्ताव अस्वीकार कर देता है। इस पर प्रायम सारे ट्राजनों से प्रस्ताव करता है कि लड़ाई एक निश्चित समय के लिये स्थगित कर दी जाय ताकि गत-वीरों की अन्त्येष्टि-क्रिया की जा सके।

प्रायम का यह प्रस्ताव सर्व-सम्मति से स्वीकृत होता है। सवेरा होने को है कि ट्राजनों के युद्ध-घोषक एगैमेम्नान के तम्बू में जाते हैं। वे सारा प्रस्ताव ज्यों का त्यों उसके सामने रख देते हैं और कहते हैं कि ट्राजन हेलेन के अतिरिक्त कुछ भी हरजाने के रूप में भेंट कर सकते हैं।

आयरिस अब भी निर्देशन का कार्य करता है। उसके नेतृत्व में ही प्रायम अपने पुत्र का शव ट्राय में वापस लाता है। यहाँ हेक्टर की माँ, उसकी पत्नी और दूसरी ट्राजन-स्त्रियाँ बड़ा ही हृदय-विदारक विलाप करती हैं!

शीघ्र ही एक चिता सजाई जाती है और हेक्टर की अन्त्येष्टि क्रिया के वर्णन के साथ इलियड का अन्त होता है!

हो उठता है और इस प्रकार देवताओं से कृपा और सहायता की प्रार्थना करता है कि इसी क्षण एक गरुड़ ऊपर उड़ता नज़र आता है! वह यूनानियों की बलि-वेदी पर एक मेमना डाल देता है। इस भांति इस शकुन से यूनानियों में नये साहस और नवीन वीरता का संचार होता है। शीघ्र ही धनुर्धारी ट्यूसर अपने तीर के अचूक निशानों से ट्राजनों की सेना में खलबली मचा देता है! इस नई स्थिति से हेक्टर चिन्तित हो-उठता है और कोई चारा न देखकर उसे एक चट्टान फेंककर मारता है। वह उसके नीचे दब जाता है और फिर किसी तरह जान बचाकर शीघ्रता से यूनानी ख़ेमों में भाग आता है।

जूनो और मिनर्वा अपने शरणागतों की सहायता करने के लिये अधीर हो उठती है और उन्हें जूपिटर की इस आज्ञा का ध्यान नहीं देता कि उन्हें किसी भी पक्ष की सहायता नहीं करनी है। अतएव वे उनके भाग्य के लिये जाने को तैयार होती ही हैं कि जूपिटर उन्हें रोक देता है और विश्वास दिलाता है कि जब तक एकीलीज़ का मित्र पेट्रोक्लस वीर गति को प्राप्त नहीं होता और जब तक उसकी मौत का बदला लेने के लिये एकीलीज़ उत्तेजित होकर आगे नहीं आता तबतक यूनानी बराबर हारते रहेंगे।

आख़िर सूरज डूब जाता है, दिन समाप्त हो जाता है और दिन के साथ उस दिन का युद्ध भी! अब यूनानी अपने ख़ेमों में विश्राम करते हैं, किन्तु, ट्राजन, इस डर से कि कहीं यूनानी रातोंरात भाग न निकलें, खाई के समीप के खुले मैदान में ही सारे दिन की थकान मिटाते हैं।

पर्व नौ—

इस समय यूनानी अपने भविष्य के लिए इतने चिन्तित हैं कि एगेमेम्नान अपने तम्बू में सारे सभासदों को एकत्रित करता है और परामर्श करता है। इस सभा में उसका गला रुंध जाता है, उसकी आंखों में आंसू आ जाते हैं और वह बहुत दुखी होकर प्रस्ताव करता है कि यदि वे अपने प्राण बचाना चाहते हैं तो उन्हें आंख बचाकर निकल भागना चाहिये, क्योंकि बचाव की कोई और सूरत नज़र नहीं आती। परन्तु इस कायरता के विचार-मात्र से डायोमिडीज़ क्रोध के मारे कांपने लगता है और इस कटुता से इस प्रस्ताव का विरोध करता है कि यूनानी अंतिम रात तक लड़ाई के मैदान में डटे रहने का संकल्प करते हैं। इसके बाद ही नेस्टर के सुझाव पर एगेमेम्नान एकीलीज़ के अपमान का प्रायश्चित करने, उससे क्षमा मांगने और उसे कितने ही बहुमूल्य उपहार भेंट करने का निश्चय करता है। वह सन्देशवाहक बुलवाता और एकीलीज़ के पास सन्देश भेजता है कि यदि वह पिछली बातों को भूल कर केवल यूनानियों की सहायता करेगा तो वह उस बन्दिनी को तो उसे दे ही देगा, अपनी एक पुत्री का विवाह भी उससे कर देगा! ······ ··दूतों के साथ यूलिसीज़ तथा अन्य योद्धा भी हैं।

चांदनी रात है! चांदी की चादर सारे ख़ेमों पर समान-रूप से फैली हुई है कि वे सब तम्बुओं के बीच से गुज़रते हैं और उनकी निगाह एकीलीज़ पर पड़ती है। वह अपने मित्र पेट्रोक्लस

और अन्दर आकर अपने पति की सुरक्षा के लिये देवताओं से प्रार्थना करे ! इसके बाद ही वह उन प्रेमियों को जाने का आदेश देता है और कहता है कि यदि वे इस पर भी अड़े रहेंगे तो वह देवताओं से उन्हें दंड देने की प्रार्थना करेगा। इन प्रेमियों को ये शब्द बड़े कटु लगते हैं यानी उनपर इनका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है और वे रात में तब तक ऊधम मचाते रहते हैं जब तक कि टेलेमैकस स्वयं विश्राम करने और अपनी कल्पित यात्रा के स्वप्न देखने के लिये अपने शयनागार में नहीं चला जाता !

पर्व दो—

प्रातः काल टेलेमैकस उठता और बाज़ार में जाता है। यहाँ लोक-सभा में वह इन प्रेमियों की शिकायत और उनकी भर्त्सना करता है और घोषित करता है कि वह शीघ्र ही अपने पिता की खोज में जानेवाला है। उसकी इस शिकायत, भर्त्सना और धमकी के उत्तर में प्रेमीगण इस सारी गड़बड़ी का दोष पिनेलोपी के सिर मढ़ देते हैं। वे कहते हैं कि उसने ही उन्हें अपने माया-जाल में फंसाने की कोशिश की और वायदा किया कि जैसे ही वह अपने ससुर के लिये कफ़न बिन चुकेगी, उनमें से किसी एक को अपना पति चुन लेगी। किन्तु, बजाय इसके कि यह कार्य जल्दी से जल्दी समाप्त कर देती वह उन्हें केवल मूर्ख ही बनाती रही है, हर दिन बुना हुआ रात को उधेड़ती रही है और इस प्रकार तीन वर्ष बीत गये हैं।

फिर भी वे टेलेमैकस को सलाह देते हैं कि वह अपनी माँ को अपने नाना के यहाँ भेज दे, पर वह क्रोध और घृणा से भरकर उनकी राय अस्वीकार कर देता है। वह देवताओं से प्रार्थना करता है कि उनके इस अनाचार के लिये वे उसे दंड दें। सभा समाप्त होती है ! उसी क्षण दो बाज़ आसमान में उड़ते दिखलाई देते हैं ! वे देखनेवालों में से किसी एक की आँखें निकाल लेते हैं और यह साबित हो जाता है कि देवताओं ने टेलेमैकस की प्रार्थना अनसुनी नहीं की ! इसी बीच में एक बूढ़ा आदमी शकुन देखकर यह बतलाता है कि यूलिसीज़ शीघ्र ही लौटने वाला है, अतएव जो लोग उसके क्रोध का शिकार नहीं बनना चाहते उन्हें अपने सदव्यवहार से अपनी स्वामि-भक्ति का परिचय देना चाहिये।

सभा विसर्जित होते ही टेलेमैकस समुद्र के किनारे जाता है। वहाँ मिनर्वा उसके शिक्षक मेंटर के रूप में उससे मिलती है। वह उसे आदेश देती है कि वह चुपचाप यात्रा की तैयारी कर ! अतएव वह महल में लौट आता है। यहां प्रेमीगण एक नये भोज की तैयारी कर रहे हैं। वह उनके आयोजन में किसी प्रकार की दिलचस्पी नहीं लेता बल्कि अपनी धाय यूरीक्लिया की खोज करता है और उसे जहाज़ का प्रबन्ध सौंपने के बाद निर्देश करता है कि उसके जाने के १२ दिन बाद तक उसकी माँ को उसके जाने की सूचना न मिले ! इधर टेलेमैकस के रूप में मिनर्वा सारा शहर छान डालती है और इस परिश्रम के कारण सूरज डूबने के समय तक एक जहाज़ तैयार हो जाता है। वह महल में लौट आती है और उन प्रेमियों की चेतन शक्ति को इस प्रकार गहरी नींद से जकड़ देती है कि कोई देख नहीं पाता और टेलेमैकस अपने शिक्षक

तलवार के घाट उतार देते हैं। शीघ्र ही वे इन घोड़ों पर अधिकार कर लेते हैं और इनके साथ सुरक्षित रूप से भाग भी निकलते हैं। वे जानते हैं कि मिनर्वा की कृपा और सहायता के कारण ही यह सब कुछ सम्भव हो सका है, अतएव वे उसके प्रति आदर प्रकट करते और उसका आभार स्वीकार करते हैं!

वे अपने ख़ेमों में पहुँचते हैं। यहाँ नेस्टर उनकी प्रतीक्षा करता रहा है। वह देखता है कि उसके साथी संकट और उदासी से छुटकारा ही नहीं पा गये हैं, प्रत्युत उन्होंने 'रेसस' के घोड़ों जैसी निधि भी प्राप्त कर ली है, अतः वह प्रसनता से फूला नहीं समाता और उनसे विश्राम करने का आग्रह करता है। नेस्टर जानता है कि उन्होंने जी-तोड़ परिश्रम किया है और उन्हें आराम करना चाहिये। वह नहीं चाहता कि वे इस श्रम के कारण दूसरे दिन लड़ न सकें और उनका सारा परिश्रम व्यर्थ हो जाये!

पर्व ग्यारह

सवेरा होता है और जूपिटर वैमनस्य की देवी को यूनानियों को जगा-देने का आदेश देता है। देवी आदेश का पालन करती है। फलस्वरूप यूनानी उठ-बैठते हैं और जैसे ही तैयार होकर लड़ाई के मैदान में आते हैं आकाश में एक वज्र लहराने लगता है। उन्हें इसका अर्थ समझते ज़रा भी देर नहीं लगती कि जूपिटर की आज्ञा है और उन्हें तुरन्त ही युद्ध आरम्भ कर देना चाहिये! .....

युद्ध आरम्भ होता है और हेक्टर की वीरता और उसके शौर्य एवं उत्साह से प्रेरणा लेकर ट्रॉजन भूखे भेड़ियों की तरह अपने शत्रुओं पर टूट पड़ते हैं। किन्तु इस सारे उत्साह और सारी हिम्मत के रहते हुए भी यूनानी उन्हें 'स्कियान-द्वार' तक खदेड़ देते हैं। अब ट्राजन हतोत्साहित होने लगते हैं! उन्हें इस स्थिति में देख कर जूपिटर हेक्टर को सचेत करता है कि यदि एक बार एगेमेम्नान घायल हो गया तो लड़ाई का रुख़ पलट जायेगा और यूनानियों की हार आरम्भ हो जायेगी, अतएव उसे किसी प्रकार एगेमेम्नान पर चोट करनी चाहिये। हेक्टर आश्वस्त होता है। थोड़ी ही देर में एक भाला एगेमेम्नान को लगता है और वह आहत होकर अपने तम्बू की ओर चल देता है हेक्टर इस घटना से लाभ उठाता है। वह अपने वीरों में नये सिर से जोश भरता है और वे इतने उग्र हो उठते हैं कि बदले में यूनानियों को बहुत दूर तक खदेड़ देते है। इसी क्रम में डायोमिडीज़ और यूलिसीज़ भी घायल हो जाते हैं। नेस्टर उन्हें अपने ख़ेमे में ले आता है।

इस समय एकीलीज़ एक दूर के जहाज़ के अगले हिस्से पर उदास बैटा है कि उसकी दृष्टिनेस्टर पर पड़ती है। वह उत्सुक हो उठता है और पेट्रॉक्लस से घायल वीरों के नाम मालूम करआने का आग्रह करता है! पेट्रॉक्लस तुरन्त ही उठ-खड़ा होता है! वह यूनानियों के बीच पहुँचता ही है कि वे उससे मृत साथियों की बहुत लम्बी-चौड़ी संख्या की चर्चा करते हैं और देश और देशवासियों के नाम पर यूनानियों की सहायता के करने के लिये एकीलीज़ को विवश करने का अनुरोध

है ! फिर भी, उसे इन आगन्तुकों की सूचना दी जाती है। सूचना पाते ही वह अपने परिचारकों को आदेश देता है कि अतिथियों को किसी प्रकार का कष्ट न होने पाये।

शीघ्र ही, जब अतिथि स्नान-पान के बाद ताज़े हो चुकते हैं, वह उन्हें बुलाता है, उनके आगमन का प्रयोजन पूछता है और कहता है कि सात वर्ष तक इधर-उधर भटकते रहने के बाद वह अब घर आ-पाया है, परन्तु उसे अपने मित्र और साथी यूलिसीज़ के विषय में प्रायः उत्कंठा होती रही है कि आख़िर उसका क्या हुआ ! यूलिसीज़ का नाम सुनते ही टेलेमैकस की आँखों से आँसू बहने लगते हैं। सहसा ही हेलेन भी आ-पहुँचती है। वह देखती है कि एक अजनबी की आकृति यूलिसीज़ से आवश्यकता से अधिक मिलती-जुलती है, जैसे कि एक यूलिसीज़ का वह दूसरा व्यक्तित्व हो, अतएव वह आश्चर्य से अवाक् रह जाती है। शीघ्र ही टेलेमैकस अपना परिचय देता है और परिचय के बाद उसके साथ वे दोनों भी बीते दिनों की स्मृति में आकुल होते और आँसू बहाते हैं। कुछ समय के बाद हेलेन उठती है और मदिरा में चिन्ता-पीड़ा-हारी द्रव्य मिला देती है। सब इस पेय के पान के बाद तुरन्त ही अपनी-अपनी पीड़ाओं को भूल जाते हैं ! अब फिर कुछ बातचीत चलती है और हेलेन बतलाती है कि कैसे एक बार भिखारी के रूप में यूलिसीज़ ट्राय में घुसा और कैसे उसने उसे देखते ही पहिचान लिया, किंतु उसके अतिरिक्त कोई दूसरा सन्देह भी न कर सका। इस घटना के उल्लेख से मेनेलाउस की स्मृति में, सहसा ही, वह क्षण सजीव हो-उठता है, जब यूलिसीज़ ने उसे और दूसरे यूनानियों को लकड़ी के घोड़े में नियन्त्रित कर रक्खा था और हेलेन ने उनकी पत्नियों की तरह बोलने का प्रयत्न करते हुये उसके चारों ओर चक्कर लगाये थे !

सब उस चिन्ता और पीड़ा-हारी द्रव्य से सुख लाभ करते हैं और विश्राम करने के लिये उठ-खड़े होते हैं ! दूसरे दिन सवेरे सोकर उठने पर टेलेमैकस मैनेलाउस से अपने पिता के विषय में कुछ पूछ-तांछ करता है। उत्तर में मेनेलाउस कहता है कि राह में फ़ैरस-द्वीप पर जब उसने मछलियों को गिन कर समुद्र के एक देवता प्रॉटियस को आश्चर्य में डाल दिया तो देवता ने उसे तीन निम्नलिखित बातें बताईं : १. वह मिश्र में बलिदानों से देवताओं का क्रोध शान्त करने के बाद ही अपने घर पहुँच सकता है, २. उसका भाई माइसीनी में मार डाला गया, और, ३. उसके बचे हुये साथियों में प्रमुख यूलिसीज़ कैलिप्सो नामक प्रेतात्मा के द्वारा एक द्वीप में रोक लिया गया है और उसके पास वहाँ से भाग निकलने के कोई भी साधन नहीं हैं ! इन तीन बातों का उल्लेख करने के बाद मेनेलाउस टेलेमैकस को बतलाता है कि उस देवता ने स्वयं उसे वचन दिया कि वह कभी न मरेगा, और हेलेन के पति और जूपिटर के दामाद के रूप में इलीशियन फ़ील्ड्ज़[1] में चिरन्तन आनन्द का भोग करेगा। इसके बाद वह उन सारे बलिदानों का वर्णन करता है जो उसे स्पार्टा पहुँचने के लिये करने पड़े, और तब उस युवक से आग्रह करता है कि वह उसके साथ ही रहे। किन्तु, वह अपने विचार पर दृढ़ है कि उसे जल्द-से-जल्द अपने घर लौट जाना चाहिये।

---

[1] नर्क में हेड्ज़ नामक पुण्य-आत्माओं का निवास-स्थान।

उन्मत्त हो उठता है और शत्रुओं को खरी-खोटी सुनाने लगता है।

पाठकों को याद होगा कि इस सारे रक्तपात की जड़ स्वयं पेरिस ही है।

पर्व चौदह—

फिर कुछ ट्राजन यूनानी खेमों में घुस आते हैं और उनमें एक अजब उदासी छा जाती है कि नेस्टर उस स्थान की ओर कदम बढ़ाता है जहाँ घायल एगेमेम्नान यूलिसीज़ और डायोमिडीज़ बैठे हुये हैं और उत्सुक और व्यग्र-हृदय से लड़ाई का निरीक्षण कर रहे हैं। वह इस प्रकार फिर अपना बात दोहराता है कि वे शीघ्र ही एक दूसरे से सदा के लिए बिछुड़ने वाले हैं। किन्तु यूलिसीज़ और डायोमिडीज़ इस विचार को उपेक्षा और तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं और अपने घावों की ज़रा भी चिन्ता न कर शत्रु को मुंहतोड़ जवाब देने के लिए तैयार हो जाते हैं!

इस प्रकार यूनानियों के दुबारा साहस संचित करने से देवताओं की रानी जूनो बड़ी प्रसन्न होती है, परन्तु दूसरे ही क्षण आशंकित हो उठती है कि कहीं ऐसा न हो कि जूपिटर फिर ट्राजनों की ओर से लड़ाई में हस्तक्षेप करे! वह इस समस्या पर विचार करती है और एक क्षण बाद निद्रा के देवता एवं अपने छल छद्मपूर्ण हावों-भावों की सहायता से जूपिटर को बेहोश करने के लिए चल पड़ती है। इधर वह जूपिटर को बेहोश करना चाहती है कि उसे किसी बात का ध्यान ही न रहे और उधर निद्रा के देवता के द्वारा यूनानियों से कहला देती है कि उन्हें देवताओं के राजा की इस ग़फ़लत और बेहोशी से लाभ उठाना चाहिये!

जूनो अपने प्रयत्न में सफल होती है और उसकी कृपा से यूनानी तब तक निश्चिंत होकर भयंकर युद्ध करते हैं जब तक कि ऐजेक्स एक शिला फेंककर नहीं मारता और हेक्टर उसके नीचे दब नहीं जाता! किन्तु, इसके पहले कि ऐजेक्स और उसके साथी इस शिकार को अपने जाल में फांसें, हेक्टर के साथी उसकी प्राण-रक्षा के लिये पहुँच जाते और उसे बचा लेते हैं! वे उसे तुरन्त ही एक नदी के किनारे ले जाते हैं और उसके शीतल जल की सहायता से उसे होश में ले आते हैं।

पर्व पन्द्रह—

इस प्रकार थोड़े समय के लिए इस नेता के सहयोग और उसकी सहायता से वंचित होते ही ट्राजन फिर उस स्थान पर लौट आने के लिए मजबूर हो जाते हैं जहाँ उन्होंने एक बार अपने रथ छोड़े हैं। इस समय वे बड़े परीशान हैं और सोच नहीं पाते कि क्या करें। अंत में वे निराश हो जाते हैं और लड़ाई का मैदान छोड़कर भाग-निकलने का इरादा करते हैं। किन्तु इतने ही में जूपिटर होश में आ जाता है और होश में आते ही एक पल में सारे षडयन्त्र की कल्पना कर लेता है। वह जूनो को जी भर फटकारता है, किन्तु वह सारा दोष 'नेप्च्यून के सिर मढ़ देती और उसे ही सारे जाल के लिये ज़िम्मेदार ठहराती है। जूपिटर और कोई चारा न

देगी जिससे वह लट्ठों की एक डोंगी बना ले। यह डोंगी उसे देवताओं के अनुग्रह से उसके द्वीप ईथाका तक पहुँचा देगी।

यूलिसीज़ आनन्द के मारे फूला नहीं समाता। वह बहुत दिनों के बाद भरपेट भोजन और जी-भर विश्राम करता है। इस तरह एक रात आराम करने पर वह दूसरे दिन सवेरे बीस पेड़ काट डालता है और शीघ्र ही एक डोंगी तैयार कर लेता है! कैलिप्सो उस डोंगी में सभी आवश्यक सामान रख देती है और वह उस द्वीप से विदा होता है।

सत्तरह दिन तक तारों के सहारे चलने के बाद वह फ़िेशिया-द्वीप के समीप पहुँचता ही है कि नेप्ट्यून सावधान हो-उठता है क्योंकि वह जानता है कि उसके शत्रु का बचकर निकल-भागना सम्भव है! अतएव वह अपने त्रिशूल से उस पर प्रहार करता है। इस त्रिशूल के एक प्रहार से ही समुद्र में तूफ़ान आ जाता है और उससे टकराकर यूलिसीज़ की डोंगी टुकड़े टुकड़े हो जाती है। यूलिसीज़ का हृदय इस भय से बैठने-सा लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि वह समुद्र में विलीन हो जाये, परन्तु इसी समय समुद्र की अप्सरा लिउकोथिया उसे एक प्राण-रक्षक रूमाल देती है और साथ ही यह आदेश भी कि जब वह सकुशल धरती पर पहुँच जाये तो उसे फिर समुद्र की लहरों को सौंप दे! यूलिसीज़ उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। अब वह इस रूमाल के कारण लहरों पर लहराता चलता है, पानी में डूबता नहीं, किन्तु,

'एक विशाल लहर ने फेंका यूलिसीज़ को तट की ओर,
तट कि घिरा था जो पहाड़ियों से भीषण ऊँची-ऊँची!
खाल न रह जाती शरीर पर यहाँ हड्डियाँ होतीं चूर,
यदि न मिनर्वा के कारण यह भाव हृदय में जग जाता—
आगे बढ़े शक्ति-साहस से और शिला को फिर लें थाम!
यही किया उसने, फिर उससे चिपट गया वह ताक़त भर!
बहुत कड़े हाथों से उसने पकड़ी शिला रगड़ से, पर,
छिले हाथ, कट गई खाल, दो एक दांत भी टूट गये,
पीड़ा से रो-उठा, किन्तु वह एक बार इस तरह बचा!
और, वेग लहरों का उसने सहन किया फिर कुछ क्षण तक!
किन्तु, दूसरी तेज़ लहर ने उसे घसीटा, ज्यों बिल से
कोई मछुआ बुद्धि-शक्ति से ले घसीट पशु 'कटिल' कभी,
जो कि मुलायम होता है, ख़ुद रक्षा करता है अपनी,
कभी कभी जिसके ऊपर रहते हैं पत्थर के ढेले!
कैसे भला टिके रहते फिर उस पत्थर पर उसके हाथ!
छूटे, बहा तुरत वह, पहुँचा शीघ्र बीच में सागर के!
किन्तु मिनर्वा ने चिन्ता की मन में जगा विचार नया-
क्यों न शक्ति कर ले संचित औ, बहे साथ उन लहरों के

पर हमला करना ही चाहता है कि उसका पुत्र सरपेडन उसे द्वंद-युद्ध के लिए ललकारता है।

जूपिटर जानता है कि यह लड़ाई हेक्टर के पुत्र के लिए घातक सिद्ध होगी, अतः वह कुछ ऐसा करता है कि आसमान से पृथ्वी पर ख़ूनी ओस पड़ने लगती है। इसके बाद वह उसका शव लाने के लिए निद्रा और मृत्यु को पृथ्वी पर भेजता है और उन्हें आदेश देता है कि चूँकि वह पिता की भाँति ही उस वीर को अंतिम बार चूमना चाहता है, अतएव वे उसका शव पहले ओलिम्पस पर लायें और तब ले जाकर लीसिया* में दफनायें।......युद्ध चलता रहता है और जैसे ही सरपेडन का वध होता है, उसकी लाश के अधिकार को लेकर एक नया झगड़ा खड़ा हो जाता है। फल यह होता है कि उसका कवच यूनानियों को मिलता है और उसका शव अपोलो को। अपोलो उसे ले जाता, युद्ध के पंक को धोकर उसे विशुद्ध करता और 'निद्रा' और 'मृत्यु' को सौंप देता है।

इसी बीच में पेट्रॉक्लस नये सिरे से ट्राजनों का पीछा करता और ट्राय की प्राचीरों को ढहा देना चाहता है, किन्तु एपोलो उसे सचेत करता है कि ट्राय न उसके हाथ का शिकार होगा और न उसके मित्र के हाथ का। इसके बाद ही हेक्टर और पेट्रॉक्लस में द्वंद-युद्ध होता है। इस द्वंद के बीच में अपोलो अकस्मात् पेट्रॉक्लस का शिरस्त्राण खींच लेता और इस प्रकार विरोधी के घातक प्रहारों के लिए उसका सिर नंगा कर देता है। पेट्रॉक्लस बुरी तरह घायल हो जाता है और जान लेता है कि अब उसका बचना असम्भव है, अतएव वह घोषित करता है कि यदि देवता उसके साथ छल न करते तो वह निश्चित रूप से विजयी होता, किन्तु इसपर भी कुछ नहीं बिगड़ा है, क्योंकि उसके इस प्रकार प्राण त्यागने की बात सुनते ही एकीलीज़ उसकी मौत का बदला अवश्य लेगा। किन्तु हेक्टर उसके इन वाक्यों से पूरी तरह अप्रभावित और अछूता रहकर ऐसे असंदिग्ध वीर-शत्रु पर विजय प्राप्त करने के कारण आनन्द से फूला नहीं समाता। वह कामना करता है कि एकीलीज़ का रथ और उसके घोड़े उसे मिल जायें और इसके लिये बहुत हाथ-पैर भी मारता है, किन्तु वे उसके हाथ नहीं आते क्योंकि आटोमेडॉन नामक सारथी उन्हें लेकर भाग-निकलता है।

पर्व सत्तरह–

मेनेलाउस देखता है कि पेट्रॉक्लस परास्त होकर गिर पड़ा है, अतएव शत्रु से उसके शरीर और उसके कवच को प्राप्त करने के लिये वह आगे आता है। इसपर हेक्टर एकीलीज़ के रथ को हस्तगत करने के व्यर्थ प्रयास त्याग देता है और उसके शव पर अपना दावा जताने के लिये लौट पड़ता है। तुरन्त ही मेनेलाउस और ऐजैक्स उस पर हमला करते हैं और इस प्रकार पेट्रॉक्लस के शव को लेकर भी एक भयंकर युद्ध होता है।

सहसा ही एक बड़े ही हृदय-द्रावक दृश्य के कारण वातावरण उदास हो-उठता है। सब की निगाह एक साथ ही एकीलीज़ के घोड़ों पर पड़ती है और सब बड़े दुखी हो उठते हैं।

*यूनान का एक स्थान जहाँ सरपेडन दफ़नाया जाता है।

देगी जिससे वह लट्ठों की एक डोंगी बना ले। यह डोंगी उसे देवताओं के अनुग्रह से उसके द्वीप ईथाका तक पहुँचा देगी।

यूलिसीज़ आनन्द के मारे फूला नहीं समाता। वह बहुत दिनों के बाद भरपेट भोजन और जी-भर विश्राम करता है। इस तरह एक रात आराम करने पर वह दूसरे दिन सवेरे बीस पेड़ काट डालता है और शीघ्र ही एक डोंगी तैयार कर लेता है! कैलिप्सो उस डोंगी में सभी आवश्यक सामान रख देती है और वह उस द्वीप से विदा होता है।

सत्तरह दिन तक तारों के सहारे चलने के बाद वह फ़िऐशिया-द्वीप के समीप पहुँचता ही है कि नेप्च्यून सावधान हो-उठता है क्योंकि वह जानता है कि उसके शत्रु का बचकर निकल-भागना सम्भव है! अतएव वह अपने त्रिशूल से उस पर प्रहार करता है। इस त्रिशूल के एक प्रहार से ही समुद्र में तूफ़ान आ जाता है और उससे टकराकर यूलिसीज़ की डोंगी टुकड़े टुकड़े हो जाती है। यूलिसीज़ का हृदय इस भय से बैठने-सा लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि वह समुद्र में विलीन हो जाये, परन्तु इसी समय समुद्र की अप्सरा लिउकोथिया उसे एक प्राण-रक्षक रूमाल देती है और साथ ही यह आदेश भी कि जब वह सकुशल धरती पर पहुँच जाये तो उसे फिर समुद्र की लहरों को सौंप दे! यूलिसीज़ उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। अब वह इस रूमाल के कारण लहरों पर लहराता चलता है, पानी में डूबता नहीं, किन्तु,

'एक विशाल लहर ने फेंका यूलिसीज़ को तट की ओर,
तट कि घिरा था जो पहाड़ियों से भीषण ऊँची-ऊँची!
खाल न रह जाती शरीर पर यहाँ हड्डियाँ होतीं चूर,
यदि न मिनर्वा के कारण यह भाव हृदय में जग जाता—
आगे बढ़े शक्ति-साहस से और शिला को फिर लें थाम!
यही किया उसने, फिर उससे चिपट गया वह ताक़त भर!
बहुत कड़े हाथों से उसने पकड़ी शिला रगड़ से, पर,
छिले हाथ, कट गई खाल, दो एक दांत भी टूट गये,
पीड़ा से रो-उठा, किन्तु वह एक बार इस तरह बचा!
और, वेग लहरों का उसने सहन किया फिर कुछ क्षण तक!
किन्तु, दूसरी तेज़ लहर ने उसे घसीटा, ज्यों बिल से
कोई मछुआ बुद्धि-शक्ति से ले घसीट पशु 'कटिल' कभी,
जो कि मुलायम होता है, ख़ुद रक्षा करता है अपनी,
कभी कभी जिसके ऊपर रहते हैं पत्थर के ढेले!
कैसे भला टिके रहते फिर उस पत्थर पर उसके हाथ!
छूटे, बहा तुरत वह, पहुँचा शीघ्र बीच में सागर के!
किन्तु मिनर्वा ने चिन्ता की मन में जगा विचार नया-
क्यों न शक्ति कर ले संचित औ, बहे साथ उन लहरों के

आयरिस अब भी निर्देशन का कार्य करता है। उसके नेतृत्व में ही प्रायम अपने पुत्र का शव ट्राय में वापस लाता है। यहाँ हेक्टर की माँ, उसकी पत्नी और दूसरी ट्राजन-स्त्रियाँ बड़ा ही हृदय-विदारक विलाप करती हैं!

शीघ्र ही एक चिता सजाई जाती है और हेक्टर की अन्त्येष्टि क्रिया के वर्णन के साथ इलियड का अन्त होता है!

ही रानी की निगाह उसके कपड़ों पर पड़ती है जो उन्हें पहिचान लेती है और यूलिसीज़ से प्रश्न करती है कि ये उसे कैसे और कहां से मिले ! वह सारी कथा जान लेने पर बड़ी सन्तुष्ट और बड़ी प्रसन्न होती है, क्यों कि वह अनुभव करती है कि उसकी पुत्री बड़ी दयालु, दानशील और विवेक-सम्पन्न है। राजा और रानी विश्राम करने के लिये प्रस्थान करने के पहले एक बार फिर उस यात्री को वचन देते हैं कि वे उसे शरण तो देंगे ही, उसकी हर प्रकार रक्षा भी करेंगे !

पर्व आठ—

दूसरे दिन राजा अपने अतिथि को जन साधारण की एक सभा में ले जाता है वहाँ मिनर्वा ने उस स्थान के लोगों को पहले से ही बुला रक्खा है। राजा ऐलसिनस अपना आसन ग्रहण करता है और सभा में सर्व साधारण को यह सूचना देता है कि एक अज्ञात उनकी सहायता का इच्छुक है। इसके बाद वह प्रस्ताव करता है कि एक भोज हो जिसमें राज्य का अंधा-चारण डिमोडोकस अपने गानों से सब का मनोरंजन करे, तत्पश्चात अतिथि को अनेकानेक उपहार भेंट किये जावें, और इस प्रकार उसे विदा दी जाये ! प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत होता है।

भोज की व्यवस्था होती है। भोज आरम्भ होता ही है कि चारण अपना गाना आरम्भ करता है, जिसमें यूलिसीज़ और एकीलीज़ में हुये एक द्वन्द का वर्णन है। यूलिसीज़ चुपचाप गाना सुनता रहता है किन्तु इस गाने के स्वर से उसके हृदय के सारे घाव हरे हो-उठते हैं, सारा दुखमय अतीत उसके सम्मुख इतना सजीव और स्पष्ट हो उठता है कि उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं, और उन्हें छिपाने के लिये वह अपने लबादे को सिर के ऊपर खींच लेता है ! राजा इस भावुकता को देखकर चारण को गीत समाप्त करने का आदेश देता है और प्रस्ताव करता है कि अब दूसरे खेल-तमाशे हों ! आज्ञा का पालन किया जाता है और दौड़, कुश्ती और चक्र आदि में अपने कौशल का प्रदर्शन करने के बाद प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले यूलिसीज़ का मजाक बनाते और उसे चुनौती देते हैं कि वह भी शक्ति और चातुरी के खेलों में भाग लेकर अपने कौशल और अपनी प्रवीणता का परिचय दे। यूलिसीज़ उनके तीखे व्यंग्यों से आहत हो जाता है और उत्तेजित हो-उठता है। वह चक्र को उनके सब से दूर के लक्ष्य से बहुत दूर फेंक देता है और कहता है कि यद्यपि इधर उसे अभ्यास नहीं रहा है, फिर भी वह शक्ति के खेलों में भी उनमें से किसी का भी सामना करने से नहीं डरता, केवल यह कि किन्हीं कारणों से वह दौड़ और नाच की प्रतियोगिताओं में ही भाग लेने में असमर्थ है ! अतएव उसका पौरुष और क्षमा प्रकट हो उठते हैं और हीनता की स्पष्ट स्वीकारोक्ति दूसरी पंक्ति में नज़र आती है ! किन्तु हीन-दल व्यर्थ की आलोचना करने से अब भी बाज़ नहीं आता ! इस बीच में नवयुवक-दल नाचता रहता है और तब तक नाचता रहता है जब तक कि चारण एक दूसरा ऐसा गीत आरम्भ नहीं करता, जिसमें बतलाया गया है कि वल्कन ने कैसे एक दुष्चरित्रा पत्नी को दंड दिया !

और अन्दर जाकर अपने पति की सुरक्षा के लिये देवताओं से प्रार्थना करे ! इसके बाद ही वह उन प्रेमियों को जाने का आदेश देता है और कहता है कि यदि वे इस पर भी अड़े रहेंगे तो वह देवताओं से उन्हें दंड देने की प्रार्थना करेगा। इन प्रेमियों को ये शब्द बड़े कटु लगते हैं यानी उनपर इनका बड़ा बुरा प्रभाव पड़ता है और वे रात में तब तक ऊधम मचाते रहते हैं जब तक कि टेलेमैकस स्वयं विश्राम करने और अपनी कल्पित यात्रा के स्वप्न देखने के लिये अपने शयनागार में नहीं चला जाता !

पर्व दो—

प्रातः काल टेलेमैकस उठता और बाज़ार में जाता है। यहाँ लोक-सभा में वह इन प्रेमियों की शिकायत और उनकी भर्त्सना करता है और घोषित करता है कि वह शीघ्र ही अपने पिता की खोज में जानेवाला है। उसकी इस शिकायत, भर्त्सना और धमकी के उत्तर में प्रेमीगण इस सारी गड़बड़ी का दोष पिनेलोपी के सिर मढ़ देते हैं। वे कहते हैं कि उसने ही उन्हें अपने माया-जाल में फंसाने की कोशिश की और वायदा किया कि जैसे ही वह अपने ससुर के लिये कफ़न बिन चुकेगी, उनमें से किसी एक को अपना पति चुन लेगी। किन्तु, बजाय इसके कि यह कार्य जल्दी से जल्दी समाप्त कर देती वह उन्हें केवल मूर्ख ही बनाती रही है, हर दिन बुना हुआ रात को उधेड़ती रही है और इस प्रकार तीन वर्ष बीत गये हैं।

फिर भी वे टेलेमैकस को सलाह देते हैं कि वह अपनी माँ को अपने नाना के यहाँ भेज दे, पर वह क्रोध और घृणा से भरकर उनकी राय अस्वीकार कर देता है। वह देवताओं से प्रार्थना करता है कि उनके इस अनाचार के लिये वे उन्हें दंड दें। सभा समाप्त होती है ! उसी क्षण दो बाज़ आसमान में उड़ते दिखलाई देते हैं ! वे देखनेवालों में से किसी एक की आँखें निकाल लेते हैं और यह साबित हो जाता है कि देवताओं ने टेलेमैकस की प्रार्थना अनसुनी नहीं की ! इसी बीच में एक बूढ़ा आदमी शकुन देखकर यह बतलाता है कि यूलिसीज़ शीघ्र ही लौटने वाला है, अतएव जो लोग उसके क्रोध का शिकार नहीं बनना चाहते उन्हें अपने सदव्यवहार से अपनी स्वामि-भक्ति का परिचय देना चाहिये।

सभा विसर्जित होते ही टेलेमैकस समुद्र के किनारे जाता है। वहाँ मिनर्वा उसके शिक्षक मेंटर के रूप में उससे मिलती है। वह उसे आदेश देती है कि वह चुपचाप यात्रा की तैयारी कर ! अतएव वह महल में लौट आता है। यहां प्रेमीगण एक नये भोज की तैयारी कर रहे हैं। वह उनके आयोजन में किसी प्रकार की दिलचस्पी नहीं लेता बल्कि अपनी धाय यूरीक्लिया की खोज करता है और उसे जहाज़ का प्रबन्ध सौंपने के बाद निर्देश करता है कि उसके जाने के १२ दिन बाद तक उसकी माँ को उसके जाने की सूचना न मिले ! इधर टेलेमैकस के रूप में मिनर्वा सारा शहर छान डालती है और इस परिश्रम के कारण सूरज डूबने के समय तक एक जहाज़ तैयार हो जाता है। वह महल में लौट आती है और उन प्रेमियों की चेतन शक्ति को इस प्रकार गहरी नींद से जकड़ देती है कि कोई देख नहीं पाता और टेलेमैकस अपने शिक्षक

ट्राय का पतन एवं विनाश पूर्ण हुआ और वह स्वयं और उसके साथी ट्राय के तटों से चले! वह आगे कहता है कि उन्हें अनुकूल हवायें मिलीं और वे सब थेन्स के शहर इस्मारस पहुँचे! इसे उन्होंने जीत लिया। किन्तु बजाय इसके कि वे लूट के माल के साथ तुरन्त अपनी राह लेते, जैसा कि उसका आग्रह था, वे सब वहां रुके रहे और अन्त में अपनी आशा के विपरीत शत्रु को वहां पाकर हक्का-बक्का हो गये, किन्तु उनसे किसी प्रकार जान बचाकर निकल-भागे। फिर, वे एक तूफ़ान के कारण कई दिनों तक त्रस्त रहने के बाद कमल-भोजी देश के समीप आ-पहुँचे! यह एक अद्भुत देश था। यहाँ के लोग एक प्रकार के निद्रावाहक कमल की कलियाँ और उसके फूलों को खाकर जीवित रहते थे! अतएव यहां पहुँचने पर उसने नगर की स्थिति समझ-आने के लिये तीन व्यक्ति भेजे। वह बहुत देर तक उनकी प्रतीक्षा करता रहा किन्तु वे न लौटे। तब चिन्ता होने के कारण वह स्वयं उन्हें खोजने के लिये निकल पड़ा। उसने उन्हें खोज निकाला किन्तु देखा कि उन्होंने भी उसी कमल की कलियां खा लीं थीं वे भी बेहोश थे, और उन्हें अपनी महत्ता महत्त्वाकांक्षा अथवा अपनी मातृभूमि का कुछ भी ध्यान न था। वह उन्हें किसी प्रकार जहाज़ तक लाया, उसने उन्हें जहाज़ में जकड़ा और आदेश दिया कि वह विनाशकारी तट तुरन्त ही छोड़ दिया जाय, तीव्र-गति से आगे बढ़ा जाय और रास्ते में कहीं रुकने के नाम भी न लिया जाय!

वे चल पड़े और शीघ्र ही वल्कन के सहकारी साइक्लोपीज़ के द्वीप के समीप पहुंचे। यहां नया भोजन और ताज़ा पानी लेने के विचार से उन्होंने पास के एक द्वीप के किनारे लंगर डाला। तुरन्त ही उसकी निजी इच्छा हुई कि वह पहले साइक्लोपीज़ से भेंट करे और तब आगे बढ़े। अब वह सबसे बहादुर बारह वीरों और सुस्वादु मदिरा से भरी खाल की एक बोतल साथ लेकर साइक्लोपीज़ के सहकारी पॉलिफ़ेमस से मिलने के लिये चल पड़ा! उसने उसकी गुफ़ा खोजी और उस दैत्य की गुफ़ा में अपने साथियों के साथ घुसने के बाद उसने आग जलाई। वे सब उस आग को घेर कर बैठ गये और 'पॉलिफ़ेमस' की प्रतीक्षा करने लगे! वह यहाँ घी-मक्खन आदि का व्यापार करता था और शीघ्र ही लौटने वाला था। उन्हें बहुत देर तक राह नहीं देखनी पड़ी कि एक आँख वाला वह दैत्य अपने पशु-समूह सहित अन्दर आया और उसने एक ऐसी चट्टान से उस गुफ़ा का मुंह बन्द कर दिया जिसे और कोई उसके स्थान से टस से मस न कर सकता था। इसके बाद ही वह अपनी भेड़ों को दुहने और पनीर बनाने में व्यस्त हो गया! उसने उन की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया। वह अपना सारा काम-काज करता रहा और अन्त में भोजन करते समय उसने उन सबको देखा! उन्होंने बहुत विनम्रता से यदि कुछ त्रुटि हुई हो तो उसके लिये क्षमा-याचना की। दैत्य ने बहुत कर्कश शब्दों में प्रश्न किया कि क्या वे कुल उतने ही आदमी हैं। उसे उत्तर मिला और उसने उसके (यूलिसीज़) शब्दों पर विश्वास कर लिया कि वे समुद्र की एक दुर्घटना से ग्रस्त और त्रस्त लोग हैं। इसके बाद वह कुछ न बोला किन्तु शयन

---

[1]गोल आँखोंवाली राक्षसी जाति के गरड़िये जो आदमियों को खा जाते थे और जूपिटर से भी न डरते थे!

है! फिर भी, उसे इन आगन्तुकों की सूचना दी जाती है। सूचना पाते ही वह अपने परिचारकों को आदेश देता है कि अतिथियों को किसी प्रकार का कष्ट न होने पाये।

शीघ्र ही, जब अतिथि स्नान-पान के बाद ताज़े हो चुकते हैं, वह उन्हें बुलाता है, उनके आगमन का प्रयोजन पूछता है और कहता है कि सात वर्ष तक इधर-उधर भटकते रहने के बाद वह अब घर आ-पाया है, परन्तु उसे अपने मित्र और साथी यूलिसीज़ के विषय में प्रायः उत्कंठा होती रही है कि आख़िर उसका क्या हुआ! यूलिसीज़ का नाम सुनते ही टेलेमैकस की आँखों से आँसू बहने लगते हैं। सहसा ही हेलेन भी आ-पहुँचती है। वह देखती है कि एक अजनबी की आकृति यूलिसीज़ से आवश्यकता से अधिक मिलती-जुलती है, जैसे कि एक यूलिसीज़ का वह दूसरा व्यक्तित्व हो, अतएव वह आश्चर्य से अवाक् रह जाती है। शीघ्र ही टेलेमैकस अपना परिचय देता है और परिचय के बाद उसके साथ वे दोनों भी बीते दिनों की स्मृति में आकुल होते और आँसू बहाते हैं। कुछ समय के बाद हेलेन उठती है और मदिरा में चिन्ता-पीड़ा-हारी द्रव्य मिला देती है। सब इस पेय के पान के बाद तुरन्त ही अपनी-अपनी पीड़ाओं को भूल जाते हैं! अब फिर कुछ बातचीत चलती है और हेलेन बतलाती है कि कैसे एक बार भिखारी के रूप में यूलिसीज़ ट्राय में घुसा और कैसे उसने उसे देखते ही पहिचान लिया, किंतु उसके अतिरिक्त कोई दूसरा सन्देह भी न कर सका। इस घटना के उल्लेख से मेनेलाउस की स्मृति में, सहसा ही, वह क्षण सजीव हो-उठता है, जब यूलिसीज़ ने उसे और दूसरे यूनानियों को लकड़ी के घोड़े में नियन्त्रित कर रक्खा था और हेलेन ने उनकी पत्नियों की तरह बोलने का प्रयत्न करते हुये उसके चारों ओर चक्कर लगाये थे!

सब उस चिन्ता और पीड़ा-हारी द्रव्य से सुख लाभ करते हैं और विश्राम करने के लिये उठ-खड़े होते हैं! दूसरे दिन सवेरे सोकर उठने पर टेलेमैकस मैनेलाउस से अपने पिता के विषय में कुछ पूछ-तांछ करता है। उत्तर में मेनेलाउस कहता है कि राह में फ़ैरस-द्वीप पर जब उसने मछलियों को गिन कर समुद्र के एक देवता प्रॉटियस को आश्चर्य में डाल दिया तो देवता ने उसे तीन निम्नलिखित बातें बताईं: १. वह मिश्र में बलिदानों से देवताओं का क्रोध शान्त करने के बाद ही अपने घर पहुँच सकता है, २. उसका भाई याइसीनी में मार डाला गया, और, ३. उसके बचे हुये साथियों में प्रमुख यूलिसीज़ कैलिप्सो नामक प्रेतात्मा के द्वारा एक द्वीप में रोक लिया गया है और उसके पास वहाँ से भाग निकलने के कोई भी साधन नहीं हैं! इन तीन बातों का उल्लेख करने के बाद मेनेलाउस टेलेमैकस को बतलाता है कि उस देवता ने स्वयं उसे वचन दिया कि वह कभी न मरेगा, और हेलेन के पति और जूपिटर के दामाद के रूप में इलीशियन फ़ील्ड्ज़[1] में चिरन्तन आनन्द का भोग करेगा। इसके बाद वह उन सारे बलिदानों का वर्णन करता है जो उसे स्पार्टा पहुँचने के लिये करने पड़े, और तब उस युवक से आग्रह करता है कि वह उसके साथ ही रहे। किन्तु, वह अपने विचार पर दृढ़ है कि उसे जल्द-से-जल्द अपने घर लौट जाना चाहिये।

---

[1] नर्क में हेड्ज़ नामक पुण्य-आत्माओं का निवास-स्थान।

छोड़ दिया और अपनी राह ली !

सवेरा हुआ। पॉलिफ़ेमस कराहते हुए उठा, उसने चट्टान सरका कर एक तरफ कर दी और उसके पास ही हाथ फैलाकर खड़ा हो गया, क्योंकि उसे आशा थी कि बन्दी भागेंगे और इस तरह वह उन्हें पकड़ सकेगा। किन्तु उसने (यूलिसीज़ ने) अपने को और अपने साथियों को भेड़ों के पेटों से बाँध लिया। इस प्रकार वे सब के सब भेड़ों के घने ऊन में चिपट कर भेड़ों के साथ ही गुफ़ा के बाहर निकल आये। दैत्य अंधा था, अतएव यह देखने के लिए कि उसकी भेड़ों पर अजनबी तो नहीं सवार थे, उसने अपनी सारी भेड़ों की पीठ पर हाथ फेरा। उसने स्पर्श से अपना प्रिय भेड़ा पहिचान लिया और उसकी धीमी चाल से अनुमान किया कि इस प्रकार, असाधारणतया, धीरे-धीरे चलकर वह उसके घावों के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहा है। इस तरह सब भेड़ों के साथ उसका प्रिय भेड़ा भी बाहर निकला। दरवाज़े की ओर उसका मुख था। वह अपने ऊन और उन सबके बोझसे दबा जा रहा था, और अन्त में आगे न बढ़ सका, रुक गया। उसे इस प्रकार रुकता पाकर दैत्य ने अचरज किया कि ऐसी क्या नई बात है कि आज वह भेड़ा सबके बाद बाहर निकल रहा है, ऐसा तो पहिले कभी नहीं हुआ। वह तो हमेशा ही सारी भेड़ों के आगे रहता था, शक्ति से कूद-कूद कर सबके आगे दौड़ता चलता था, सबसे आगे के पंक्ति में रहकर चरागाहों की हरी हरी घास चरता था, छलांगे भरता सबसे पहले पानी पीने के लिये पानी के सोतों पर पहुँचाता था और संध्या के समय सबसे पहिले गुफ़ा को लौटता था। वह सर मारता था, किन्तु उसकी समझ में न आता था कि इस दिन ही क्यों उसका प्रिय भेड़ा हर मामले में सबके पीछे है। उसे विश्वास हो गया कि सचमुच ही वह अपने स्वामी के आँख के लिए संतप्त है, जिसे एक हत्यारे ने फोड़ दिया और जिसके लिए उस व्यक्ति ('यूलिसीज) और उसके साथियों ने उसे इतनी शराब पिलाई कि वह बेहोश हो गया। सहसा ही उसे लगा जैसे कि उसके शत्रु सुरक्षित नहीं हैं और उसने तुरन्त ही चाहा कि उसका प्रिय भेड़ा उसकी इस धारणा का समर्थन करे ! उसकी कामना थी कि वह भेड़ा उसकी धारणा का समर्थन ही न करे प्रत्युत उनके छिपने के स्थान का पता भी दे ! यही नहीं, बल्कि वह यह भी चाहता था कि इस प्रकार पता पाने पर वह स्वयं जाकर उन्हें खोजे, उनके दिमाग इस तरह पृथ्वी पर घंटों रगड़े कि वे सब कुत्तों की मौत मरें और इस तरह वह उस पीड़ा और उस यातना का बदला लेकर, जिसके लिये कोई 'नोमैन' जिम्मेदार था, वह सन्तोष की सांस ले।

किन्तु ऊपर लिखी युक्ति से गुफ़ा से बाहर आने पर उसने ('यूलिसीज़) अपने और अपने साथियों के बन्धन काटे। इसके बाद वह उस दैत्य की भेड़ों को हांक कर अपने बेड़े तक ले गया, जिसे उसने एक खाड़ी में छिपा रक्खा था ! इस तरह पॉलिफ़ेमस के स्थान से बहुत दूर आने पर उसने चिल्लाकर ताने भरी ऊंची आवाज़ में अपना वास्तविक नाम बताया और उसे अपने और अपने साथियों के बचकर भाग निकलने से अवगत कर दिया। दैत्य बड़ा क्रोधित हुआ। वह बड़ी ज़ोर से गरजा और फिर आई हुई आवाज़ की दिशा में चट्टानें फेंक-फेंक कर मारने लगा। अन्तमें उसने घोर सन्ताप से शपथ ली और ललकार कर कहा कि उसका पिता

देगी जिससे वह लट्ठों की एक डोंगी बना ले। वह डोंगी उसे देवताओं के अनुग्रह से उसके द्वीप ईथाका तक पहुँचा देगी।

यूलिसीज़ आनन्द के मारे फूला नहीं समाता। वह बहुत दिनों के बाद भरपेट भोजन और जी-भर विश्राम करता है। इस तरह एक रात आराम करने पर वह दूसरे दिन सवेरे बीस पेड़ काट डालता है और शीघ्र ही एक डोंगी तैयार कर लेता है! कैलिप्सो उस डोंगी में सभी आवश्यक सामान रख देती है और वह उस द्वीप से विदा होता है।

सत्तरह दिन तक तारों के सहारे चलने के बाद वह फ़िएशिया-द्वीप के समीप पहुँचता ही है कि नेप्ट्यून सावधान हो-उठता है क्योंकि वह जानता है कि उसके शत्रु का बचकर निकल-भागना सम्भव है! अतएव वह अपने त्रिशूल से उस पर प्रहार करता है। इस त्रिशूल के एक प्रहार से ही समुद्र में तूफ़ान आ जाता है और उससे टकराकर यूलिसीज़ की डोंगी टुकड़े टुकड़े हो जाती है। यूलिसीज़ का हृदय इस भय से बैठने-सा लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि वह समुद्र में विलीन हो जाये, परन्तु इसी समय समुद्र की अप्सरा लिउकोथिया उसे एक प्राण-रक्षक रूमाल देती है और साथ ही यह आदेश भी कि जब वह सकुशल धरती पर पहुँच जाये तो उसे फिर समुद्र की लहरों को सौंप दे! यूलिसीज़ उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। अब वह इस रूमाल के कारण लहरों पर लहराता चलता है, पानी में डूबता नहीं, किन्तु,

'एक विशाल लहर ने फेंका यूलिसीज़ को तट की ओर,
तट कि घिरा था जो पहाड़ियों से भीषण ऊँची-ऊँची!
खाल न रह जाती शरीर पर यहाँ हड्डियाँ होतीं चूर,
यदि न मिनर्वा के कारण यह भाव हृदय में जग जाता—
आगे बढ़े शक्ति-साहस से और शिला को फिर लें थाम!
यही किया उसने, फिर उससे चिपट गया वह ताक़त भर!
बहुत कड़े हाथों से उसने पकड़ी शिला रगड़ से, पर,
छिले हाथ, कट गई खाल, दो एक दांत भी टूट गये,
पीड़ा से रो-उठा, किन्तु वह एक बार इस तरह बचा!
और, वेग लहरों का उसने सहन किया फिर कुछ क्षण तक!
किन्तु, दूसरी तेज़ लहर ने उसे घसीटा, ज्यों बिल से
कोई मछुआ बुद्धि-शक्ति से ले घसीट पशु 'कटिल' कभी,
जो कि मुलायम होता है, ख़ुद रक्षा करता है अपनी,
कभी कभी जिसके ऊपर रहते हैं पत्थर के ढेले!
कैसे भला टिके रहते फिर उस पत्थर पर उसके हाथ!
छूटे, बहा तुरत वह, पहुँचा शीघ्र बीच में सागर के!
किन्तु मिनर्वा ने चिन्ता की मन में जगा विचार नया-
क्यों न शक्ति कर ले संचित औ, बहे साथ उन लहरों के

इस प्रकार सात दिन तक वे सब बड़े परिश्रम से बेड़ा खेते रहे। आठवें दिन उनके बेड़े को एक बन्दरगाह मिला जो 'लिस्ट्रिगोनिथन' (मनुष्य मांस-भक्षी राक्षसों) का बन्दरगाह था। इन राक्षसों के पंजों से कुछ ही प्राणी बच सके। अपने इस प्रकार बिछुड़-गये मित्रों के भाग्यों पर दुःख प्रकट करते हुये उन्होंने फिर सर्स के द्वीप पर लंगर डाला। यहाँ अपने कुछ साथियों के साथ यूलिसीज़, जहाज़ पर ही रहा किन्तु शेष साथी अन्न-पानी की तलाश में निकल पड़े। अन्यलोगों ने दूर पर एक अच्छा सा मकान देखा। ये समीप गये और इन्हें पता लगा कि वह सर्स नामक एक जादूगरनी का निवास स्थान था। वह जादूगरनी इन सबके आगमन से अवगत थी अतएव उसने एक दावत और स्वादिष्ट पेय की व्यवस्था पहिले से ही कर रखी थी। इन सबके वहाँ पहुँचने पर उसने एक को छोड़कर सबको अपनी मधुर आवाज़ से मोहित और वशीभूत कर लिया और उन्हें अपने महल में गद्दों पर बैठाया! उसके आदेश से उनके सामने पनीर और अन्य खाद्य-वस्तुओं के साथ मदिरा और अन्य मादक और घातक पदार्थ लाये गये। उन्होंने जी भर खाया-पिया। फल यह हुआ कि थोड़ी ही देर बाद उन्हें अपने घरबार और अपने देश की कुछ भी सुधि न रही! अब घृणा से उसने अपना जादू का डंडा उनपर फिराया और कहा कि वे सब उन पशुओं बदल जायें जिनसे अधिक-से-अधिक उनकी शक्लें मिलती हों! एक क्षण के बाद ही वे सुअर हो गये और उनके समूह ने उस जादूगरनी को घेर लिया! उनके सिर, उनकी आवाज़ और उनके बाल बिलकुल सुअरों के-से थे किन्तु उन्हें कुछ देर पहले की अपनी माननीय स्थिति का अब भी पूरा ज्ञान था। इस प्रकार वंदी बन जाने पर वे बड़े संतप्त हुये। एक क्षण बाद ही सर्स ने उनके सामने जैतून के फल और वे सब चीजें डाल दी जिन्हें सुअर बड़े चाव से खाते हैं!

इस आमूल-परिवर्तन से उस समूह का बचा हुआ व्यक्ति बुरी तरह डर गया। वह दौड़कर जहाज़ पर आया और उसने यूलिसीज़ से प्रार्थना की कि वह वह स्थान जल्द-से-जल्द छोड़ दे। किन्तु यूलिसीज़ ने अपने साथियों को उस स्थिति में छोड़कर जाने से इन्कार कर दिया! उल्टा वह उस जादूगरनी के निवास-स्थान की खोज में निकल पड़ा। उसे राह में एक दूसरे वेष में देवदूत मरकरी मिला। उसने उसे एक जड़ी तो दी ही, जो उसके सब साथियों को उन पेय पदार्थों के दुष्प्रभावों से मुक्त कर सकती थी, उसे उसके साथियों की मुक्ति की युक्ति भी बतलाई!

उसने मरकारी के सारे आदेशों का अक्षरशः पालन किया। वह सर्स के महल में पहुँच गया! उसके सामने भी नाश्ता रक्खा गया और उसने कुछ जलपान किया भी, किन्तु जब सर्स ने उस पर भी अपना जादू का डंडा फिराना चाहा तो उसने उसे धमकाया कि यदि वह उसके सब के साथियों को उनकी मानवीय स्थिति में उसे तुरन्त ही न सौंप देगी तो वह उसे मार डालेगा! भयातंकित सर्स ने उसकी इच्छा की पूर्ति तो की ही, वह उससे इतनी प्रभावित भी हुई कि उसने उसे और उसके साथियों को पूरे एक साल तक अपने अतिथि के रूप में अपने यहां रक्खा! साल भर बीत जाने के बाद उसके (यूलिसीज़) साथियों ने उससे घर लौटने का आग्रह किया, अतएव उसने सर्स से कहा कि उसे अपने साथियों

देगी जिससे वह लट्ठों की एक डोंगी बना ले। यह डोंगी उसे देवताओं के अनुग्रह से उसके द्वीप ईथाका तक पहुँचा देगी।

यूलिसीज़ आनन्द के मारे फूला नहीं समाता। वह बहुत दिनों के बाद भरपेट भोजन और जी-भर विश्राम करता है। इस तरह एक रात आराम करने पर वह दूसरे दिन सवेरे बीस पेड़ काट डालता है और शीघ्र ही एक डोंगी तैयार कर लेता है! कैलिप्सो उस डोंगी में सभी आवश्यक सामान रख देती है और वह उस द्वीप से विदा होता है।

सत्तरह दिन तक तारों के सहारे चलने के बाद वह फ़िनैशिया-द्वीप के समीप पहुँचता ही है कि नेप्च्यून सावधान हो-उठता है क्योंकि वह जानता है कि उसके शत्रु का बचकर निकल-भागना सम्भव है! अतएव वह अपने त्रिशूल से उस पर प्रहार करता है। इस त्रिशूल के एक प्रहार से ही समुद्र में तूफ़ान आ जाता है और उससे टकराकर यूलिसीज़ की डोंगी टुकड़े टुकड़े हो जाती है। यूलिसीज़ का हृदय इस भय से बैठने-सा लगता है कि कहीं ऐसा न हो कि वह समुद्र में विलीन हो जाये, परन्तु इसी समय समुद्र की अप्सरा लिउकोथिया उसे एक प्राण-रक्षक रूमाल देती है और साथ ही यह आदेश भी कि जब वह सकुशल धरती पर पहुँच जाये तो उसे फिर समुद्र की लहरों को सौंप दे! यूलिसीज़ उसके प्रति कृतज्ञता प्रकट करता है। अब वह इस रूमाल के कारण लहरों पर लहराता चलता है, पानी में डूबता नहीं, किन्तु,

'एक विशाल लहर ने फेंका यूलिसीज़ को तट की ओर,
तट कि घिरा था जो पहाड़ियों से भीषण ऊँची-ऊँची!
खाल न रह जाती शरीर पर यहाँ हड्डियाँ होतीं चूर,
यदि न मिनर्वा के कारण यह भाव हृदय में जग जाता—
आगे बढ़े शक्ति-साहस से और शिला को फिर लें थाम!
यही किया उसने, फिर उससे चिपट गया वह ताक़त भर!
बहुत कड़े हाथों से उसने पकड़ी शिला रगड़ से, पर,
छिले हाथ, कट गई खाल, दो एक दांत भी टूट गये,
पीड़ा से रो-उठा, किन्तु वह एक बार इस तरह बचा!
और, वेग लहरों का उसने सहन किया फिर कुछ क्षण तक!
किन्तु, दूसरी तेज़ लहर ने उसे घसीटा, ज्यों बिल से
कोई मछुआ बुद्धि-शक्ति से ले घसीट पशु 'कटिल' कभी,
जो कि मुलायम होता है, ख़ुद रक्षा करता है अपनी,
कभी कभी जिसके ऊपर रहते हैं पत्थर के ढेले!
कैसे भला टिके रहते फिर उस पत्थर पर उसके हाथ!
छूटे, बहा तुरत वह, पहुँचा शीघ्र बीच में सागर के!
किन्तु मिनर्वा ने चिन्ता की मन में जगा विचार नया-
क्यों न शक्ति कर ले संचित औ, बढ़े साथ उन लहरों के

पर्व ग्यारह—

फ़ीशिया के निवासी यह सारी कथा इतने दत्तचित्त होकर सुनते हैं मानो वे सोते हो न रहे हों। इस बीच में, एकाएक, यूलिसीज़ कुछ क्षण के लिये रुकता है और राजा इस विराम का कारण जानने के लिये उत्सुक हो उठता है। वह उससे अनुरोध करता है कि वह अपनी कथा पूरी करे! अतः यूलिसीज़ फिर आरम्भ करता है और एगेमेम्नान के प्रेत से अपनी भेंट का वर्णन करता है! एगेमेम्नान को उसके ट्राय से लौटने के बाद उसकी पत्नी और उसकी पत्नी के प्रेमी ने मार डाला था! वह कहता है कि एगेमेम्नान ने उससे अपने पुत्र की कुछ खोज-खबर लेनी चाहिये, किन्तु उसने उत्तर में खेद प्रकट किया कि वह उसके विषय में बिल्कुल अनजान है! इसके बाद ही उसकी निगाह एकीलीज़ पर पड़ी! वह मृतात्माओं का अधिपति होने के बावजूद भी बड़ा दुखी था! उसने बहुत विदग्ध होकर उससे कहा कि अच्छा होता कि इन आत्माओं का राजा होने के बजाय वह एक दीन, हीन साधारण मज़दूर होता! अतएव एकीलीज़ को आश्वासन देने के विचार से उसने उसके पुत्र की बड़ी प्रशंसा की और रण क्षेत्र में प्रदर्शित उसके शौर्य की बहुत बढ़ा-चढ़ा कर चर्चा! उसने उससे कहा कि ट्राय के लिये जाने के लिये छिड़े युद्ध में वह हाथ-हथियार लेकर लड़ा और लकड़ी के घोड़े में बन्दी योद्धाओं में वह भी एक था। इस बातचीत के बाद ही एकीलीज़ की आत्मा अदृश्य हो गई। फिर कितने ही प्रेत उसके सम्मुख आये। केवल ऐजैक्स का प्रेत ही उसके सम्मुख नहीं आया! वह भूला न था और उसके हृदय में रह रह कर यह बात खटक-उठती थी कि यह वही यूलिसीज़ है जिसने रण-क्षेत्र में एकीलीज़ का कवच जीत लिया था। शीघ्र ही वे सब प्रेत गायब हो गये।

वहाँ इन प्रेतात्माओं के अतिरिक्त उसने नर्क के निकृष्ट प्रदेशों (हेड्ज़) के न्यायाधीशों को भी देखा और पाताल में स्थित तलहीन टारटरस नामक खाड़ी के अपराधियों को भी। किन्तु जब उस राष्ट्र के असंख्यक मृत-प्राणियों ने उसे घेर लिया तो वह डर गया और जी छोड़कर अपने जहाज़ की ओर भागा। जहाज़ पर पहुँचकर व्यवस्थित होते ही उसे पता भी न लगा कि कब उसका जहाज़ सर्स के समुद्र-तट पर जा-लगा।

पर्व बारह—

इस बार इस द्वीप में उसने अपने मृत साथियों को दफ़नाया, सर्स से अपनी हेड्ज़-यात्रा का वृतान्त बतलाया और उससे विदा चाही। सर्स ने सहर्ष उसे अनुमति दे दी किन्तु सावधान किया कि उसे राह में समुद्री परियाँ मिलेंगी जो अपने मधुर कंठ की सहायता से अपने शिकार फँसाती हैं, भयानक चट्टानें मिलेंगी, सिल्ला नामक एक समुद्री-राक्षसी मिलेगी, मेसेनियन[1] खाड़ी

[1] यूनान के मेसेनिया नामक पश्चिमी प्रदेश की खाड़ी—

हो रानी की निगाह उसके कपड़ों पर पड़ती है जो उन्हें पहिचान लेती है और यूलिसीज़ से प्रश्न करती है कि ये उसे कैसे और कहां से मिले ! वह सारी कथा जान लेने पर बड़ी सन्तुष्ट और बड़ी प्रसन्न होती है, क्यों कि वह अनुभव करती है कि उसकी पुत्री बड़ी दयालु, दानशील और विवेक-सम्पन्न है। राजा और रानी विश्राम करने के लिये प्रस्थान करने के पहले एक बार फिर उस यात्री को वचन देते हैं कि वे उसे शरण तो देंगे ही, उसकी हर प्रकार रक्षा भी करेंगे !

पर्व आठ—

दूसरे दिन राजा अपने अतिथि को जन साधारण की एक सभा में ले जाता है वहां मिनर्वा ने उस स्थान के लोगों को पहले से ही बुला रक्खा है। राजा ऐलसिनस अपना आसन ग्रहण करता है और सभा में सर्व साधारण को यह सूचना देता है कि एक अज्ञात उनकी सहायता का इच्छुक है। इसके बाद वह प्रस्ताव करता है कि एक भोज हो जिसमें राज्य का अंधा-चारण डिमॉडोकस अपने गानों से सब का मनोरंजन करे, तत्पश्चात अतिथि को अनेकानेक उपहार भेंट किये जावें, और इस प्रकार उसे विदा दी जाये ! प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत होता है।

भोज की व्यवस्था होती है। भोज आरम्भ होता ही है कि चारण अपना गाना आरम्भ करता है, जिसमें यूलिसीज़ और एकीलीज़ में हुये एक द्वंद का वर्णन है। यूलिसीज़ चुपचाप गाना सुनता रहता है किन्तु इस गाने के स्वर से उसके हृदय के सारे घाव हरे हो-उठते हैं, सारा युद्धमय अतीत उसके सम्मुख इतना सजीव और स्पष्ट हो उठता है कि उसकी आँखों में आँसू आ जाते हैं, और उन्हें छिपाने के लिये वह अपने लबादे को सिर के ऊपर खींच लेता है ! राजा इस भावुकता को देखकर चारण को गीत समाप्त करने का आदेश देता है और प्रस्ताव करता है कि अब दूसरे खेल-तमाशे हों ! आज्ञा का पालन किया जाता है और दौड़, कुश्ती और चक्र आदि में अपने कौशल का प्रदर्शन करने के बाद प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले यूलिसीज़ का मज़ाक बनाते और उसे चुनौती देते हैं कि वह भी शक्ति और चातुरी के खेलों में भाग लेकर अपने कौशल और अपनी प्रवीणता का परिचय दे। यूलिसीज़ उनके तीखे व्यंग्यों से आहत हो जाता है और उत्तेजित हो-उठता है। वह चक्र को उनके सब से दूर के लक्ष्य से बहुत दूर फेंक देता है और कहता है कि यद्यपि इधर उसे अभ्यास नहीं रहा है, फिर भी वह शक्ति के खेलों में भी उनमें से किसी का भी सामना करने से नहीं डरता, केवल यह कि किन्हीं कारणों से वह दौड़ और नाच की प्रतियोगिताओं में ही भाग लेने में असमर्थ है ! अतएव उसका पौरुष और क्षमा प्रकट हो उठते हैं और हीनता की स्पष्ट स्वीकारोक्ति दूसरी पंक्ति में नज़र आती है ! किन्तु हीन-दल व्यर्थ की आलोचना करने से अब भी बाज़ नहीं आता ! इस बीच में नवयुवक-दल नाचता रहता है और तब तक नाचता रहता है जब तक कि चारण एक दूसरा ऐसा गीत आरम्भ नहीं करता, जिसमें बतलाया गया है कि वल्कन ने कैसे एक दुष्चरित्रा पत्नी को दंड दिया !

लिपट गया और इस प्रकार उन संकटों से बाल-बाल बचा। तत्पश्चात् नौ दिन तक समुद्र की लहरें उसे जी भर उछालतीं और उससे खेल-करती रहीं। अन्त में वह कैलिप्सो के द्वीप ऑजिजिये के तट पर जा लगा! वहाँ से वह सीधा फ़ियेशिया आ पहुँचा और इस समय राज्य-सभा में उपस्थित है!

पर्व तेरह—

यूलिसीज़ इस प्रकार अपने पिछले दस वर्षों के भ्रमण की कथा समाप्त करता है। इसके बाद कितनी ही और बातें होती हैं। तब राजा उसे भोज देता है। राजा भोज के बाद उसे कितने ही मूल्यवान उपहार भेंट करता है और उसे जहाज़ पर भेजकर उसके घर पहुँचने की सारी आवश्यक व्यवस्था कर देता है।

जहाज़ रवाना होता है और यूलिसीज़ जहाज़ के अगले भाग में निश्चिंत होकर सो जाता है। कुछ समय के बाद जहाज़ एक अत्यन्त सुरक्षित इथाकन-खाड़ी में पहुँचता है। यहाँ फ़ियेशिया के मल्लाह सुप्त यूलिसीज़ और सारे माल-खज़ानों को ज्यों का त्यों छोड़ देते हैं और अपने देश की राह लेते हैं। वे यहाँ तक आने कष्ट सहन करने के लिये धन्यवाद की भी अपेक्षा नहीं करते। वे सब अपने बन्दरगाह के समीप आ जाते हैं और अपने बन्दरगाह में घुसने की कोशिश करते ही हैं कि नेप्ट्यून उनके जहाज़ को लक्ष्य कर अपना त्रिशूल फेंककर मारता है! वह इन मल्लाहों को भी अपना शत्रु समझता है क्योंकि इन्होंने ही उसे घर पहुँचने में मदद दी है। इस प्रकार उनका जहाज़ एक समतल चट्टान की शक्ल में बदल जाता है! कहना न होगा कि हम आज भी उसे इस चट्टान के रूप में देख सकते हैं।

इधर इसी बीच में यूलिसीज़ जाग जाता है और सारी स्थिति समझकर अपनी सारी सम्पत्ति एक गुफ़ा में छिपा देता है। शीघ्र ही छद्म वेश में मिनर्वा उससे मिलती है। वह उससे आग्रह करती है और उत्तर में वह अपना एक विलक्षण लेखा देता है, जिसे वह बड़े ध्यान से सुनती है। इसके बाद ही वह उसे अपना परिचय देती है और उसे विश्वास दिलाती है कि उसकी पत्नी सर्वप्रकारेण स्वामिभक्त है, उस पर किसी प्रकार का भी सन्देह करना पाप है! वह उसकी पत्नी के प्रेमियों का भी उल्लेख करती है और कहती है कि उन्हें किसी की भी चिन्ता नहीं है—वे निश्चय कर चुके हैं कि जैसे ही टेलेमैकस लौटे उसे मार डाला जाये अतएव वे उसकी प्रतीक्षा में हैं। अन्त में वह उसे सलाह देती है कि वह एक बूढ़े भिखारी का रूप धारण करे, इस वेश में पहिले अपने सुअरों के पुराने रखवाले से मिले और, बाद में, जब समय आ जाये तो अपने असली रूप में अपनी उपस्थिति की घोषणा कर दे!

पर्व चौदह—

यूलिसीज़ के रूप परिवर्त्तन में मिनर्वा उसकी सहायता करती है। वह शीघ्र ही एक दीन भिखारी हो जाता है और सुअरों के बूढ़े रखवाले से भेंट करता है। वह अपने

ट्राय का पतन एवं विनाश पूर्ण हुआ और वह स्वयं और उसके साथी ट्राय के तटों से चले ! वह आगे कहता है कि उन्हें अनुकूल हवायें मिलीं और वे सब थ्रेन्स के शहर इस्मारस पहुँचे ! इसे उन्होंने जीत लिया । किन्तु बजाय इसके कि वे लूट के माल के साथ तुरन्त अपनी राह लेते, जैसा कि उसका आग्रह था, वे सब वहां रुके रहे और अन्त में अपनी आशा के विपरीत शत्रु को वहां पाकर हक्का-बक्का हो गये, किन्तु उनसे किसी प्रकार जान बचाकर निकल-भागे ! फिर, वे एक तूफ़ान के कारण कई दिनों तक त्रस्त रहने के बाद कमल-भोजी देश के समीप आ-पहुँचे ! यह एक अद्भुत देश था । यहाँ के लोग एक प्रकार के निद्रावाहक कमल की कलियाँ और उसके फूलों को खाकर जीवित रहते थे ! अतएव यहां पहुँचने पर उसने नगर की स्थिति समझ-आने के लिये तीन व्यक्ति भेजे । वह बहुत देर तक उनकी प्रतीक्षा करता रहा किन्तु वे न लौटे । तब चिन्ता होने के कारण वह स्वयं उन्हें खोजने के लिये निकल पड़ा । उसने उन्हें खोज निकाला किन्तु देखा कि उन्होंने भी उसी कमल की कलियां खा ली थीं वे भी बेहोश थे, और उन्हें अपनी महत्ता महत्त्वाकांक्षा अथवा अपनी मातृभूमि का कुछ भी ध्यान न था । वह उन्हें किसी प्रकार जहाज़ तक लाया, उसने उन्हें जहाज़ में जकड़ा और आदेश दिया कि वह विनाशकारी तट तुरन्त ही छोड़ दिया जाय, तीव्र गति से आगे बढ़ा जाय और रास्ते में कहीं रुकने के नाम भी न लिया जाय!

वे चल पड़े और शीघ्र ही वल्कन के सहकारी साइक्लोपीज़ के द्वीप के समीप पहुंचे । यहां नया भोजन और ताज़ा पानी लेने के विचार से उन्होंने पास के एक द्वीप के किनारे लंगर डाला । तुरन्त ही उसकी निजी इच्छा हुई कि वह पहले साइक्लोपीज़ से भेंट करे और तब आगे बढ़े । अब वह सबसे बहादुर बारह वीरों और सुस्वादु मदिरा से भरी खाल की एक बोतल साथ लेकर साइक्लोपीज़ के सहकारी पॉलिफ़ेमस से मिलने के लिये चल पड़ा ! उसने उसकी गुफ़ा खोजी और उस दैत्य की गुफ़ा में अपने साथियों के साथ घुसने के बाद उसने आग जलाई । वे सब उस आग को घेर कर बैठ गये और 'पॉलिफ़ेमस' की प्रतीक्षा करने लगे ! वह यहाँ घी-मक्खन आदि का व्यापार करता था और शीघ्र ही लौटने वाला था । उन्हें बहुत देर तक राह नहीं देखनी पड़ी कि एक आँख वाला वह दैत्य अपने पशु-समूह सहित अन्दर आया और उसने एक ऐसी चट्टान से उस गुफ़ा का मुंह बन्द कर दिया जिसे और कोई उसके स्थान से टस से मस न कर सकता था । इसके बाद ही वह अपनी भेड़ों को दुहने और पनीर बनाने में व्यस्त हो गया ! उसने उन की ओर ज़रा भी ध्यान नहीं दिया । वह अपना सारा काम-काज करता रहा और अन्त में भोजन करते समय उसने उन सबको देखा ! उन्होंने बहुत विनम्रता से यदि कुछ त्रुटि हुई हो तो उसके लिये क्षमा-याचना की । दैत्य ने बहुत कर्कश शब्दों में प्रश्न किया कि क्या वे कुल उतने ही आदमी हैं । उसे उत्तर मिला और उसने उसके (यूलिसीज़) शब्दों पर विश्वास कर लिया कि वे समुद्र की एक दुर्घटना से ग्रस्त और त्रस्त लोग हैं । इसके बाद वह कुछ न बोला किन्तु शयन

---

[1]गोल आँखोंवाली राक्षसी जाति के गरड़िये जो आदमियों को खा जाते थे और जूपिटर से भी न डरते थे !

उसकी सलाह से अपनी पत्नी के प्रेमियों के विनाश की योजना बनाये। टेलेमैकस आश्चर्य से अवाक् हो उठता है और प्रसन्नता से फूला नहीं समाता, जब उसे यह ज्ञात होता है कि वह भिखारी प्रसिद्ध, तेजवान योद्धा तो है ही, उसका पिता भी है। आनन्द के प्रथम क्षण समाप्त हो जाते हैं। अब पिता बात-बात में अपने पुत्र को सलाह देता है कि वह शीघ्रातिशीघ्र घर वापस लौट जाय, अपनी माँ के प्रेमियों से इस प्रकार की मीठी-मीठी बातें करे कि सन्देह उनसे कोसों दूर रहे और इस प्रकार अवसर निकाल वह सारे शस्त्र भोज के कमरे से हटा दे और उसकी प्रतीक्षा करे—वह बहुत ही शीघ्र एक भिखारी के रूप में वहाँ पहुँच जायेगा!

जिस समय पिता और पुत्र इस प्रकार विचार-विनिमय कर रहे हैं, टेलेमैकस का जहाज़ बन्दरगाह पर पहुँचता है, किन्तु टेलेमैकस को उसमें न पाकर उसके प्राण-घातक खेद प्रकट करते हैं कि उनका शिकार किसी प्रकार हाथ से निकल गया। यों भी उनका साहस नहीं था कि वे उस पर हमला करते क्योंकि ऐसा करने पर पिनेलोपी का रुष्ट और प्रतिकूल हो जाना स्वाभाविक था, किन्तु अब वे भविष्य के लिये भी अपनी प्रेमिका को वचन देते हैं कि वे सदैव ही उसके पुत्र को अपना मित्र समझेंगे!

इसी बीच स्वामिनि को सन्देश देकर सुअरों का रखवाला अपनी कुटिया में लौट आता है। वह टेलेमैकस और उस भिखारी के साथ वह संध्या बिताता है किन्तु, उसे कुछ भी सन्देह नहीं होता कि वह भिखारी, भिखारी नहीं है, प्रत्युत उसका स्वामी है!

पर्व सत्तरह—

दूसरे दिन सूर्योदय होते-होते टेलेमैकस शीघ्रता से अपने महल की ओर चल पड़ता है। दोपहर को रखवाला इसी महल का रास्ता उस अनजान भिखारी यूलिसीज़ को दिखलाता है!

महल में टेलेमैकस की माँ उसका आलिंगन करती है। वह थोड़ी देर तक अपनी माँ से कितनी ही बातें करता रहता है, किन्तु इसके बाद ही उससे आग्रह करता है कि वह कमरे में जाकर मुँह धो डाले ताकि चेहरे से आँसुओं के चिह्न मिट जाय! इधर, वह एक यात्री से मिलने और उसका स्वागत करने के लिये बाज़ार की ओर चल पड़ता है। वह वहाँ पहुँचता है और समुचित अतिथि-सत्कार प्रदर्शित करके उसके स्वागत का कार्य समाप्त करता है। शीघ्र ही वह फिर महल में वापस आता है और माँ से विस्तार में अपनी यात्रा की चर्चा करता है।

इधर जब टेलेमैकस इस प्रकार व्यस्त है, प्रेमीगण बुरी तरह ऊधम मचा रहे हैं और एक भोज का क्रम चल रहा है, उधर यूलिसीज़ के चरण वेग से बढ़ रहे हैं और वह शीघ्र ही महल में प्रवेश करता है! कोई उसे देख नहीं पाता, किन्तु जैसे ही वह आँगन में आता है, उसका पुराना शिकारी कुत्ता ऐरगस उसे पहचान लेता है, प्रेम से दुम हिलाने लगता है और चाहता है कि किसी प्रकार उसके पास पहुँच जाये, किन्तु वह ऐसा नहीं कर पाता क्योंकि एक तो जंजीर से बँधा हुआ है, दूसरे रोगग्रस्त और मरणासन्न है! यूलिसीज़ की निगाह उस पर अटक जाती है! वह देखता है कि कुत्ते की आँख से एक आँसू टपका और उसने उसे बड़ी होशियारी से छिपा

छोड़ दिया और अपनी राह ली !

सवेरा हुआ। पॉलिफ़ेमस कराहते हुए उठा, उसने चट्टान सरका कर एक तरफ कर दी और उसके पास ही हाथ फैलाकर खड़ा हो गया, क्योंकि उसे आशा थी कि वन्दी भागेंगे और इस तरह वह उन्हें पकड़ सकेगा। किन्तु उसने (यूलिसीज़ ने) अपने को और अपने साथियों को भेड़ों के पेटों से बाँध लिया। इस प्रकार वे सब के सब भेड़ों के घने ऊन में चिपट कर भेड़ों के साथ ही गुफ़ा के बाहर निकल आये। दैत्य अंधा था, अतएव यह देखने के लिए कि उसकी भेड़ों पर अजनबी तो नहीं सवार थे, उसने अपनी सारी भेड़ों की पीठ पर हाथ फेरा। उसने स्पर्श से अपना प्रिय भेड़ा पहिचान लिया और उसकी धीमी चाल से अनुमान किया कि इस प्रकार, असाधारणतया, धीरे-धीरे चलकर वह उसके घावों के प्रति सहानुभूति प्रकट कर रहा है। इस तरह सब भेड़ों के साथ उसका प्रिय भेड़ा भी बाहर निकला। दरवाज़े की ओर उसका मुख था। वह अपने ऊन और उन सबके बोझसे दबा जारहा था, और अन्त में आगे न बढ़ सका, रुक गया। उसे इस प्रकार रुकता पाकर दैत्य ने अचरज किया कि ऐसी क्या नई बात है कि आज वह भेड़ा सबके बाद बाहर निकल रहा है, ऐसा तो पहिले कभी नहीं हुआ। वह तो हमेशा ही सारी भेड़ों के आगे रहता था, शक्ति से कूद-कूद कर सबके आगे दौड़ता चलता था, सबसे आगे के पंक्ति में रहकरे चरागाहों की हरी हरी घास चरता था, छलांगे भरता सबसे पहले पानी पीने के लिये पानी के सोतों पर पहुँचाता था और संध्या के समय सबसे पहिले गुफ़ा को लौटता था। वह सर मारता था, किन्तु उसकी समझ में न आता था कि इस दिन ही क्यों उसका प्रिय भेड़ा हर मामले में सबके पीछे है। उसे विश्वास हो गया कि सचमुच ही वह अपने स्वामी के आँख के लिए संतप्त है, जिसे एक हत्यारे ने फोड़ दिया और जिसके लिए उस व्यक्ति ('यूलिसीज) और उसके साथियों ने उसे इतनी शराब पिलाई कि वह बेहोश हो गया। सहसा ही उसे लगा जैसे कि उसके शत्रु सुरक्षित नहीं हैं और उसने तुरन्त ही चाहा कि उसका प्रिय भेड़ा उसकी इस धारणा का समर्थन करे ! उसकी कामना थी कि वह भेड़ा उसकी धारणा का समर्थन ही न करे प्रत्युत उनके छिपने के स्थान का पता भी दे ! यही नहीं, बल्कि वह यह भी चाहता था कि इस प्रकार पता पाने पर वह स्वयं जाकर उन्हें खोजे, उनके दिमाग इस तरह पृथ्वी पर घंटों रगड़े कि वे सब कुत्तों की मौत मरें और इस तरह वह उस पीड़ा और उस यातना को बदला लेकर, जिसके लिये कोई 'नोमैन' जिम्मेदार था, वह सन्तोष की सांस ले।

किन्तु ऊपर लिखी युक्ति से गुफ़ा से बाहर आने पर उसने ('यूलिसीज़) अपने और अपने साथियों के बन्धन काटे। इसके बाद वह उस दैत्य की भेड़ों को हांक कर अपने बेड़े तक ले गया, जिसे उसने एक खाड़ी में छिपा रक्खा था ! इस तरह पॉलिफ़ेमस के स्थान से बहुत दूर आने पर उसने चिल्लाकर ताने भरी ऊंची आवाज़ में अपना वास्तविक नाम बताया और उसे अपने और अपने साथियों के बचकर भाग निकलने से अवगत कर दिया। दैत्य बड़ा क्रोधित हुआ। वह बड़ी ज़ोर से गरजा और फिर आई हुई आवाज़ की दिशा में चट्टानें फेंक-फेंक कर मारने लगा। अन्तमें उसने घोर सन्ताप से शपथ ली और ललकार कर कहा कि उसका पिता

नहीं समाते और प्रसन्नता में गाते और नाचते हैं। वह उन्हें गम्भीर होकर सलाह देता है कि अब उन्हें यह नाटक समाप्त करना चाहिये और अपने-अपने घरों को लौट जाना चाहिये।

पर्व उन्नीस—

प्रेमीगण अपने-अपने घरों को चल देते हैं। उनके जाने के बाद 'यूलिसीज़' शस्त्रों को हटाने के कार्य में टेलेमैकस की सहायता करता है और वह स्वामिभक्ता दाई घोड़े पर सवार होकर पहरेदारी करती है कि कहीं ऐसा न हो कि कोई महल की स्त्री उधर आ निकले! इस प्रकार रहस्य पूर्ण ढंग से मिनर्वा, के सहयोग से पिता और पुत्र शस्त्र हटाने का कार्य सम्पन्न करते हैं। और आग के पास तापने के विचार से बैठ जाते हैं!

पिनेलोपी आती है और उससे प्रश्न करती है कि वह कब और कैसे यूलिसीज़ से मिला! इस बार वह अज्ञात यूलिसीज़ का इतना सही वर्णन करता है कि वह उससे विशेषकर प्रभावित होती है और उस पर दया दिखलाने के विचार से दाई को आदेश देती है कि वह आये और उसके पैर धोये! दाई आती है और पैर धोने का घरेलू कार्य चलता रहता है कि पिनेलोपी ऊंघने लगती है। उसी क्षण दाई को एक धक्का सा लगता है। उसे अच्छी तरह याद है कि उसके स्वामी के पैर में एक घाव का चिन्ह था, और इस समय जब की वह अपनी हथेली उसके पैर पर फिरा रही है, वह स्पर्श में वैसे ही एक घाव के चिन्ह का अनुभव करती है। इस भावना के आते ही, कि यह भिखारी और कोई नहीं, बस उसका स्वामी है, उसके हाथ से पैर छूट जाता है। पैर के गिरने की ध्वनि होती है और पानी के बरतन के एक किनारे पर पैर के आघात से बरतन का थोड़ा पानी छलक जाता है। वह भावावेश में रोने लगती है। उसके हृदय और बुद्धि में हर्ष और शोक का अंधड़ आ जाता है। उसकी आँखें भर जाती हैं और उसके मुँह से शब्द नहीं निकलते! वह बड़े प्रयत्न के बाद स्नेह भरे स्वर में यूलिसीज़ से प्रश्न करती है कि क्या वही, और कोई न होकर, उसका स्वामी, उसका बच्चा, उसका प्यारा [1]ऑडीसियस है। किन्तु शीघ्र ही वह उसे शान्त रहने का संकेत करता है कि उसकी उपस्थिति की जानकारी और लोगों को न हो सके! बेचारी पिनेलोपी ऊँघकर सो जाती है। उसे क्या पता कि यूलिसीज़ उसके पास ही बैठा है और उसे दाई ने पहचान भी लिया है, किन्तु यह आदेश मिल चुका है कि वह जानकर भी अनजान बनी रहे!

पिनेलोपी सोकर उठती है और फिर यह कह कर बात चलाती है कि उसने स्वप्न में देखा है कि उसके सारे प्रेमी मर गये हैं। फिर भी उसकी धारणा है कि सपने दो तरह के होते हैं—एक तो वे जो निद्रा के देवता 'सोमनस' के महल के सींग वाले फाटक से दुनिया में आते और सच होते हैं, दूसरे वे जो धोखा देनेवाले झूठे और छलिया होते हैं और एक हाथी के दांत

[1] यूलिसीज़ को ही ऑडियस कहते हैं। यही कारण है कि इस महाकाव्य का नाम ऑडिसी है।

इस प्रकार सात दिन तक वे सब बड़े परिश्रम से बेड़ा खेते रहे। आठवें दिन उनके बेड़े को एक बन्दरगाह मिला जो 'लिस्ट्रिगोनियन' (मनुष्य मांस-भक्षी राक्षसों) का बन्दरगाह था। इन राक्षसों के पंजों से कुछ ही प्राणी बच सके। अपने इस प्रकार बिछुड़-गये मित्रों के भाग्यों पर दुःख प्रकट करते हुये उन्होंने फिर सर्स के द्वीप पर लंगर डाला। यहाँ अपने कुछ साथियों के साथ यूलिसीज़, जहाज़ पर ही रहा किन्तु शेष साथी अन्न-पानी की तलाश में निकल पड़े। अन्यलोगों ने दूर पर एक अच्छा सा मकान देखा। ये समीप गये और इन्हें पता लगा कि वह सर्स नामक एक जादूगरनी का निवास स्थान था। वह जादूगरनी इन सबके आगमन से अवगत थी अतएव उसने एक दावत और स्वादिष्ट पेय की व्यवस्था पहिले से ही कर रखी थी। इन सबके वहाँ पहुँचने पर उसने एक को छोड़कर सबको अपनी मधुर आवाज़ से मोहित और वशीभूत कर लिया और उन्हें अपने महल में गद्दों पर बैठाया! उसके आदेश से उनके सामने पनीर और अन्य खाद्य-वस्तुओं के साथ मदिरा और अन्य मादक और घातक पदार्थ लाये गये। उन्होंने जी भर खाया-पिया। फल यह हुआ कि थोड़ी ही देर बाद उन्हें अपने घरबार और अपने देश की कुछ भी सुधि न रही! अब घृणा से उसने अपना जादू का डंडा उनपर फिराया और कहा कि वे सब उन पशुओं बदल जायें जिनसे अधिक-से-अधिक उनकी शक्लें मिलती हों! एक क्षण के बाद ही वे सुअर हो गये और उनके समूह ने उस जादूगरनी को घेर लिया! उनके सिर, उनकी आवाज़ और उनके बाल बिलकुल सुअरों के-से थे किन्तु उन्हें कुछ देर पहले की अपनी माननीय स्थिति का अब भी पूरा ज्ञान था। इस प्रकार बंदी बन जाने पर वे बड़े संतप्त हुये। एक क्षण बाद ही सर्स ने उनके सामने जैतून के फल और वे सब चीजें डाल दी जिन्हें सुअर बड़े चाव से खाते हैं!

इस आमूल-परिवर्तन से उस समूह का बचा हुआ व्यक्ति बुरी तरह डर गया। वह दौड़कर जहाज़ पर आया और उसने यूलिसीज़ से प्रार्थना की कि वह वह स्थान जल्द-से-जल्द छोड़ दे। किन्तु यूलिसीज़ ने अपने साथियों को उस स्थिति में छोड़कर जाने से इन्कार कर दिया! उल्टा वह उस जादूगरनी के निवास-स्थान की खोज में निकल पड़ा। उसे राह में एक दूसरे वेष में देवदूत मरकरी मिला। उसने उसे एक जड़ी तो दी ही, जो उसके सब साथियों को उन पेय पदार्थों के दुष्प्रभावों से मुक्त कर सकती थी, उसे उसके साथियों की मुक्ति की युक्ति भी बतलाई!

उसने मरकारी के सारे आदेशों का अक्षरशः पालन किया। वह सर्स के महल में पहुँच गया! उसके सामने भी नाश्ता रक्खा गया और उसने कुछ जलपान किया भी, किन्तु जब सर्स ने उस पर भी अपना जादू का डंडा फिराना चाहा तो उसने उसे धमकाया कि यदि वह उसके सब के साथियों को उनकी मानवीय स्थिति में उसे तुरन्त ही न सौंप देगी तो वह उसे मार डालेगा! भयातंकित सर्स ने उसकी इच्छा की पूर्ति तो की ही, वह उससे इतनी प्रभावित भी हुई कि उसने उसे और उसके साथियों को पूरे एक साल तक अपने अतिथि के रूप में अपने यहां रक्खा! साल भर बीत जाने के बाद उसके (यूलिसीज़) साथियों ने उससे घर लौटने का आग्रह किया, अतएव उसने सर्स से कहा कि उसे अपने साथियों

आगे आता है और कहता है कि अब वह भी प्रयत्न करेगा! उसके इस दुस्साहस पर सारे उपस्थित जन उसका उपहास करते हैं, किन्तु उनका मुंह खुला का खुला ही रह जाता है जब वे देखते हैं कि यह दुर्दशाग्रस्त भिखारी प्रत्यंचा पर तीर ही नहीं चढ़ा देता प्रत्युत तीर चलाता भी है जो बारहों छल्लों के बीच से होकर निकल जाता है।

स्वामि-भक्त सेवक कमरे के फाटकों की चौकसी पर तैनात रहते हैं कि टेलेमैकस भी अपने पिता की ओर आता है और कहता है कि वह भी उस प्रतियोगिता में भाग लेगा!

पर्व बाईस—

दूसरे ही क्षण यूलिसीज़ अपने, भिखारी के, कपड़े उतार कर एक किनारे रख देता है। इस समय वह बहुत गम्भीर दिखाई पड़ता है जैसे कि कुछ गहन समस्याओं और योजनाओं में लीन हो! वह एकाएक मुड़ता है और धनुष और तीर से भरे तरकस के साथ एक पत्थर की देहली के पास जा-खड़ा होता है। वह अपने तरकस के सारे तीखे तीर अपने पैरों के पास ज़मीन पर फेंक देता है और फिर प्रेमियों को सम्बोधित कर कहता है कि यह अरुचिकर प्रतियोगिता तो समाप्त हो गई किन्तु अब वह कुछ अद्भुत कौशल प्रदर्शित करेगा, यानी यह कि अब वह ऐसे लक्ष्य पर तीर चलायेगा जिस पर कभी किसी धनुषधारी ने तीर न चलाया हो और उसे विश्वास है कि अपोलो की कृपा से वह उसमें सफल भी होगा!

इतना कह कर वह धनुषबाण उठा लेता है और ऐनटीनस को लक्ष्य कर एक घातक बाण चलाता है। ऐन्टीनस का ध्यान इस समय दूसरी ओर है। सोने का मधु-पात्र उसके ओठों से लगा है। अतएव इस समय उसकी बुद्धि में मौत का कोई भी विचार नहीं है, उसके हृदय में मृत्यु सम्बन्धी कोई भी भय नहीं है, और कौन विश्वास करेगा कि इतनी भीड़-भाड़ और दावत के बीच में कोई उसके प्राण-हरण की बात भी सोच सकता है! अतएव, कोई प्रश्न ही नहीं उठता कि दूसरा व्यक्ति कितना बली, कितना उद्धत और कितना साहसी है। फिर भी, ऑडीसियस का तीर बड़ा सधा हुआ है, वह ऐनटीनस के कण्ठ में लगता है। बाण का फल सीधे चुभता हुआ गले के पार हो जाता है। बस, उसके हाथ से मधुपात्र छूट-गिरता है, वह लड़-खड़ा कर एक ओर को ढह-पड़ता है और उसकी नाक से गहरे रंग के रक्त की लाल धार बह-चलती है!

इस दुर्घटना के साथ ही शेष सारे प्रेमी सचेत हो उठते है और चारों ओर दृष्टि दौड़ा कर शस्त्र और बच कर भाग निकलने के दूसरे साधनों की खोज करते हैं! अब अन्त में उन्हें पता चलता है कि वे बहुत बुरी तरह घिरे हुये हैं!

शीघ्र ही एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा प्रेमी यूलिसीज़ के बाण का शिकार होता है। इसी समय, यह देख कर कि उसके तरकस में इतने तीर नहीं हैं कि, वह अपने सारे विरोधियों का संहार कर सके, वह टेलेमैकस को अस्त्रशाला से नये अस्त्र लाने का आदेश देता है!

पर्व ग्यारह—

फ़ीशिया के निवासी यह सारी कथा इतने दत्तचित्त होकर सुनते हैं मानो वे कील दी गई हों। इस बीच में, एकाएक, यूलिसीज़ कुछ क्षण के लिये रुकता है और राजा इस विराम का कारण जानने के लिये उत्सुक हो उठता है। वह उससे अनुरोध करता है कि वह अपनी कथा पूरी करे! अतः यूलिसीज़ फिर आरम्भ करता है और एगेमेम्नान के प्रेत से अपनी भेंट का वर्णन करता है! एगेमेम्नान को उसके ट्राय से लौटने के बाद उसकी पत्नी और उसकी पत्नी के प्रेमी ने मार डाला था! वह कहता है कि एगेमेम्नान ने उससे अपने पुत्र की कुछ खोज-ख़बर लेनी चाहिये, किन्तु उसने उत्तर में खेद प्रकट किया कि वह उसके विषय में बिल्कुल अनजान है! इसके बाद ही उसकी निगाह एकीलीज़ पर पड़ी! वह मृतात्माओं का अधिपति होने के बावजूद भी बड़ा दुखी था! उसने बहुत विदग्ध होकर उससे कहा कि अच्छा होता कि इन आत्माओं का राजा होने के बजाय वह एक दीन, हीन साधारण मज़दूर होता! अतएव एकीलीज़ को आश्वासन देने के विचार से उसने उसके पुत्र की बड़ी प्रशंसा की और रण क्षेत्र में प्रदर्शित उसके शौर्य की बहुत बढ़ा-चढ़ा कर चर्चा की! उसने उससे कहा कि ट्राय के लिये जाने के लिये छिड़े युद्ध में वह दीन-ईमान लेकर लड़ा और लकड़ी के घोड़े में बन्दी योद्धाओं में वह भी एक था। इस बातचीत के बाद ही एकीलीज़ की आत्मा अदृश्य हो गई। फिर कितने ही प्रेत उसके सम्मुख आये। केवल एजैक्स का प्रेत ही उसके सम्मुख नहीं आया! वह भूला न था और उसके हृदय में रह रह कर यह बात खटक-उठती थी कि यह वही यूलिसीज़ है जिसने रण-क्षेत्र में एकीलीज़ का कवच जीत लिया था। शीघ्र ही ये सब प्रेत ग़ायब हो गये।

वहाँ इन प्रेतात्माओं के अतिरिक्त उसने नर्क के निकृष्ट प्रदेशों (हेड्ज़) के न्यायाधीशों को भी देखा और पाताल में स्थित तलहीन टारटरस नामक खाड़ी के अपराधियों को भी। किन्तु जब उस राष्ट्र के असंख्यक मृत-प्राणियों ने उसे घेर लिया तो वह डर गया और जी छोड़कर अपने जहाज़ की ओर भागा। जहाज़ पर पहुँचकर व्यवहित होते ही उसे पता भी न लगा कि कब उसका जहाज़ सर्स के समुद्र-तट पर जा-लगा।

पर्व बारह—

इस बार इस द्वीप में उसने अपने मृत साथियों को दफ़नाया, सर्स से अपनी हेड्ज़-यात्रा का वृतान्त बतलाया और उससे विदा चाही। सर्स ने सहर्ष उसे अनुमति दे दी किन्तु सावधान किया कि उसे राह में समुद्री परियाँ मिलेंगी जो अपने मधुर कंठ की सहायता से अपने शिकार फँसाती हैं, भयानक चट्टानें मिलेंगी, सिल्ला नामक एक समुद्री-राक्षसी मिलेगी, मेसेनियन[1] खाड़ी

[1] यूनान के मेसेनिया नामक पश्चिमी प्रदेश की खाड़ी—

३—लैटिन महाकाव्य—

लैटिन-साहित्य का मूल उद्गम यूनानी-साहित्य है। लैटिन-साहित्य यूनानी साहित्य का चिर-ऋणी रहेगा। उसके सर्वश्रेष्ठ महाकव्यों में अधिकांश या तो यूनानी रचनाओं के अनुवाद हैं या उनसे अनुप्राणित। उदाहरण के लिये 'इलियड' और 'ऑडिसी' के अनेक अनुवाद हमारे सामने हैं, जिनमें प्रथम प्रमुख और प्रसिद्ध अनुवाद रोमन-नाटकीय काव्य एवं रोमन-महाकाव्य के पिता 'लिवियस ऐंड्रानिकस' का है! इसका जन्म-काल दूसरी या तीसरी शताब्दि ई० पू० कहा जाता है! इसने अड़तीस पर्वों के एक दूसरे इतने ही अधिकारी महाकाव्य की भी रचना की थी जिसमें रोमन-इतिहास को पद्य-बद्ध करने का प्रयत्न किया था, किन्तु दुःख है कि वह अप्राप्य है।

एक शताब्दी के बाद एक दूसरे कवि 'निवियस' ने 'साइप्रियन इलियड' की रचना की और प्रथम प्यूनिक-युद्ध विषयक 'बेलम प्यूनिकम' नामक एक वीर काव्य की भी, जिसके कुछ अंश ही मिलते हैं। इसके बाद हमारे युग के पहिले की दूसरी शताब्दी में ईनियस ने देशभक्ति से प्रेरित होकर 'अनल्स' के १८ पर्वों में रोम की उत्पत्ति के गीत गाये। परन्तु इस कविता के भी कुछ ही भाग शेष हैं। इसी समय 'होस्टियस' ने 'इस्ट्रिया' शीर्षक महाकाव्य की रचना की लेकिन वह भी नष्ट हो गया। 'ल्यूक्रीशियश' की 'ऑन दी नेचर ऑफ़ थिंग्स, महाकाव्य इस क्रम में आता है। यह ज्योतिष-ज्ञान प्रधान, भौतिक महाकाव्य का एक अच्छा उदाहरण समझा जाता है।

जहां तक महाकवियों का प्रश्न है 'ऑगस्टन-युग' इस सम्बंध में विशेषतया भाग्यशाली और सम्पन्न युग कहा जा सकता है! 'ऐरगोनॉटिका' का अनुवादकर्त्ता और जूलियस सीज़र पर एक लम्बी कविता का लेखक 'प्यूबलियस टेरेनटियस वोरो', 'ल्यूसियस वारियस रूफ़स' जिसकी प्रायः सभी कवितायें खो चुकी हैं, और सबसे महान 'वरजिल', 'इनीड' जिसकी महानतम अंतिम कृति है, और दूसरी कई अन्य महान आत्मायें इसी युग की विभूति हैं। इस सर्व श्रेष्ठ लैटिन काव्य 'इनीड' के बाद ल्यूकन की 'फ़ारसेलिया' उल्लेखनीय है! इसमें कवि ने 'सीज़र' और 'पॉम्पी' की पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा का वर्णन किया है। उसके समकालीन 'स्टैटियस' ने थिबेस और अधूरी 'एकीलीज़' में सर्वयुग-सम्मानित 'थीब्ज़ चक्र', और 'ट्राय-चक्र', को अपना आधार माना है। इसी युग में 'सिलयस इटालियस' ने दूसरे प्यूनिक-युद्ध पर एक लम्बा काव्य लिखा और 'वलेरियस फ़्लैकस' ने 'ऐरगोनाटिका' का अनुवाद किया।

हमारे युग की दूसरी शताब्दी में 'क्विंटियस करटियस' ने सिकन्दर पर एक महाकाव्य

लिपट गया और इस प्रकार उन संकटों से बाल-बाल बचा। तत्पश्चात् नौ दिन तक समुद्र की लहरें उसे जी भर उछालतीं और उससे खेल करती रहीं। अन्त में वह कैलिप्सो के द्वीप ऑजिजियै के तट पर जा लगा! वहाँ से वह सीधा फ़ियैशिया आ पहुँचा और इस समय राज्य-सभा में उपस्थित है!

पर्व तेरह—

यूलिसीज़ इस प्रकार अपने पिछले दस वर्षों के भ्रमण की कथा समाप्त करता है। इसके बाद कितनी ही और बातें होती हैं। तब राजा उसे भोज देता है। राजा भोज के बाद उसे कितने ही मूल्यवान उपहार भेंट करता है और उसे जहाज़ पर भेजकर उसके घर पहुँचने की सारी आवश्यक व्यवस्था कर देता है।

जहाज़ रवाना होता है और यूलिसीज़ जहाज़ के अगले भाग में निश्चिंत होकर सो जाता है। कुछ समय के बाद जहाज़ एक अत्यन्त सुरक्षित इथाकन-खाड़ी में पहुँचता है। यहाँ फ़ियैशिया के मल्लाह सुप्त यूलिसीज़ और सारे माल-खज़ानों को ज्यों का त्यों छोड़ देते हैं और अपने देश की राह लेते हैं। वे यहाँ तक आने कष्ट सहन करने के लिये धन्यवाद की भी अपेक्षा नहीं करते। वे सब अपने बन्दरगाह के समीप आ जाते हैं और अपने बन्दरगाह में घुसने की कोशिश करते ही हैं कि नेप्ट्यून उनके जहाज़ को लक्ष्य कर अपना त्रिशूल फेंककर मारता है! वह इन मल्लाहों को भी अपना शत्रु समझता है क्योंकि इन्होंने ही उसे घर पहुँचने में मदद दी है। इस प्रकार उनका जहाज़ एक समतल चट्टान की शक्ल में बदल जाता है! कहना न होगा कि हम आज भी उसे इस चट्टान के रूप में देख सकते हैं।

इधर इसी बीच में यूलिसीज़ जाग जाता है और सारी स्थिति समझकर अपनी सारी सम्पत्ति एक गुफ़ा में छिपा देता है। शीघ्र ही छद्म वेश में मिनर्वा उससे मिलती है। वह उससे आग्रह करती है और उत्तर में वह अपना एक विलक्षण लेखा देता है, जिसे वह बड़े ध्यान से सुनती है। इसके बाद ही वह उसे अपना परिचय देती है और उसे विश्वास दिलाती है कि उसकी पत्नी सर्वप्रकारेण स्वामिभक्त है, उस पर किसी प्रकार का भी सन्देह करना पाप है! वह उसकी पत्नी के प्रेमियों का भी उल्लेख करती है और कहती है कि उन्हें किसी की भी चिन्ता नहीं है—वे निश्चय कर चुके हैं कि जैसे ही टेलेमैकस लौटे उसे मार डाला जाये अतएव वे उसकी प्रतीक्षा में हैं। अन्त में वह उसे सलाह देती है कि वह एक बूढ़े भिखारी का रूप धारण करे, इस वेश में पहिले अपने सुअरों के पुराने रखवाले से मिले और, बाद में, जब समय आ जाये तो अपने असली रूप में अपनी उपस्थिति की घोषणा कर दे!

पर्व चौदह—

यूलिसीज़ के रूप परिवर्त्तन में मिनर्वा उसकी सहायता करती है। वह शीघ्र ही एक दीन भिखारी हो जाता है और सुअरों के बूढ़े रखवाले से भेंट करता है। वह अपने

उसकी सलाह से अपनी पत्नी के प्रेमियों के विनाश की योजना बनाये। टेलेमैकस आश्चर्य से अवाक् हो उठता है और प्रसन्नता से फूला नहीं समाता, जब उसे यह ज्ञात होता है कि वह भिखारी प्रसिद्ध, तेजवान योद्धा तो है ही, उसका पिता भी है। आनन्द के प्रथम क्षण समाप्त हो जाते हैं। अब पिता बात-बात में अपने पुत्र को सलाह देता है कि वह शीघ्रातिशीघ्र घर वापस लौट जाय, अपनी माँ के प्रेमियों से इस प्रकार की मीठी-मीठी बातें करे कि सन्देह उनसे कोसों दूर रहे और इस प्रकार अवसर निकाल वह सारे शस्त्र भोज के कमरे से हटा दे और उसकी प्रतीक्षा करे—वह बहुत ही शीघ्र एक भिखारी के रूप में वहाँ पहुँच जायेगा!

जिस समय पिता और पुत्र इस प्रकार विचार-विनिमय कर रहे हैं, टेलेमैकस का जहाज़ बन्दरगाह पर पहुँचता है, किन्तु टेलेमैकस को उसमें न पाकर उसके प्राण-घातक खेद प्रकट करते हैं कि उनका शिकार किसी प्रकार हाथ से निकल गया। यों भी उनका साहस नहीं था कि वे उस पर हमला करते क्योंकि ऐसा करने पर पिनेलोपी का रुष्ट और प्रतिकूल हो जाना स्वाभाविक था, किन्तु अब वे भविष्य के लिये भी अपनी प्रेमिका को वचन देते हैं कि वे सदैव ही उसके पुत्र को अपना मित्र समझेंगे!

इसी बीच स्वामिनि को सन्देश देकर सुअरों का रखवाला अपनी कुटिया में लौट आता है। वह टेलेमैकस और उस भिखारी के साथ वह संध्या बिताता है किन्तु, उसे कुछ भी सन्देह नहीं होता कि वह भिखारी, भिखारी नहीं है, प्रत्युत उसका स्वामी है!

पर्व सत्रह—

दूसरे दिन सूर्योदय होते-होते टेलेमैकस शीघ्रता से अपने महल की ओर चल पड़ता है। दोपहर को रखवाला इसी महल का रास्ता उस अनजान भिखारी यूलिसीज़ को दिखलाता है!

महल में टेलेमैकस की माँ उसका आलिंगन करती है। वह थोड़ी देर तक अपनी माँ से कितनी ही बातें करता रहता है, किन्तु इसके बाद ही उससे आग्रह करता है कि वह कमरे में जाकर मुँह धो डाले ताकि चेहरे से आँसुओं के चिह्न मिट जाय! इधर, वह एक यात्री से मिलने और उसका स्वागत करने के लिये बाज़ार की ओर चल पड़ता है। वह वहाँ पहुँचता है और समुचित अतिथि-सत्कार प्रदर्शित करके उसके स्वागत का कार्य समाप्त करता है। शीघ्र ही वह फिर महल में वापस आता है और माँ से विस्तार में अपनी यात्रा की चर्चा करता है।

इधर जब टेलेमैकस इस प्रकार व्यस्त है, प्रेमीगण बुरी तरह ऊधम मचा रहे हैं और एक भोज का क्रम चल रहा है, उधर यूलिसीज़ के चरण वेग से बढ़ रहे हैं और वह शीघ्र ही महल में प्रवेश करता है! कोई उसे देख नहीं पाता, किन्तु जैसे ही वह आँगन में आता है, उसका पुराना शिकारी कुत्ता ऐरगस उसे पहचान लेता है, प्रेम से दुम हिलाने लगता है और चाहता है कि किसी प्रकार उसके पास पहुँच जाये, किन्तु वह ऐसा नहीं कर पाता क्योंकि एक तो जंजीर से बँधा हुआ है, दूसरे रोगग्रस्त और मरणासन्न है! यूलिसीज़ की निगाह उस पर अटक जाती है! वह देखता है कि कुत्ते की आँख से एक आँसू टपका और उसने उसे बड़ी होशियारी से छिपा

'इनीड'—इनीयस की कथा—

पर्व एक—

हमें अपनी इस अभिलाषा की सूचना देने के बाद कि वह रोमनों के वीर पूर्वजों की वीर-गाथाओं का गुणगान करना चाहता है, आरम्भ में कवि बतलाता है कि धधकते हुए ट्राय से इनीयस के बच-निकलने के सात साल बाद अ फ्रीका के तट से दूर समुद्र में एक भयंकर तूफ़ान आता है और उसका बेड़ा ख़तरे में पड़ जाता है। ऐसा लगता है जैसे कि जहाज़ पृथ्वी और स्वर्ग-नर्क की दूरी का अन्दाज़ लगा रहा है और तूफ़ान उससे कह रहा है कि वह उसे एक क्षण भी देने को तैयार नहीं है, प्रत्युत उसे अब नष्ट करता है और तब नष्ट करता है। यह तूफ़ान [1]जूनों के आग्रह पर इओलस[2] के झगड़ालू लड़कों के द्वारा उठाया गया है! किन्तु ऊपर के विप्लव से व्याकुल होकर और इनीयस की प्रार्थनाओं से द्रवित होकर समुद्र का देवता नेप्च्यून समुद्र-तल से उभरता और ऊपर आता है। वह क्रोधित होकर हवाओं को आज्ञा देता है कि वे अपनी गुफ़ाओं की राह लें, और समुद्री-परियों और मछली के आकार के अन्य समुद्री उपदेवताओं को बुलाकर उन्हें आदेश देता है कि वे इनीयस की सहायता और उसकी रक्षा करें। इसके बाद इनीयस के सात जहाज़ एक शीघ्र ही सुरक्षित खाड़ी में शरण ग्रहण करते और लंगर डालते हैं। वह अपने मित्र [3]एकेटीज़ के साथ धरती पर उतरता है और पड़ाव डालने के लिये ठीक स्थान की खोज में निकल पड़ता है। इस प्रकार इधर-उधर भटकते हुए ये दोनों मित्र अपने और अपने साथियों के लिए बारह बारहसिंगों का शिकार करते हैं! वे लौटते है, भोजन करने की व्यवस्था होती है और भोजन करने के लिए बैठते ही हैं कि इनीयस अपने साथियों को प्रसन्न और उत्साहित करने के विचार से उन्हें विश्वास दिलाता है कि उन जैसे वीरों की सन्तानों का महान शक्तिशाली और पराक्रमी होना निश्चित है!

---

[1]जूपिटर की पत्नी। [2]थिसैली का राजा जिसे जूपिटर ने हवा पर अनुशासन करने का अधिकार दे दिया था! [3]रोमनों को पूर्वजों का चरित्र-नायक जिसने पहिले तो ट्राजन युद्ध में भाग नहीं लिया, किन्तु जब एकीलीज़ ईडा पर्वत पर हमला किया तो उसने भी उससे लोहा लिया— ऐंकाइसीज़ का पुत्र।

नहीं समाते और प्रसन्नता में गाते और नाचते है। वह उन्हें गम्भीर होकर सलाह देता है कि अब उन्हें यह नाटक समाप्त करना चाहिये और अपने-अपने घरों को लौट जाना चाहिये।

पर्व उन्नीस–

प्रेमीगण अपने-अपने घरों को चल देते है। उनके जाने के बाद 'यूलिसीज़' शस्त्रों को हटाने के कार्य में टेलेमैकस की सहायता करता है और वह स्वामिभक्ता दाई घोड़े पर सवार होकर पहरेदारी करती है कि कहीं ऐसा न हो कि कोई महल की स्त्री उधर आ निकले! इस प्रकार रहस्य पूर्ण ढंग से मिनर्वा, के सहयोग से पिता और पुत्र शस्त्र हटाने का कार्य सम्पन्न करते हैं। और आग के पास तापने के विचार से बैठ जाते हैं!

पिनेलोपी आती है और उससे प्रश्न करती है कि वह कब और कैसे यूलिसीज़ से मिला! इस बार वह अज्ञात यूलिसीज़ का इतना सही वर्णन करता है कि वह उससे विशेषकर प्रभावित होती है और उस पर दया दिखलाने के विचार से दाई को आदेश देती है कि वह आये और उसके पैर धोये! दाई आती है और पैर धोने का घरेलू कार्य चलता रहता है कि पिनेलोपी ऊंघने लगती है। उसी क्षण दाई को एक धक्का सा लगता है। उसे अच्छी तरह याद है कि उसके स्वामी के पैर में एक घाव का चिन्ह था, और इस समय जब की वह अपनी हथेली उसके पैर पर फिरा रही है, वह स्पर्श में वैसे ही एक घाव के चिन्ह का अनुभव करती है। इस भावना के आते ही, कि वह भिखारी और कोई नहीं, बस उसका स्वामी है, उसके हाथ से पैर छूट जाता है। पैर के गिरने की ध्वनि होती है और पानी के बरतन के एक किनारे पर पैर के आघात से बरतन का थोड़ा पानी छलक जाता है। वह भावावेश में रोने लगती है। उसके हृदय और बुद्धि में हर्ष और शोक का अंधड़ आ जाता है। उसकी आँखें भर जाती हैं और उसके मुँह से शब्द नहीं निकलते! वह बड़े प्रयत्न के बाद स्नेह भरे स्वर में यूलिसीज़ से प्रश्न करती है कि क्या वही, और कोई न होकर, उसका स्वामी, उसका बच्चा, उसका प्यारा [1]ऑडीसियस है। किन्तु शीघ्र ही वह उसे शान्त रहने का संकेत करता है कि उसकी उपस्थिति की जानकारी और लोगों को न हो सके! बेचारी पिनेलोपी ऊँघकर सो जाती है। उसे क्या पता कि यूलिसीज़ उसके पास ही बैठा है और उसे दाई ने पहचान भी लिया है, किन्तु यह आदेश मिल चुका है कि वह जानकर भी अनजान बनी रहे!

पिनेलोपी सोकर उठती है और फिर यह कह कर बात चलाती है कि उसने स्वप्न में देखा है कि उसके सारे प्रेमी मर गये हैं। फिर भी उसकी धारणा है कि सपने दो तरह के होते हैं—एक तो वे जो निद्रा के देवता 'सोमनस' के महल के सींग वाले फाटक से दुनिया में आते और सच होते हैं, दूसरे वे जो धोखा देनेवाले झूठे और छलिया होते हैं और एक हाथी के दांत

[1] यूलिसीज़ को ही ओडियस कहते हैं। यही कारण है कि इस महाकाव्य का नाम ओडिसी है।

ही वह उससे विदा होने को घूमती है, वह उसे पहचान लेता है और चाहता है कि वह उसे चूम ले, परन्तु वह एक क्षण में ही अदृश्य हो जाती है।

अब दोनों ट्राजन वीनस द्वारा बताई-गई दिशा में बढ़ते हैं और शीघ्र ही कारथेज नगर में आ पहुँचते हैं। इसके सौन्दर्य से इनकी आंखों में चकाचौंध पैदा हो जाती है। वे देखते हैं कि नगर निवासी बड़े अध्यवसायी और परिश्रमी हैं, यही कारण है कि इतने थोड़े समय में ही नगर ने इतनी उन्नति कर ली है। नगर के बीचों बीच मन्दिर है, जिसके पीतल के फाटक ट्राय के युद्ध के दृश्यों से सुसज्जित हैं। इनकी निगाह इस मन्दिर पर पड़ती है कि एक दैवी नीहार उन्हें दूसरों की आँखों से ओझल कर देता है और वे भरी आंखों से घंटों तक विगत पराक्रम के उन स्मृति-चिन्हों को घूरते रहते हैं। यह स्थित तब तक रही-ही आती है जब तक कि डिडो स्वयं उधर से नहीं गुज़रती !

डिडो राज-दरबार में जाकर सिंहासन पर आसन ग्रहण करती है और आदेश देती है कि कुछ शीघ्र ही पकड़े गये वन्दी उसके सम्मुख उपस्थित किये जायें। वे लाये जाते हैं। इनीयस इनमें अपने लुप्त जहाज़ के कुछ नायकों को देखता है! वह उन्हें बड़ी सरलता से पहिचान लेता है और खुशी से उसकी बाछें खिल उठती हैं। वह सुनकर भी अनसुना कर देता है। वे सब रो-रो कर महारानी से तूफ़ान का वर्णन करते हैं। उनका कहना है कि उस तूफ़ान ने उनका नेता उनसे छीन लिया। किन्तु वह हर्ष से फूला नहीं समाता जब देखता है कि उनकी सारी गाथा सुनने के बाद महारानी उनसे बहुत प्रभावित होती है और आदेश देती है कि उनके विश्राम और उनकी सुविधाओं की ओर विशेषध्यान दिया जाय और उनके नेता की खोज की जाय।

उपयुक्त समय आने पर उनके बीच का छिपानेवाला बादल छंट जाता है और तब उसी क्षण डिडो अनुभव करती है कि उसके दरबार में कोई दो अपरिचित उपस्थित हैं। वीनस चाहती है कि इनीयस पर महरानी का अनुग्रह हो, अतएव इस समय वह उसे विशेष सौन्दर्य एवं आकर्षण प्रदान करनी है। महरानी के द्वारा बुलाये जाने पर इनीयस आगे बढ़ता है, अपना परिचय देता है और महरानी के प्रति समुचित समादर प्रदर्शित करने के बाद अपने बिछुड़े हुये साथियों को हृदय से लगाता है। महारानी ऐसे वीर को अपने राज्य में पाकर बड़े गर्व और हर्ष का अनुभव करती है और सम्मानार्थ उसे एक भोज में निमन्त्रित करती है। इनीयस महारानी का निमन्त्रण प्रसन्नता से स्वीकार करता है। वह अपने मित्र एकेटीज़ से आग्रह करता है कि वह तट पर जाकर सबको सूचित करदे कि वह और उसके दूसरे साथी सकुशल हैं। इसके बाद वह उससे यह अनुरोध भी करता है कि वह उसके पुत्र यूलस अथवा ऐसकैनियस को उसके पास भेज दे।

वीनस अपने पुत्र को विशेष रूप एवं आकर्षण प्रदान करने के बाद भी यह विश्वस्त रूप से कहने में असमर्थ है कि वह महारानी अपनी ओर आकर्षित कर ही लेगा। अतएव, इस

आगे आता है और कहता है कि अब वह भी प्रयत्न करेगा ! उसके इस दुस्साहस पर सारे उपस्थित जन उसका उपहास करते हैं, किन्तु उनका मुँह खुला का खुला ही रह जाता है जब वे देखते हैं कि यह दुर्दशाग्रस्त भिखारी प्रत्यंचा पर तीर ही नहीं चढ़ा देता प्रत्युत तीर चलाता भी है जो बारहों छल्लों के बीच से होकर निकल जाता है।

स्वामि-भक्त सेवक कमरे के फाटकों की चौकसी पर तैनात रहते है कि टेलेमैकस भी अपने पिता की ओर आता है और कहता है कि वह भी उस प्रतियोगिता में भाग लेगा !

पर्व बाईस—

दूसरे ही क्षण यूलिसीज़ अपने, भिखारी के, कपड़े उतार कर एक किनारे रख देता है। इस समय वह बहुत गम्भीर दिखाई पड़ता है जैसे कि कुछ गहन समस्याओं और योजनाओं में लीन हो ! वह एकाएक मुड़ता है और धनुष और तीर से भरे तरकस के साथ एक पत्थर की देहली के पास जा-खड़ा होता है। वह अपने तरकस के सारे तीखे तीर अपने पैरों के पास ज़मीन पर फेंक देता है और फिर प्रेमियों को सम्बोधित कर कहता है कि यह अरुचिकर प्रतियोगिता तो समाप्त हो गई किन्तु अब वह कुछ अद्‌भुत कौशल प्रदर्शित करेगा, यानी यह कि अब वह ऐसे लक्ष्य पर तीर चलायेगा जिस पर कभी किसी धनुषधारी ने तीर न चलाया हो और उसे विश्वास है कि अपोलो की कृपा से वह उसमें सफल भी होगा !

इतना कह कर वह धनुषबाण उठा लेता है और ऐनटीनस को लक्ष्य कर एक घातक बाण चलाता है। ऐन्टीनस का ध्यान इस समय दूसरी ओर है। सोने का मधु-पात्र उसके ओठों से लगा है। अतएव इस समय उसकी बुद्धि में मौत का कोई भी विचार नहीं है, उसके हृदय में मृत्यु सम्बन्धी कोई भी भय नहीं है, और कौन विश्वास करेगा कि इतनी भीड़-भाड़ और दावत के बीच में कोई उसके प्राण-हरण की बात भी सोच सकता है ! अतएव, कोई प्रश्न ही नहीं उठता कि दूसरा व्यक्ति कितना बली, कितना उद्धत और कितना साहसी है। फिर भी, ऑडीसियस का तीर बड़ा सधा हुआ है, वह ऐनटीनस के कण्ठ में लगता है। बाण का फल सीधे चुभता हुआ गले के पार हो जाता है। बस, उसके हाथ से मधुपात्र छूट-गिरता है, वह लड़-खड़ा कर एक ओर को ढह-पड़ता है और उसकी नाक से गहरे रंग के रक्त की लाल धार बह-चलती है !

इस दुर्घटना के साथ ही शेष सारे प्रेमी सचेत हो उठते है और चारों ओर दृष्टि दौड़ा कर शस्त्र और बच कर भाग निकलने के दूसरे साधनों की खोज करते हैं ! अब अन्त में उन्हें पता चलता है कि वे बहुत बुरी तरह घिरे हुये हैं !

शीघ्र ही एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरा प्रेमी यूलिसीज़ के बाण का शिकार होता है। इसी समय, यह देख कर कि उसके तरकस में इतने तीर नहीं हैं कि, वह अपने सारे विरोधियों का संहार कर सके, वह टेलेमैकस को अस्त्रशाला से नये अस्त्र लाने का आदेश देता है !

उसे मालूम हुआ कि सारे स्वजन उसके साथ है, किन्तु उसकी पत्नी पीछे रह गई है इसलिये वह बहुत चिंतित और उत्सुक हो उठा ! थोड़ी देर बाद उसने अपने पद-चिह्नों का अनुकरण कर पीछे लौटना आरम्भ किया। इस भाँति वह थोड़ी ही दूर आया होगा कि उसे एक प्रेतात्मा मिली। उसने उसके आगे बढ़ने में आपत्ति की और कहा कि व्यर्थ है, वह उन ज़िन्दा लोगों में अपनी पत्नी को न खोजे, बल्कि शीघ्रता से [1]हेस्पीरिया की ओर क़दम बढ़ाये। वहाँ एक नई पत्नी और एक नवीन परिवार उसकी प्रतीक्षा में (इनीयस) है !

'अब जब कि आँसुओं से उसके वे गाल गये थे भीग,
और आ रही थीं ओठों तक जाने कितनी बातें,
वह (प्रेतात्मा) अदृश्य हो रात हुई !
तीन बार कोशिश की, वह मिल जाती और लिपट जाता,
पर तीनों ही बार किया उपहास व्यर्थ की छाया ने,
उसने पूछा प्रश्न कि वह थी हवा याकि निद्रा की ज्योति ?'

तत्पश्चात वह कुछ देर तक गुमसुम खड़ा रहा और अपनी पत्नी और अपने परिवार विषयक भविष्य वाणियों पर विचार करता रहा, किन्तु शीघ्र ही, यह सोच कर कि उस प्रेतात्मा ने जो कुछ कहा है, सच ही है, तट पर लौट आया, जहाँ उसके साथी उसकी प्रतीक्षा में थे। यहाँ पहुँच कर उसने शीघ्र ही तट छोड़ने की तैयारी की।

पर्व तीन—

इनीयस उसी प्रकार तन्मय हो कर, अपनी कथा कहता रहता है कि ट्राय के समुद्र तट को छोड़ने के थोड़े ही समय बाद उसके बेड़े ने काले-सागर की सीमाओं के समीप के थ्रेस नामक प्रदेश के समुद्र-तट पर लंगर डाला। यहाँ वह एक बलिदान की तैयारी करते समय बुरी तरह डर गया क्योंकि उसने देखा कि उसके द्वारा अभी अभी काटे-गये पेड़ों की जड़ों से ख़ून बह रहा है ! शीघ्र ही पाताल से एक ध्वनि हुई, जिसने उसके भय का निराकरण किया और उसे उस दृश्य का रहस्य समझाया कि एक बार इस प्रदेश के निवासियों ने एक ट्राजन को लूटा और उसे भालों से मार डाला। कहना न होगा कि इस ट्राजन के हृदय में हुये घावों से ये पेड़ उग आये !

फिर भी, वह नहीं चाहता था कि वह ऐसे भयानक पड़ोस में रहे अतएव उसने जहाज़ों के पाल चढ़वा दिये और सूर्य्य के देवता अपोलो के प्रिय प्रदेश डेलॉस की ओर रुख़ किया ! वह यहाँ पहुंचा और उसके वहाँ की धरती पर क़दम रखते ही एक आकाश-वाणी हुई कि वह केवल उस प्रदेश में बस सकेगा, जहाँ से उसके पूर्वज आये थे। उसके वृद्ध पिता ने इसका मतलब यह लगाया कि उसे भूमध्य-सागर के एक द्वीप क्रीट की ओर बढ़ना चाहिये, अतएव सारे जहाज उसी दिशा में चल पड़े ! परन्तु वे थोड़ी ही मंज़िल तय कर पाये होंगे कि उसके (इनीयस के)

---

[1]इटली का पुराना नाम।

३—लैटिन महाकाव्य—

लैटिन-साहित्य का मूल उद्गम यूनानी-साहित्य है। लैटिन-साहित्य यूनानी साहित्य का चिर-ऋणी रहेगा। उसके सर्वश्रेष्ठ महाकाव्यों में अधिकांश या तो यूनानी रचनाओं के अनुवाद हैं या उनसे अनुप्राणित। उदाहरण के लिये 'इलियड' और 'ओडिसी' के अनेक अनुवाद हमारे सामने हैं, जिनमें प्रथम प्रमुख और प्रसिद्ध अनुवाद रोमन-नाटकीय काव्य एवं रोमन-महाकाव्य के पिता 'लिवियस ऐंड्रानिकस' का है! इसका जन्म-काल दूसरी या तीसरी शताब्दि ई० पू० कहा जाता है! इसने अड़तीस पर्वों के एक दूसरे इतने ही अधिकारी महाकाव्य की भी रचना की थी जिसमें रोमन-इतिहास को पद्य-बद्ध करने का प्रयत्न किया था, किन्तु दुःख है कि वह अप्राप्य है।

एक शताब्दी के बाद एक दूसरे कवि 'निवियस' ने 'साइप्रियन इलियड' की रचना की और प्रथम प्यूनिक-युद्ध विषयक 'बेलम प्यूनिकम' नामक एक वीर काव्य की भी, जिसके कुछ अंश ही मिलते हैं। इसके बाद हमारे युग के पहिले की दूसरी शताब्दी में ईनियस ने देशभक्ति से प्रेरित होकर 'अनल्स' के १८ पर्वों में रोम की उत्पत्ति के गीत गाये। परन्तु इस कविता के भी कुछ ही भाग शेष हैं। इसी समय 'होस्टियस' ने 'इस्ट्रिया' शीर्षक महाकाव्य की रचना की लेकिन वह भी नष्ट हो गया। 'ल्यूक्रीशियश' की 'ऑन द्री नेचर ऑफ थिंग्स, महाकाव्य इस क्रम में आता है। यह ज्योतिष-ज्ञान प्रधान, भौतिक महाकाव्य का एक अच्छा उदाहरण समझा जाता है।

जहां तक महाकवियों का प्रश्न है 'ऑगस्टन-युग' इस सम्बंध में विशेषतया भाग्यशाली और सम्पन्न युग कहा जा सकता है! 'ऐरगोनॉटिका' का अनुवादकर्त्ता और जूलियस सीज़र पर एक लम्बी कविता का लेखक 'प्यूबलियस टेरेनटियस वॉरो', 'ल्यूसियस वारियस रूफ़स' जिसकी प्रायः सभी कवितायें खो चुकी हैं, और सबसे महान 'वरजिल', 'इनीड' जिसकी महानतम अंतिम कृति है, और दूसरी कई अन्य महान आत्मायें इसी युग की विभूति हैं। इस सर्व श्रेष्ठ लैटिन काव्य 'इनीड' के बाद ल्यूकन की 'फ़ारसेलिया' उल्लेखनीय है! इसमें कवि ने 'सीज़र' और 'पॉम्पी' की पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा का वर्णन किया है। उसके समकालीन 'स्टैटियस' ने थिबैस और अधूरी 'एकीलीज़' में सर्वयुग-सम्मानित 'थीब्ज़ चक्र', और 'ट्राय-चक्र', को अपना आधार माना है। इसी युग में 'सिलयस इटालियस' ने दूसरे प्यूनिक-युद्ध पर एक लम्बा काव्य लिखा और 'वलेरियस फ़्लैकस' ने 'ऐरगोनाटिका' का अनुवाद किया।

हमारे युग की दूसरी शताब्दी में 'क्विंटियस करटियस' ने सिकन्दर पर एक महाकाव्य

ड्रिपानम पर ठहरा। यहाँ, सहसा ही, उसके पिता का स्वर्गवास हो गया! यहीं उसने उसे बड़ी धूमधाम से दफ़ना भी दिया। शीघ्र ही वह उस नगर से चल पड़ा और चलने के थोड़े समय बाद ही उसके जहाज़ों को फिर एक भयंकर तूफ़ान का सामना करना पड़ा! इसी तूफ़ान ने उसे महारानी डिडो के राज्य के उस तट पर ला पटका है।

इस तरह इनीयस की कहानी समाप्त होती है। इस बीच में सब ओर के लोग उसे तन्मय होकर सुनते रहते हैं और इस समय ज्योंही कहानी समाप्त होती है, वे सब दैव और उसके रहस्यों को लेकर एक अद्भुत उधेड़-बुन आरम्भ कर देते हैं! इनीयस कहानी कहते-कहते थक गया है और उसे विश्राम की बड़ी आवश्यकता है, अतएव वह उठता है, महारानी की अनुमति लेता है और विश्राम-कक्ष की ओर क़दम बढ़ाता है!

पर्व चार:—

इस समय इनीयस गहरी नींद के दुलार का अनुभव कर रहा है, किन्तु डिडो अपने शयनागार में अपनी नवजात कामना के रस में डूब-उतरा रही है, फलतः एक क्षण को भी पलक नहीं झपका पाती और इसी स्थिति में सारी रात बीत जाती है।

वह सवेरे उठती है, अपनी बहन अन्ना को जगाती है, उससे अपनी मानसिक संघर्ष की चर्चा करती है और चाहती है कि वह इस सम्बन्ध में उसे सलाह दे! उत्तर में, यही नहीं कि अन्ना अपनी बहिन को फिर से विवाह कर-लेने के लिये प्रोत्साहित करती है प्रत्युत, प्रार्थना में भी उसका साथ देती है! यह सौन्दर्य की देवी वीनस कृपापूर्वक सुन लेती है, जैसे कि वह उसके लिये सब कुछ करने को तैयार है। किन्तु दूसरे ही क्षण देवताओं की रानी जूनो हस्तक्षेप करती है और वीनस को आगाह करती है कि एक-न-एक दिन ट्राजनों और कारथेज के निवासियों का एक-दूसरे का शत्रु हो जाना ध्रुव निश्चित है। फिर भी, वह राज़ी हो जाती है और विवाह की देवी होने के नाते अनुमति दे देती है कि उस दिन के आखेट में इनीयस और डिडो का संयोग करा दिया जाये!

इस प्रसंग के बाद हमें कविता में सूर्योदय के, शिकार की तैयारियों के आँखों में चकाचौंध पैदा कर देने वाले रानी के व्यक्तित्व के, और बनावटी यूलस के शिकार-सम्बन्धी साहसिक-कृत्यों के हृदयहारी वर्णन मिलते हैं! परन्तु हम आगे पढ़ते हैं कि दोपहर के समय, सहसा ही बादल गरजने लगते हैं और ज़ोर के आँधी-पानी के कारण उनके इस आखेट की यात्रा के आनन्द में बड़ा विघ्न पड़ता है, अतएव इस आँधी-पानी से घबड़ाकर इनीयस और डिडो एक गुफ़ा में शरण ग्रहण करते हैं और कहा जाता है कि यहीं उन दोनों का समागम होता है। किन्तु सौ मुँहवाली यश की देवी जैसे क्रोधित होकर डंके की चोट पर कहना चाहती है कि इतना सब कुछ इतनी सरलता से, इतनी जल्दी नहीं हो जाना चाहिये! इस पर नगर के नायकगण बड़े क्रोधित और उत्तेजित हो-उठते हैं कि यदि इन सारे कुकृत्यों के लिए इस समय ट्राजनों को क्षमा कर दिया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब कारथेज को अपनी इस भूल के

धूमिल, धधकती हुई, छोटी-छोटी लपटों की तरह दिखाई पड़ते हैं ! उसे इतना संताप होता है कि वह चीत्कार कर तुरन्त ही अपने लम्बे सुनहले बाल काट डालती है और देवताओं से प्रार्थना करती है कि वे इसका बदला लें, उसे इस स्थिति में इस दुष्टता से छोड़ देने के लिये, अवश्य ही दंड दें ! इसके बाद वह आत्म-हत्या के विचार से अपने ही हाथ से छुरी भोंक कर धधकती चिता के बीच में कूद पड़ती है। कारथेज के निवासी ऐसे दुर्घटना के सन्देह में भी न थे, अतएव वे रानी के इस कौतुक को अचरज और क्षोभ से अवाक् होकर देखते हैं, किन्तु डिडो की बहिन इतना घोर चित्कार करती है, कि मानो आकाश को पृथ्वी पर पटक देना चाहती है।

विषाद की देवी जूनो यह दृश्य निःशब्द होकर आकाश से अपलक देखती है और अन्त में देवता आइरिस को पृथ्वी पर आकर डिडो के सिर से बालों का एक गुच्छा काट लेने का आदेश देती है, क्योंकि कुछ ऐसा है कि इस रहस्यपूर्ण क्रिया के बाद ही आत्मा शरीर से छूट सकती है। आइरिस तुरन्त ही आज्ञा पालन के लिये तैयार होता है और कहता है कि वह बालों के उस गुच्छे को डिस नामक शैतान के पास ले जायेगा, और इस प्रकार डिडो अपने पार्थिव शरीर से मुक्ति पा जायेगी। इतना कहने के बाद वह पृथ्वी पर आता है और डिडो के सिर से बालों का एक गुच्छा काट लेता है। धीरे-धीरे डिडो के उसके शरीर की उष्णता लुप्त हो जाती है, शरीर शीतल हो जाता है और प्राण वायु में मिल जाता है।

पर्व पाँच—

ईनीयस के पोत आगे बढ़ते रहते रहते हैं। किन्तु वह सहसा ही कारथेज के समुद्री-तट से मुड़ा—उठता देखकर घोर भय और शंका से हिल उठता है और उसकी यह व्यग्रता कई गुनी हो उठती है जब आकाश में एक क्षण में ही घोर घटायें घिर आती हैं। उसकी इस चिन्तित मुद्रा से चिन्तित होकर उसका ऋतु-विशेषज्ञ चालक पेलिन्यूरस उसे सलाह देता है कि उन्हें थमना चाहिये और ड्रिपानम के बन्दरगाह में शरण ग्रहण करनी चाहिये, क्योंकि पूर्वी आकाश में गहरे काले बादलों की सघनता बढ़ती जा रही है, और कुछ उत्पात, होना निश्चित है। ईनीयस को उसकी सलाह पसन्द आती है और वह और उसके अन्य साथी एक वर्ष बाद ड्रिपानम के बन्दर में एक बार फिर शरण लेते हैं। यहाँ वे ईनीयस के मृत-पिता के प्रति सम्मान-प्रदर्शन के विचार से एक बलिदान की व्यवस्था करते हैं और बलिदान के बाद अग्नि-दाह-विषयक खेलों में भाग लेते हैं।

यहीं पर कविता में विस्तार से वर्णन किया गया है कि वे सब समुद्री दौड़, साधारण दौड़, घुड़दौड़ और रथदौड़ की प्रतियोगिताओं में भाग लेते और इनाम जीतते हैं। तुमुल युद्ध और धनुष-विद्या के प्रदर्शनों और उनकी प्रतियोगिताओं की भी चर्चा इन वर्णनों में मिलती है।

× ×

अब जब कि इधर ट्राजन-मित्र इन आनन्दोत्सवों में प्रेमपूर्वक भाग ले रहे हैं, उधरजूनो के निर्देशन में ट्राजन-पत्नियाँ उनके जहाज़ों में आग लगा देती हैं। वे उनके इस प्रकार घूमते-

'इनीड'—इनीयस की कथा—

पर्व एक—

हमें अपनी इस अभिलाषा की सूचना देने के बाद कि वह रोमनों के वीर पूर्वजों की वीर-गाथाओं का गुणगान करना चाहता है, आरम्भ में कवि बतलाता है कि धधकते हुए ट्राय से इनीयस के बच-निकलने के सात साल बाद अफ्रीका के तट से दूर समुद्र में एक भयंकर तूफ़ान आता है और उसका बेड़ा ख़तरे में पड़ जाता है। ऐसा लगता है जैसे कि जहाज़ पृथ्वी और स्वर्ग-नर्क की दूरी का अन्दाज़ लगा रहा है और तूफ़ान उससे कह रहा है कि वह उसे एक क्षण भी देने को तैयार नहीं है, प्रत्युत उसे अब नष्ट करता है और तब नष्ट करता है। यह तूफ़ान [1]जूनो के आग्रह पर इओलस[2] के झगड़ालू लड़कों के द्वारा उठाया गया है! किन्तु ऊपर के विप्लव से व्याकुल होकर और इनीयस की प्रार्थनाओं से द्रवित होकर समुद्र का देवता नेप्च्यून समुद्र-तल से उभरता और ऊपर आता है। वह क्रोधित होकर हवाओं को आज्ञा देता है कि वे अपनी गुफ़ाओं की राह लें, और समुद्री-परियों और मछली के आकार के अन्य समुद्री उपदेवताओं को बुलाकर उन्हें आदेश देता है कि वे इनीयस की सहायता और उसकी रक्षा करें। इसके बाद इनीयस के सात जहाज़ एक शीघ्र ही सुरक्षित खाड़ी में शरण ग्रहण करते और लंगर डालते हैं। वह अपने मित्र [3]एकेटीज़ के साथ धरती पर उतरता है और पड़ाव डालने के लिये ठीक स्थान की खोज में निकल पड़ता है। इस प्रकार इधर-उधर भटकते हुए ये दोनों मित्र अपने और अपने साथियों के लिए बारह बारहसिंगों का शिकार करते हैं! वे लौटते है, भोजन करने की व्यवस्था होती है और भोजन करने के लिए बैठते ही हैं कि इनीयस अपने साथियों को प्रसन्न और उत्साहित करने के विचार से उन्हें विश्वास दिलाता है कि उन जैसे वीरों की सन्तानों का महान शक्तिशाली और पराक्रमी होना निश्चित है!

---

[1]जूपिटर की पत्नी। [2]थिसैली का राजा जिसे जूपिटर ने हवा पर अनुशासन करने का अधिकार दे दिया था! [3]रोमनों को पूर्वजों का चरित्र-नायक जिसने पहिले तो ट्राजन युद्ध में भाग नहीं लिया, किन्तु जब एकीलीज़ ईडा पर्वत पर हमला किया तो उसने भी उससे लोहा लिया—ऐकाइसीज़ का पुत्र।

और सुनाते हैं कि इस राक्षसी ने अपनी भविष्यवाणियों को पेड़ की पत्तियों पर लिखकर उन्हें एक निश्चित क्रम से गुफा में बन्द छोड़ा था, किन्तु एक दिन द्वार खुला रह गया और हवा के एक तेज झोंके ने आकर उन्हें इस प्रकार अस्त-व्यस्त किया, इस तरह क्रमहीन कर दिया कि उस गुफा के दर्शनार्थियों के लिये वे सब एक रहस्य तथा एक समस्या बनकर रह गयी थीं। इनका समझ पाना सर्व-साधारण के वश की बात नहीं था। इनीयस ने भी यह कथा सुन रखी थी, और अब उसके सामने भी प्रत्यक्षतः भविष्यवाणियों का यह रहस्यपूर्ण संसार खड़ा था। उसने उस राक्षसी की बड़ी मनौती की और उससे प्रार्थना की कि वह उसे इस प्रकार पेड़ की पत्तियों की भविष्यवाणियों के द्वारा आकुल न करे, बल्कि स्वयं, मुख से बताने का कष्ट करे। राक्षसी उसकी प्रार्थना से प्रभावित होती है और तुरन्त ही उसका [illegible] उसके सम्मुख उपस्थित होता है। वह भविष्यवाणी करता है कि समुद्र और स्थल पर अनेकानेक संकटों का सामना करने के बाद और इटली को टाइबर नामक नदी को रक्त से लाल करने के बाद ही वह अपने शत्रुओं पर विजय पा सकेगा और अंत में एक राजकुमारी के साथ लेटियम में के लिए बस जायेगा। प्रेत इतना कह कर एक सांस लेता है और फिर कहता है कि उसे अपनी सारी सफलताओं के लिये यूनानी सहायता का आभार स्वीकार करना पड़ेगा।

इनीयस आनेवाले संकटों की कल्पना से चकित भी, भयभीत अथवा विचलित नहीं होता, प्रत्युत वह उस राक्षसी से प्रार्थना करता है कि वह उसे हेडीज़ (पाताल) का रास्ता बतला दे और हो सके तो उसे वहाँ पहुँचा दे, ताकि वह अपने पिता के आदेशानुसार उनसे वहाँ भेंट कर सके। इस प्रार्थना के उत्तर में वह उसे कोरा जवाब दे देती है कि वह उसे वहाँ पहुँचाने में तब तक असमर्थ है जब तक कि वह उसे एक सोने की डाल नहीं देता, जो कि उन प्रदेशों में चाभी का काम देगी, और जब तक कि वह अपने मित्र के शव के प्रति समुचित सम्मान प्रदर्शित नहीं करता। इनीयस उसकी दोनों अजब और रहस्यपूर्ण शर्तें सुनता है और आश्चर्य में पड़ जाता है, किन्तु शीघ्र ही जब वह अपने जहाज़ पर वापिस आता है तो देखता है कि उसका एक नाविक साथी मार डाला गया है। इनीयस तुरन्त ही उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया की व्यवस्था करता है। इसके थोड़े समय बाद वह टहलते-टहलते पड़ोस के एक जङ्गल में बहुत दूर निकल जाता है। यहाँ उसकी माँ की प्रिय-चिड़िया, बतखें उसे मिल जाती हैं, जो उसे एक ऐसे स्थान का रास्ता ही नहीं बतलातीं प्रत्युत उसे उस स्थान पर पहुँचा भी देती हैं जहाँ के पेड़ों की डालें सोने की हैं। वह ऐसी एक डाल प्राप्त करता है और ले-जाकर उस राक्षसी को देता है।

× ×

इस प्रकार इनीयस उस राक्षसी को उस आश्चर्यजनक शस्त्र से सुसज्जित कर एवरनस झील के रास्ते से उस अन्धकारमय, उदास गुफा में प्रविष्ट होता है जो कि हेडीज़ का प्रमुख प्रवेश-द्वार है। इसके बाद वह अपने रहस्यपूर्ण पथ-प्रदर्शक के उठते हुए कदमों के पीछे पीछे चलकर और रात्रि के प्रदेश से गुज़रकर शीघ्र ही बिछुड़ी हुई आत्माओं के प्रदेश की सीमा पर पहुँचता है। यहाँ उसे असंख्यक प्रेतात्मायें दिखाई पड़ती हैं। यद्यपि वह स्वयं तुरन्त ही

ही वह उससे विदा होने को घूमती है, वह उसे पहचान लेता है और चाहता है कि वह उसे चूम ले, परन्तु वह एक क्षण में ही अदृश्य हो जाती है।

अब दोनों ट्राजन वीनस द्वारा बताई-गई दिशा में बढ़ते हैं और शीघ्र ही कारथेज नगर में आ पहुँचते हैं। इसके सौन्दर्य से इनकी आंखों में चकाचौंध पैदा हो जाती है। वे देखते हैं कि नगर निवासी बड़े अध्यवसायी और परिश्रमी हैं, यही कारण है कि इतने थोड़े समय में ही नगर ने इतनी उन्नति कर ली है। नगर के बीचों बीच मन्दिर है, जिसके पीतल के फाटक ट्राय के युद्ध के दृश्यों से सुसज्जित हैं। इनकी निगाह इस मन्दिर पर पड़ती है कि एक दैवी नीहार उन्हें दूसरों की आँखों से ओझल कर देता है और वे भरी आंखों से घंटों तक विगत पराक्रम के उन स्मृति-चिन्हों को घूरते रहते हैं। यह स्थित तब तक रही-ही आती है जब तक कि डिडो स्वयं उधर से नहीं गुज़रती!

डिडो राज-दरबार में जाकर सिंहासन पर आसन ग्रहण करती है और आदेश देती है कि कुछ शीघ्र ही पकड़े गये बन्दी उसके सम्मुख उपस्थित किये जायें। वे लाये जाते हैं। इनीयस इनमें अपने लुप्त जहाज़ के कुछ नायकों को देखता है! वह उन्हें बड़ी सरलता से पहिचान लेता है और खुशी से उसकी बाछें खिल उठती हैं। वह सुनकर भी अनसुना कर देता है। वे सब रो-रो कर महारानी से तूफ़ान का वर्णन करते हैं। उनका कहना है कि उस तूफ़ान ने उनका नेता उनसे छीन लिया। किन्तु वह हर्ष से फूला नहीं समाता जब देखता है कि उनकी सारी गाथा सुनने के बाद महारानी उनसे बहुत प्रभावित होती है और आदेश देती है कि उनके विश्राम और उनकी सुविधाओं की ओर विशेषध्यान दिया जाय और उनके नेता की खोज की जाय।

उपयुक्त समय आने पर उनके बीच का छिपानेवाला बादल छंट जाता है और तब उसी क्षण डिडो अनुभव करती है कि उसके दरबार में कोई दो अपरिचित उपस्थित हैं। वीनस चाहती है कि इनीयस पर महरानी का अनुग्रह हो, अतएव इस समय वह उसे विशेष सौन्दर्य एवं आकर्षण प्रदान करनी है। महरानी के द्वारा बुलाये जाने पर इनीयस आगे बढ़ता है, अपना परिचय देता है और महरानी के प्रति समुचित समादर प्रदर्शित करने के बाद अपने बिछुड़े हुये साथियों को हृदय से लगाता है। महारानी ऐसे वीर को अपने राज्य में पाकर बड़े गर्व और हर्ष का अनुभव करती है और सम्मानार्थ उसे एक भोज में निमन्त्रित करती है। इनीयस महारानी का निमन्त्रण प्रसन्नता से स्वीकार करता है। वह अपने मित्र एकेटीज़ से आग्रह करता है कि वह तट पर जाकर सबको सूचित करदे कि वह और उसके दूसरे साथी सकुशल हैं। इसके बाद वह उससे यह अनुरोध भी करता है कि वह उसके पुत्र यूलस अथवा ऐसकैनियस को उसके पास भेज दे।

वीनस अपने पुत्र को विशेष रूप एवं आकर्षण प्रदान करने के बाद भी यह विश्वस्त रूप से कहने में असमर्थ है कि वह महारानी अपनी ओर आकर्षित कर ही लेगा। अतएव, इस

है और उसे हृदय लगाने की कोशिश करता है, किन्तु पुत्र उसके हाथ नहीं आता और पिता को बड़ी निराशा होती है! हम भूले न होंगे, इसी प्रकार एंकाइसीज़ ने एक बार और ड्रिपानम में उसे हृदय लगाने का व्यर्थ का प्रयत्न किया था। फिर भी एंकाइसीज़ उसे जीवन-मृत्यु और अमरत्व से सम्बन्धित कितनी ही बातें बतलाता है। इसके बाद वह आगामी एक हज़ार वर्षों के रोम के इतिहास की प्रमुख-प्रमुख घटनाओं का एक संक्षिप्त वर्णन अपने पुत्र के सम्मुख रखता है; जिसमें रोम के संस्थापक रोमलस के काल से लेकर दुनिया के प्रमुख युवराज और सम्राट आगेस्टस तक के समय के उल्लेखनीय व्यक्ति का विधिवत् अंकन है।

इनीयस को अपने कुल के सदस्यों के प्रताप यश और उनके जीवन के उतार-चढ़ाव के वर्णनों को सुनने-समझने में काफ़ी समय लग जाता है। किन्तु जैसे ही वे समाप्त होते हैं, साइबील इस भयानक नर्क-प्रदेश से बाहर निकलने के एक रास्ते से उसे तुरन्त ही एक बार फिर पृथ्वी पर ले आती है। वह इस समय बहुत प्रसन्न दिखलाई पड़ता है, चूँकि उसने अपना काम बड़ी सफलतापूर्वक किया है।

अपनी जाति और अपने परिवार के भविष्य की जानकारी से उसे बड़ा प्रोत्साहन मिलता है वह जहाज़ पर लौट आता है। इस समय वह अपने घर पहुँचने के लिये बहुत उत्सुक है, अतएव तुरन्त ही पाल चढ़वा देता है और अपनी मंज़िल के लिये चल पड़ता है!

पर्व सात—

शीघ्र ही इनीयस इटली के पश्चिमी समुद्री किनारे से होकर गुज़रता है। वह सर्स के द्वीप से आगे आ चुका है और अनुकूल हवाओं के सहारे तेज़ धारावाली टाइबर[1] नदी के वृत्त पर बड़ी तेज़ी से बढ़ रहा है। इस बार चलने के बाद वह अब तक कहीं नहीं रुका है, अतएव एक तट पर उतरता ही है कि गीत-काव्य की अधिष्ठात्री इरैटो उसके सम्मुख उपस्थित होकर उन लैटिनों का इतिहास गाती है जिनका प्रतिनिधि पास के प्रदेश का राजा लैटिनस है और जिनका दावा है कि वे सीधे सैटर्न (शनि) से पृथ्वी पर अवतरित हुये हैं! यह लैटिनस वह व्यक्ति है जो टरनस[2] को अपनी पुत्री ब्याह देने का वचन दे चुका है, किन्तु जो अपना निश्चय बदल देता है, क्योंकि इन ट्राजनों के इस प्रकार इस तट पर उतरने के कारण कुछ घटनायें घटती हैं, कुछ शकुन होते हैं, जिनका उसके लिये स्पष्ट आदेश है कि वह अपनी पुत्री को तब तक क्वाँरी रक्खे, जब तक कि कोई ऐसा अपरिचित आकर स्वयं उसका हाथ अपने हाथ में न ले-ले जिसकी सन्तान का पराक्रमी और यशस्वी होना निश्चित हो!

इरैटो का गीत समाप्त हो जाता है। ट्राजन भूखे हैं अतएव वे माँस का भोजन

---

[1] इटली की च्यूब्यूरस नामक एक नदी।

[2] इटली के राष्ट्र का राजकुमार।

उसे मालूम हुआ कि सारे स्वजन उसके साथ है, किन्तु उसकी पत्नी पीछे रह गई है इसलिये वह बहुत चिन्तित और उत्सुक हो उठा ! थोड़ी देर बाद उसने अपने पद-चिह्नों का अनुकरण कर पीछे लौटना आरम्भ किया । इस भाँति वह थोड़ी ही दूर आया होगा कि उसे एक प्रेतात्मा मिली । उसने उसके आगे बढ़ने में आपत्ति की और कहा कि व्यर्थ है, वह उन ज़िन्दा लोगों में अपनी पत्नी को न खोजे, बल्कि शीघ्रता से [1]हेस्पीरिया की ओर क़दम बढ़ाये । वहाँ एक नई पत्नी और एक नवीन परिवार उसकी प्रतीक्षा में (इनीयस) है !

'अब जब कि आँसुओं से उसके वे गाल गये थे भीग,
और आ रही थीं ओठों तक जाने कितनी बातें,
वह (प्रेतात्मा) अदृश्य हो रात हुई !
तीन बार कोशिश की, वह मिल जाती और लिपट जाता,
पर तीनों ही बार किया उपहास व्यर्थ की छाया ने,
उसने पूछा प्रश्न कि वह थी हवा याकि निद्रा की ज्योति ?'

तत्पश्चात वह कुछ देर तक गुमसुम खड़ा रहा और अपनी पत्नी और अपने परिवार विषयक भविष्य वाणियों पर विचार करता रहा, किन्तु शीघ्र ही, यह सोच कर कि उस प्रेतात्मा ने जो कुछ कहा है, सच ही है, तट पर लौट आया, जहाँ उसके साथी उसकी प्रतीक्षा में थे। यहाँ पहुँच कर उसने शीघ्र ही तट छोड़ने की तैयारी की ।

पर्व तीन—

इनीयस उसी प्रकार तन्मय हो कर, अपनी कथा कहता रहता है कि ट्राय के समुद्र तट को छोड़ने के थोड़े ही समय बाद उसके बेड़े ने काले-सागर की सीमाओं के समीप के थ्रेस नामक प्रदेश के समुद्र-तट पर लंगर डाला । यहाँ वह एक बलिदान की तैयारी करते समय बुरी तरह डर गया क्योंकि उसने देखा कि उसके द्वारा अभी अभी काटे-गये पेड़ों की जड़ों से ख़ून बह रहा है ! शीघ्र ही पाताल से एक ध्वनि हुई, जिसने उसके भय का निराकरण किया और उसे उस दृश्य का रहस्य समझाया कि एक बार इस प्रदेश के निवासियों ने एक ट्राजन को लूटा और उसे भालों से मार डाला । कहना न होगा कि इस ट्राजन के हृदय में हुये घावों से ये पेड़ उग आये !

फिर भी, वह नहीं चाहता था कि वह ऐसे भयानक पड़ोस में रहे अतएव उसने जहाज़ों के पाल चढ़वा दिये और सूर्य्य के देवता अपोलो के प्रिय प्रदेश डेलॉस की ओर रुख़ किया ! वह यहाँ पहुंचा और उसके वहाँ की धरती पर क़दम रखते ही एक आकाश-वाणी हुई कि वह केवल उस प्रदेश में बस सकेगा, जहाँ से उसके पूर्वज आये थे । उसके वृद्ध पिता ने इसका मतलब यह लगाया कि उसे भूमध्य-सागर के एक द्वीप क्रीट की ओर बढ़ना चाहिये, अतएव सारे जहाज उसी दिशा में चल पड़े ! परन्तु वे थोड़ी ही मंज़िल तय कर पाये होंगे कि उसके (इनीयस के)

---

[1]इटली का पुराना नाम

इतनी सफलता से शांति भङ्ग करने के बाद वैमनस्य की देवी शीघ्रता से जूनो के पास आती है। जूनो देखती है कि लेटिनस निश्चय कर चुका है कि न वह इनीयस की ओर से और न टरनस की ओर से लड़ेगा! इस निश्चय के कारण वह प्रसन्न भी है। अतएव वह अपने हाथ से जैनस[1] के मन्दिर के फाटक खोलती है और उसे लड़ाई में भाग लेने पर विवश कर देती है।

इस स्थान पर कवि उन विभिन्न योद्धाओं के नाम गिनाता है जिनका किसी भी पक्ष में अपने शौर्य से यश लाभ-करना सम्भव अथवा निश्चित है। वह इस लम्बी तालिका में ट्यूट्यूल्स के सिर मौर मेज़ेंटियस, उसके पुत्र लॉशस और [2]वाल्शियन-महिला कैमिला का विशेष उल्लेख करता है, जो शान्तिमय प्रणय-परिणय के जीवन की अपेक्षा सैन्य-जीवन की हलचल अधिक पसन्द करती है।

पर्व सात—

ज्यों ही टरनस को उसके अनेकानेक मित्रों की सहायता प्राप्त हो जाती है, इनीयस भी कुछ मित्रों की प्राप्ति और उनके योग के लिये उत्सुक हो उठता है। वह एटरूरिया के उस राजा इवैंडर से सहायता मांगने के लिये चल पड़ता है, जो कि पहिले एक यूनानी था। वह रास्ते में देखता है कि टाइबर नदी के किनारे एक स्थान पर एक सुअरी ३० बच्चों को एक साथ दूध पिला रही है। वह उसे देवताओं के नाम पर बलिदान कर देता है, क्योंकि उसका वहाँ पाये जाने का मतलब है कि भविष्य में उसकी राजधानी उसी स्थान पर बसाई जायेगी! इस कार्य के बाद वह अपनी राह लेता है और शीघ्र ही 'एटरूरिया पहुँचाता है। तुरन्त ही यहाँ के शक्तिशाली निवासियों का एक बहुत बड़ा समूह उसे वचन देता है कि उस दल का प्रत्येक व्यक्ति राजपुत्र पैलैस के संरक्षण में उसके लिये जान देने को तैयार है!

इनीयस आश्वस्त होता है। वह कुछ समय बाद ही हरकुलीस की एक विजय के सम्मान में दिये-गये एक प्रीति भोज में भाग लेता है और भोजनोपरान्त सो जाता है कि उसकी माँ वीनस अपने लोहार-पति के आग्रह करती है कि वह के लिये एक जोड़ नवीन कवच तैयार कर रहे।

सवेरा होता है और इवैंडर कहानियों से अपने अतिथि का मनोरंजन करता है उसका पुत्र अपनी तैयारियों में व्यस्त है और शीघ्र ही पूरा तैयार हो जाता है। अब इनीयस वहाँ से विदा होता है क्योंकि विशेष रूप से तैयार कराया-गया कवच उसे देते समय उसकी माँ उसे सचेत करती है कि उसकी सेना ख़तरे में है।

---

[1] दो सिरवाला लैटिनों के देवता, जिसके मन्दिर के द्वार खुल जाने का अर्थ है शांति का अंत!

[2] उस जाति की सदस्या जो पहिले सिरिस नदी के किनारे रहते थे, किन्तु जो बाद में लैटियम में आ बसे

ड्रिपानम पर ठहरा। यहाँ, सहसा ही, उसके पिता का स्वर्गवास हो गया! यहीं उसने उसे बड़ी धूमधाम से दफ़ना भी दिया। शीघ्र ही वह उस नगर से चल पड़ा और चलने के थोड़े समय बाद ही उसके जहाज़ों को फिर एक भयंकर तूफ़ान का सामना करना पड़ा! इसी तूफ़ान ने उसे महारानी डिडो के राज्य के उस तट पर ला पटका है।

इस तरह इनीयस की कहानी समाप्त होती है। इस बीच में सब ओर के लोग उसे तन्मय होकर सुनते रहते हैं और इस समय ज्योंही कहानी समाप्त होती है, वे सब देव और उनके रहस्यों को लेकर एक अद्भुत उधेड़-बुन आरम्भ कर देते हैं! इनीयस कहानी कहते-कहते थक गया है और उसे विश्राम की बड़ी आवश्यकता है, अतएव वह उठता है, महारानी की अनुमति लेता है और विश्राम-कक्ष की ओर क़दम बढ़ाता है!

पर्व चार:—

इस समय इनीयस गहरी नींद के दुलार का अनुभव कर रहा है, किन्तु डिडो अपने शयनागार में अपनी नवजात कामना के रस में डूब-उतरा रही है, फलतः एक क्षण को भी पलक नहीं झपका पाती और इसी स्थिति में सारी रात बीत जाती है।

वह सवेरे उठती है, अपनी बहन अन्ना को जगाती है, उससे अपनी मानसिक संघर्ष की चर्चा करती है और चाहती है कि वह इस सम्बन्ध में उसे सलाह दे! उत्तर में, यही नहीं कि अन्ना अपनी बहिन को फिर से विवाह कर-लेने के लिये प्रोत्साहित करती है प्रत्युत, प्रार्थना में भी उसका साथ देती है! यह सौन्दर्य की देवी वीनस कृपापूर्वक सुन लेती है, जैसे कि वह उसके लिये सब कुछ करने को तैयार है। किन्तु दूसरे ही क्षण देवताओं की रानी जूनो हस्तक्षेप करती है और वीनस को आगाह करती है कि एक-न-एक दिन ट्राजनों और कारथेज के निवासियों का एक-दूसरे का शत्रु हो जाना ध्रुव निश्चित है। फिर भी, वह राज़ी हो जाती है और विवाह की देवी होने के नाते अनुमति दे देती है कि उस दिन के आखेट में इनीयस और डिडो का संयोग करा दिया जाये!

इस प्रसंग के बाद हमें कविता में सूर्योदय के, शिकार की तैयारियों के आँखों में चकाचौंध पैदा कर देने वाले रानी के व्यक्तित्व के, और बनावटी यूलस के शिकार-सम्बन्धी साहसिक-कृत्यों के हृदयहारी वर्णन मिलते हैं! परन्तु हम आगे पढ़ते हैं कि दोपहर के समय, सहसा ही बादल गरजने लगते हैं और ज़ोर के आँधी-पानी के कारण उनके इस आखेट की यात्रा के आनन्द में बड़ा विघ्न पड़ता है, अतएव इस आँधी-पानी से घबड़ाकर इनीयस और डिडो एक गुफ़ा में शरण ग्रहण करते हैं और कहा जाता है कि यहीं उन दोनों का समागम होता है। किन्तु सौ मुँहवाली यश की देवी जैसे क्रोधित होकर डंके की चोट पर कहना चाहती है कि इतना सब कुछ इतनी सरलता से, इतनी जल्दी नहीं हो जाना चाहिये! इस पर नगर के नायकगण बड़े क्रोधित और उत्तेजित हो-उठते हैं कि यदि इन सारे कुकृत्यों के लिए इस समय ट्राजनों को क्षमा कर दिया गया तो वह दिन दूर नहीं है जब कारथेज को अपनी इस भूल के

फुफकार चलने दो तुम अपने तीखे बाणों के तूफ़ान।
अरे, धर्म का ओर मनानेवाली, मुझ पर दया करो,
मुझे शोक दो और दुःख दो किसी झील में फ़ौरन तुम।
अरे नहीं, जो सम्भव है, मैं धरती पर दूँ पटक अभी,
ओ, हो चूर चूर क्षण भर में जीवन-माला के मोती,
या खारे आँसू का जीवन दे अपना दम तोड़ अभी।,

× × ×

इस विशिष्ट दिन के सारे वीरतापूर्ण कार्यों का विवेचन और वर्णन करने के लिये तो बहुत अधिक स्थान चाहिये और समय भी, परन्तु फिर भी......! यद्यपि मार्स अपार शक्ति-दान देकर इनीयस के पक्ष को प्रोत्साहित करता है, तथापि प्रत्यक्ष रूप से तो ऐसा लगता है जैसे कि उसकी पराजय स्पष्टतया निश्चित है। थोड़े समय तक यह स्थिति चलती रहती है कि जूपिटर टरनस की सेना को आज्ञा देता है कि वह युद्ध के मैदान को छोड़कर लौट आये।

पर्व दस–

शीघ्र ही ओलिम्पस पर्वत पर जूपिटर अपने सहकारियों की एक सभा बुलाता है और कहता है कि उनमें से कोई भी, किसी भी पक्ष के बीच में न पड़े, क्योंकि उसकी इच्छा है कि देवताओं की दैवी सहायता के बिना ही इस लड़ाई का फ़ैसला हो। जूपिटर के इस प्रतिबन्ध पर वीनस बहुत असन्तुष्ट और व्यग्र हो उठती है और विरोध करती है कि जब एक बार उसने वचन दे दिया है कि उसका पुत्र इटली में एक नया राज्य स्थापित करेगा तो उसकी सहायता करना उसका कर्त्तव्य हो जाता है और वह उसकी सहायता आवश्यक-रूप से करेगी। उधर विवाह की देवी जूनो उतनी ही शक्ति और उतने ही प्रभावोत्पादक ढंग से अपना तर्क सम्मुख रखती है कि हेलेन को भगाकर ट्राजनों ने गुरू अपराध किया है, जिसके लिये उन्हें अभी और सज़ा मिलनी चाहिये। इस पर जूपिटर दोनों ही देवियों को शान्त करता है, एक बार फिर अपनी आज्ञा दोहराता है कि देवताओं को इस लड़ाई से अलग रहना है, और सभा विसर्जित करता है।

कविता के दृश्यों में परिवर्तन होता है और एक बार फिर पृथ्वी सामने आती है जहाँ ट्राजन बुरी तरह, चारों ओर से शत्रुओं से घिरे हुये हैं और कामना करते हैं कि इनीयस शीघ्रातिशीघ्र लौट आये।

× × ×

इनीयस एटरूरिया से लौट रहा है—राह में उसकी भेंट समुद्री-परियों से होती है। वे उसे सलाह देती हैं कि अपने पुत्र की प्राण-रक्षा करने के लिये उसे शीघ्रातिशीघ्र रण-क्षेत्र में पहुँच जाना चाहिये। इस प्रकार अंतिम बार सचेत किये जाने पर वह बहुत तेज़ क़दम बढ़ाता है, बहुत जल्दी रण-क्षेत्र में दिखलाई पड़ता है और युद्ध में सक्रिय भाग लेता है।

लड़ाई में वीरता के कितने ही कृत्य आते हैं, और शत्रु-पक्ष के टरनस, मेज़ेन्टियस और

धूमिल, भयकारी हुई, छोटी-छोटी दैत्यों की तरह दिखाई पड़ती है! उसे इतना संताप होता है कि वह चीत्कार कर करके ही अपने लम्बे सुनहले बाल नोच डालती है और देवताओं से प्रार्थना करती है कि वे इनायत करें, उसे इस स्थिति में इस दुर्दशा से छोड़ देने के लिये, अवश्य ही ले लें! इसके बाद वह आत्म-हत्या के विचार से अपने ही हाथ से छुरी भोंक कर अपनी चिता के ऊपर से इस लोक छोड़ देती है। कारथेज के निवासी ऐसे दुर्घटना के सन्देह में भी न थे, अतएव वे वेदना के इस कौतुक को अचरज और क्षोभ से अवाक् होकर देखते हैं, किन्तु डिडो की बहिन इतना घोर चित्कार करती है, कि मानो आकाश को पृथ्वी पर पटक देना चाहती है।

विवाद की देवी जूनो यह दुःख विदारक दृश्य आकाश से अपलक देखती है और धनुष के देवता आइरिस को पृथ्वी पर जाकर डिडो के सिर से बालों का एक गुच्छा काट लेने का आदेश देती है, क्योंकि कुछ ऐसा है कि इस रहस्यपूर्ण क्रिया के बाद ही आत्मा शरीर से छूट सकती है। आइरिस तुरन्त ही आज्ञा पालन के लिये तैयार होता होता है और कहता है कि वह बालों के उस गुच्छे को दिस नामक शैतान के पास ले जायेगा, और इस प्रकार डिडो अपने पार्थिव शरीर से मुक्ति पा जायेगी। इतना कहने के बाद वह पृथ्वी पर आता है और डिडो के सिर से बालों का एक गुच्छा काट लेता है। धीरे-धीरे डिडो के उसके शरीर की उष्णता लुप्त हो जाती है, शरीर शीतल हो जाता है और प्राण वायु में मिल जाता है।

पर्व पाँच—

ईनीयस के पोत आगे बढ़ते रहते रहते हैं। किन्तु वह सहसा ही कारथेज के समुद्री-तट से धुआँ—उठता देखकर घोर भय और शंका से हिल उठता है और उसकी यह व्यग्रता कई गुनी हो उठती है जब आकाश में एक क्षण में ही घोर घटायें घिर आती हैं। उसकी इस चिन्तित मुद्रा से चिन्तित होकर उसका ऋतु-विशेषज्ञ चालक पेलिन्यूरस उसे सलाह देता है कि उन्हें थमना करना चाहिये और ड्रिपानम के बन्दरगाह में शरण ग्रहण करनी चाहिये, क्योंकि पूर्वी आकाश में गहरे कालों बादलों की सघनता बढ़ती जा रही है, और कुछ उत्पात, होना निश्चित है। ईनीयस को उसकी सलाह पसन्द आती है और वह और उसके अन्य साथी एक वर्ष बाद ड्रिपानम के बन्दर में एक बार फिर शरण लेते हैं। यहाँ वे ईनीयस के मृत-पिता के प्रति सम्मान-प्रदर्शन के विचार से एक बलिदान की व्यवस्था करते हैं और बलिदान के बाद अग्नि-दाह-विषयक खेलों में भाग लेते हैं।

यहीं पर कविता में विस्तार से वर्णन किया गया है कि वे सब समुद्री दौड़, साधारण दौड़, घुड़दौड़ और रथदौड़ की प्रतियोगिताओं में भाग लेते और इनाम जीतते हैं। तुमुल युद्ध और धनुष-विद्या के प्रदर्शनों और उनकी प्रतियोगिताओं की भी चर्चा इन वर्णनों में मिलती है।

× ×

अब जब कि इधर ट्राजन-मित्र इन आनन्दोत्सवों में प्रेमपूर्वक भाग ले रहे हैं, उधर जूनो के निर्देशन में ट्राजन-पत्नियाँ उनके जहाज़ों में आग लगा देती हैं। वे उनके इस प्रकार घूमते-

मुझपर चलने दो तुम अपने तीखे भालों के तूफ़ान।
अरे, व्यर्थ का शोर मचानेवालों, मुझ पर दया करो,
मुझे झोंक दो और डुबा दो किसी झील में फ़ौरन तुम।
अरे नहीं, तो सम्भव है, मैं धरती पर दूँ पटक अभी,
औ, हों चूर चूर क्षण भर में जीवन-माला के मोती,
या खारे आँसू का जीवन दे अपना दम तोड़ अभी !,

× × ×

इस विशिष्ट दिन के सारे वीरतापूर्ण कार्यों का विवेचन और वर्णन करने के लिये तो बहुत अधिक स्थान चाहिये और समय भी, परन्तु फिर भी......! यद्यपि मार्स अपार शक्ति-दान देकर इनीयस के पक्ष को प्रोत्साहित करता है, तथापि प्रत्यक्ष रूप से तो ऐसा लगता है जैसे कि उनकी पराजय स्पष्टतया निश्चित है। थोड़े समय तक यह स्थिति चलती रहती है कि जूपिटर टरनस की सेना को आज्ञा देता है कि वह युद्ध के मैदान को छोड़कर लौट आये।

पर्व दस—

शीघ्र ही ओलिम्पस पर्वत पर जूपिटर अपने सहकारियों की एक सभा बुलाता है और कहता है कि उनमें से कोई भी, किसी भी पक्ष के बीच में न पड़े, क्योंकि उसकी इच्छा है कि देवताओं की दैवी सहायता के बिना ही इस लड़ाई का फ़ैसला हो। जूपिटर के इस प्रतिबन्ध पर वीनस बहुत असन्तुष्ट और व्यग्र हो उठती है और विरोध करती है कि जब एक बार उसने वचन दे दिया है कि उसका पुत्र इटली में एक नया राज्य स्थापित करेगा तो उसकी सहायता करना उसका कर्त्तव्य हो जाता है और वह उसकी सहायता आवश्यक-रूप से करेगी। उधर विवाह की देवी जूनो उतनी ही शक्ति और उतने ही प्रभावोत्पादक ढंग से अपना तर्क सम्मुख रखती है कि हेलेन को भगाकर ट्राजनों ने गुरू अपराध किया है, जिसके लिये उन्हें अभी और सज़ा मिलनी चाहिये। इस पर जूपिटर दोनों ही देवियों को शान्त करता है, एक बार फिर अपनी आज्ञा दोहराता है कि देवताओं को इस लड़ाई से अलग रहना है, और सभा विसर्जित करता है।

कविता के दृश्यों में परिवर्तन होता है और एक बार फिर पृथ्वी सामने आती है जहाँ ट्राजन बुरी तरह, चारों ओर से शत्रुओं से घिरे हुये हैं और कामना करते हैं कि इनीयस शीघ्रातिशीघ्र लौट आये।

× × ×

इनीयस एटरूरिया से लौट रहा है—राह में उसकी भेंट समुद्री-परियों से होती है। वे उसे सलाह देती हैं कि अपने पुत्र की प्राण-रक्षा करने के लिये उसे शीघ्रातिशीघ्र रण-क्षेत्र में पहुँच जाना चाहिये। इस प्रकार अंतिम बार सचेत किये जाने पर वह बहुत तेज़ क़दम बढ़ाता है, बहुत जल्दी रक्त-क्षेत्र में दिखलाई पड़ता है और युद्ध में सक्रिय भाग लेता है।

लड़ाई में वीरता के कितने ही कृत्य आते हैं, और शत्रु-पक्ष के टरनस, मेज़ेन्टियस और

और सुनते हैं कि इस राक्षसी ने अपनी भविष्यवाणियों को वृक्ष की पत्तियों पर लिखकर उन्हें एक निश्चित क्रम से गुफा में रख छोड़ा था, किन्तु एक दिन द्वार खुला रह गया और हवा के एक तेज़ झोंके ने आकर उन्हें इस प्रकार उलट-पलट दिया, इस तरह क्रमहीन कर दिया कि उस गुफा के दर्शनार्थियों के लिये वे एक गूढ़ रहस्य एवं एक समस्या बनकर रह गयी थीं। इनका समझ पाना सर्व-साधारण के वश की बात नहीं था। इनीयस ने भी यह कथा सुन रखी थी, और अब उसके सामने भी प्रश्न-स्वरूप भविष्यवाणियों का यह रहस्यपूर्ण संसार आया तो उसने उस राक्षसी की बड़ी गम्भीर स्तुति की और उससे प्रार्थना की कि वह उसे इस प्रकार वृक्ष की पत्तियों की भविष्यवाणियों के द्वारा आकुल न करे, बल्कि स्वयं, कुछ बताने का कष्ट करे। राक्षसी उसकी प्रार्थना से प्रभावित होती है और तुरन्त ही उसका प्रेत उसके सम्मुख उपस्थित होता है। वह भविष्यवाणी करता है कि समुद्र और स्थल पर अनेकानेक संकटों का सामना करने के बाद और इटली की टाइबर नामक नदी को रक्त से लाल करने के बाद ही वह अपने शत्रुओं पर विजय पा सकेगा और अन्त में एक नवयुवती के साथ लैवियम में के लिए बस जायेगा। प्रेत इतना कह कर एक सांस लेता है और फिर कहता है कि उसे अपनी सारी सफलताओं के लिये यूनानी सहायता का आभार स्वीकार करना पड़ेगा।

इनीयस आनेवाले संकटों की कल्पना से तनिक भी घबराता अथवा विचलित नहीं होता, प्रत्युत वह उस राक्षसी से प्रार्थना करता है कि वह उसे हेडीज़ (पाताल) का रास्ता बतला दे और हो सके तो उसे वहाँ पहुँचा दे, ताकि वह अपने पिता के आदेशानुसार उससे वहाँ भेंट कर सके। इस प्रार्थना के उत्तर में वह उसे कोरा जवाब दे देती है कि वह उसे वहाँ पहुँचाने में तब तक असमर्थ है जब तक कि वह उसे एक सोने की डाल नहीं देता, जो कि उन प्रदेशों में जाने का काम देगी, और जब तक कि वह अपने मित्र के शव के प्रति समुचित सम्मान प्रदर्शित नहीं करता। इनीयस उसकी दोनों अजब और रहस्यपूर्ण शर्तें सुनता है और आश्चर्य में पड़ जाता है, किन्तु शीघ्र ही जब वह अपने जहाज़ पर वापिस आता है तो देखता है कि उसका एक नाविक साथी मार डाला गया है। इनीयस तुरन्त ही उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया की व्यवस्था करता है। इसके थोड़े समय बाद वह टहलते-टहलते पड़ोस के एक जङ्गल में बहुत दूर निकल जाता है। यहाँ उसकी माँ की प्रिय-चिड़िया, बतखें उसे मिल जाती हैं, जो उसे एक ऐसे स्थान का रास्ता ही नहीं बतलातीं प्रत्युत उसे उस स्थान पर पहुँचा भी देती हैं जहाँ के पेड़ों की डालें सोने की हैं। वह ऐसी एक डाल प्राप्त करता है और ले-जाकर उस राक्षसी को देता है।

× ×

इस प्रकार इनीयस उस राक्षसी को उस आश्चर्यजनक शस्त्र से सुसज्जित कर एवरनस झील के रास्ते से उस अन्धकारमय, उदास गुफा में प्रविष्ट होता है जो कि हेडीज़ का प्रमुख प्रवेश-द्वार है। इसके बाद वह अपने रहस्यपूर्ण पथ-प्रदर्शक के उड़ते हुए कदमों के पीछे पीछे चलकर और रात्रि के प्रदेश से गुज़रकर शाप की पिसी हुई आत्माओं के प्रदेश की सीमा पर पहुँचता है। यहाँ उसे असंख्यक प्रेतात्मायें दिखाई पड़ती हैं। यद्यपि वह स्वयं तुरन्त ही

वहीं मुझे एक क़ब्र, मुझे दो एक क़ब्र,
केवल एक......एक क़ब्र !

पर्व ग्यारह—

इनीयस अपने मृत-शत्रुओं के प्रति सम्मान प्रकट करता है। वह अपने साथियों की अन्त्येष्टि-क्रिया के लिये जाने से पहिले पैलेस की लाश को सुसज्जित करवाता और एटरूरिया भेजवा देता है। इसके बाद वह टरनस के राजदूतों से बारह दिन की सुलह के लिये बातचीत करता है। इस प्रकार लड़ाई बारह दिन के लिये समाप्त हो जाती है।

इस १२ दिन के समय में दोनों पक्ष अपने-अपने मृत-वीरों के दाह-संस्कार का राजसी आयोजन करते हैं। इनमें पैलेस का शरीर सब से अधिक ठाठ-बाट से अग्नि को समर्पित किया जाता है।

इस आकांक्षा से कि अब और अधिक व्यर्थ रक्त न बहे, लैटिनस एक सन्धि का प्रस्ताव करता है। सन्धि की शर्तें इनीयस तो मान लेता है पर टरनस क्रोधित होकर अस्वीकार कर देता है, क्योंकि उसे उसकी वह पत्नी इस समय भी नहीं मिल रही, जिसके लिये कि उसे कभी वचन दिया जा चुका है। अतएव, लड़ाई फिर आरम्भ होती है।

इस बार के युद्ध के शौर्य-प्रदर्शन का सीधा सम्बन्ध वीरांगना कैमिला से है। कहा जाता है कि जब यह बच्ची थी और इसके पिता का पीछा उसके शत्रु कर रहे थे, इसके पिता ने इसे अपने भाले की मूँठ में बाँधकर नदी की उस धारा के पार फेंक दिया था, जिसे वह उसको गोद में लेकर पार करने में असमर्थ था। इस प्रकार शत्रुओं से प्राण बचाकर उसने उसे युद्ध-कला की ऐसी शिक्षा दी थी कि वह उस कला में सर्व तरह से पारंगत हो गई थी ! इस समय वही कैमिला ऐसे कमाल दिखलाती है कि मालूम होता है कि वह शत्रुओं को तहस-नहस करके ही दम लेगी ! वह अपनी अंतिम सांस तक किसी भी वीर-से-वीर योद्धा की भाँति लड़ती है, किन्तु केवल अंत में दम तोड़ते समय टरनस से सहायता के लिये प्रार्थना करना चाहती है। वह दूतों के द्वारा सन्देश भेजती है कि अब शत्रुओं को सदा के लिये शहर से निकाल बाहर कर देने के लिये उसकी सहायता की आवश्यकता है........! बात पूरी नहीं हो पाती कि वह दम तोड़ देती है !

पर्व बारह—

इस समय लैटिनस बार-बार दोहराता और ज़ोरदार शब्दों में कहता कि वह अपनी पुत्री लैविनिया का विवाह किसी अपरिचित से ही करेगा, टरनस से नहीं, क्योंकि एक तो देवताओं की आज्ञा है, दूसरे उससे इस आशय की कई बार, कई व्यक्तियों-द्वारा, प्रार्थनायें की गई हैं, जिनमें स्वयं पुत्री की मां अमाटा की प्रार्थना भी एक है।

है और उसे हृदय लगाने की कोशिश करता है, किन्तु पुत्र उसके हाथ नहीं आता और पिता को बड़ी निराशा होती है ! हम भूले न होंगे, इसी प्रकार एंकाइसीज़ ने एक बार और ड्रिपानम में उसे हृदय लगाने का व्यर्थ का प्रयत्न किया था ! फिर भी एंकाइसीज़ उसे जीवन-मृत्यु और अमरत्व से सम्बन्धित कितनी ही बातें बतलाता है। इसके बाद वह आगामी एक हज़ार वर्षों के रोम के इतिहास की प्रमुख-प्रमुख घटनाओं का एक संक्षिप्त वर्णन अपने पुत्र के सम्मुख रखता है; जिसमें रोम के संस्थापक रोमलस के काल से लेकर दुनिया के प्रमुख युवराज और सम्राट आगेस्टस तक के समय के उल्लेखनीय व्यक्ति का विधिवत् अंकन है।

इनीयस को अपने कुल के सदस्यों के प्रताप यश और उनके जीवन के उतार-चढ़ाव के वर्णनों को सुनने-समझने में काफ़ी समय लग जाता है। किन्तु जैसे ही वे समाप्त होते हैं, साइबील इस भयानक नर्क-प्रदेश से बाहर निकलने के एक रास्ते से उसे तुरन्त ही एक बार फिर पृथ्वी पर ले आती है। वह इस समय बहुत प्रसन्न दिखलाई पड़ता है, चूँकि उसने अपना काम बड़ी सफलतापूर्वक किया है।

अपनी जाति और अपने परिवार के भविष्य की जानकारी से उसे बड़ा प्रोत्साहन मिलता है वह जहाज़ पर लौट आता है। इस समय वह अपने घर पहुँचने के लिये बहुत उत्सुक है, अतएव तुरन्त ही पाल चढ़वा देता है और अपनी मंज़िल के लिये चल पड़ता है !

पर्व सात—

शीघ्र ही इनीयस इटली के पश्चिमी समुद्री किनारे से होकर गुज़रता है। वह सर्स के द्वीप से आगे आ चुका है और अनुकूल हवाओं के सहारे तेज़ धारावाली टाइबर[१] नदी के वृत्त पर बड़ी तेज़ी से बढ़ रहा है। इस बार चलने के बाद वह अब तक कहीं नहीं रुका है, अतएव एक तट पर उतरता ही है कि गीत-काव्य की अधिष्ठात्री इरैटो उसके सम्मुख उपस्थित होकर उन लैटिनों का इतिहास गाती है जिनका प्रतिनिधि पास के प्रदेश का राजा लैटिनस है और जिनका दावा है कि वे सीधे सैटर्न (शनि) से पृथ्वी पर अवतरित हुये हैं ! यह लैटिनस वह व्यक्ति है जो टरनस[२] को अपनी पुत्री ब्याह देने का वचन दे चुका है, किन्तु जो अपना निश्चय बदल देता है, क्योंकि इन ट्राजनों के इस प्रकार इस तट पर उतरने के कारण कुछ घटनायें घटती हैं, कुछ शकुन होते हैं, जिनका उसके लिये स्पष्ट आदेश है कि वह अपनी पुत्री को तब तक क्वाँरी रक्खे, जब तक कि कोई ऐसा अपरिचित आकर स्वयं उसका हाथ अपने हाथ में न ले-ले जिसकी सन्तान का पराक्रमी और यशस्वी होना निश्चित हो !

इरैटो का गीत समाप्त हो जाता है। ट्राजन भूखे हैं अतएव वे माँस का भोजन

[१] इटली की ट्यूब्यूलस नामक एक नदी।

[२] इटली के राष्ट्र का राजकुमार।

स्कैंडिनेवियन महाकाव्य–

१००० ई० पू० में विभाजित होकर पूर्वी उत्तरी और पश्चिमी उत्तरी बनने के पहले स्कैंडिनेविया की विभिन्न बोलियाँ केवल एक भाषा के रूप में प्रचलित थीं किन्तु इस विभाजन के बाद डेनमार्क और स्वेडेन की बोलियाँ पूर्वी उत्तरी के अन्तर्गत हो गईं और आइसलैंड और नार्वे की पश्चिमी उत्तरी के अन्तर्गत !

\+ + +

स्वेडेन को अपने ५०० वीर-काव्यों पर गर्व है और सही भी है कि वह इन्हें लेकर संसार के सामने बड़ी-बड़ी बातें करे ! ये सभी एक चौथी और छटीं शताब्दि में रच गये हैं और इनके कथानक अंशतः पौराणिक हैं और अंशतः विशुद्ध ऐतिहासिक। परन्तु बाइबिल का अनुवादकर्त्ता डेनमार्क-निवासी वह पहिला व्यक्ति था जिसने फ्रांस के 'शालमाँन' और 'आजियर' नामक महाकाव्यों का अपने देशवासियों से परिचय ही नही कराया, प्रत्युत उनका परिष्कार भी किया ! १५५५ में रिनार्ड दि फ़ॉक्स, का फ्रेंच से और 'हाइम्ज़क्रिंगला' का आइसलैंडिक से डेनिश में अनुवाद हुआ किन्तु एरींबो द्वारा 'हेग्ज़मेरॉन' या प्रथम वास्तविक 'डेनिश महाकाव्य' १६४१ में रचा गया !

१६ वीं शताब्दि में 'पेलूदल मिलर' ने डेनिश में कितने ही महाकाव्य रचे, किंतु उनका उसके देश के बाहर प्रचार न हो सका ! यों कहा जा सकता है कि इस समय की स्वेडिश कितने ही महाकाव्यों का जीता जागता प्रमाण है, जो सारे-के-सारे ईसाई धर्म के देश में प्रवेश होते ही विनष्ट हो गये ! यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि मध्य-युगों में सम्राज्ञी यूफ़ीमेया (१३०३-१२) के दरबार में किसी राज कवि ने स्वेडिशमें 'यूफ़ीमेयाविज़र' नामक वीर-काव्य की रचना की थी, स्वेडिशमें किंतु स्वेडेन का महानतम महाकाव्य टेग्नर कृत 'फ्रिथजोफ़्ससागा' है। इसका रचना-काल १८४६ है। इसमें एक प्राचीन योद्धा के साहसिक कार्यों और उसकी दरबारदारी का वर्णन किया गया है। इसी लेखक की 'लीजेन्ड्ज़ ऑफ़ दि मिडिल एजेज़' नामक दूसरी रचना में भी ये सारी घटनाऐं ज्यों की त्यों मिलती हैं।

× ×

कितने ही राजनैतिक कारणों से १२ वीं और १३ शताब्दि में कितने ही सम्भ्रान्त परिवार नार्वे से स्वेडन में जा-बसे और उन्हें भौगोलिक तटस्थता और लम्बी शरद् ऋतुओं के कारण अपने मनोरंजन के साधन स्वयं ही सोचने और जुटाने पड़े। इस प्रकार कहानी और

इतनी सफलता से शांति भङ्ग करने के बाद वैमनस्य की देवी शीघ्रता से जूनो के पास आती है। जूनो देखती है कि लैटिनस निश्चय कर चुका है कि न वह इनीयस की ओर से और न टरनस की ओर से लड़ेगा! इस निश्चय के कारण वह प्रसन्न भी है। अतएव वह अपने हाथ से जैनस[1] के मन्दिर के फाटक खोलती है और उसे लड़ाई में भाग लेने पर विवश कर देती है।

इस स्थान पर कवि उन विभिन्न योद्धाओं के नाम गिनाता है जिनका किसी भी पक्ष में अपने शौर्य से यश लाभ-करना सम्भव अथवा निश्चित है। वह इस लम्बी तालिका में ट्यूट्यूल्स के सिर मौर मेज़ेंटियस, उसके पुत्र लॉशस और [2]वाल्शियन-महिला कैमिला का विशेष उल्लेख करता है, जो शान्तिमय प्रणय-परिणय के जीवन की अपेक्षा सैन्य-जीवन की हलचल अधिक पसन्द करती है।

पर्व सात—

ज्यों ही टरनस को उसके अनेकानेक मित्रों की सहायता प्राप्त हो जाती है, इनीयस भी कुछ मित्रों की प्राप्ति और उनके योग के लिये उत्सुक हो उठता है। वह एटरूरिया के उस राजा इवेंडर से सहायता मांगने के लिये चल पड़ता है, जो कि पहिले एक यूनानी था। वह रास्ते में देखता है कि टाइबर नदी के किनारे एक स्थान पर एक सुअरी ३० बच्चों को एक साथ दूध पिला रही है। वह उसे देवताओं के नाम पर बलिदान कर देता है, क्योंकि उसका वहाँ पाये जाने का मतलब है कि भविष्य में उसकी राजधानी उसी स्थान पर बसाई जायेगी! इस कार्य के बाद वह अपनी राह लेता है और शीघ्र ही 'एटरूरिया पहुँचाता है। तुरन्त ही यहाँ के शक्तिशाली निवासियों का एक बहुत बड़ा समूह उसे वचन देता है कि उस दल का प्रत्येक व्यक्ति राजपुत्र पैलैस के संरक्षण में उसके लिये जान देने को तैयार है!

इनीयस आश्वस्त होता है। वह कुछ समय बाद ही हरकुलीस की एक विजय के सम्मान में दिये-गये एक प्रीति भोज में भाग लेता है और भोजनोपरान्त सो जाता है कि उसकी माँ वीनस अपने लोहार-पति के आग्रह करती है कि वह के लिये एक जोड़ नवीन कवच तैयार कर रहे।

सवेरा होता है और इवेंडर कहानियों से अपने अतिथि का मनोरंजन करता है उसका पुत्र अपनी तैयारियों में व्यस्त है और शीघ्र ही पूरा तैयार हो जाता है। अब इनीयस वहाँ से विदा होता है क्योंकि विशेष रूप से तैयार कराया-गया कवच उसे देते समय उसकी माँ उसे सचेत करती है कि उसकी सेना ख़तरे में है।

---

[1] दो सिरवाला लैटिनों के देवता, जिसके मन्दिर के द्वार खुल जाने का अर्थ है शांति का अंत!

[2] उस जाति की सदस्या जो पहिले सिरिस नदी के किनारे रहते थे, किन्तु जो बाद में लैटियम में आ बसे

'वॉल्संगा-सागा'—

यह महाकाव्य 'एड्डा' के दूसरे भाग में है और इसकी कथा-वस्तु इस प्रकार है :— वॉल्संग नार्वे के देवराज ओडिन का सीधा वंशज है। वह शाह-बलूत के पेड़ नीचे अपने रहने का घर बनाता है! फल यह होता है कि उस विशाल वृक्ष की पत्तियाँ उसे बुरी तरह घेर कर ढक लेती हैं। कुछ समय बाद जब उसकी पुत्री का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध गोथों[1] के राजा सिगियर के साथ सम्पन्न होता है तो अतिथियों की भीड़ को चीरता हुआ, सहसा, एक काना अपरिचित आगे आता है और बिना दायें-बायें देखे अपनी अनमोल तलवार से उस बलूत के तने में गहराई तक घुसेड़ देता है। यही नहीं, वह यह भी घोषित करता है कि उस तलवार को उस पेड़ से खींच लेने वाला उस तलवार का स्वामी तो होगा ही, प्रत्येक युद्ध में विजयी भी होगा! इसके बाद वह उत्सुक निगाहों से उपस्थित मंडली की ओर देखता है कि अब कोई आगे आये और पौरुष की परीक्षा दे।

यद्यपि वॉल्संग यह जानता है कि उनकी मण्डली में उपस्थित यह अज्ञात काना कोई और न होकर स्वयं ऑडिन ही है, तथापि वह वर से आग्रह करता है कि वह आगे बढ़े। वर उसके अनुरोध की रक्षा में असफल हो जाता है। उसे असफल होता देखकर वॉल्संग स्वयं उस दैवी तलवार को तने से खींच लेने में ऐड़ी-चोटी का पसीना एक कर देता है, किन्तु सब व्यर्थ! अतएव अब वह अपने दस पुत्रों को संकेत करता है! उसके नौ पुत्रों के हारकर बैठ रहने के बाद दसवाँ पुत्र ज़ीग्मंड उस परीक्षा में सफल होता है और एक झटके में ही तलवार को तने से खींच लेता है।.........

× ×

वर सिगियर चाहता है कि वह अपना पुरस्कार उसके हाथ बेंच दे किन्तु ज़ीग्मंड दृढ़ता से इन्कार कर देता है और कहता है कि वह उसे किसी को भी न दे सकेगा! इस पर गोथ सिगियर उससे बहुत नाराज़ हो जाता है और दूसरे दिन उसी हालत में विदा होने की तैयारी करता है। उसकी पत्नी सिगनी सब कुछ भली भाँति समझ कर अपने पिता और भाइयों

---

[1] एक असभ्य जर्मन-जाति जिसने तीसरी से पाँचवीं शताब्दी तक पूर्वी और पश्चिमी राज्यों पर हमले किये!

सुकुमार पालने को तुम अपने तोड़े नातों के तूफ़ान।
और, स्वर्ग का भार सम्हालनेवालो, मुझ पर दया करो,
मुझे झोंक दो और डुबा दो किसी झील में फ़ौरन तुम।
और नहीं, जो सम्भव है, मैं धरती पर दूँ पटक अभी,
औ, हो चूर चूर पल भर में जीवन-माला के मोती,
या प्यारे आँसू का जीवन दे अपना दम तोड़ अभी।,

× × ×

इस विशिष्ट दिन के सारे वीरतापूर्ण कार्यों का विवेचन और वर्णन करने के लिये तो बहुत अधिक स्थान चाहिये और समय भी, परन्तु फिर भी......! यद्यपि मार्स अपार शक्ति-दान देकर इनीयस के पक्ष को प्रोत्साहित करता है, तथापि प्रत्यक्ष रूप से तो ऐसा लगता है जैसे कि उनकी पराजय स्पष्टतया निश्चित है। थोड़े समय तक यह स्थिति चलती रहती है कि जूपिटर टरनस की सेना को आज्ञा देता है कि वह युद्ध के मैदान को छोड़कर लौट आये।

पर्व दस–

शीघ्र ही ओलिम्पस पर्वत पर जूपिटर अपने सहकारियों की एक सभा बुलाता है और कहता है कि उनमें से कोई भी, किसी भी पक्ष के बीच में न पड़े, क्योंकि उसकी इच्छा है कि देवताओं की दैवी सहायता के बिना ही इस लड़ाई का फ़ैसला हो। जूपिटर के इस प्रतिबन्ध पर वीनस बहुत असन्तुष्ट और व्यग्र हो उठती है और विरोध करती है कि जब एक बार उसने वचन दे दिया है कि उसका पुत्र इटली में एक नया राज्य स्थापित करेगा तो उसकी सहायता करना उसका कर्त्तव्य हो जाता है और वह उसकी सहायता आवश्यक-रूप से करेगी। उधर विवाह की देवी जूनो उतनी ही शक्ति और उतने ही प्रभावोत्पादक ढंग से अपना तर्क सम्मुख रखती है कि हेलेन को भगाकर ट्राजनों ने गुरू अपराध किया है, जिसके लिये उन्हें अभी और सज़ा मिलनी चाहिये। इस पर जूपिटर दोनों ही देवियों को शान्त करता है, एक बार फिर अपनी आज्ञा दोहराता है कि देवताओं को इस लड़ाई से अलग रहना है, और सभा विसर्जित करता है।

कविता के दृश्यों में परिवर्तन होता है और एक बार फिर पृथ्वी सामने आती है जहाँ ट्राजन बुरी तरह, चारों ओर से शत्रुओं से घिरे हुये हैं और कामना करते हैं कि इनीयस शीघ्रातिशीघ्र लौट आये।

× × ×

इनीयस एटरूरिया से लौट रहा है—राह में उसकी भेंट समुद्री-परियों से होती है। वे उसे सलाह देती हैं कि अपने पुत्र की प्राण-रक्षा करने के लिये उसे शीघ्रातिशीघ्र रण-क्षेत्र में पहुँच जाना चाहिये। इस प्रकार अंतिम बार सचेत किये जाने पर वह बहुत तेज़ क़दम बढ़ाता है, बहुत जल्दी रण-क्षेत्र में दिखलाई पड़ता है और युद्ध में सक्रिय भाग लेता है।

लड़ाई में वीरता के कितने ही कृत्य आते हैं, और शत्रु-पक्ष के टरनस, मेज़ेन्टियस और

अपने भाई को दिया हुआ वचन पूरा करने के लिये सिगनी बेचैन है कि एक लम्बा समय बीत जाता है। वह एक के बाद दूसरे, अपने दो पुत्रों को उसके पास भेजती है कि वह उन्हें शिक्षा देकर अपने काम का बनाये और फिर बदले के कार्य में उनसे सहायता ले! किन्तु शीघ्र ही प्रमाणित हो जाता है कि दोनों ही बालकों में साहस का अभाव है, दोनों ही डरपोक और निकम्मे हैं, अतएव सिगनी इस नतीजे पर पहुँचती है कि उसके भाई की सहायता केवल वही व्यक्ति कर सकता है जिसकी नसों में विशुद्ध वॉल्संग-रक्त दौड़ रहा हो। अब इस जाति का पुत्र प्राप्त करने की अभिलाषा से वह एक किरातिनि का रूप बनाकर चुपचाप अपने भाई की कुटिया जाती है और गर्भवती होकर लौटती है। यथा समय पुत्र होता है और जब यह पुत्र सिनफ़िओटली में बड़ा हो जाता है वह उसे ज़ीग्मंड के पास भेज देती है कि वह उसे बड़ा करे और शिक्षा दे!

× ×

यह बालक बड़ा ही उत्साही और वीर साबित होता है। कहना न होगा कि इसकी प्रकृति ने दबना, झुकना और बुझना तो जैसे सीखा ही नहीं। इसकी सहायता से ज़ीग्मंड कितने ही साहसिक कृत्यों में सफलता प्राप्त करता है।

एक दिन ज़ीग्मंड सिनफ़िओटली के साथ सिगियर के गोदाम में चुपचाप घुस पड़ता है और शस्त्र खींच कर इस प्रतीक्षा में लेट रहता है सिगियर उधर से निकले और अचानक ही हमला कर वह उससे अपना पुराना बदला चुकाये! किन्तु पता नहीं कैसे सिगियर के पुत्र सब कुछ जान लेते हैं और अपने पिता को सचेत कर देते है कि गोदाम के पीपों के पीछे कुछ दुश्मन छिपे-बैठे हैं जो उसे निश्चित-रूप से मार डालना चाहते हैं। वह सुनता है और उसके कान खड़े हो जाते हैं। वह उन्हें पकड़वा कर अलग-अलग कोठरियों में डलवा देता है और खाने के नाम पर कुछ न देकर उन्हें भूखों-मार डालने का निर्णय करता है। किन्तु सिगनी को जैसे ही यह मालूम होता है वह सींकों का एक बोझ ज़ीग्मंड की कोठरी में डलवा देती है। वह पहिले तो इस बोझ को देख कर चौंक उठता है, किन्तु उसे उसमें शीघ्र ही बालमंग नामक जादू की तलवार मिलती है और उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता।

यह तलवार अमोल है! इसकी सहायता से वे दोनों अपनी कोठरियों से बाहर आने का ही प्रबन्ध नहीं करते प्रत्युत मुक्त होने के बाद कितने ही गोथों को मार भी डालते हैं। इसके बाद वे राज-महल में आग लगा देते हैं कि बचे-बचाये गोथ जान बचा कर भाग निकलते हैं। सहसा ही उनकी निगाह आग की लपटों में लिपटी सिगनी पर पड़ती है और वे उसे बचाने के हार्दिक प्रयत्न करते हैं, किन्तु उनकी सारी कोशिशें बेकार जाती हैं। उन दोनों पर दृष्टि पड़ते ही सिगनी उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है और अपने पति के कमरे की ओर संकेत कर उनसे विदा लेती है। दूसरे ही क्षण और भयंकर आग की लपटें उसे चारों ओर से घेर लेती हैं। इसी समय सिगियर के कमरे की ऊंची छत गिर पड़ती है, और उसकी दीवारें बैठ जाती हैं और वह उनके नीचे दब कर दम तोड़ देती है!

× ×

मुझपर चलने दो तुम अपने तीखे भालों के तूफ़ान।
अरे, व्यर्थ का शोर मचानेवालों, मुझ पर दया करो,
मुझे झोंक दो और डुबा दो किसी झील में फ़ौरन तुम।
अरे नहीं, तो सम्भव है, मैं धरती पर दूँ पटक अभी,
औ, हों चूर चूर क्षण भर में जीवन-माला के मोती,
या खारे आँसू का जीवन दे अपना दम तोड़ अभी!,

× × ×

इस विशिष्ट दिन के सारे वीरतापूर्ण कार्यों का विवेचन और वर्णन करने के लिये तो बहुत अधिक स्थान चाहिये और समय भी, परन्तु फिर भी......! यद्यपि मार्स अपार शक्ति-दान देकर इनीयस के पक्ष को प्रोत्साहित करता है, तथापि प्रत्यक्ष रूप से तो ऐसा लगता है जैसे कि उनकी पराजय स्पष्टतया निश्चित है। थोड़े समय तक यह स्थिति चलती रहती है कि जूपिटर टरनस की सेना को आज्ञा देता है कि वह युद्ध के मैदान को छोड़कर लौट आये।

पर्व दस—

शीघ्र ही ओलिम्पस पर्वत पर जूपिटर अपने सहकारियों की एक सभा बुलाता है और कहता है कि उनमें से कोई भी, किसी भी पक्ष के बीच में न पड़े, क्योंकि उसकी इच्छा है कि देवताओं की दैवी सहायता के बिना ही इस लड़ाई का फ़ैसला हो। जूपिटर के इस प्रतिबन्ध पर वीनस बहुत असन्तुष्ट और व्यग्र हो उठती है और विरोध करती है कि जब एक बार उसने वचन दे दिया है कि उसका पुत्र इटली में एक नया राज्य स्थापित करेगा तो उसकी सहायता करना उसका कर्त्तव्य हो जाता है और वह उसकी सहायता आवश्यक-रूप से करेगी। उधर विवाह की देवी जूनो उतनी ही शक्ति और उतने ही प्रभावोत्पादक ढंग से अपना तर्क सम्मुख रखती है कि हेलेन को भगाकर ट्राजनों ने गुरू अपराध किया है, जिसके लिये उन्हें अभी और सज़ा मिलनी चाहिये। इस पर जूपिटर दोनों ही देवियों को शान्त करता है, एक बार फिर अपनी आज्ञा दोहराता है कि देवताओं को इस लड़ाई से अलग रहना है, और सभा विसर्जित करता है।

कविता के दृश्यों में परिवर्तन होता है और एक बार फिर पृथ्वी सामने आती है जहाँ ट्राजन बुरी तरह, चारों ओर से शत्रुओं से घिरे हुये हैं और कामना करते हैं कि इनीयस शीघ्रातिशीघ्र लौट आये।

× × ×

इनीयस एटरूरिया से लौट रहा है—राह में उसकी भेंट समुद्री-परियों से होती है। वे उसे सलाह देती हैं कि अपने पुत्र की प्राण-रक्षा करने के लिये उसे शीघ्रातिशीघ्र रण-क्षेत्र में पहुँच जाना चाहिये। इस प्रकार अंतिम बार सचेत किये जाने पर वह बहुत तेज़ क़दम बढ़ाता है, बहुत जल्दी रक्त-क्षेत्र में दिखलाई पड़ता है और युद्ध में सक्रिय भाग लेता है।

लड़ाई में वीरता के कितने ही कृत्य आते हैं, और शत्रु-पक्ष के टरनस, मेज़ेन्टियस और

बन जाये उनके आगे परोस दिया जाये ! किन्तु उस झोपड़ी का मालिक उस ऊदबिलाव को देखते ही पागलों की भाँति चिल्ला उठा-'हाय रे' तुमने तो ऊदबिलाव रूपी मेरे सबसे बड़े लड़के को मार डाला, इसके बाद उसने न आव गिना; न ताव, बस, उन्हें कसकर जकड़ दिया और प्रतिज्ञा की कि वह उस ऊदबिलाव की खाल के बराबर सोना मिलने पर ही उन लोगों को छोड़ेगा, नहीं तो नहीं !

रेगिन कहता रहता है कि देवता जानते थे कि उनका काम केवल जादू के कोष से ही चल सकता है और वे मुक्त हो सकते हैं, अतएव उन्होंने अपने मेज़मान से प्रार्थना कि यदि यह थोड़े समय के लिये भी लोकी को आज़ाद कर दे तो वे उसे मुँहमाँगा सोना देंगे ! मेज़मान उनकी बात मान ली और लोकी को छोड़ दिया। लोकी मुक्त होते ही उस एँडवरी नामक बौने की खोज में निकल पड़ा जिसने अकूत सोना इकट्ठा कर रक्खा था। किन्तु बौना बड़ा चालाक था और आसानी से देवता के हाथ न आ सकता था। अतएव अंत में लोकी को दुष्टता बरतनी पड़ी और तब कहीं वह उसे राइन के उद्गम-स्थान पर मछली के रूप में दिखलाई पड़ा ! अब नज़र पड़ते ही उसने समुद्र की देवी का वह जाल राइन में डाला, जिससे बचकर निकल-भागना असम्भव है, और बौने को फाँस लिया ! इस प्रकार उसे वश में करने के बाद लोकी ने उससे सोने का विशाल कोष तो ले ही लिया, हेल्म 'आफ़ड्रेड' नामक वह शिरस्त्राण भी छीन लिया जिसे सिर पर रखते ही आदमी अदृश्य हो जाता है। इस तरह परीशान किये जाने पर बौना खीझ उठा और उसने श्राप दिया कि उसके संताप के कारण दो भाई, एक पिता और आठ राजा मारे जायंगे। किन्तु लोकी ने भविष्यवाणी को कुछ नहीं समझा और इसके लिये उसकी खूब मरम्मत करने के बाद अपने साथी देवताओं की यातना का अनुमान कर तेज़ क़दम बढ़ाये ! वह वहाँ पहुंचा और उसने कामना की कि उस खाल के बराबर सोना देकर वह उन देवताओं को छुड़ा ले, लेकिन वह विकल हो उठा जब खाल प्रतिक्षण बढ़ती रही और इतनी भारी हो गई कि उस सारी स्वर्ण राशि के साथ-साथ उसे वह शिरशास्त्र और अपनी सर्पाकार अंगूठी भी दे देनी पड़ी और तब कहीं आवश्यक हरजाना पूरा हुआ ! उधर कोष का नया स्वामी, ललचाई आंखों से उस सोने के ढेर को तब तक घूरता रहा जब तक कि उसका स्वभाव नहीं बदल गया और वह आदमी के बजाय एक राक्षस नहीं हो गया। शीघ्र ही उसके दो शेष पुत्रों में से एक फ़ैफ़निर उस झोंपड़ी में घुसा और उसने बिना यह ख्याल किये कि वह उसका पिता है, उस दैत्य को मार डाला ! अपने पिता की भांति वह भी उस सारी सम्पत्ति को पाकर धन्य हो गया। और अंत में वह उसे निर्जन में ले गया और उसी प्रकार आंख फाड़ कर देखता रहा, फल यह हुआ कि वह भी राक्षस में बदल गया और उसी रूप में कितने ही समय तक उसकी रखवाली करता रहा !

इतना कहने के बाद रेगिन क्षण भर को रुकता है, किन्तु इस समय उसकी मुद्रा इस प्रकार बदल जाती है कि साफ़ झलक जाता है कि वह कहानी न कहकर अपने वास्तविक संकट की कहानी कह रहा है।

शीघ्र ही भेद खुल जाता है कि उस राक्षस का दूसरा बेटा वह स्वयं है और उसका

वहीं मुझे एक क़ब्र, मुझे दो एक क़ब्र,
केवल एक......एक क़ब्र !

पर्व ग्यारह—

इनीयस अपने मृत-शत्रुओं के प्रति सम्मान प्रकट करता है। वह अपने साथियों की अन्त्येष्टि-क्रिया के लिये जाने से पहिले पैलेस की लाश को सुसज्जित करवाता और एटरूरिया भेजवा देता है। इसके बाद वह टरनस के राजदूतों से बारह दिन की सुलह के लिये बातचीत करता है। इस प्रकार लड़ाई बारह दिन के लिये समाप्त हो जाती है।

इस १२ दिन के समय में दोनों पक्ष अपने-अपने मृत-वीरों के दाह-संस्कार का राजसी आयोजन करते हैं। इनमें पैलेस का शरीर सब से अधिक ठाठ-बाट से अग्नि को समर्पित किया जाता है।

इस आकांक्षा से कि अब और अधिक व्यर्थ रक्त न बहे, लैटिनस एक सन्धि का प्रस्ताव करता है। सन्धि की शर्तें इनीयस तो मान लेता है पर टरनस क्रोधित होकर अस्वीकार कर देता है, क्योंकि उसे उसकी वह पत्नी इस समय भी नहीं मिल रही, जिसके लिये कि उसे कभी वचन दिया जा चुका है। अतएव, लड़ाई फिर आरम्भ होती है।

इस बार के युद्ध के शौर्य-प्रदर्शन का सीधा सम्बन्ध वीरांगना कैमिला से है। कहा जाता है कि जब यह बच्ची थी और इसके पिता का पीछा उसके शत्रु कर रहे थे, इसके पिता ने इसे अपने भाले की मूँठ में बाँधकर नदी की उस धारा के पार फेंक दिया था, जिसे वह उसको गोद में लेकर पार करने में असमर्थ था। इस प्रकार शत्रुओं से प्राण बचाकर उसने उसे युद्ध-कला की ऐसी शिक्षा दी थी कि वह उस कला में सर्व तरह से पारंगत हो गई थी! इस समय वही कैमिला ऐसे कमाल दिखलाती है कि मालूम होता है कि वह शत्रुओं को तहस-नहस करके ही दम लेगी! वह अपनी अंतिम सांस तक किसी भी वीर-से-वीर योद्धा की भाँति लड़ती है, किन्तु केवल अंत में दम तोड़ते समय टरनस से सहायता के लिये प्रार्थना करना चाहती है। वह दूतों के द्वारा सन्देश भेजती है कि अब शत्रुओं को सदा के लिये शहर से निकाल बाहर कर देने के लिये उसकी सहायता की आवश्यकता है........! बात पूरी नहीं हो पाती कि वह दम तोड़ देती है!

पर्व बारह—

इस समय लैटिनस बार-बार दोहराता और ज़ोरदार शब्दों में कहता कि वह अपनी पुत्री लैविनिया का विवाह किसी अपरिचित से ही करेगा, टरनस से नहीं, क्योंकि एक तो देवताओं की आज्ञा है, दूसरे उससे इस आशय की कई बार, कई व्यक्तियों-द्वारा, प्रार्थनायें की गई हैं, जिनमें स्वयं पुत्री की मां अमाटा की प्रार्थना भी एक है।

बन जाये उनके आगे परोस दिया जाये! किन्तु उस झोपड़ी का मालिक उस ऊदबिलाव को देखते ही पागलों की भाँति चिल्ला उठा-'हाय रे' तुमने तो ऊदबिलाव रूपी मेरे सबसे बड़े लड़के को मार डाला, इसके बाद उसने न आव गिना; न ताव, बस, उन्हें कसकर जकड़ दिया और प्रतिज्ञा की कि वह उस ऊदबिलाव की खाल के बराबर सोना मिलने पर ही उन लोगों को छोड़ेगा, नहीं तो नहीं!

रेगिन कहता रहता है कि देवता जानते थे कि उनका काम केवल जादू के कोष से ही चल सकता है और वे मुक्त हो सकते हैं, अतएव उन्होंने अपने मेज़मान से प्रार्थना कि यदि यह थोड़े समय के लिये भी लोकी को आजाद कर दे तो वे उसे मुँहमाँगा सोना देंगे! मेज़-मान उनकी बात मान ली और लोकी को छोड़ दिया। लोकी मुक्त होते ही उस ऐंडबरी नामक बौने की खोज में निकल पड़ा जिसने अकूत सोना इकट्ठा कर-रक्खा था। किन्तु बौना बड़ा चालाक था और आसानी से देवता के हाथ न आ सकता था। अतएव अंत में लोकी को दुष्टता बरतनी पड़ी और तब कहीं वह उसे राइन् के उद्गम-स्थान पर मछली के रूप में दिखलाई पड़ा! अब नज़र पड़ते ही उसने समुद्र की देवी का वह जाल राइन में डाला, जिससे बचकर निकल-भागना असम्भव है, और बौने को फाँस लिया! इस प्रकार उसे वश में करने के बाद लोकी ने उससे सोने का विशाल कोष तो ले ही लिया, हेल्म 'आफ़ ड्रेड' नामक वह शिरस्त्राण भी छीन लिया जिसे सिर पर रखते ही आदमी अदृश्य हो जाता है। इस तरह परीशान किये जाने पर बौना खीझ उठा और उसने श्राप दिया कि उसके संताप के कारण दो भाई, एक पिता और आठ राजा मारे जायंगे। किन्तु लोकी ने भविष्यवाणी को कुछ नहीं समझा और इसके लिये उसकी खूब मरम्मत करने के बाद अपने साथी देवताओं की यातना का अनुमान-कर तेज़ क़दम बढ़ाये! वह वहाँ पहुंचा और उसने कामना की कि उस खाल के बराबर सोना देकर वह उन देवताओं को छुड़ा ले, लेकिन वह विकल हो उठा जब खाल प्रति-क्षण बढ़ती रही और इतनी भारी हो गई कि उस सारी स्वर्ण राशि के साथ-साथ उसे वह शिर-शास्त्र और अपनी सर्पाकार अंगूठी भी दे देनी पड़ी और तब कहीं आवश्यक हरजाना पूरा हुआ! उधर कोष का नया स्वामी, ललचाई आंखों से उस सोने के ढेर को तब तक घूरता रहा जब तक कि उसका स्वभाव नहीं बदल गया और वह आदमी के बजाय एक राक्षस नहीं हो गया। शीघ्र ही उसके दो शेष पुत्रों में से एक फ़ैफ़निर उस झोपड़ी में घुसा और उसने बिना यह ख्याल किये कि वह उसका पिता है, उस दैत्य को मार डाला! अपने पिता की भांति वह भी उस सारी सम्पत्ति को पाकर धन्य हो गया। और अंत में वह उसे निर्जन में ले गया और उसी प्रकार आंख फाड़-कर देखता रहा, फल यह हुआ कि वह भी राक्षस में बदल गया और उसी रूप में कितने ही समय तक उसकी रखवाली करता रहा!

इतना कहने के बाद रेगिन क्षण भर को रुकता है, किन्तु इस समय उसकी मुद्रा इस प्रकार बदल जाती है कि साफ़ झलक जाता है कि वह कहानी न कहकर अपने वास्तविक संकट की कहानी कह रहा है।

शीघ्र ही भेद खुल जाता है कि उस राक्षस का दूसरा बेटा वह स्वयं है और उसका

स्कैंडिनेवियन महाकाव्य--

१००० ई० पू० में विभाजित होकर पूर्वी उत्तरी और पश्चिमी उत्तरी बनने के पहले स्कैंडिनेविया की विभिन्न बोलियाँ केवल एक भाषा के रूप में प्रचलित थीं किन्तु इस विभाजन के बाद डेनमार्क और स्वेडेन की बोलियाँ पूर्वी उत्तरी के अन्तर्गत हो गई और आइसलैंड और नार्वे की पश्चिमी उत्तरी के अन्तर्गत !

\+ + +

स्वेडेन को अपने ५०० वीर-काव्यों पर गर्व है और सही भी है कि वह इन्हें लेकर संसार के सामने बड़ी-बड़ी बातें करे ! ये सभी एक चौथी और छटीं शताब्दि में रच गये हैं और इनके कथानक अंशतः पौराणिक हैं और अंशतः विशुद्ध ऐतिहासिक। परन्तु बाइबिल का अनुवादकर्त्ता डेनमार्क-निवासी वह पहिला व्यक्ति था जिसने फ्रांस के 'शालमॉन' और 'आजियर' नामक महाकाव्यों का अपने देशवासियों से परिचय ही नहीं कराया, प्रत्युत उनका परिष्कार भी किया ! १५५५ में रिनार्ड दि फ़ॉक्स, का फ्रेंच से और 'हाइम्ज़क्रिगला' का आइसलैंडिक से डेनिश में अनुवाद हुआ किन्तु एरींबो द्वारा 'हेग्ज़मेरॉन' या प्रथम वास्तविक 'डेनिश महाकाव्य' १६४१ में रचा गया !

१६ वीं शताब्दि में 'पेलूदुल मिलर' ने डेनिश में कितने ही महाकाव्य रचे, किंतु उनका उसके देश के बाहर प्रचार न हो सका ! यों कहा जा सकता है कि इस समय की स्वेडिश कितने ही महाकाव्यों का जीता जागता प्रमाण है, जो सारे-के-सारे ईसाई धर्म के देश में प्रवेश होते ही विनष्ट हो गये ! यहाँ यह बता देना आवश्यक है कि मध्य-युगों में सम्राज्ञी यूफ़ीमेया (१३०२-१२) के दरबार में किसी राज कवि ने स्वेडिशमें 'यूफ़ीमेयाविज़र' नामक वीर-काव्य की रचना की थी, स्वेडिशमें किंतु स्वेडेन का महानतम महाकाव्य टेग्नर कृत 'फ्रिथजोफ़्ससागा' है। इसका रचना-काल १८४६ है। इसमें एक प्राचीन योद्धा के साहसिक कार्यों और उसकी दरबारदारी का वर्णन किया गया है। इसी लेखक की 'लीजेन्ड्ज़ ऑफ़ दि मिडिल एजेज़' नामक दूसरी रचना में भी ये सारी घटनाएँ ज्यों की त्यों मिलती हैं।

× ×

कितने ही राजनैतिक कारणों से १२ वीं और १३ शताब्दि में कितने ही सम्भ्रान्त परिवार नार्वे से स्वेडन में जा-बसे और उन्हें भौगोलिक तटस्थता और लम्बी शरद् ऋतुओं के कारण अपने मनोरंजन के साधन स्वयं ही सोचने और जुटाने पड़े। इस प्रकार कहानी और

दूसरे ही क्षण पूरा कर डालना चाहता है। किन्तु, जब कि वह इसमें व्यस्त है, रेगिन उस दैत्य के उष्ण रक्त से सनी हुई अपनी उंगली सहसा ही उसके मुँह में घुसेड़ देता है, जैसे कि उसे किसी अपराध के लिये दंड दे रहा हो। इस प्रकार फ़ैफ़निर के कलेजे के ख़ून के ज़ुबान से लगते ही सिगर्ड में ऐसी अलौकिक शक्ति आ जाती है कि वह आसपास में चहचहाती हुई उन चिड़ियों की भाषा बड़ी सरलता से समझने लगता है, जो गीतों के बहाने उसे यह बतला देना चाहती हैं कि रेगिन की नीयत साबित नहीं है और वह शीघ्र ही उसे मार डालने की कोशिश करेगा। अतएव, यह सोचकर कि रेगिन आवश्यकता से अधिक नीच है जो कि उसके उपकारों का बदला इस नृशंसता से चुकाना चाहता है, सिगर्ड क्रोध से आग—बबूला हो-उठता है और उसे मार डालता है। अब रेगिन की लाश की रखवाली में वह सारी स्वर्ण-राशि एक गुफ़ा में छिपा देता है और केवल तलवार, जादू का शिरस्त्राण और उस अंगूठी के साथ घोड़े पर सवार होकर अपनी राह लेता है।

चिड़ियाँ एक बार फिर उसकी सहायता करती हैं और उनके संकेत के सहारे वह एक पहाड़ पर पहुँचता है जिसकी चोटी पर घोर प्रकाश है। यह प्रकाश और कुछ न होकर एक क़िले के चारों ओर धधकती हुई उस आग की लपट-मात्र है जो कि उसकी सीमायें निर्धारित करती है!......सिगर्ड उस आग के पास पहुँचता है और घोड़ा आग देखकर ठिठकने और भड़कने लगता है, किन्तु वह उसे इतनी ज़ोर की एक एड़ लगाता है कि वह कूद कर आग के ऊपर से निकल जाता है।

आग ठंडी पड़ती है और धीरे-धीरे बुझ जाती है। सिगर्ड क़िले के बिचले भाग में पहुँचता और देखता है कि एक मृत योद्धा चबूतरे पर पड़ा हुआ है। वह आगे बढ़ता है और अपनी तलवार से उसके कवच के बन्द काटता ही है कि उसे ज्ञात होता है कि कवच के नीचे का व्यक्ति और कोई न होकर युद्ध की देवी वैलकीर[1] ब्रिनहिल्ट है।

ब्रिनहिल्ट धीरे-धीरे होश में आती है, एक बार फिर जीवन और ज्योति पाने पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट करती है और अपने जीवन-दाता को हृदय से धन्यवाद देती है। इस बीच में दोनों की निगाहें एक होती हैं, ऐसा होते ही वे एक-दूसरे को प्रेम करने लगते हैं और एक-दूसरे को अपना परिचय देते हैं। सिगर्ड अपना निवास-स्थान और अपना नाम आदि बतलाने के बाद अपने साहसिक कृत्यों की चर्चा करता है और ब्रिनहिल्ट उत्तर में उसे बतलाती है कि वह एक वैलकीर है। यही नहीं, वह सारी कथा विस्तार में बतलाती है कि एक बार उसने एक ऐसे आदमी को जीवन-दान दिया जिसे कि ऑडिन मृत्यु-दंड दे चुका था, अतएव फल यह हुआ कि उससे नाराज़ होकर ऑडिन ने उसे त्याग दिया और शाप दिया कि वह किसी ऐसे मनुष्य की पत्नी हो, जो स्वयं उसका हाथ अपने हाथ में ले ले। इस पर वह बहुत डरी कि कहीं उसे कायर-पति न मिले और इससे बचने के लिये उसने ऑडिन से प्रार्थना की कि वह उसे चारों ओर से ऐसी भयानक आग से घेर दे जिसे एक महान योद्धा ही पार कर सकता हो! इतना

[1] वह स्त्री जो एक ऐसे आदमी को अपना पति चुने जिसका रण में खेत-रहना निश्चित हो!

'वॉल्संगा-सागा'—

यह महाकाव्य 'एड्डा' के दूसरे भाग में है और इसकी कथा-वस्तु इस प्रकार है :— वॉल्संग नार्वे के देवराज ओडिन का सीधा वंशज है। वह शाह-बलूत के पेड़ नीचे अपने रहने का घर बनाता है ! फल यह होता है कि उस विशाल वृक्ष की पत्तियाँ उसे बुरी तरह घेर कर ढक लेती हैं। कुछ समय बाद जब उसकी पुत्री का विवाह उसकी इच्छा के विरुद्ध गोथों[1] के राजा सिगियर के साथ सम्पन्न होता है तो अतिथियों की भीड़ को चीरता हुआ, सहसा, एक काना अपरिचित आगे आता है और बिना दायें-बायें देखे अपनी अनमोल तलवार से उस बलूत के तने में गहराई तक घुसेड़ देता है। यही नहीं, वह यह भी घोषित करता है कि उस तलवार को उस पेड़ से खींच लेने वाला उस तलवार का स्वामी तो होगा ही, प्रत्येक युद्ध में विजयी भी होगा ! इसके बाद वह उत्सुक निगाहों से उपस्थित मंडली की ओर देखता है कि अब कोई आगे आये और पौरुष की परीक्षा दे।

यद्यपि वॉल्संग यह जानता है कि उनकी मण्डली में उपस्थित यह अज्ञात काना कोई और न होकर स्वयं ऑडिन ही है, तथापि वह वर से आग्रह करता है कि वह आगे बढ़े। वर उसके अनुरोध की रक्षा में असफल हो जाता है। उसे असफल होता देखकर वॉल्संग स्वयं उस दैवी तलवार को तने से खींच लेने में ऐड़ी-चोटी का पसीना एक कर देता है, किन्तु सब व्यर्थ ! अतएव अब वह अपने दस पुत्रों को संकेत करता है ! उसके नौ पुत्रों के हारकर बैठ रहने के बाद दसवाँ पुत्र ज़ीग्मंड उस परीक्षा में सफल होता है और एक झटके में ही तलवार को तने से खींच लेता है।.........

× ×

वर सिगियर चाहता है कि वह अपना पुरस्कार उसके हाथ बेंच दे किन्तु ज़ीग्मंड दृढ़ता से इन्कार कर देता है और कहता है कि वह उसे किसी को भी न दे सकेगा ! इस पर गोथ सिगियर उससे बहुत नाराज़ हो जाता है और दूसरे दिन उसी हालत में विदा होने की तैयारी करता है। उसकी पत्नी सिगनी सब कुछ भली भाँति समझ कर अपने पिता और भाइयों

---

[1] एक असभ्य जर्मन-जाति जिसने तीसरी से पाँचवीं शताब्दी तक पूर्वी और पश्चिमी राज्यों पर हमले किये !

परिस्थितियाँ और उपादान जिनसे बड़े-बड़े देवताओं का निर्माण होता है ! यही नहीं, वह बेचारा यह भी नहीं समझ पाता कि इस असाधारण पेय का विशेष गुण यह है कि इसका पीनेवाला बाध्य होकर अपनी कामनायें और महत्त्वाकांक्षायें भूल जाता है और फिर अपनी बुझी हुई इच्छाओं और अभिलाषाओं पर उसी तरह जान देने लगता है जैसे कि दिन पर रात जान देती है।

अब फल यह होता है कि कुछ क्षण बाद ही हमारा यह नायक ब्रिनहिल्ट से किये अपने सारे वायदे भूल जाता है और गुदरुन का प्यार पाने के लिये अधीर हो—उठता है। गुदरुन उसे वचन देती है कि यदि वह ब्रिनहिल्ट को प्राप्त करने में उसके भाई गुन्नार की सहायता करगा तो उसे उसकी पत्नी बन जाने में कुछ भी आपत्ति न होगी, बल्कि हार्दिक प्रसन्नता होगी !

दूसरे ही क्षण सिगर्ड गुन्नार का रूप धारण करता है और घोड़े पर सवार होकर उन आग की लपटों के बीच से होकर उस पार पहुँचता है। यद्यपि इस समय कितनी ही धूमिल स्मृतियाँ उसके हृदय में हलचल मचाती हैं, तथापि वह किले में यथा स्थान पहुँच कर ब्रूनहिल्ट से विवाह के चिह्न-स्वरूप जादू की अंगूठी ज़बरदस्ती छीन लेता है और दावा करता है कि वह उसकी पत्नी है। इस पर ब्रूनहिल्ट बहुत हिचकिचाती और संकोच करती है, किन्तु उसका संकल्प है कि वह किसी भी ऐसे वीर को पति मान लेगी जो आग की भयंकर लपटें पार कर इस पार आयेगा, अतएव नियति से विवश होने के कारण वह उसे अपना पति स्वीकार करती है। इस प्रकार सिगर्ड को न पहचान-पाने के कारण उसका विवाह निबेलउंगों के राजा गुन्नार से हो जाता है।......! किन्तु गुन्नार के दरबार में वह सिगर्ड को पहचान लेती है, उसे अपनी और उसके वचनों की याद दिलाने की कोशिश करती है और यह देखकर बुरी तरह खीझ उठती है कि वह गुदरुन से विवाह कर चुका है और उस पर पूरी तरह आसक्त है !

इस बीच में ब्रूनहिल्ट गुन्नार को अपने पास फटकने भी नहीं देती, फल यह होता है कि अपनी मनचाही पत्नी पाने पर भी गुन्नार कभी प्रसन्न मुख नहीं दिखलाई पड़ता, बल्कि प्रत्येक क्षण उदास रहता है, यों तो कमी उसे किस चीज़ और किस बात की है ! अंत में वह सिगर्ड से असन्तोषजनक जीवन की चर्चा करता है और सिगर्ड उसे वचन देता है कि ब्रूनहिल्ट को उसकी आज्ञाकारिणी बनाने में वह अपनी सारी शक्ति लगा देगा और देखेगा कि वह अपने को उसकी दासी समझती है।

सिगर्ड गुन्नार को वचन देकर ही नहीं रह जाता, प्रत्युत वह ब्रूनहिल्ट के पास जाता है, उससे उसका कमरबन्द और उसकी अंगूठी छीन लेता है, और उसे अपने साले के पास घसीट लाता है। इस समय ऐसा लगता है जैसे कि इतनी विनीत और आज्ञाकारिणी पत्नी और कहीं मिल ही नहीं सकती और जैसे कि इसका स्वभाव ही बदल दिया गया है। इसके बाद सिगर्ड गुदरुन के पास जाता है और ब्रूनहिल्ट की अंगूठी और कमरबन्द विजयोपहार के रूप में भेंट करता है।

× ×

इस तरह ऊपर से गम्भीर और मधुर बन जाने पर भी ब्रूनहिल्ट अन्दर ही अन्दर जलती रहती है और कोई जान नहीं पाता ! इस तरह कुछ दिन बीत जाते हैं कि एक दिन एक

अपने भाई को दिया हुआ वचन पूरा करने के लिये सिगनी बेचैन है कि एक लम्बा समय बीत जाता है। वह एक के बाद दूसरे, अपने दो पुत्रों को उसके पास भेजती है कि वह उन्हें शिक्षा देकर अपने काम का बनाये और फिर बदले के कार्य में उनसे सहायता ले! किन्तु शीघ्र ही प्रमाणित हो जाता है कि दोनों ही बालकों में साहस का अभाव है, दोनों ही डरपोक और निकम्मे हैं, अतएव सिगनी इस नतीजे पर पहुँचती है कि उसके भाई की सहायता केवल वही व्यक्ति कर सकता है जिसकी नसों में विशुद्ध वॉल्संग-रक्त दौड़ रहा हो। अब इस जाति का पुत्र प्राप्त करने की अभिलाषा से वह एक किरातिनि का रूप बनाकर चुपचाप अपने भाई की कुटिया जाती है और गर्भवती होकर लौटती है। यथा समय पुत्र होता है और जब यह पुत्र सिनफ़िओटली में बड़ा हो जाता है वह उसे ज़ीग्मंड के पास भेज देती है कि वह उसे बड़ा करे और शिक्षा दे!

× ×

यह बालक बड़ा ही उत्साही और वीर साबित होता है। कहना न होगा कि इसकी प्रकृति ने दबना, झुकना और बुझना तो जैसे सीखा ही नहीं। इसकी सहायता से ज़ीग्मंड कितने ही साहसिक कृत्यों में सफलता प्राप्त करता है।

एक दिन ज़ीग्मंड सिनफ़िओटली के साथ सिगियर के गोदाम में चुपचाप घुस पड़ता है और शस्त्र खींच कर इस प्रतीक्षा में लेट रहता है सिगियर उधर से निकले और अचानक ही हमला कर वह उससे अपना पुराना बदला चुकाये! किन्तु पता नहीं कैसे सिगियर के पुत्र सब कुछ जान लेते हैं और अपने पिता को सचेत कर देते है कि गोदाम के पीपों के पीछे कुछ दुश्मन छिपे-बैठे हैं जो उसे निश्चित-रूप से मार डालना चाहते हैं। वह सुनता है और उसके कान खड़े हो जाते हैं। वह उन्हें पकड़वा कर अलग-अलग कोठरियों में डलवा देता है और खाने के नाम पर कुछ न देकर उन्हें भूखों-मार डालने का निर्णय करता है। किन्तु सिगनी को जैसे ही यह मालूम होता है वह सींकों का एक बोझ ज़ीग्मंड की कोठरी में डलवा देती है। वह पहिले तो इस बोझ को देख कर चौंक उठता है, किन्तु उसे उसमें शीघ्र ही बालमंग नामक जादू की तलवार मिलती है और उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता।

यह तलवार अमोल है! इसकी सहायता से वे दोनों अपनी कोठरियों से बाहर आने का ही प्रबन्ध नहीं करते प्रत्युत मुक्त होने के बाद कितने ही गोथों को मार भी डालते हैं। इसके बाद वे राज-महल में आग लगा देते हैं कि बचे-बचाये गोथ जान बचा कर भाग निकलते हैं। सहसा ही उनकी निगाह आग की लपटों में लिपटी सिगनी पर पड़ती है और वे उसे बचाने के हार्दिक प्रयत्न करते हैं, किन्तु उनकी सारी कोशिशें बेकार जाती हैं। उन दोनों पर दृष्टि पड़ते ही सिगनी उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित करती है और अपने पति के कमरे की ओर संकेत कर उनसे विदा लेती है। दूसरे ही क्षण और भयंकर आग की लपटें उसे चारों ओर से घेर लेती हैं। इसी समय सिगियर के कमरे की ऊंची छत गिर पड़ती है, और उसकी दीवारें बैठ जाती हैं और वह उनके नीचे दब कर दम तोड़ देती है!

× ×

परिस्थितियाँ और उपादान जिनसे बड़े-बड़े देवताओं का निर्माण होता है ! यही नहीं, वह बेचारा यह भी नहीं समझ पाता कि इस असाधारण पेय का विशेष गुण यह है कि इसका पीनेवाला बाध्य होकर अपनी कामनायें और महत्त्वाकांक्षायें भूल जाता है और फिर अपनी बुझी हुई इच्छाओं और अभिलाषाओं पर उसी तरह जान देने लगता है जैसे कि दिन पर रात जान देता है।

अब फल यह होता है कि कुछ क्षण बाद ही हमारा यह नायक ब्रिनहिल्ट से किये अपने सारे वायदे भूल जाता है और गुदरुन का प्यार पाने के लिये अधीर हो—उठता है। गुदरुन उसे वचन देती है कि यदि वह ब्रिनहिल्ट को प्राप्त करने में उसके भाई गुन्नार की सहायता करेगा तो उसे उसकी पत्नी बन जाने में कुछ भी आपत्ति न होगी, बल्कि हार्दिक प्रसन्नता होगी !

दूसरे ही क्षण सिगर्ड गुन्नार का रूप धारण करता है और घोड़े पर सवार होकर उन आग की लपटों के बीच से होकर उस पार पहुँचता है। यद्यपि इस समय कितनी ही धूमिल स्मृतियाँ उसके हृदय में हलचल मचाती हैं, तथापि वह किले में यथा स्थान पहुँच कर ब्रूनहिल्ट से विवाह के चिह्न-स्वरूप जादू की अंगूठी ज़बरदस्ती छीन लेता है और दावा करता है कि वह उसकी पत्नी है। इस पर ब्रूनहिल्ट बहुत हिचकिचाती और संकोच करती है, किन्तु उसका संकल्प है कि वह किसी भी ऐसे वीर को पति मान लेगी जो आग की भयंकर लपटें पार कर इस पार आयेगा, अतएव नियति से विवश होने के कारण वह उसे अपना पति स्वीकार करती है। इस प्रकार सिगर्ड को न पहचान-पाने के कारण उसका विवाह निबेलउंगों के राजा गुन्नार से हो जाता है।......! किन्तु गुन्नार के दरबार में वह सिगर्ड को पहचान लेती है, उसे अपनी और उसके वचनों की याद दिलाने की कोशिश करती है और यह देखकर बुरी तरह खीझ उठती है कि वह गुदरुन से विवाह कर चुका है और उस पर पूरी तरह आसक्त है !

इस बीच में ब्रूनहिल्ट गुन्नार को अपने पास फटकने भी नहीं देती, फल यह होता है कि अपनी मनचाही पत्नी पाने पर भी गुन्नार कभी प्रसन्न मुख नहीं दिखलाई पड़ता, बल्कि प्रत्येक क्षण उदास रहता है, यों तो कमी उसे किस चीज़ और किस बात की है ! अंत में वह सिगर्ड से असन्तोषजनक जीवन की चर्चा करता है और सिगर्ड उसे वचन देता है कि ब्रूनहिल्ट को उसकी आज्ञाकारिणी बनाने में वह अपनी सारी शक्ति लगा देगा और देखेगा कि वह अपने को उसकी दासी समझती है।

सिगर्ड गुन्नार को वचन देकर ही नहीं रह जाता, प्रत्युत वह ब्रूनहिल्ट के पास जाता है, उससे उसका कमरबन्द और उसकी अंगूठी छीन लेता है, और उसे अपने साले के पास घसीट लाता है। इस समय ऐसा लगता है जैसे कि इतनी विनीत और आज्ञाकारिणी पत्नी और कहीं मिल ही नहीं सकती और जैसे कि इसका स्वभाव ही बदल दिया गया है। इसके बाद सिगर्ड गुदरुन के पास जाता है और ब्रूनहिल्ट की अंगूठी और कमरबन्द विजयोपहार के रूप में भेंट करता है।

× ×

इस तरह ऊपर से गम्भीर और मधुर बन जाने पर भी ब्रूनहिल्ट अन्दर ही अन्दर जलती रहती है और कोई जान नहीं पाता ! इस तरह कुछ दिन बीत जाते हैं कि एक दिन एक

बन जाये उनके आगे परोस दिया जाये ! किन्तु उस झोपड़ी का मालिक उस ऊदबिलाव को देखते ही पागलों की भाँति चिल्ला उठा-'हाय रे' तुमने तो ऊदबिलाव रूपी मेरे सबसे बड़े लड़के को मार डाला, इसके बाद उसने न आव गिना; न ताव, बस, उन्हें कसकर जकड़ दिया और प्रतिज्ञा की कि वह उस ऊदबिलाव की खाल के बराबर सोना मिलने पर ही उन लोगों को छोड़ेगा, नहीं तो नहीं !

रेगिन कहता रहता है कि देवता जानते थे कि उनका काम केवल जादू के कोष से ही चल सकता है और वे मुक्त हो सकते हैं, अतएव उन्होंने अपने मेज़मान से प्रार्थना कि यदि वह थोड़े समय के लिये भी लोकी को आज़ाद कर दे तो वे उसे मुँहमाँगा सोना देंगे ! मेज़मान उनकी बात मान ली और लोकी को छोड़ दिया। लोकी मुक्त होते ही उस ऐंडवरी नामक बौने की खोज में निकल पड़ा जिसने अकूत सोना इकट्ठा कर-रक्खा था। किन्तु बौना बड़ा चालाक था और आसानी से देवता के हाथ न आ सकता था। अतएव अंत में लोकी को दुष्टता बरतनी पड़ी और तब कहीं वह उसे राइन के उद्गम-स्थान पर मछली के रूप में दिखलाई पड़ा ! अब नज़र पड़ते ही उसने समुद्र की देवी का वह जाल राइन में डाला, जिससे बचकर निकल-भागना असम्भव है, और बौने को फाँस लिया ! इस प्रकार उसे वश में करने के बाद लोकी ने उससे सोने का विशाल कोष तो ले ही लिया, हेल्म 'आफ़ ड्रेड' नामक वह शिरस्त्राण भी छीन लिया जिसे सिर पर रखते ही आदमी अदृश्य हो जाता है। इस तरह परीशान किये जाने पर बौना खीझ उठा और उसने श्राप दिया कि उसके संताप के कारण दो भाई, एक पिता और आठ राजा मारे जायंगे। किन्तु लोकी ने भविष्यवाणी को कुछ नहीं समझा और इसके लिये उसकी खूब मरम्मत करने के बाद अपने साथी देवताओं की यातना का अनुमान कर तेज़ क़दम बढ़ाये ! वह वहाँ पहुंचा और उसने कामना की कि उस खाल के बराबर सोना देकर वह उन देवताओं को छुड़ा ले, लेकिन वह विकल हो उठा जब खाल प्रतिक्षण बढ़ती रही और इतनी भारी हो गई कि उस सारी स्वर्ण राशि के साथ-साथ उसे वह शिरशास्त्र और अपनी सर्पाकार अंगूठी भी दे देनी पड़ी और तब कहीं आवश्यक हरजाना पूरा हुआ ! उधर कोष का नया स्वामी, ललचाई आंखों से उस सोने के ढेर को तब तक घूरता रहा जब तक कि उसका स्वभाव नहीं बदल गया और वह आदमी के बजाय एक राक्षस नहीं हो गया। शीघ्र ही उसके दो शेष पुत्रों में से एक फ़ैफ़निर उस झोपड़ी में घुसा और उसने बिना यह ख्याल किये कि वह उसका पिता है, उस दैत्य को मार डाला ! अपने पिता की भांति वह भी उस सारी सम्पत्ति को पाकर धन्य हो गया। और अंत में वह उसे निर्जन में ले गया और उसी प्रकार आंख फाड़ कर देखता रहा, फल यह हुआ कि वह भी राक्षस में बदल गया और उसी रूप में कितने ही समय तक उसकी रखवाली करता रहा !

इतना कहने के बाद रेगिन क्षण भर को रुकता है, किन्तु इस समय उसकी मुद्रा इस प्रकार बदल जाती है कि साफ़ झलक जाता है कि वह कहानी न कहकर अपने वास्तविक संकट की कहानी कह रहा है।

शीघ्र ही भेद खुल जाता है कि उस राक्षस का दूसरा बेटा वह स्वयं है और उसका

किन्तु यथा समय उस प्रणय-पेम प्रभाव विनष्ट हो जाता है और तब अपने इस दूसरे विवाह के लिये गुदरुन बहुत दुखी होती है और कामना करती है कि किसी प्रकार उसका उसके दूसरे पति से पीछा छूटे और वास्तविक पति सिगर्ड की मौत का बदला चुकाये !

× ×

जैसा कि निवेलउंगेनलीड में भी है, एटली अपने साले और अन्य सम्बन्धियों को हंगेरी आने के लिये निमन्त्रित करता है। उधर निमन्त्रण पाते ही वे अपना सारा सोना और अन्य कोष राइन नदी के एक गुप्त स्थान में छिपाकर, इस इरादे के साथ कि वे इसकी चर्चा कभी-भी किसी से न करेंगे, हंगेरी के लिये चल पड़ते हैं। किन्तु उनके हंगेरी पहुँचते ही दूसरी ओर युद्ध की तैयारियाँ होने लगती हैं। गुदरुन को अपने पति का यह छल पूर्ण व्यवहार इतना खलता है कि वह अपने भाई का पक्ष ग्रहण करती है और लड़ाई के मैदान में उसकी ओर से लड़ने का संकल्प करती है।

गुदरुन के भाई आदि भी किसी भाँति दबते नहीं, अतएव युद्ध छिड़ जाता है। इस युद्ध में आदि से अंत तक गुन्नार केवल एक ही काम करता है, वह है सारंगी बजा बजाकर अपने साथी निवेलउंगों की हिम्मत बढ़ाता, जैसे लड़ने से उसका अपना कोई प्रयोजन न हो ! फिर भी, युद्ध बहुत समय तक चलता है और निवेलउंग जी-तोड़ कर लड़ते हैं, किन्तु शीघ्र ही सारे वीर खेत रहते हैं और गुन्नार और हगनी ही बच रहते हैं। ये दोनों अकेले हैं और इन्हें जीत लेना बहुत आसान हैं, अतएव वे पकड़-लिये जाते और कैदख़ाने में डाल दिये जाते हैं।

यहाँ एटली उनके पास जाता है और उनसे राइन नदी का वह गुप्त-स्थान जानना चाहता है, जहाँ सारी निधि गड़ी हुई है, किन्तु उन दोनों में से कोई भी टस-से मस नही होता ! दूसरे ही क्षण एटली को ज्ञान होता है कि जब तक हगनी जीवित है वह स्वयं तो कुछ बतलायेगा ही नही, गुन्नार भी कोई पता देने से रहा ! अतएव, वह आज्ञा देता है कि हगनी मार डाला जाय और उसका हृदय गुन्नार के सामने लाया जाय ! कुछ देर में हगनी का हृदय गुन्नार के सामने लाया जाया है। अब गुन्नार, यह समझ कर उस स्वर्ण-राशि का जानकार केवल वह बच रहा है, सन्तोष की सोंस लेता है और उस विषय में कुछ भी बतलाने से साफ़ इन्कार कर देता है। यही नहीं, जैसे वह यह कह कर एटली का घमंड चूर कर देना चाहता है कि उसने पक्का इरादा कर लिया है कि वह उसे उस विषय में कुछ भी न बतायेगा और मरते दम तक न बतायेगा ! उसका कथन है कि एटली बहुत धनी राजा है और उसके लिये उस कोष का कोई महत्व नहीं है किन्तु वह अभागा है, वन्दी है और उस विशाल सम्पत्ति का रहस्य ही उसके लिये सब कुछ है, उसके लिये एक बार जीभ खोलने पर उसे आजीवन पश्चाताप करना पड़ेगा ! वह प्रस्ताव करता कि वह विशाल धन राशि आज की भाँति ही हमेशा गहरे पानी में छिपी रहे और किसी भी मनुष्य की कभी भी उस तक पहुँच न हो ताकि देवता एक बार फिर धनी और प्रसन्न हो उठें ! इतना कह कर गुन्नार क्षण-भर को रुकता है और फिर इस कथन के साथ अपनी बात समाप्त करता है कि उसके जीवन-काल में तो नहीं, किन्तु उसकी मौत के दिन से उस कोष को इस बात का पूरा-पूरा अधिकार होगा कि वह मनुष्य ही नहीं, मनुष्य के नाम से भी घृणा करे और चिढ़े।

बन जाये उनके आगे परोस दिया जाये ! किन्तु उस झोपड़ी का मालिक उस ऊदबिलाव को देखते ही पागलों की भाँति चिल्ला उठा-'हाय रे' तुमने तो ऊदबिलाव रूपी मेरे सबसे बड़े लड़के को मार डाला, इसके बाद उसने न आव गिना; न ताव, बस, उन्हें कसकर जकड़ दिया और प्रतिज्ञा की कि वह उस ऊदबिलाव की खाल के बराबर सोना मिलने पर ही उन लोगों को छोड़ेगा, नहीं तो नहीं !

रेगिन कहता रहता है कि देवता जानते थे कि उनका काम केवल जादू के कोष से ही चल सकता है और वे मुक्त हो सकते हैं, अतएव उन्होंने अपने मेज़मान से प्रार्थना कि यदि यह थोड़े समय के लिये भी लोकी को आजाद कर दे तो वे उसे मुँहमांगा सोना देंगे ! मेज़-मान उनकी बात मान ली और लोकी को छोड़ दिया। लोकी मुक्त होते ही उस ऐंडवरी नामक बौने की खोज में निकल पड़ा जिसने अकूत सोना इकट्ठा कर-रक्खा था। किन्तु बौना बड़ा चालाक था और आसानी से देवता के हाथ न आ सकता था। अतएव अंत में लोकी को दुष्टता बरतनी पड़ी और तब कहीं वह उसे राइन के उद्गम-स्थान पर मछली के रूप में दिखलाई पड़ा ! अब नज़र पड़ते ही उसने समुद्र की देवी का वह जाल राइन में डाला, जिससे बचकर निकल-भागना असम्भव है, और बौने को फाँस लिया ! इस प्रकार उसे वश में करने के बाद लोकी ने उससे सोने का विशाल कोष तो ले ही लिया, हेल्म 'आफ़ ड्रेड' नामक वह शिरस्त्राण भी छीन लिया जिसे सिर पर रखते ही आदमी अदृश्य हो जाता है। इस तरह परीशान किये जाने पर बौना खीझ उठा और उसने श्राप दिया कि उसके संताप के कारण दो भाई, एक पिता और आठ राजा मारे जायंगे। किन्तु लोकी ने भविष्यवाणी को कुछ नहीं समझा और इसके लिये उसकी खूब मरम्मत करने के बाद अपने साथी देवताओं की यातना का अनुमान कर तेज़ क़दम बढ़ाये ! वह वहाँ पहुंचा और उसने कामना की कि उस खाल के बराबर सोना देकर वह उन देवताओं को छुड़ा ले, लेकिन वह विकल हो उठा जब खाल प्रति-क्षण बढ़ती रही और इतनी भारी हो गई कि उस सारी स्वर्ण राशि के साथ-साथ उसे वह शिर-शास्त्र और अपनी सर्पाकार अंगूठी भी दे देनी पड़ी और तब कहीं आवश्यक हरजाना पूरा हुआ ! उधर कोष का नया स्वामी, ललचाई आंखों से उस सोने के ढेर को तब तक घूरता रहा जब तक कि उसका स्वभाव नहीं बदल गया और वह आदमी के बजाय एक राक्षस नहीं हो गया। शीघ्र ही उसके दो शेष पुत्रों में से एक फ़ैफ़निर उस झोंपड़ी में घुसा और उसने बिना यह ख्याल किये कि वह उसका पिता है, उस दैत्य को मार डाला ! अपने पिता की भांति वह भी उस सारी सम्पत्ति को पाकर धन्य हो गया। और अंत में वह उसे निर्जन में ले गया और उसी प्रकार आंख फाड़ कर देखता रहा, फल यह हुआ कि वह भी राक्षस में बदल गया और उसी रूप में कितने ही समय तक उसकी रखवाली करता रहा !

इतना कहने के बाद रेगिन क्षण भर को रुकता है, किन्तु इस समय उसकी मुद्रा इस प्रकार बदल जाती है कि साफ़ झलक जाता है कि वह कहानी न कहकर अपने वास्तविक संकट की कहानी कह रहा है।

शीघ्र ही भेद खुल जाता है कि उस राक्षस का दूसरा बेटा वह स्वयं है और उसका

जर्मन महाकाव्य—

अधिक काल तक अनिश्चित दशा के बाद ६०० में जर्मन साहित्य का जन्म हुआ 'हिल्डेब्रान्दस्लीड की कोटि के रूढ़िगत, आरम्भिक-गीत काव्य इस साहित्य के उदाहरण हैं। उत्तरी और दक्षिणी जर्मनी जाति और भाषा की विभिन्नता के कारण ये गीत काव्य कितने ही चक्रों में बांटे गये है जिनमें बहुत से आज भी उपलब्ध हैं। ये सब थोड़ी संख्या में निश्चित नायकों को ही किसी-न-किसी रूप में हमारे सामने रखते हैं। इनमें 'एरमानिश' नामक गोथ 'डिट्रिक फ़ॉन बेर्न', 'ऐतिल्ला' नामक हूण, 'ज़ीग्फ्रीत' और प्रसिद्ध रोमन विजेता 'आरमिनियस' आदि अधिक उल्लेखनीय हैं।

'हिल्देब्रान्द' के घटना क्रम में हंगेरी में तीस वर्ष व्यतीत करने के बाद हिल्देब्रान्द स्वयं तो इटली चला आया किन्तु उसकी पत्नी और उसका 'हेदूब्रान्द' नामक पुत्र वहीं छुट गये ! समय की गति में उसका पुत्र हंगेरी का महान योद्धा गिना जाने लगा और बहुत प्रसिद्ध हो गया। इसी समय एक हवा उड़ी कि 'हिल्देब्रान्द' मर गया, अतएव किसी साहसिक-यात्रा के सिलसिले में पुत्र पिता से मिला तो उसने उसे धूर्त्त और बनावटी तो समझा, ही उससे युद्ध भी किया। यहीं कविता समाप्त हो जाती है और पाठक यह निश्चय नहीं कर पाता कि युद्ध में पिता जीता अथवा पुत्र। किंतु बाद के कवियों ने इस ओर विशेष ध्यान दिया और कहानी को सुखान्त रूप देकर उस दुःखान्त-पुट से बचा लिया जो कि 'सोहराब और रुस्तम' में इतना हृदयद्रावक है।

× ×

इसी प्रकार के गीत-काव्यों के रूप में पुराने काव्यात्मक कथानकों का इतना प्रचार हुआ कि 'शालमॉन' ने उन्हें संकलित करने का इरादा किया, किन्तु उसके धार्मिक पुत्र 'लुई प्रथम' ने सिंहासन पर बैठते ही इस संकलन को नष्ट कर दिया क्योंकि इसमें वे सारे काव्य संग्रहीत थे जिन में जंगली मूर्तिपूजकों के देवताओं का बखान था जिन्हें कि उसके अपने पूर्वज भी पूजते आये थे। फिर भी इन महाकाव्यों के मूल में जंगलियों का ही हाथ रहा हो, ऐसा नहीं है, क्योंकि 'विज़न्स-ऑफ़ जजमेंट', ('न्याय के स्वप्न'), संतों की जीवनियाँ, 'हीलैंद' जैसे बाइबिल के गद्य-रूप 'लदविगस्लीद' की तरह के मठाधीशों के राजनैतिक ग्रन्थ और नार्मनों के इतिहास जैसी चीज़ें भी हमें दूसरे युग में मिलती हैं। यहाँ 'वाल्टेरस्लीद' या ले 'ऑफ़ वाल्टर आफ़ ऐक्विटेन' का भी उल्लेख किया जा सकता है जो लैटिन में लिखी जाने के बाद भी कई दृष्टिकोणों से जर्मन है। 'वाल्थरस्लीद' बरगंडी के हूण चक्र का एक महाकाव्य है, जिसकी रचना 'सेंत गाल' के 'एक्केहार्द' ने ९७३ के पूर्व की थी। इसमें

दूसरे ही क्षण पूरा कर डालना चाहता है। किन्तु, जब कि वह इसमें व्यस्त है, रेगिन उस दैत्य के उष्ण रक्त से सनी हुई अपनी उंगली सहसा ही उसके मुँह में घुसेड़ देता है, जैसे कि उसे किसी अपराध के लिये दंड दे रहा हो। इस प्रकार फ़ैफ़निर के कलेजे के ख़ून के ज़ुबान से लगते ही सिगर्ड में ऐसी अलौकिक शक्ति आ जाती है कि वह आसपास में चहचहाती हुई उन चिड़ियों की भाषा बड़ी सरलता से समझने लगता है, जो गीतों के बहाने उसे यह बतला देना चाहती हैं कि रेगिन की नीयत साबित नहीं है और वह शीघ्र ही उसे मार डालने की कोशिश करेगा। अतएव, यह सोचकर कि रेगिन आवश्यकता से अधिक नीच है जो कि उसके उपकारों का बदला इस नृशंसता से चुकाना चाहता है, सिगर्ड क्रोध से आग—बबूला हो-उठता है और उसे मार डालता है। अब रेगिन की लाश की रखवाली में वह सारी स्वर्ण-राशि एक गुफ़ा में छिपा देता है और केवल तलवार, जादू का शिरस्त्राण और उस अंगूठी के साथ घोड़े पर सवार होकर अपनी राह लेता है।

चिड़ियाँ एक बार फिर उसकी सहायता करती हैं और उनके संकेत के सहारे वह एक पहाड़ पर पहुँचता है जिसकी चोटी पर घोर प्रकाश है। यह प्रकाश और कुछ न होकर एक क़िले के चारों ओर धधकती हुई उस आग की लपट-मात्र है जो कि उसकी सीमायें निर्धारित करती है।......सिगर्ड उस आग के पास पहुँचता है और घोड़ा आग देखकर ठिठकने और भड़कने लगता है, किन्तु वह उसे इतनी ज़ोर की एक एड़ लगाता है कि वह कूद कर आग के ऊपर से निकल जाता है।

आग ठंडी पड़ती है और धीरे-धीरे बुझ जाती है। सिगर्ड क़िले के बिचले भाग में पहुँचता और देखता है कि एक मृत योद्धा चबूतरे पर पड़ा हुआ है। वह आगे बढ़ता है और अपनी तलवार से उसके कवच के बन्द काटता ही है कि उसे ज्ञात होता है कि कवच के नीचे का व्यक्ति और कोई न होकर युद्ध की देवी वैलकीर[1] ब्रिनहिल्ट है।

ब्रिनहिल्ट धीरे-धीरे होश में आती है, एक बार फिर जीवन और ज्योति पाने पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट करती है और अपने जीवन-दाता को हृदय से धन्यवाद देती है। इस बीच में दोनों की निगाहें एक होती हैं, ऐसा होते ही वे एक-दूसरे को प्रेम करने लगते हैं और एक-दूसरे को अपना परिचय देते हैं। सिगर्ड अपना निवास-स्थान और अपना नाम आदि बतलाने के बाद अपने साहसिक कृत्यों की चर्चा करता है और ब्रिनहिल्ट उत्तर में उसे बतलाती है कि वह एक वैलकीर है। यही नहीं, वह सारी कथा विस्तार में बतलाती है कि एक बार उसने एक ऐसे आदमी को जीवन-दान दिया जिसे कि ऑडिन मृत्यु-दंड दे चुका था, अतएव फल यह हुआ कि उससे नाराज़ होकर ऑडिन ने उसे त्याग दिया और शाप दिया कि वह किसी ऐसे मनुष्य की पत्नी हो, जो स्वयं उसका हाथ अपने हाथ में ले ले। इस पर वह बहुत डरी कि कहीं उसे कायर-पति न मिले और इससे बचने के लिये उसने ऑडिन से प्रार्थना की कि वह उसे चारों ओर से ऐसी भयानक आग से घेर दे जिसे एक महान योद्धा ही पार कर सकता हो! इतना

---

[1] वह स्त्री जो एक ऐसे आदमी को अपना पति चुने जिसका रण में खेत-रहना निश्चित हो!

सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है। कहा जाता है कि यह रोथर शालमों का पितामह था। इसमें रोथर के द्वारा युवरानी के अपहरण किये जाने की चर्चा है, सम्राट के द्वारा पुत्री की खोज और प्राप्ति का उल्लेख है और पत्नी को फिर से जीत लेने के लिये अंत में 'रोथर' के अध्यवसाय और उसके प्रयासों का प्रशंसनीय वर्णन है।

'रोथर' के बाद 'ओर्टनिट' इस चक्र की दूसरी उल्लेखनीय काव्य-गाथा है। इसमें बताया गया है कि इस 'ओर्टनिट' नामक राजा ने एक जंगली मूर्तिपूजक राजकुमारी से विवाह किया, उसके पिता ने अपने दामाद को पलेस्त-राक्षसों के अंडे भेंट किये, इन्हीं अंडों के कारण 'ओर्टनिट' की मृत्यु हुई और उसके मरते ही उन राक्षसों ने श्टूनों की धरती को जीत लेने के विचार से उन पर हमला कर दिया।

ओर्टनिट के बाद 'ह्यूग डिट्रिक' और 'वुल्फ डिट्रिक' की कथायें सामने आती हैं, जो कि वेंगोवार्डियन चक्र को जीवित रखकर उसके अंतिम क्षण तक ओर्टनिट को साहसपूर्ण घटनाओं में व्यस्त चित्रित करती हैं!

'हरज़ोग अर्नेस्ट' की कथा और अधिक लोकप्रिय है। इसमें बवेरिया के एक ड्यूक का वर्णन है! यह जेरूसलम की तीर्थ यात्रा करने के संकल्प से अपना प्रदेश छोड़कर रास्ते में अनेकानेक संकटों और रोमांचकारी आपदाओं का वीरता से सामना करता रहा।

× × ×

कहना न होगा कि 'निबेलुंगेनलीद' निश्चित-रूप से जर्मनी की श्रेष्ठतम काव्य-गाथा है। इसे प्रायः 'जर्मनी का इलियड' और गुद्रुन को प्रायः 'जर्मनी का ओडिसी' कहा जाता है। गुद्रुन की कथा-वस्तु में लेखक कहता है कि जब युवराज हैगेन की आयु सात वर्ष की थी तो उसे एक [1]ग्रिफिन उठा ले गया, और स्वयं तो उसने उसे निगल जाने की कोशिश की ही, उसके पुत्र ने भी उसे हड़प जाने की कोशिश की, किन्तु बलवान बालक किसी प्रकार प्राण बचाकर जंगल में भाग गया। यहाँ सुयोग से उसे कुछ साथी मिले जिनके साथ रहकर वह पला, पनपा और बड़ा हुआ! कुछ समय बाद अंत में एक जहाज उधर से गुज़रा, जिसने हैगेन और उसके साथियों को शरण तो दी किन्तु ग़ुलाम बना लेने की धमकी भी दी। इस पर हैगेन ने अपने पूर्व साहस से काम लिया और अपने अपने पौरुष के प्रताप से नियति के इतने निर्मम व्यंग्य से भी मुक्ति पा ही ली! इसके बाद वह अपने देश लौटा, राजा बना, उसने विवाह किया और 'गुद्रुन' नामक एक पुत्री को जन्म दिया, जिसे कि 'ज़ीलांत' का राजकुमार उसके पिता और उसके प्रेमी से बहुत दूर भगा ले गया। राह में इसे 'हैगेन' के सिपाहियों से युद्ध करना पड़ा, जिसमें उसकी विजय हुई। अंत में राजकुमार अपने राज्य में आया। यहाँ, यद्यपि उसने गुद्रुन के स्नेह को जीतने के अथक प्रयत्न किये तथापि उसने उसका प्यार स्वीकार नहीं किया। उसकी इस अन्यमनस्कता और रुखाई से चिढ़कर राजमाता ने उसे कठोर यातनाओं से उसे झुकाने की बात सोची और यहाँ तक किया कि उसे एक दिन नंगे पैरों

---

[1]एक कल्पित दैत्य जिसके शरीर का ऊपरी भाग बाज़ का है और निचला भाग शेर का—

परिस्थितियाँ और उपादान जिनसे बड़े-बड़े देवताओं का निर्माण होता है ! यही नहीं, वह बेचारा यह भी नहीं समझ पाता कि इस असाधारण पेय का विशेष गुण यह है कि इसका पीनेवाला बाध्य होकर अपनी कामनायें और महत्त्वाकांक्षायें भूल जाता है और फिर अपनी बुझी हुई इच्छाओं और अभिलाषाओं पर उसी तरह जान देने लगता है जैसे कि दिन पर रात जान देती है।

अब फल यह होता है कि कुछ क्षण बाद ही हमारा यह नायक ब्रिनहिल्ट से किये अपने सारे वायदे भूल जाता है और गुदरुन का प्यार पाने के लिये अधीर हो—उठता है। गुदरुन उसे वचन देती है कि यदि वह ब्रिनहिल्ट को प्राप्त करने में उसके भाई गुन्नार की सहायता करेगा तो उसे उसकी पत्नी बन जाने में कुछ भी आपत्ति न होगी, बल्कि हार्दिक प्रसन्नता होगी !

दूसरे ही क्षण सिगर्ड गुन्नार का रूप धारण करता है और घोड़े पर सवार होकर उन आग की लपटों के बीच से होकर उस पार पहुँचता है। यद्यपि इस समय कितनी ही धूमिल स्मृतियाँ उसके हृदय में हलचल मचाती हैं, तथापि वह किले में यथा स्थान पहुँच कर ब्रूनहिल्ट से विवाह के चिह्न-स्वरूप जादू की अंगूठी ज़बरदस्ती छीन लेता है और दावा करता है कि वह उसकी पत्नी है। इस पर ब्रूनहिल्ट बहुत हिचकिचाती और संकोच करती है, किन्तु उसका संकल्प है कि वह किसी भी ऐसे वीर को पति मान लेगी जो आग की भयंकर लपटें पार कर इस पार आयेगा, अतएव नियति से विवश होने के कारण वह उसे अपना पति स्वीकार करती है। इस प्रकार सिगर्ड को न पहचान-पाने के कारण उसका विवाह निबेलउंगों के राजा गुन्नार से हो जाता है।......! किन्तु गुन्नार के दरबार में वह सिगर्ड को पहचान लेती है, उसे अपनी और उसके वचनों की याद दिलाने की कोशिश करती है और यह देखकर बुरी तरह खीझ उठती है कि वह गुदरुन से विवाह कर चुका है और उस पर पूरी तरह आसक्त है !

इस बीच में ब्रूनहिल्ट गुन्नार को अपने पास फटकने भी नहीं देती, फल यह होता है कि अपनी मनचाही पत्नी पाने पर भी गुन्नार कभी प्रसन्न मुख नहीं दिखलाई पड़ता, बल्कि प्रत्येक क्षण उदास रहता है, यों तो कमी उसे किस चीज़ और किस बात की है ! अंत में वह सिगर्ड से असन्तोषजनक जीवन की चर्चा करता है और सिगर्ड उसे वचन देता है कि ब्रूनहिल्ट को उसकी आज्ञाकारिणी बनाने में वह अपनी सारी शक्ति लगा देगा और देखेगा कि वह अपने को उसकी दासी समझती है।

सिगर्ड गुन्नार को वचन देकर ही नहीं रह जाता, प्रत्युत वह ब्रूनहिल्ट के पास जाता है, उससे उसका कमरबन्द और उसकी अंगूठी छीन लेता है, और उसे अपने साले के पास घसीट लाता है। इस समय ऐसा लगता है जैसे कि इतनी विनीत और आज्ञाकारिणी पत्नी और कहीं मिल ही नहीं सकती और जैसे कि इसका स्वभाव ही बदल दिया गया है। इसके बाद सिगर्ड गुदरुन के पास जाता है और ब्रूनहिल्ट की अंगूठी और कमरबन्द विजयोपहार के रूप में भेंट करता है।

× ×

इस तरह ऊपर से गम्भीर और मधुर बन जाने पर भी ब्रूनहिल्ट अन्दर ही अन्दर जलती रहती है और कोई जान नहीं पाता ! इस तरह कुछ दिन बीत जाते हैं कि एक दिन एक

इसका विषय है ईसा का जीवन, उसके जीवन का महान उद्देश्य और उस दैवी उद्देश्य की पूर्ति जिसे पूरा करने के लिये ही उसने पृथ्वी पर जन्म लिया था।

× × ×

'इसी क्लापस्टाक' के कितने ही प्रसिद्ध समकालीनों ने जर्मन-साहित्य के 'क्लैसिक युग' में जर्मन साहित्य की बड़ी सेवा की और यश कमाया। इस युग का आरम्भ तब से होता है जब 'गेटे' जर्मनी लौटा और उसने 'शिलर' के सहयोग से जर्मन-साहित्य में 'क्लैसिकल स्कूल' की स्थापना की। एक ओर 'शिलर' ने विलियम टेल, जैसे अमर महाकाव्यात्मक-नाटकों से अपने साहित्य का गौरववर्द्धन किया, दूसरी ओर गेटे ने 'हेमान' और 'डोरोथिया' जैसी हरी-दुनिया की सृष्टि की, फॉस्ट जैसे नाटकीय-महाकाव्य को जन्म दिया और 'रीनेके फुक्स' जैसे पशु-महाकाव्य को अद्भुत, अभूत पूर्व और अद्वितीय रूप देकर साहित्य के गले का हार बना दिया।

× × ×

'वीलान्त' भी कई क्षेत्रों में धुरन्धर लेखक था। यद्यपि 'अरेबियन नाइट्स', 'शेक्सपियर' के 'मिडसमर नाइट्स ड्रीम', और 'हुओं दे बोरदो' से प्रेरणा ग्रहण करने के बाद ही उसने अपने 'ओबेरों' नामक रूपकात्मक महाकाव्य की रचना की, तथापि उसका पाठ करते समय पाठक के सामने चित्र पर चित्र आते जाते हैं और पाठक उनके इन्द्रधनुषी रंगों से अभिभूत हो उठता है। यही कारण है कि अपने जन्म-काल से अब तक उसने कितने ही संगीतज्ञों और कलाकारों को प्रेरणा, रस और आधार प्रदान किया है। यह चर्चा संगीतज्ञों और कलाकारों की है अन्यथा कहा कहा जा सकता है कि उसका कथानक भी कम लोगों ने नहीं अपनाया।

'गेटे' के युग के बाद 'वैग्नर' ने प्राचीन महाकाव्य-साहित्य का सबसे सफल और चित्रात्मक प्रयोग किया। कहना न होगा कि उसके नाटकों के सारे कथानकों के मूल स्रोत जर्मन महा-काव्य ही हैं।

———

परिस्थितियाँ और उपादान जिनसे बड़े-बड़े देवताओं का निर्माण होता है ! यही नहीं, वह बेचारा यह भी नहीं समझ पाता कि इस असाधारण पेय का विशेष गुण यह है कि इसका पीनेवाला बाध्य होकर अपनी कामनायें और महत्त्वाकांक्षायें भूल जाता है और फिर अपनी बुझी हुई इच्छाओं और अभिलाषाओं पर उसी तरह जान देने लगता है जैसे कि दिन पर रात जान देती है।

अब फल यह होता है कि कुछ क्षण बाद ही हमारा यह नायक ब्रिनहिल्ट से किये अपने सारे वायदे भूल जाता है और गुदरुन का प्यार पाने के लिये अधीर हो—उठता है। गुदरुन उसे वचन देती है कि यदि वह ब्रिनहिल्ट को प्राप्त करने में उसके भाई गुन्नार की सहायता करेगा तो उसे उसकी पत्नी बन जाने में कुछ भी आपत्ति न होगी, बल्कि हार्दिक प्रसन्नता होगी !

दूसरे ही क्षण सिगर्ड गुन्नार का रूप धारण करता है और घोड़े पर सवार होकर उन आग की लपटों के बीच से होकर उस पार पहुँचता है। यद्यपि इस समय कितनी ही धूमिल स्मृतियाँ उसके हृदय में हलचल मचाती हैं, तथापि वह किले में यथा स्थान पहुँच कर ब्रूनहिल्ट से विवाह के चिह्न-स्वरूप जादू की अंगूठी ज़बरदस्ती छीन लेता है और दावा करता है कि वह उसकी पत्नी है। इस पर ब्रूनहिल्ट बहुत हिचकिचाती और संकोच करती है, किन्तु उसका संकल्प है कि वह किसी भी ऐसे वीर को पति मान लेगी जो आग की भयंकर लपटें पार कर इस पार आयेगा, अतएव नियति से विवश होने के कारण वह उसे अपना पति स्वीकार करती है। इस प्रकार सिगर्ड को न पहचान-पाने के कारण उसका विवाह निवेलउंगों के राजा गुन्नार से हो जाता है।......! किन्तु गुन्नार के दरबार में वह सिगर्ड को पहचान लेती है, उसे अपनी और उसके वचनों की याद दिलाने की कोशिश करती है और यह देखकर बुरी तरह खीझ उठती है कि वह गुदरुन से विवाह कर चुका है और उस पर पूरी तरह आसक्त है !

इस बीच में ब्रूनहिल्ट गुन्नार को अपने पास फटकने भी नहीं देती, फल यह होता है कि अपनी मनचाही पत्नी पाने पर भी गुन्नार कभी प्रसन्न मुख नहीं दिखलाई पड़ता, बल्कि प्रत्येक क्षण उदास रहता है, यों तो कमी उसे किस चीज़ और किस बात की है ! अंत में वह सिगर्ड से असन्तोषजनक जीवन की चर्चा करता है और सिगर्ड उसे वचन देता है कि ब्रूनहिल्ट को उसकी आज्ञाकारिणी बनाने में वह अपनी सारी शक्ति लगा देगा और देखेगा कि वह अपने को उसकी दासी समझती है।

सिगर्ड गुन्नार को वचन देकर ही नहीं रह जाता, प्रत्युत वह ब्रूनहिल्ट के पास जाता है, उससे उसका कमरबन्द और उसकी अंगूठी छीन लेता है, और उसे अपने साले के पास घसीट लाता है। इस समय ऐसा लगता है जैसे कि इतनी विनीत और आज्ञाकारिणी पत्नी और कहीं मिल ही नहीं सकती और जैसे कि इसका स्वभाव ही बदल दिया गया है। इसके बाद सिगर्ड गुदरुन के पास जाता है और ब्रूनहिल्ट की अंगूठी और कमरबन्द विजयोपहार के रूप में भेंट करता है।

× ×

इस तरह ऊपर से गम्भीर और मधुर बन जाने पर भी ब्रूनहिल्ट अन्दर ही अन्दर जलती रहती है और कोई जान नहीं पाता ! इस तरह कुछ दिन बीत जाते हैं कि एक दिन एक

'निबेलउंगेनलीद'–निबलउंगों का गीत–

'निबेलउंगेनलीद' या 'निबेलउंगों' के गीतों का रचना-काल यद्यपि तेरहवीं शताब्दि है तथापि इसमें छठवीं और सातवीं शताब्दी की घटनायें भी वर्णित हैं। कुछ अधिकारियों का मत है कि 'निबेलउंगेनलीद' विभिन्न कालों में, विभिन्न स्थानों में, विभिन्न कवियों द्वारा रचे गये बारह गीतों का एकीकरण है, किन्तु कुछ दूसरे विद्वानों का कथन है कि यह एक कवि की ही रचना है, अतएव विभिन्न कालों और विभिन्न स्थानों का प्रश्न ही नहीं उठता। दूसरे वर्ग के दिग्गज 'कान्राडफ़ॉन क्यूरेनबर्ग', 'वाल्फ्रॉम फ़ॉन एशेनबाख़', 'हाइनरिख़ फ़ॉन आफ़्टरडिंगन', 'वाल्टेर फ़ॉन-देर फ़ोगिलवाइदा' में से किसी एक को इसका लेखक मानते हैं। कविता चार-चार पंक्तियाँ वाले २४५६ पदों के ३६ 'साहसों' या पर्वों में विभाजित है! इसका घटना-काल तीस वर्ष है और यह फ़्रैंकिश, बरगैंडिश, आस्ट्रो-गॉथिक और हूणों के सागा-चक्रों से ली गई कथा-वस्तु पर आधारित है।

ऐसा माना जाता है कि इसका 'डिट्रिक फ़ॉन बेर्न' और कोई न होकर इटली का थिओडोरिक[1] है, 'एटसेल एटिला' नामक हूण का प्रतीक है और गुंथर बरगेंडी के उस राजा का प्रतिनिधि है, जो कि ४३६ में अपने साथियों के सहित नष्ट कर दिया गया।

साहस एक–

काव्य के आरम्भ में कवि कहता है कि राइन-तट पर स्थित वोर्म्स में बरगेंडी के तीन राजकुमार रहते हैं। उनकी एक बहन का नाम क्रीमहिल्त है। यह एक दिन एक स्वप्न देखती है कि दो गिद्ध एक बाज़ का पीछा करते हैं और अंत में उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं, किन्तु दूसरे ही क्षण वह बाज़ आता है और उसके हृदय शरण में लेता है।

× ×

वह इस स्वप्न से घबड़ा उठती है और, यह जानकर कि उसकी माँ स्वप्नों का अर्थ लगाने में चतुर है, उससे इस भयंकर स्वप्न की चर्चा करती है। उसकी मां कहती है कि इस स्वप्न का अर्थ तो केवल यह है कि उसके भावी पति को भीषण शत्रुओं का सामना करना पड़ेगा।

× ×

[1] इटली के पूर्वी प्रदेशों का राजा जिसने ४८६ में इटली में प्रवेश किया था—वह साहित्य का विशेष प्रेमी भी था!

किन्तु यथा समय उस प्रणय-पेम प्रभाव विनष्ट हो जाता है और तब अपने इस दूसरे विवाह के लिये गुदरुन बहुत दुखी होती है और कामना करती है कि किसी प्रकार उसका उसके दूसरे पति से पीछा छूटे और वास्तविक पति सिगर्ड की मौत का बदला चुकाये !

× ×

जैसा कि निवेलउंगेनलीड में भी है, एटली अपने साले और अन्य सम्बन्धियों को हंगेरी आने के लिये निमन्त्रित करता है। उधर निमन्त्रण पाते ही वे अपना सारा सोना और अन्य कोष राइन नदी के एक गुप्त स्थान में छिपाकर, इस इरादे के साथ कि वे इसकी चर्चा कभी-भी किसी से न करेंगे, हंगेरी के लिये चल पड़ते हैं। किन्तु उनके हंगेरी पहुँचते ही दूसरी ओर युद्ध की तैयारियाँ होने लगती हैं। गुदरुन को अपने पति का यह छल पूर्ण व्यवहार इतना खलता है कि वह अपने भाई का पक्ष ग्रहण करती है और लड़ाई के मैदान में उसकी ओर से लड़ने का संकल्प करती है।

गुदरुन के भाई आदि भी किसी भाँति दबते नहीं, अतएव युद्ध छिड़ जाता है। इस युद्ध में आदि से अंत तक गुन्नार केवल एक ही काम करता है, वह है सारंगी बजा बजाकर अपने साथी निवेलउंगों की हिम्मत बढ़ाता, जैसे लड़ने से उसका अपना कोई प्रयोजन न हो ! फिर भी, युद्ध बहुत समय तक चलता है और निवेलउंग जी-तोड़ कर लड़ते हैं, किन्तु शीघ्र ही सारे वीर खेत रहते हैं और गुन्नार और हगनी ही बच रहते हैं। ये दोनों अकेले हैं और इन्हें जीत लेना बहुत आसान हैं, अतएव वे पकड़-लिये जाते और कैदखाने में डाल दिये जाते हैं।

यहाँ एटली उनके पास जाता है और उनसे राइन नदी का वह गुप्त-स्थान जानना चाहता है, जहाँ सारी निधि गड़ी हुई है, किन्तु उन दोनों में से कोई भी टस-से मस नही होता ! दूसरे ही क्षण एटली को ज्ञान होता है कि जब तक हगनी जीवित है वह स्वयं तो कुछ बतलायेगा ही नही, गुन्नार भी कोई पता देने से रहा ! अतएव, वह आज्ञा देता है कि हगनी मार डाला जाय और उसका हृदय गुन्नार के सामने लाया जाय ! कुछ देर में हगनी का हृदय गुन्नार के सामने लाया जाया है। अब गुन्नार, यह समझ कर उस स्वर्ण-राशि का जानकार केवल वह बच रहा है, सन्तोष की सांस लेता है और उस विषय में कुछ भी बतलाने से साफ़ इन्कार कर देता है। यही नहीं, जैसे वह यह कह कर एटली का घमंड चूर कर देना चाहता है कि उसने पक्का इरादा कर लिया है कि वह उसे उस विषय में कुछ भी न बतायेगा और मरते दम तक न बतायेगा ! उसका कथन है कि एटली बहुत धनी राजा है और उसके लिये उस कोष का कोई महत्व नहीं है किन्तु वह अभागा है, बन्दी है और उस विशाल सम्पत्ति का रहस्य ही उसके लिये सब कुछ है, उसके लिये एक बार जीभ खोलने पर उसे आजीवन पश्चाताप करना पड़ेगा ! वह प्रस्ताव करता कि वह विशाल धन राशि आज की भाँति ही हमेशा गहरे पानी में छिपी रहे और किसी भी मनुष्य की कभी भी उस तक पहुँच न हो ताकि देवता एक बार फिर धनी और प्रसन्न हो उठें ! इतना कह कर गुन्नार क्षण-भर को रुकता है और फिर इस कथन के साथ अपनी बात समाप्त करता है कि उसके जीवन-काल में तो नहीं, किन्तु उसकी मौत के दिन से उस कोष को इस बात का पूरा-पूरा अधिकार होगा कि वह मनुष्य ही नहीं, मनुष्य के नाम से भी घृणा करे और चिढ़े।

आकर्षित कर लेता है। खिड़की पर वह उसकी प्रत्येक जीत पर संतोष से खिल उठती है और दूसरी ओर ज़ीग्फ़ीत उसे स्वयं अपनी खिड़की की जाली से प्रायः झाँका करता है।

साहस चार—

ज़ीग्फ़ीत के प्रवास के अंतिम दिनों में अकस्मात् सूचना मिलती है कि चार हज़ार वीरों के साथ सेक्सोनी और डेनमार्क के राजा वोर्म्स पर चढ़े-आ रहे हैं। इस चढ़ाई की चर्चा सुनते ही तमाम लोगों के हाथ-पैर फूल जाते हैं और वे इतने अधीर हो उठते हैं कि केवल एक हज़ार योद्धाओं को साथ लेकर ज़ीग्फ़ीत उन राजाओं का सामना करने और उन्हें जीत-लेने का प्रस्ताव करता है। राजा गुंथर इस प्रस्ताव से सन्तोष की सांस लेता और सुखी होता है और उसे सारे साज-सामान के साथ विदा करता है। कहना न होगा कि ज़ीग्फ़ीत शीघ्र ही विजयी होकर लौटता है। यही नहीं, वह उन राजाओं को भी बन्दी बनाकर अपने साथ लाता है, जिन्हें देखकर गुन्थर प्रसन्नता से फूला नहीं समाता! दूसरे ही दिन ज़ीग्फ़ीत के सम्मान में राज-दरबार होता है और इस समय वह चारण, जो उसकी महान विजय की घोषणा करता है, क्रीमहिल्त के द्वारा पुरस्कृत होता है। क्रीमहिल्त इस वीर की प्रशंसा सुनकर आह्लाद और गर्व से खिल— उठती है!

साहस पाँच—

वोर्म्स में इस विजय के सम्मान में हुये उत्सवों का वर्णन करने के बाद कवि बताता है कि कैसे एक दिन ज़ीग्फ़ीत और क्रीमहिल्त का आमना-सामना हो जाता है और कैसे पहली बार दृष्टि मिलते ही वे परस्पर एक दूसरे को प्रेम करने लगते हैं।

'एक ओर से सर्व सुन्दरी आई नारी,
जैसे कुहरों के बादल से, मुस्कानों में किरणें भरकर,
धीरे-धीरे आये ऊषा;
और, उधर दूसरी ओर से वीर अनूठा आया जैसे
शौर्य चल रहा हो पृथ्वी पर......... !'

× ×

अब ज़ीग्फ़ीत साहस से काम लेता है और क्रीमहिल्त से विवाह करने की इच्छा प्रकट करता है। गुंथर अपनी बहन की ओर से बड़ी प्रसन्नता से यह प्रस्ताव स्वीकार करता है।

जर्मन महाकाव्य—

अधिक काल तक अनिश्चित दशा के बाद ६०० में जर्मन साहित्य का जन्म हुआ 'हिल्डेब्रान्द्स्लीड की कीटि के स्थगित, आरम्भिक-गीत काव्य इस साहित्य के उदाहरण हैं। उत्तरी और दक्षिणी जर्मनी जाति और भाषा की विभिन्नता के कारण ये गीत काव्य कितने ही चक्रों में बांटे गये हैं जिनमें बहुत से आज भी उपलब्ध हैं। ये सब थोड़ी संख्या में निश्चित नायकों को ही किसी-न-किसी रूप में हमारे सामने रखते हैं। इनमें 'एरमानिश' नामक गोथ 'डिट्रिक फ़ॉन बेर्न', 'ऐतिल्ला' नामक हूण, 'ज़ीग्फ़्रीत' और प्रसिद्ध रोमन विजेता 'आरमिनियस' आदि अधिक उल्लेखनीय हैं।

'हिल्देब्रान्द' के घटना क्रम में हंगेरी में तीस वर्ष व्यतीत करने के बाद हिल्देब्रान्द स्वयं तो इटली चला आया किन्तु उसकी पत्नी और उसका 'हेदूब्रान्द' नामक पुत्र वहीं छूट गये! समय की गति में उसका पुत्र हंगेरी का महान योद्धा गिना जाने लगा और बहुत प्रसिद्ध हो गया। इसी समय एक हवा उड़ी कि 'हिल्देब्रान्द' मर गया, अतएव किसी साहसिक-यात्रा के सिलसिले में पुत्र पिता से मिला तो उसने उसे धूर्त्त और बनावटी तो समझा, ही उससे युद्ध भी किया। यहीं कविता समाप्त हो जाती है और पाठक यह निश्चय नहीं कर पाता कि युद्ध में पिता जीता अथवा पुत्र। किंतु बाद के कवियों ने इस ओर विशेष ध्यान दिया और कहानी को सुखान्त रूप देकर उस दुःखान्त-पुट से बचा लिया जो कि 'सोहराब और रुस्तम' में इतना हृदयद्रावक है।

× ×

इसी प्रकार के गीत-काव्यों के रूप में पुराने काव्यात्मक कथानकों का इतना प्रचार हुआ कि 'शालमॉन' ने उन्हें संकलित करने का इरादा किया, किन्तु उसके धार्मिक पुत्र 'लुई प्रथम' ने सिंहासन पर बैठते ही इस संकलन को नष्ट कर दिया क्योंकि इसमें वे सारे काव्य संग्रहीत थे जिन में जंगली मूर्तिपूजकों के देवताओं का बखान था जिन्हें कि उसके अपने पूर्वज भी पूजते आये थे। फिर भी इन महाकाव्यों के मूल में जंगलियों का ही हाथ रहा हो, ऐसा नहीं है, क्योंकि 'विज़न्स-ऑफ़ जजमेंट', ('न्याय के स्वप्न'), संतों की जीवनियाँ, 'हीलैंद' जैसे बाइबिल के गद्य-रूप 'लदविगस्लीद' की तरह के मठाधीशों के राजनैतिक ग्रन्थ और नार्मनों के इतिहास जैसी चीज़ें भी हमें दूसरे युग में मिलती हैं। यहाँ 'वाल्टेरस्लीद' या ले 'ऑफ़ वाल्टर आफ़ ऐक्विटेन' का भी उल्लेख किया जा सकता है जो लैटिन में लिखी जाने के बाद भी कई दृष्टिकोणों से जर्मन है। 'वाल्थरस्लीद' बरगंडी के हूण चक्र का एक महाकाव्य है, जिसकी रचना 'सेंत गाल' के 'एक्केहार्द' ने ९७३ के पूर्व की थी। इसमें

आकर्षित कर लेता है। खिड़की पर वह उसकी प्रत्येक जीत पर संतोष से खिल उठती है और दूसरी ओर ज़ीग्फ़्रीत उसे स्वयं अपनी खिड़की की जाली से प्रायः झाँका करता है।

साहस चार—

ज़ीग्फ़्रीत के प्रवास के अंतिम दिनों में अकस्मात् सूचना मिलती है कि चार हज़ार वीरों के साथ सेक्सोनी और डेनमार्क के राजा वोर्म्स पर चढ़े-आ रहे हैं। इस चढ़ाई की चर्चा सुनते ही तमाम लोगों के हाथ-पैर फूल जाते हैं और वे इतने अधीर हो उठते हैं कि केवल एक हज़ार योद्धाओं को साथ लेकर ज़ीग्फ़्रीत उन राजाओं का सामना करने और उन्हें जीत-लेने का प्रस्ताव करता है। राजा गुंथर इस प्रस्ताव से सन्तोष की सांस लेता और सुखी होता है और उसे सारे साज-सामान के साथ विदा करता है। कहना न होगा कि ज़ीग्फ़्रीत शीघ्र ही विजयी होकर लौटता है। यही नहीं, वह उन राजाओं को भी बन्दी बनाकर अपने साथ लाता है, जिन्हें देखकर गुन्थर प्रसन्नता से फूला नहीं समाता! दूसरे ही दिन ज़ीग्फ़्रीत के सम्मान में राज-दरबार होता है और इस समय वह चारण, जो उसकी महान विजय की घोषणा करता है, क्रीमहिल्त के द्वारा पुरस्कृत होता है। क्रीमहिल्त इस वीर की प्रशंसा सुनकर आह्लाद और गर्व से खिल— उठती है!

साहस पाँच—

वोर्म्स में इस विजय के सम्मान में हुये उत्सवों का वर्णन करने के बाद कवि बताता है कि कैसे एक दिन ज़ीग्फ़्रीत और क्रीमहिल्त का आमना-सामना हो जाता है और कैसे पहली बार दृष्टि मिलते ही वे परस्पर एक दूसरे को प्रेम करने लगते हैं।

'एक ओर से सर्व सुन्दरी आई नारी,
जैसे कुहरों के बादल से, मुस्कानों में किरणें भरकर,
धीरे-धीरे आये ऊषा;
और, उधर दूसरी ओर से वीर अनूठा आया जैसे
शौर्य चल रहा हो पृथ्वी पर......... !'

× ×

अब ज़ीग्फ़्रीत साहस से काम लेता है और क्रीमहिल्त से विवाह करने की इच्छा प्रकट करता है। गुंथर अपनी बहन की ओर से बड़ी प्रसन्नता से यह प्रस्ताव स्वीकार करता है।

सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। कहा जाता है कि यह रोथर शालमों का पितामह था। इसमें रोथर के द्वारा युवरानी के अपहरण किये जाने की चर्चा है, सम्राट के द्वारा पुत्री की खोज और प्राप्ति का उल्लेख है और पत्नी को फिर से जीत लेने के लिये अंत में 'रोथर' के अध्यवसाय और उसके प्रयासों का प्रशंसनीय वर्णन है।

'रोथर' के बाद 'ओर्टनिट' इस चक्र की दूसरी उल्लेखनीय काव्य-गाथा है। इसमें बताया गया है कि इस 'ओर्टनिट' नामक राजा ने एक जंगली मूर्तिपूजक राजकुमारी से विवाह किया, उसके पिता ने अपने दामाद को पलेस्-राक्षसों के अंडे भेंट किये, इन्हीं अंडों के कारण 'ओर्टनिट' की मृत्यु हुई और उसके मरते ही उन राक्षसों ने ट्यूटनों की धरती को जीत लेने के विचार से उन पर हमला कर दिया।

ओर्टनिट के बाद 'हग चिट्रिक' और 'वुल्फ डिट्रिक' की कथायें सामने आती हैं, जो कि मेरोवाञ्जियन चक्र को जीवित रखकर उसके अंतिम क्षण तक ओर्टनिट को साहसपूर्ण घटनाओं में व्यस्त चित्रित करती हैं!

'हरज़ोग अर्नेस्ट' की कथा और अधिक लोकप्रिय है। इसमें बवेरिया के एक ड्यूक का वर्णन है! यह जेरुसलम की तीर्थ यात्रा करने के संकल्प से अपना प्रदेश छोड़कर रास्ते में अनेकानेक संकटों और रोमांचकारी आपदाओं का वीरता से सामना करता रहा।

× × ×

कहना न होगा कि 'निबेलुंगेनलीद' निश्चित-रूप से जर्मनी की श्रेष्ठतम काव्य-गाथा है। इसे प्रायः 'जर्मनी का इलियड' और गुदरुन को प्रायः 'जर्मनी का ओडिसी' कहा जाता है। गुदरुन की कथा-वस्तु में लेखक कहता है कि जब युवराज हैगेन की आयु सात वर्ष की थी तो उसे एक [1]ग्रिफ़िन उठा ले गया, और स्वयं तो उसने उसे निगल जाने की कोशिश की ही, उसके पुत्र ने भी उसे हड़प जाने की कोशिश की, किन्तु बलवान बालक किसी प्रकार प्राण बचाकर जंगल में भाग गया। यहाँ सुयोग से उसे कुछ साथी मिले जिनके साथ रहकर वह पला, पनपा और बड़ा हुआ! कुछ समय बाद अंत में एक जहाज उधर से गुज़रा, जिसने हैगेन और उसके साथियों को शरण तो दी किन्तु ग़ुलाम बना लेने की धमकी भी दी। इस पर हैगेन ने अपने पूर्व साहस से काम लिया और अपने अपने पौरुष के प्रताप से नियति के इतने निर्मम व्यंग्य से भी मुक्ति पा ही ली! इसके बाद वह अपने देश लौटा, राजा बना, उसने विवाह किया और 'गुदरुन' नामक एक पुत्री को जन्म दिया, जिसे कि 'ज़ीलांत' का राजकुमार उसके पिता और उसके प्रेमी से बहुत दूर भगा ले गया। राह में इसे 'हैगन' के सिपाहियों से युद्ध करना पड़ा, जिसमें उसकी विजय हुई। अंत में राजकुमार अपने राज्य में आया। यहाँ, यद्यपि उसने गुदरुन के स्नेह को जीतने के अथक प्रयत्न किये तथापि उसने उसका प्यार स्वीकार नहीं किया। उसकी इस अन्यमनस्कता और रुखाई से चिढ़कर राजमाता ने उसे कठोर यातनाओं से उसे झुकाने की बात सोची और यहाँ तक किया कि उसे एक दिन नंगे पैरों

---

[1]एक कल्पित दैत्य जिसके शरीर का ऊपरी भाग बाज़ का है और निचला भाग शेर का—

भारी है कि उसे बारह आदमी लादकर ला रहे हैं, और वे भी उसके बोझ से दबे जा-रहे और लड़खड़ा रहे हैं, जैसे कि अब गिरे और तब गिरे ! उसकी यह स्थिति देखकर ज़ीग्फ़्रीत उसे एक बार फिर विश्वास दिलाता है और कान में फुसफुसाता है कि वह थोड़ा भी चिंतित न हो, केवल अपने शरीर के अंगों को आवश्यक रूप से हिलाता-डुलाता रहे, शेष के लिये वह स्वयं उपस्थित है ! उसका कहना है कि वह अपना 'टार्नकैपे'[1] पहिन लेगा और फिर सारी आवश्यक शक्ति लगा देगा, कोई जान भी पायेगा !

× ×

भाला फेंकने का समय आता है। ब्रूनहिल्त अपनी पूरी ताक़त से उस भाले को इतने ज़ोर से फेंकती है कि गुंथर और अदृश्य ज़ीग्फ़्रीत दोनों लड़खड़ाने लगते हैं जैसे कि वे तुरन्त ही धरती पकड़ लेंगे। यह देखकर ब्रूनहिल्त अपनी विजय की घोषणा करना ही चाहती है कि ज़ीग्फ़्रीत उस भाले को उसके लक्ष्य से बहुत दूर फेंक देता है और इस प्रकार उसका घमंड चूर कर देता है।

दूसरी परीक्षा आती है और, विरोधी की विजय पर आश्चर्य चकित रहने पर भी, ब्रूनहिल्त पत्थर इस तरह हवा में फेंकती है कि वह मीलों दूर जा गिरता है। यही नहीं, पत्थर के साथ ही वह स्वयं भी छलांग भरती है और, जैसे पर लग जाते हैं, दूसरे ही क्षण गिरे हुये पत्थर के समीप ही जा खड़ी होती है। इस पर गुंथर की बारी आनेपर ज़ीग्फ़्रीत अपना पत्थर उसके पत्थर से बहुत आगे फेंक देता है और गुंथर को पेटी के सहारे साधकर इस तरह उछलता है कि पत्थर के ज़मीन पर गिरते ही वह भी उसके समीप ही नज़र आता है।

इस प्रकार पराजित होने पर ब्रूनहिल्त गुंथर से विवाह करने को राज़ी हो जाती है, यद्यपि इस समय वह ऊपर से घोर असन्तुष्ट और बहुत गम्भीर है ! किंतु,गुंथर अपनी विजय पर गद्‌गद्‌ हो रहा है।

साहस आठ—

ज्योंही विवाह की तैयारी आरम्भ होती है, ब्रूनहिल्त अवसर पाकर अपने विवाहोत्सव में भाग लेने के लिये कितने ही यशस्वी योद्धाओं को अपने महल में बुला-भेजती है ! ज़ीग्फ़्रीत अदृश्य-रूप से ग़ायब हो जाता है और निबेलउंगों के देश की राह लेता है। यहाँ आने पर वह स्वयं अपने महल में प्रवेश नहीं कर पाता और उसे इसके लिये युद्ध करना पड़ता है। बात यह है कि निबेलउंग कोष का सजग और सावधान संरक्षक उसे पहचान नहीं पाता, अतएव महल में घुसने नहीं देता। इसपर ज़ीग्फ़्रीत उससे लड़ता है और संरक्षक इस प्रकार पराजित होने के बाद विवश होकर वह उसे और उसके अधिकार को पहचानता है।

× ×

---

[1]एक लबादा जिसे पहिनने से कोई भी अदृश्य हो जाये और उसमें बारह योद्धाओं के बराबर शक्ति आ जाये !

इसका विषय है ईसा का जीवन, उसके जीवन का महान उद्देश्य और उस दैवी उद्देश्य की पूर्ति जिसे पूरा करने के लिये ही उसने पृथ्वी पर जन्म लिया था।

× × ×

'इसी आपस्टाक' के कितने ही प्रसिद्ध समकालीनों ने जर्मन-साहित्य के 'क्लैसिक युग' में जर्मन साहित्य की बड़ी सेवा की और यश कमाया। इस युग का आरम्भ तब से होता है जब 'गेटे' जर्मनी लौटा और उसने 'शिलर' के सहयोग से जर्मन-साहित्य में 'क्लैसिकल स्कूल' की स्थापना की। एक ओर 'शिलर' ने विलियम टेल, जैसे अमर महाकाव्यात्मक-नाटकों से अपने साहित्य का गौरववर्द्धन किया, दूसरी ओर गेटे ने 'हेमान' और 'डोरोथिया' जैसी हरी-दुनिया की सृष्टि की, फॉस्ट जैसे नाटकीय-महाकाव्य को जन्म दिया और 'रीनेके फ़ुक्स' जैसे पशु-महाकाव्य को अद्भुत, अभूत पूर्व और अद्वितीय रूप देकर साहित्य के गले का हार बना दिया।

× × ×

'वीलान्त' भी कई क्षेत्रों में धुरन्धर लेखक था। यद्यपि 'अरेबियन नाइट्स', 'शेक्सपियर' के 'मिडसमर नाइट्स ड्रीम', और 'हुओं दे बोरदो' से प्रेरणा ग्रहण करने के बाद ही उसने अपने 'ओबेरों' नामक रूपकात्मक महाकाव्य की रचना की, तथापि उसका पाठ करते समय पाठक के सामने चित्र पर चित्र आते जाते हैं और पाठक उनके इन्द्रधनुषी रंगों से अभिभूत हो उठता है। यही कारण है कि अपने जन्म-काल से अब तक उसने कितने ही संगीतज्ञों और कलाकारों को प्रेरणा, रस और आधार प्रदान किया है। यह चर्चा संगीतज्ञों और कलाकारों की है अन्यथा कहा कहा जा सकता है कि उसका कथानक भी कम लोगों ने नहीं अपनाया।

'गेटे' के युग के बाद 'वैगनर' ने प्राचीन महाकाव्य-साहित्य का सबसे सफल और चित्रात्मक प्रयोग किया। कहना न होगा कि उसके नाटकों के सारे कथानकों के मूल स्रोत जर्मन महा-काव्य ही हैं।

———

विश्राम की वेला आती है। गुंथर अपने शयनागार में आता है और जैसे ही अपनी पत्नी को चूमने की कोशिश करता है, उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। वह अनुभव करता है कि वह जबरदस्ती पछाड़ा जाता और बांधकर एक ऊंची खूंटी पर टाँग दिया जाता है। इसके बाद, वह यद्यपि कितनी ही बार गिड़गिड़ाता और अपनी मुक्ति की प्रार्थना करता है, उसकी पत्नी एक नहीं सुनती। इस प्रकार वह रात भर उसी स्थिति में लटका रहता है और केवल तब छोड़ा जाता है जब सुबह होने लगती है और नौकर-चाकर महल में आने-जाने लगते हैं।

दूसरे दिन सारा-जन समाज लक्ष्य करता है कि ज़ीग्फ़ीत का चेहरा तो खिल उठा है और लाल हो-रहा है, किन्तु गुंथर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं और एक भयानक त्योरी का बादल प्रतिक्षण उसकी भवों के चारों ओर मंडरा रहा है। इस पर स्वयं उसके नये बहनोई को अचरज होता है और वह गुँथर से इस मुद्रा का कारण जानना चाहता है। गुंथर पहिले तो बात टाल जाता है, किन्तु फिर दिन में अपनी अप्रसन्नता और दुःख के कारण का विस्तार में वर्णन करता है। सारी कथा सुन लेने के बाद ज़ीग्फ़ीत वचन देता है कि वह उस रात अपना बादलों वाला लबादा धारण कर ब्रूनहिल्त से भेंट करेगा और उसे विवश करेगा कि वह अपने पति के साथ आगे से आदर और स्नेह का बर्ताव करे!

शाम होती है। ज़ीग्फ़ीत को अपने वचन का ध्यान है, अतएव गुँथर और ब्रूनहिल्त के साथ-साथ वह स्वयं भी अदृश्य-रूप से उनके शयनागार में प्रवेश करता है, ज्यों ही दीप-शिखा बुझा दी जाती है, ब्रूनहिल्त को कुश्ती लड़ने के लिये ललकारता है और उससे तबतक लड़ता रहता है जबतक कि वह अपनी हार नहीं मान लेती! अंत में वह आत्म-समर्पण कर देती है। अब यह जानकर कि एक मनुष्य से हार मान लेने के कारण उसकी सारी अलौकिक शक्ति का क्षय हो चुका है और वह शक्तिहीन हो गई है, ज़ीग्फ़ीत चाहता है कि गुँथर को अपनी विजय का फल भोगने के लिये छोड़कर वह अपनी राह ले! वह चलने को क़दम बढ़ाता है, किन्तु इस प्रकार जाते-जाते भी ब्रूनहिल्त की पेटी और उसकी एक अंगूठी उससे ज़बरदस्ती छीन लेता है। वह बेचारी समझती है कि उसकी चीज़ें गुंथर ने छीनी है और उसके पास सुरक्षित हैं।

× ×

थोड़े समय बाद ज़ीग्फ़ीत क्रीमहिल्त के पास लौटता है, उससे विस्तार में बतलाता है कि वह कैसे और कहाँ व्यस्त रहा और इसके बाद ब्रूनहिल्त की पेटी और अंगूठी उसे अर्पित कर देता है।

साहस ग्यारह—

विवाहोत्सव समाप्त होते हैं और ज़ीग्फ़ीत अपनी पत्नी के साथ सान्टेन के लिये प्रयाण करता है। इस समय क्रीमहिल्ट के साथ उसकी वह अनन्य अनुचरी भी है जो उसके साथ-साथ जाने और रहने का संकल्प कर चुकी है, चाहे उसकी स्वामिनी जहाँ रहे।

× ×

'निबेलउंगेनलीद'—निबलउंगों का गीत—

'निबेलउंगेनलीद' या 'निबेलउंगों' के गीतों का रचना-काल यद्यपि तेरहवीं शताब्दि है तथापि इसमें छठवीं और सातवीं शताब्दी की घटनायें भी वर्णित हैं। कुछ अधिकारियों का मत है कि 'निबेलउंगेनलीद' विभिन्न कालों में, विभिन्न स्थानों में, विभिन्न कवियों द्वारा रचे गये बारह गीतों का एकीकरण है, किन्तु कुछ दूसरे विद्वानों का कथन है कि यह एक कवि की ही रचना है, अतएव विभिन्न कालों और विभिन्न स्थानों का प्रश्न ही नहीं उठता। दूसरे वर्ग के दिग्गज 'कान्राडफ़ॉन क्यूरेनबर्ग', 'वाल्फ्रॉम फ़ॉन एशेनबाख़', 'हाइनरिख़ फ़ॉन आफ़्टरडिंगन', 'वाल्टेर फ़ॉन-देर प्रोगिलवाइदा' में से किसी एक को इसका लेखक मानते हैं। कविता चार-चार पंक्तियाँ वाले २४५६ पदों के ३६ 'साहसों' या पर्वों में विभाजित है! इसका घटना-काल तीस वर्ष है और यह फ्रैंकिश, बरगैंडिश, आस्ट्रो-गॉथिक और हूणों के सागा-चक्रों से ली गई कथा-वस्तु पर आधारित है।

ऐसा माना जाता है कि इसका 'डिट्रिक फ़ॉन बेर्न' और कोई न होकर इटली का थिओडोरिक[1] है, 'एटसेल एटिला' नामक हूण का प्रतीक है और गुंथर बरगंडी के उस राजा का प्रतिनिधि है, जो कि ४३६ में अपने साथियों के सहित नष्ट कर दिया गया।

साहस एक—

काव्य के आरम्भ में कवि कहता है कि राइन-तट पर स्थित वोर्म्स में बरगंडी के तीन राजकुमार रहते हैं। उनकी एक बहन का नाम क्रीमहिल्त है। यह एक दिन एक स्वप्न देखती है कि दो गिद्ध एक बाज़ का पीछा करते हैं और अंत में उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालते हैं, किन्तु दूसरे ही क्षण वह बाज़ आता है और उसके हृदय शरण में लेता है।

× ×

वह इस स्वप्न से घबड़ा उठती है और, यह जानकर कि उसकी माँ स्वप्नों का अर्थ लगाने में चतुर है, उससे इस भयंकर स्वप्न की चर्चा करती है। उसकी मां कहती है कि इस स्वप्न का अर्थ तो केवल यह है कि उसके भावी पति को भीषण शत्रुओं का सामना करना पड़ेगा।

× ×

[1] इटली के पूर्वी प्रदेशों का राजा जिसने ४८६ में इटली में प्रवेश किया था—वह साहित्य का विशेप प्रेमी भी था!

भी यदि उसे विश्वास न हो तो वह गिर्जे के द्वार पर अपनी बातों को दुहरा सकती है।

इस प्रकार एक दूसरे की शत्रु होकर दोनों अपना शृंगार करती हैं, अपने को बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से भलीभाँति सजाती हैं और अनेकानेक तड़क-भड़कवाली परिचारिकाओं के साथ गिर्जे में जाने के लिये एक साथ महल से बाहर निकलती हैं! वे गिर्जे के द्वार पर आती हैं। यहाँ यह देखकर कि क्रीमहिल्त उससे पहिले गिर्जे में प्रविष्ट होना चाहती और उसका अपमान करना चाहती है, ब्रूनहिल्त उसे आदेश देती है कि वह रुक जाये और पहिले उसे प्रवेश करने दे! इस पर एक बार फिर दोनों में कहा-सुनी हो जाती है और बात यहाँ तक बढ़ जाती है कि उन्हें ऊँच-नीच का कुछ भी ध्यान नहीं रहता, बल्कि जो उनके मुंह में आता है वे एक दूसरे को सुनाने लगती हैं। इसी जोश में क्रीमहिल्त ब्रूनहिल्त पर दुष्चरित्रा होने का आरोप लगाती है और कहती है कि वह भूल गई कि उसने उसके पति को यानी ज़ीग्फ़ीत को उसकी-अपनी पत्नी की भाँति ही उपकृत किया है। यही नहीं, वह एक क्षण बाद ही उसकी पेटी और उसकी अंगूठी प्रमाण में पेश करती है। ब्रूनहिल्त आपे से बाहर हो जाती है और उसी क्षण गुंथर को बुलवाती है। वह आता है और बेचारा दो क्रुद्ध स्त्रियों के बीच में अपने को निस्सहाय पाकर ज़ीग्फ़ीत के पास दूत भेजता है। शीघ्र ही ज़ीग्फ़ीत वहाँ आ पहुँचता और कहता है कि पत्नियों को कड़े नियन्त्रण में रखना चाहिये। वह गुंथर की ओर मुड़ता है और विश्वास दिलाता है कि यदि वह अपनी पत्नी को सम्हाल लेगा तो उसे अपनी पत्नी को शान्त करते कुछ भी देर न लगेगी। इसके बाद वह सारे जन-समाज के सामने शपथ लेता है कि बरगेंडी की रानी से उसका कभी भी किसी भी प्रकार का अप्रिय और अशोभन सम्बंध नहीं रहा और यदि दुर्भाग्य से कोई इस तरह का भ्रम फैल गया है तो उसे उसके लिये आन्तरिक क्लेश है।

यद्यपि ज़ीग्फ़ीत सारी प्रजा के सामने इस प्रकार के वाक्य कहता है तथापि ब्रूनहिल्त रूठी कि प्रसन्न होने का नाम ही नहीं लेती, बल्कि कुछ भी सुनने से इन्कार कर देती है और अपने पति से आग्रह करती है कि वह उसके अपमान का बदला ले। किन्तु, गुंथर ऐसा कोई भी कार्य करने से आना-कानी करता है, अतएव वह हैगेन के पास जाती है और उससे सहायता माँगती है। वह उसकी बात में आ जाता है। वह ग़लती से यह समझ-बैठता है कि ज़ीग्फ़ीत ने जान-बूझ कर उसके आत्म सम्मान के साथ खेल किया और उसे आघात पहुँचाया है। अतः वह गुथंर से ज़िद करता है कि वह ज़ीग्फ़ीत पर चढ़ाई कर दे। आखिरकार निर्बल राजा अपनी मानिनी पत्नी और अपने प्रिय स्वजन के दबाव के कारण उस पर चढ़ाई करने पर राज़ी हो जाता है!

साहस पन्द्रह—

हैगेन एक चतुराई की योजना बनाता है—ज़ीग्फ़ीत को सूचना दी जाती है कि वे सारे राजा, जिन्हें वह एक बार हरा चुका है, फिर से उठ-खड़े हुये हैं और विद्रोह कर रहे हैं। इतना सुनकर वह पहले की भाँति ही इस बार भी अपनी सेनायें अर्पित करता है और उन्हें दबाने

आकर्षित कर लेता है। खिड़की पर वह उसकी प्रत्येक जीत पर संतोष से खिल उठती है और दूसरी ओर ज़ीग्फ़ीत उसे स्वयं अपनी खिड़की की जाली से प्रायः झाँका करता है।

साहस चार—

ज़ीग्फ़ीत के प्रवास के अंतिम दिनों में अकस्मात् सूचना मिलती है कि चार हज़ार वीरों के साथ सेक्सोनों और डेनमार्क के राजा वोर्म्स पर चढ़े-आ रहे हैं। इस चढ़ाई की चर्चा सुनते ही तमाम लोगों के हाथ-पैर फूल जाते हैं और वे इतने अधीर हो उठते हैं कि केवल एक हज़ार योद्धाओं को साथ लेकर ज़ीग्फ़ीत उन राजाओं का सामना करने और उन्हें जीत-लेने का प्रस्ताव करता है। राजा गुंथर इस प्रस्ताव से सन्तोष की सांस लेता और सुखी होता है और उसे सारे साज-सामान के साथ विदा करता है। कहना न होगा कि ज़ीग्फ़ीत शीघ्र ही विजयी होकर लौटता है। यही नहीं, वह उन राजाओं को भी बन्दी बनाकर अपने साथ लाता है, जिन्हें देखकर गुन्थर प्रसन्नता से फूला नहीं समाता! दूसरे ही दिन ज़ीग्फ़ीत के सम्मान में राज-दरबार होता है और इस समय वह चारण, जो उसकी महान विजय की घोषणा करता है, क्रीमहिल्त के द्वारा पुरस्कृत होता है। क्रीमहिल्त इस वीर की प्रशंसा सुनकर आह्लाद और गर्व से खिल— उठती है!

साहस पाँच—

वोर्म्स में इस विजय के सम्मान में हुये उत्सवों का वर्णन करने के बाद कवि बताता है कि कैसे एक दिन ज़ीग्फ़ीत और क्रीमहिल्त का आमना-सामना हो जाता है और कैसे पहली बार दृष्टि मिलते ही वे परस्पर एक दूसरे को प्रेम करने लगते हैं।

'एक ओर से सर्व सुन्दरी आई नारी,
जैसे कुहरों के बादल से, मुस्कानों में किरणें भरकर,
धीरे-धीरे आये ऊषा;
और, उधर दूसरी ओर से वीर अनूठा आया जैसे
शौर्य चल रहा हो पृथ्वी पर......... !'

× ×

अब ज़ीग्फ़ीत साहस से काम लेता है और क्रीमहिल्त से विवाह करने की इच्छा प्रकट करता है। गुंथर अपनी बहन की ओर से बड़ी प्रसन्नता से यह प्रस्ताव स्वीकार करता है।

हलके होकर घोड़ों पर सवार हो जाते हैं, जब कि ज़ीग्फ़ीत उसी प्रकार लदा-फँदा अपने घोड़े पर चढ़-बैठता है। इस प्रकार तीनों एक साथ घुड़दौड़ शुरू करते हैं, किन्तु बोझीला होने के बावजूद भी ज़ीग्फ़ीट सब से पहले झरने पर पहुँच जाता है। इस पर भी जब गुंथर पानी पीने को झुकता है तो वह पानी पीने के पहले अपना कवच आदि उतार देने की इच्छा से विनम्रतापूर्वक एक किनारे हो जाता है! इस बीच में हैगेन उसके सारे अस्त्र-शस्त्र बड़ी होशियारी से उसकी पहुँच के बाहर कर देता है और जैसे ही वह पानी पीने को झुकता है उसके पीछे छिप कर, ठीक उसी स्थान पर वार करता है जहाँ कि लबादे में क्रॉस कढ़ा हुआ है! ज़ीग्फ़ीत सांघातिक रूप से घायल हो जाता है, किन्तु फिर भी घूम पड़ता है और अपनी ढाल इस तरह नचाकर अपने विश्वासघाती को मारता है कि ढाल के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।

बदले की इस अंतिम कोशिश के बाद वह धरती पर गिर पड़ता है और, गुंथर से यह प्रार्थना करते-करते कि उसकी पत्नी क्रीमहिल्त उसकी शरण में है, वह कृपाकर उसकी रक्षा करे, अपना दम तोड़ देता है। गुंथर कितनी देर तक ज़ीग्फ़ीत की लाश को घूरता रहता है और अधीर हो उठता है, जैसे कि उसका मन यह मानने को तैयार नहीं है कि इस कायरतापूर्ण वध में उसका भी हाथ है। फिर वह यह सोचकर और डर जाता है कि संसार सुनेगा तो क्या कहेगा कि उसने अपने बहनोई को ही मार डाला या मरवा डाला, और सो भी इस कायरता से, इस धोखेबाज़ी से! अतएव वह प्रस्ताव करता है कि यह ख़बर तुरन्त ही मशहूर कर दी जाये कि ज़ीग्फ़ीत जंगल में अकेले शिकार करते समय डाकुओं द्वारा मार डाला गया! किन्तु हैगेन को अपनी योजना और अपनी वीरता पर गर्व है, इसलिये वह इस प्रस्ताव से सहमत होने का इरादा नहीं करता, बल्कि शव के साथ वोर्म्स लौटते समय अपने षड़यन्त्र की अगली रूप-रेखा भी तैयार करता है ताकि उसकी धोखेबाज़ी और उसकी नीचता खुलकर खेल सके, उसका पाखण्ड उसके सर चढ़कर बोल सके!

साहस सत्रह—

शव और शव के साथ के सारे लोग आधी रात के समय वोर्म्स में आते हैं और यहाँ पहुँचते ही हैगेन शव वाहकों को आदेश देता है कि वे ज़ीग्फ़ीत के शरीर को क्रीमहिल्त के दरवाज़े पर रख दें ताकि सुबह जब वह गिर्जा जाने के लिये बाहर निकले तो अपने पति की लाश से ठोकर खाकर गिर पड़े! उसके आदेश का पालन होता है और सुबह अटककर गिरने पर क्रीमहिल्त देखती है कि वह जिससे वह ठोकर खाकर गिरी है लाश है और वह भी उसके प्रियतम पति की! अतएव, वह बेहोश हो जाती है और उसकी सेविका विलाप करने लगती है।

थोड़ी देर बाद बूढ़े ज़ीग्मंद को भी शोक-समाचार मिलता है, उसकी नींद उचट जाती है और वह भी औरों की भाँति ही रोने-कलपने लगता है। इसके बाद वह और दूसरे निबलंग-वीर लाश को गिर्जे में लाते हैं! क्रीमहिल्त की धारणा है कि यहाँ उसके पति के हत्यारे का पकड़-जाना निश्चित है, अतः वह हठ करती है कि उस दिन के सारे शिकारी एक-एक

आकर्षित कर लेता है। खिड़की पर वह उसकी प्रत्येक जीत पर संतोष से खिल उठती है और दूसरी ओर ज़ीग्फ़्रीत उसे स्वयं अपनी खिड़की की जाली से प्रायः झाँका करता है।

साहस चार—

ज़ीग्फ़्रीत के प्रवास के अंतिम दिनों में अकस्मात् सूचना मिलती है कि चार हज़ार वीरों के साथ सेक्सोनी और डेनमार्क के राजा वोर्म्स पर चढ़े-आ रहे हैं। इस चढ़ाई की चर्चा सुनते ही तमाम लोगों के हाथ-पैर फूल जाते हैं और वे इतने अधीर हो उठते हैं कि केवल एक हज़ार योद्धाओं को साथ लेकर ज़ीग्फ़्रीत उन राजाओं का सामना करने और उन्हें जीत-लेने का प्रस्ताव करता है। राजा गुंथर इस प्रस्ताव से सन्तोष की सांस लेता और सुखी होता है और उसे सारे साज-सामान के साथ विदा करता है। कहना न होगा कि ज़ीग्फ़्रीत शीघ्र ही विजयी होकर लौटता है। यही नहीं, वह उन राजाओं को भी बन्दी बनाकर अपने साथ लाता है, जिन्हें देखकर गुन्थर प्रसन्नता से फूला नहीं समाता! दूसरे ही दिन ज़ीग्फ़्रीत के सम्मान में राज-दरबार होता है और इस समय वह चारण, जो उसकी महान विजय की घोषणा करता है, क्रीमहिल्त के द्वारा पुरस्कृत होता है। क्रीमहिल्त इस वीर की प्रशंसा सुनकर आह्लाद और गर्व से खिल—उठती है!

साहस पाँच—

वोर्म्स में इस विजय के सम्मान में हुये उत्सवों का वर्णन करने के बाद कवि बताता है कि कैसे एक दिन ज़ीग्फ़्रीत और क्रीमहिल्त का आमना-सामना हो जाता है और कैसे पहली बार दृष्टि मिलते ही वे परस्पर एक दूसरे को प्रेम करने लगते हैं।

'एक ओर से सर्व सुन्दरी आई नारी,
जैसे कुहरों के बादल से, मुस्कानों में किरणें भरकर,
धीरे-धीरे आये ऊषा;
और, उधर दूसरी ओर से वीर अनूठा आया जैसे
शौर्य चल रहा हो पृथ्वी पर......... !'

× ×

अब ज़ीग्फ़्रीत साहस से काम लेता है और क्रीमहिल्त से विवाह करने की इच्छा प्रकट करता है। गुंथर अपनी बहन की ओर से बड़ी प्रसन्नता से यह प्रस्ताव स्वीकार करता है।

वे उस पर अधिकार कर लेते हैं। ऐसा होते ही हैगेन उसे राइन में गाड़ आता है और अपने प्रभुओं के अतिरिक्त किसी को भी उस स्थान का पता नहीं देता।

साहस बीस–

कुछ समय बीता कि हंगेरी के राजा एटसेल की पत्नी का स्वर्गवास हो चुका है। उसके कोई पुत्र नहीं है और उसे एक उत्तराधिकारी की आवश्यकता है जो उसके बाद उसके सिंहासन पर बैठे और राज्य करे, अतएव वह दुबारा विवाह करने का निश्चय करता है। वह इधर-उधर दृष्टि डालता और अन्त में महान् क्रीमहिल्त पर उसकी दृष्टि जा पड़ती है। वह अनुभव करता है कि इस महान पद के लिये उससे अधिक अधिकारिणी नारी का मिलना असम्भव है, अतएव वह विवाह के प्रस्ताव के साथ अपने प्रमुख सरदार रुडिगेयार को वोर्म्स भेजता है।...

रुडिगेयर का महल राह में है अतएव अपनी पत्नी और पुत्री के साथ थोड़े दिन ठहरने के बाद वह शीघ्र ही वोर्म्स पहुँचता है। वहाँ हैगेन उसका स्वागत करता है। हैगेन चार वर्षों तक अतिथि के रूप में एटसेल के दरबार में रह चुका है, अतएव वह उससे भली भाँति परिचित है।

× ×

राजदूत रुडिगेयर यथासमय अपना प्रस्ताव गुंथर के सामने रखता है। गुंथर तीन दिन का समय माँगता है ताकि वह अपनी बहन से बातचीत कर उसकी इच्छा-अनिच्छा का भी निश्चय कर सके! उसकी धारणा है कि क्रीमहिल्त यह प्रस्ताव स्वीकार कर लेगी! वह सन्तोष की साँस लेकर सोचता है कि ऐसा हो जाये तो क्या ही अच्छा हो, किन्तु हैगेन का कथन है कि यदि उसका विवाह एटसेल जैसे शक्ति शाली राजा से हो गया तो उनकी ख़ैर नहीं है, क्यों कि उस सूरत में वह किसी दिन भी अपने पति की हत्या का बदला उन सब से ले सकती है।.....

× ×

पहिले तो विधवा क्रीमहिल्त एटसेल के प्रस्ताव को सुनने से भी इन्कार कर देती है, किन्तु रुडिगेयर शपथ लेता है कि उसकी मर्यादा हंगेरी की मर्यादा है, उसकी हर तरह और हमेशा रक्षा की जायेगी और यह कि भूत या भविष्य में उसे आँख दिखलाने वाले या उसे किसी तरह हानि पहुँचाने को दुनिया से मिटा दिया जायेगा। इस पर वह अन्त में राज़ी हो जाती है और कहती है कि उसे एटसेल स्वीकार है।

× ×

इसके बाद अपनी अनन्य दासी एकावार्ट के सहित, निबलेंग कोष का थोड़ा सा धन लेकर, जो अब भी उसके पास सुरक्षित है, क्रीमहिल्ट हंगेरी के लिये रवाना होती है।

साहस इक्कीस–

बरगेंडी के तीनों राजकुमार अपनी बहन को डेन्यूब तक पहुँचाते हैं और तब विदा होते हैं! क्रिमहिल्त आगे बढ़ती है और रूडिगेयर के साथ 'पासाऊ' पहुँचती है, जहाँ उसका

भारी है कि उसे बारह आदमी लादकर ला रहे हैं, और वे भी उसके बोझ से दबे जा-रहे और लड़खड़ा रहे हैं, जैसे कि अब गिरे और तब गिरे ! उसकी यह स्थिति देखकर ज़ीग्फ्रीत उसे एक बार फिर विश्वास दिलाता है और कान में फुस्फुसाता है कि वह थोड़ा भी चिंतित न हो, केवल अपने शरीर के अंगों को आवश्यक रूप से हिलाता-डुलाता रहे, शेष के लिये वह स्वयं उपस्थित है ! उसका कहना है कि वह अपना 'टार्नकैप'[1] पहिन लेगा और फिर सारी आवश्यक शक्ति लगा देगा, कोई जान भी पायेगा !

× ×

भाला फेंकने का समय आता है । ब्रूनहिल्त अपनी पूरी ताक़त से उस भाले को इतने ज़ोर से फेंकती है कि गुंथर और अदृश्य ज़ीग्फ्रीत दोनों लड़खड़ाने लगते हैं जैसे कि वे तुरन्त ही धरती पकड़ लेंगे । यह देखकर ब्रूनहिल्त अपनी विजय की घोषणा करना ही चाहती है कि ज़ीग्फ्रीत उस भाले को उसके लक्ष्य से बहुत दूर फेंक देता है और इस प्रकार उसका घमंड चूर कर देता है ।

दूसरी परीक्षा आती है और, विरोधी की विजय पर आश्चर्य चकित रहने पर भी, ब्रूनहिल्त पत्थर इस तरह हवा में फेंकती है कि वह मीलों दूर जा गिरता है । यही नहीं, पत्थर के साथ ही वह स्वयं भी छलांग भरती है और, जैसे पर लग जाते हैं, दूसरे ही क्षण गिरे हुये पत्थर के समीप ही जा खड़ी होती है । इस पर गुंथर की बारी आनेपर ज़ीग्फ्रीत अपना पत्थर उसके पत्थर से बहुत आगे फेंक देता है और गुंथर को पेटी के सहारे साधकर इस तरह उछलता है कि पत्थर के ज़मीन पर गिरते ही वह भी उसके समीप ही नज़र आता है ।

इस प्रकार पराजित होने पर ब्रूनहिल्त गुंथर से विवाह करने को राज़ी हो जाती है, यद्यपि इस समय वह ऊपर से घोर असन्तुष्ट और बहुत गम्भीर है ! किंतु, गुंथर अपनी विजय पर गद्गद् हो रहा है ।

साहस आठ—

ज्योंही विवाह की तैयारी आरम्भ होती है, ब्रूनहिल्त अवसर पाकर अपने विवाहोत्सव में भाग लेने के लिये कितने ही यशस्वी योद्धाओं को अपने महल में बुला-भेजती है ! ज़ीग्फ्रीत अदृश्य-रूप से ग़ायब हो जाता है और निबेलउंगों के देश की राह लेता है । यहाँ आने पर वह स्वयं अपने महल में प्रवेश नहीं कर पाता और उसे इसके लिये युद्ध करना पड़ता है । बात यह है कि निबेलउंग कोष का सजग और सावधान संरक्षक उसे पहचान नहीं पाता, अतएव महल में घुसने नहीं देता । इसपर ज़ीग्फ्रीत उससे लड़ता है और संरक्षक इस प्रकार पराजित होने के बाद विवश होकर वह उसे और उसके अधिकार को पहचानता है ।

× ×

---

[1] एक लबादा जिसे पहिनने से कोई भी अदृश्य हो जाये और उसमें बारह योद्धाओं के बराबर शक्ति आ जाये !

साहस पच्चीस–

ब्रूनहिल्त और उसके पुत्र को घर के विश्वसनीय नौकर-चाकरों पर छोड़कर बर्गेंडियन रानी से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और यात्रा के लिये चल पड़ते हैं। (चूँकि इस दल के साथ वे लोग हैं जो निवेलउंग-कोष के एक-मात्र मालिक है, अतएव कवि आगे से उन्हें और उनके साथियों को 'निवेलॉग' के नाम से ही पुकारता है।'

हैगरी का रास्ता केवल हगेन ही जानता है, अतएव वह पथ-प्रदर्शन करता है! शीघ्र ही सब लोग डेन्यूब पर आ पहुँचते हैं। वह पार जाने की कोई सुविधा न देखकर औरों से विश्राम और प्रतीक्षा करने की बात कह कर स्वयं जाने के लिए कुछ प्रबन्ध करने की बात सोचता है। वह नदी के निचले भाग की ओर क़दम बढ़ाता है कि उसकी दृष्टि तीन हंस-परियों पर पड़ती है। ये स्नान कर रही हैं और उसे देखते ही चौंक उठती है। वह उनके वस्त्र अपने अधिकार में कर उन्हें भविष्य-वाणी करने के लिये मजबूर करता है। एक हंस-परी अपने वस्त्र पाने के विचार से उसे कितनी ही मधुर-मधुर, सुखदायक बातें बतलाती हैं, किन्तु शेष दोनों परियाँ उससे किसी तरह अपने वस्त्र ले लेती हैं और तब भविष्य-भाषण करती हैं कि एक पुरोहित के अतिरिक्त और कोई भी सही-सलामत बरगेंडी न लौटेगा!

किन्तु, यह देखकर कि वह नाव की खोज में हैं, वे हंस-परियाँ उसे सूचित करतीं है कि यदि वह नदी के उस पार जाकर पास हैगेन खड़े मल्लाह को अपना नाम एमालुंग बतला देगा तो वह उसकी और उसे अन्य साथियों की सहायता निश्चित-रूप से करेगा। हैगेन इतना सुनते ही उस मल्लाह से आग्रह करता है कि वह उसे दूसरे किनारे पर ले चले। वह तैयार हो जाता है। दूसरे किनारे पर पहुँचकर हैगेन उसी युक्ति से काम लेता है और बिना कुछ कहे-सुने उसकी बड़ी नाव में कूद पड़ता है, किन्तु दूसरे ही क्षण मल्लाह को सारी चलाकी का पता लग जाता है और वह और कुछ न पाकर अपने डाँड से ही उसकी भलीभाँति मरम्मत करता है। अब अपनी रक्षा के लिये हैगेन उसे मार डालता है। तत्पश्चात् वह उसकी नाव पर अधिकार करता, उसे बरगेडियों के पास लाता और कई बार में उन सबको उस पार पहुँचाता है। किन्तु अंतिम खेवे में उसकी निगाह नाव पर बैठे पुरोहित पर पड़ती है। उस पर दृष्टि पड़ते ही हंस-परियों की भविष्य-वाणी उसपर अधिकार जमा लेती है, अतएव उसे असत्य प्रमाणित करने के लिये वह उसे, सहसा ही, नाव से ढकेल देता है। किन्तु अपने लम्बे धार्मिक वस्त्रों के कारण पुरोहित डूबता नहीं और शीघ्र ही किनारे आ-लगता है, जहाँ से वह बरगंडी लौट आता है। हैगेन लक्ष्य करता है कि पुरोहित बच गया और बरगेंडी लौट गया, अतएव वह सोचता है कि हो-न-हो हंस परियों की बात सही है, और सचमुच ही अब कोई सकुशल बरगेंडी न लौटेगा। इस विचार के मन में घर करते ही वह बहुत घबड़ा-उठता है और सब लोगों के उतर जाने पर उस नाव को नदी में डुबा देता है।

अब अपने साथियों से आगे बढ़ने की बात कहकर उनकी रक्षा के लिये वह स्वयं

विश्राम की वेला आती है। गुंथर अपने शयनागार में आता है और जैसे ही अपनी पत्नी को चूमने की कोशिश करता है, उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। वह अनुभव करता है कि वह जबरदस्ती घसीटा जाता और बांधकर एक ऊंची खूंटी पर टाँग दिया जाता है। इसके बाद, वह यद्यपि कितनी ही बार गिड़गिड़ाता और अपनी मुक्ति की प्रार्थना करता है, उसकी पत्नी एक नहीं सुनती। इस प्रकार वह रात भर उसी स्थिति में लटका रहता है और केवल तब छोड़ा जाता है जब सुबह होने लगती है और नौकर-चाकर महल में आने-जाने लगते हैं।

दूसरे दिन सारा-जन समाज लक्ष्य करता है कि ज़ीग्फ़ीत का चेहरा तो खिल उठा है और लाल हो-रहा है, किन्तु गुंथर के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ रही हैं और एक भयानक त्योरी का बादल प्रतिक्षण उसकी भवों के चारों ओर मंडरा रहा है। इस पर स्वयं उसके नये बहनोई को अचरज होता है और वह गुँथर से इस मुद्रा का कारण जानना चाहता है। गुंथर पहिले तो बात टाल जाता है, किन्तु फिर दिन में अपनी अप्रसन्नता और दुःख के कारण का विस्तार में वर्णन करता है। सारी कथा सुन लेने के बाद ज़ीग्फ़ीत वचन देता है कि वह उस रात अपना बादलों वाला लबादा धारण कर ब्रूनहिल्त से भेंट करेगा और उसे विवश करेगा कि वह अपने पति के साथ आगे से आदर और स्नेह का बर्ताव करे!

शाम होती है। ज़ीग्फ़ीत को अपने वचन का ध्यान है, अतएव गुँथर और ब्रूनहिल्त के साथ-साथ वह स्वयं भी अदृश्य-रूप से उनके शयनागार में प्रवेश करता है, ज्यों ही दीप-शिखा बुझा दी जाती है, ब्रूनहिल्त को कुश्ती लड़ने के लिये ललकारता है और उससे तबतक लड़ता रहता है जबतक कि वह अपनी हार नहीं मान लेती! अंत में वह आत्म-समर्पण कर देती है। अब यह जानकर कि एक मनुष्य से हार मान लेने के कारण उसकी सारी अलौकिक शक्ति का क्षय हो चुका है और वह शक्तिहीन हो गई है, ज़ीग्फ़ीत चाहता है कि गुँथर को अपनी विजय का फल भोगने के लिये छोड़कर वह अपनी राह ले! वह चलने को क़दम बढ़ाता है, किन्तु इस प्रकार जाते-जाते भी ब्रूनहिल्त की पेटी और उसकी एक अंगूठी उससे जबरदस्ती छीन लेता है। वह बेचारी समझती है कि उसकी चीज़ें गुंथर ने छीनी है और उसके पास सुरक्षित हैं।

× ×

थोड़े समय बाद ज़ीग्फ़ीत क्रीमहिल्त के पास लौटता है, उससे विस्तार में बतलाता है कि वह कैसे और कहाँ व्यस्त रहा और इसके बाद ब्रूनहिल्त की पेटी और अंगूठी उसे अर्पित कर देता है।

साहस ग्यारह—

विवाहोत्सव समाप्त होते हैं और ज़ीग्फ़ीत अपनी पत्नी के साथ सान्टेन के लिये प्रयाण करता है। इस समय क्रीमहिल्ट के साथ उसकी वह अनन्य अनुचरी भी है जो उसके साथ-साथ जाने और रहने का संकल्प कर चुकी है, चाहे उसकी स्वामिनी जहाँ रहे।

× ×

उसे नहीं भाता ! वह हैगेन से प्रश्न करती है कि वह उसकी स्वर्ण-राशि अपने साथ क्यों नहीं लाया ? हैगेन उत्तर देता है कि वह कोप राइन को अर्पित किया जा चुका है और अब वह प्रलय के दिन तक वहीं नहीं पड़ा रहेगा। इतना सुनते ही क्रीमहिल्त उसकी ओर से मुंह फेर लेती है और अन्य लोगों से आग्रह करती है कि वे अपने अस्त्र-शस्त्र दरवाजे पर रखकर अन्दर चलें। इसपर हैगेन राजकुमार के संकल्प का उल्लेख करता है और कहता है कि वे अगले तीन दिनों तक अस्त्र-शस्त्रों का परित्याग न करेंगे ! इसके बाद डिट्रिक इसका अनुमोदन करता है कि उसका अपना पूर्ण विश्वास है कि उसकी नीयत साबित नहीं है।

साहस उन्तीस—

यद्यपि तीनों राजकुमार क्रीमहिल्त के साथ महल में प्रवेश करते हैं तथापि हैगेन दरवाजे पर ही ठिठक रहता है, फोल्केयर नामक चारण को बुलाकर अपने पास बेंच पर बैठाता है, उससे अपने भय और अपनी आशंका का सविस्तार वर्णन करने के बाद अनुरोध करता है कि समय आने पर वह उसका साथ दे, और बदले में अवसर आने पर स्वय उसकी प्राण-रक्षा करने का संकल्प करता है !

× ×

क्रीमहिल्त अभी तो केवल हैगेन को ही नष्ट कर देना चाहती है, अतएव उसे महल के द्वार पर अकेले और इतने समीप पाकर चार सौ वीरों को बुलवाती है और हैगेन पर हमला करने का आदेश देती है। यही नहीं, वह उनसे कहती है कि वह भी उनके साथ चलेगी और उनके सामने उससे जवाब तलब करेगी !·········

× ×

क्रीमहिल्त को अपनी ओर आता हुआ देखकर फ़ोल्केयर हैगेन से कहता है कि उन्हें उसके सम्मान में खड़ा हो जाना चाहिये। इस पर हैगेन गम्भीर होकर उत्तर देता है कि वह ऐसी विनम्रता को उनकी दुर्बलता समझेगी, इसलिये उन्हें उसी प्रकार बल्कि और अकड़कर बैठ जाना चाहिये। इतने में रानी बिलकुल पास आ जाती हैं और, बजाय खड़े होने के उसे दिखलाने के लिये, हैगेन ज़ीग्फ्रीत की तलवार अपनी गोदी में रख लेता है। यह देखकर क्रीमहिल्त उससे व्यंग्यात्मक ढंग से पूछती है कि उसके पति की हत्या उसी की है न ? हैगेन इसका कोई नहीं उत्तर देता, अतएव वह अपने सिपाहियों को उसे मार डालने की आज्ञा देती है, किन्तु उसकी अंगारों-सी आँखों की एक निगाह से ही सिपाहियों के दिल इस तरह बैठने लगते हैं कि वे भाग खड़े होते हैं। इसके बाद कोशिश करने के बाद भी रानी उन्हें रोकने और हैगेन पर हमला करवाने में सफल नहीं हो पाती।

× ×

शाम होती है ! हैगेन और फ़ोल्केयर दावत के कमरे में अपने अन्य मित्रों से मिलते हैं। यहाँ एटसेल औरों कि भाँति ही उनका भी स्वागत-सत्कार करता है, क्योंकि, एक

भी यदि उसे विश्वास न हो तो वह गिर्जे के द्वार पर अपनी बातों को दुहरा सकती है।

इस प्रकार एक दूसरे की शत्रु होकर दोनों अपना शृंगार करती हैं, अपने को बहुमूल्य वस्त्राभूषणों से भलीभाँति सजाती हैं और अनेकानेक तड़क-भड़कवाली परिचारिकाओं के साथ गिर्जे में जाने के लिये एक साथ महल से बाहर निकलती हैं! वे गिर्जे के द्वार पर आती है। यहाँ यह देखकर कि क्रीमहिल्त उससे पहिले गिर्जे में प्रविष्ट होना चाहती और उसका अपमान करना चाहती है, ब्रूनहिल्त उसे आदेश देती है कि वह रुक जाये और पहिले उसे प्रवेश करने दे! इस पर एक बार फिर दोनों में कहा-सुनी हो जाती है और बात यहाँ तक बढ़ जाती है कि उन्हें ऊँच-नीच का कुछ भी ध्यान नहीं रहता, बल्कि जो उनके मुंह में आता है वे एक दूसरे को सुनाने लगती हैं। इसी जोश में क्रीमहिल्त ब्रूनहिल्त पर दुष्चरित्रा होने का आरोप लगाती है और कहती है कि वह भूल गई कि उसने उसके पति को यानी ज़ीग्फ़्रीत को उसकी-अपनी पत्नी की भाँति ही उपकृत किया है। यही नहीं, वह एक क्षण बाद ही उसकी पेटी और उसकी अंगूठी प्रमाण में पेश करती है। ब्रूनहिल्त आपे से बाहर हो जाती है और उसी क्षण गुंथर को बुलवाती है। वह आता है और बेचारा दो क्रुद्ध स्त्रियों के बीच में अपने को निस्सहाय पाकर ज़ीग्फ़्रीत के पास दूत भेजता है। शीघ्र ही ज़ीग्फ़्रीत वहाँ आ पहुँचता और कहता है कि पत्नियों को कड़े नियन्त्रण में रखना चाहिये। वह गुंथर की ओर मुड़ता है और विश्वास दिलाता है कि यदि वह अपनी पत्नी को सम्हाल लेगा तो उसे अपनी पत्नी को शान्त करते कुछ भी देर न लगेगी। इसके बाद वह सारे जन-समाज के सामने शपथ लेता है कि बरगंडी की रानी से उसका कभी भी किसी भी प्रकार का अप्रिय और अशोभन सम्बंध नहीं रहा और यदि दुर्भाग्य से कोई इस तरह का भ्रम फैल गया है तो उसे उसके लिये आन्तरिक क्लेश है।

यद्यपि ज़ीग्फ़्रीत सारी प्रजा के सामने इस प्रकार के वाक्य कहता है तथापि ब्रूनहिल्त रूठी कि प्रसन्न होने का नाम ही नहीं लेती, बल्कि कुछ भी सुनने से इन्कार कर देती है और अपने पति से आग्रह करती है कि वह उसके अपमान का बदला ले। किन्तु, गुंथर ऐसा कोई भी कार्य करने से आना-कानी करता है, अतएव वह हैगेन के पास जाती है और उससे सहायता माँगती है। वह उसकी बात में आ जाता है। वह ग़लती से यह समझ-बैठता है कि ज़ीग्फ़्रीत ने जान-बूझ कर उसके आत्म सम्मान के साथ खेल किया और उसे आघात पहुँचाया है। अतः वह गुथंर से ज़िद करता है कि वह ज़ीग्फ़्रीत पर चढ़ाई कर दे। आखिरकार निर्बल राजा अपनी मानिनी पत्नी और अपने प्रिय स्वजन के दबाव के कारण उस पर चढ़ाई करने पर राज़ी हो जाता है!

साहस पन्द्रह--

हैगेन एक चतुराई की योजना बनाता है—ज़ीग्फ़्रीत को सूचना दी जाती है कि वे सारे राजा, जिन्हें वह एक बार हरा चुका है, फिर से उठ-खड़े हुये हैं और विद्रोह कर रहे हैं। इतना सुनकर वह पहले की भाँति ही इस बार भी अपनी सेनायें अर्पित करता हैं और उन्हें दबाने

साहस बत्तीस—

इन बरगेंडियों के अतिरिक्त, जो इस समय सम्राट एटसेल के साथ दावत खा रहे हैं, शेष सब हैगेन के भाई दान्कावार्त के संरक्षण में अपने शयनागारों में विश्राम कर रहे हैं अतएव, सहसा ही, फिर कुछ हूण हमला कर देते हैं। बरगेंडी पहले से ही होशियार हैं इस लिये कुछ क्षणों में सारे दुश्मनों का सफ़ाया कर देते हैं, किन्तु इस प्रकार मारे-गये हूण प्रतिहिंसा की स्थायी अग्नि धधका देते हैं। फल यह होता है कि शीघ्र ही दूसरी सेनायें आती हैं और दान्कावार्त के अतिरिक्त सबका काम तमाम कर देती हैं।

× × ×

दुश्मनों की सेनाओं के बीच से किसी प्रकार निकल कर दान्कावार्त भोज के बड़े कमरे में पहुँचाता है। इधर यहाँ उसका भाई व्यंजनों का स्वाद लेने में व्यस्त है और उधर सारे योद्धा और सारे साथी अपने ही ख़ून की नदी में डूब-उतरा रहे हैं। ·· ·····

साहस तैंतीस—

भाई का आर्त्तनाद कान में पड़ते ही हैगेन क्रोध के मारे आपे से बाहर होकर अपनी तलवार म्यान से खींच लेता है और एटसेल के पुत्र पर इस तरह वार करता है कि दूसरे ही क्षण उसका सिर धड़ से अलग होकर उछल कर माँ की गोद में जा-गिरता है। तत्पश्चात् अपने भाई को ललकार कर, कि कोई बचकर न निकल पाये, हैगेन उन चारणों के हाथ काट डालता है जो कि उसे हंगरी आने का निमन्त्रण देने गये थे। इतना कर चुकने के बाद वह दायें-बायें जिसे भी पाता है गाजर-मूली की तरह काट डालता है।

× × ×

इधर पुत्र का कटा-हुआ सिर राजा-रानी को लकवा मार जाता है और लगता है जैसे कि अब वे जीवित मनुष्य न होकर सिंहासन पर प्रतिष्ठित प्राणहीन पत्थर-मात्र हैं। इसी समय दान्कावार्त को रखवाली के लिये द्वार पर भेजकर हैगेन स्वयं उनके सम्मुख जाता है और उन्हें ताना मारता है कि यदि उनकी इच्छा हो तो वे भी हथियार हाथ में लें और अपनी और अपने साथियों की रक्षा करें!

× × ×

यद्यपि अब बरगेंडी उन्मत्त होकर बड़ी बेरहमी से शत्रुओं के प्राण हरते हैं तथापि वे डिट्रिक और रुडिगेयर के उपकारों को नहीं भूलते और उनपर हमला करना पाप समझते हैं, अतएव ज्यों ही वे अपने साथियों के साथ बाहर जाने की आज्ञा मांगते हैं, उनकी प्रार्थना सहर्ष स्वीकार करते हैं।

× × ×

अब डिट्रिक अपने हाथों का सहारा देकर राजा और रानी को कमरे के बाहर लाता है।

हलके होकर घोड़ों पर सवार हो जाते हैं, जब कि ज़ीग्फ़्रीत उसी प्रकार लदा-फँदा अपने घोड़े पर चढ़-बैठता है। इस प्रकार तीनों एक साथ घुड़दौड़ शुरू करते हैं, किन्तु बोझीला होने के बावजूद भी ज़ीग्फ़्रीट सब से पहले झरने पर पहुँच जाता है। इस पर भी जब गुंथर पानी पीने को झुकता है तो वह पानी पीने के पहले अपना कवच आदि उतार देने की इच्छा से विनम्रतापूर्वक एक किनारे हो जाता है! इस बीच में हैगेन उसके सारे अस्त्र-शस्त्र बड़ी होशियारी से उसकी पहुँच के बाहर कर देता है और जैसे ही वह पानी पीने को झुकता है उसके पीछे छिप कर, ठीक उसी स्थान पर वार करता है जहाँ कि लबादे में क्रॉस कढ़ा हुआ है! ज़ीग्फ़्रीत सांघातिक रूप से घायल हो जाता है, किन्तु फिर भी घूम पड़ता है और अपनी ढाल इस तरह नचाकर अपने विश्वासघाती को मारता है कि ढ़ाल के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं।

बदले की इस अंतिम कोशिश के बाद वह धरती पर गिर पड़ता है और, गुंथर से यह प्रार्थना करते-करते कि उसकी पत्नी क्रीमहिल्त उसकी शरण में है, वह कृपाकर उसकी रक्षा करे, अपना दम तोड़ देता है। गुंथर कितनी देर तक ज़ीग्फ़्रीत की लाश को घूरता रहता है और अधीर हो उठता है, जैसे कि उसका मन यह मानने को तैयार नहीं है कि इस कायरतापूर्ण वध में उसका भी हाथ है। फिर वह यह सोचकर और डर जाता है कि संसार सुनेगा तो क्या कहेगा कि उसने अपने बहनोई को ही मार डाला या मरवा डाला, और सो भी इस कायरता से, इस धोखेबाज़ी से! अतएव वह प्रस्ताव करता है कि यह ख़बर तुरन्त ही मशहूर कर दी जाये कि ज़ीग्फ़्रीत जंगल में अकेले शिकार करते समय डाकुओं द्वारा मार डाला गया! किन्तु हैगेन को अपनी योजना और अपनी वीरता पर गर्व है, इसलिये वह इस प्रस्ताव से सहमत होने का इरादा नहीं करता, बल्कि शव के साथ वोर्म्स लौटते समय अपने षड़यन्त्र की अगली रूप-रेखा भी तैयार करता है ताकि उसकी धोखेबाज़ी और उसकी नीचता खुलकर खेल सके, उसका पाखण्ड उसके सर चढ़कर बोल सके!

साहस सत्रह—

शव और शव के साथ के सारे लोग आधी रात के समय वोर्म्स में आते हैं और यहाँ पहुँचते ही हैगेन शव वाहकों को आदेश देता है कि वे ज़ीग्फ़्रीत के शरीर को क्रीमहिल्त के दरवाज़े पर रख दें ताकि सुबह जब वह गिर्जा जाने के लिये बाहर निकले तो अपने पति की लाश से ठोकर खाकर गिर पड़े! उसके आदेश का पालन होता है और सुबह अटककर गिरने पर क्रीमहिल्त देखती है कि वह जिससे वह ठोकर खाकर गिरी है लाश है और वह भी उसके प्रियतम पति की! अतएव, वह बेहोश हो जाती है और उसकी सेविका विलाप करने लगती है।

थोड़ी देर बाद बूढ़े ज़ीग्मंद को भी शोक-समाचार मिलता है, उसकी नींद उचट जाती है और वह भी औरों की भाँति ही रोने-कलपने लगता है। इसके बाद वह और दूसरे निबलंग-वीर लाश को गिर्जे में लाते हैं! क्रीमहिल्त की धारणा है कि यहाँ उसके पति के हत्यारे का पकड़-जाना निश्चित है, अतः वह हठ करती है कि उस दिन के सारे शिकारी एक-एक

बरगेंडी क्रीमहिल्त और एटसेल की सेनायें देखकर घबड़ाते नहीं, बल्कि उसी बहादुरी से उनका मुक़ाबला करने और उनसे युद्ध करने का हौसला रखते हैं, किन्तु लड़ने के पहले वे आश्वासन पाना चाहते हैं कि यदि वे विजयी हो जायें तो उन्हें बिना किसी प्रकार की छेड़छाड़ के उनके स्वदेश लौटने दिया जाय। इसके उत्तर में क्रीमहिल्त अपने पति से अनुरोध करती है कि वह उनकी शर्त अस्वीकार कर दे और कहे कि यदि ऐसा हो भी सकता है तो तभी हो सकता है जब वे हैगेन को तुरन्त ही उसे सौंप दें। एटसेल जैसे का तैसा वाक्य बरगेंडियों के सामने रख देता है, किन्तु वे इस प्रकार अपने एक साथी को दुश्मनों को सौंप देना अपमानजनक समझते हैं और एटसेल की शर्त ठुकरा देते हैं। इस पर क्रीमहिल्त आवेश में आज्ञा देती है कि बड़े कमरे में आग लगा दी जाये!

रानी के आदेशानुसार बड़े कमरे में आग लगा दी जाती है। रानी का ख़्याल है कि वह सारे बरगेंडियों को ज़िन्दा ही भून डालेगी, किन्तु होता कुछ और ही है। कमरा पत्थरों का बना है, अतएव उसपर आग का कोई असर नहीं पड़ता, बल्कि यह कि वह उन्हें शरण और देता है, और जितनी भी लपटें और चिनगारियाँ उसमें प्रवेश करती हैं, सभी रक्त में तिरोहित हो जाती हैं। इस प्रकार शत्रु सभी भाँति सुरक्षित रहते हैं।

किन्तु बाहर की अग्नि के ताप के कारण बरगेंडियों को इतनी भीषण प्यास लगती है कि वे निर्जीव हो उठते हैं। इसी समय हैगेन उनसे आग्रह करता है कि वे काटे गये दुश्मनों का ख़ून पियें और अपनी प्यास बुझायें। वे उसकी बात सहर्ष मानते हैं और इस प्रकार रक्तपान कर ६०० बरगेंडी एक बार फिर अपने दुश्मनों का सामना करने के लिये जी-उठते हैं। सहसा ही क्रीमहिल्त की सेना हाल पर टूट-पड़ती है।........

साहस सैंतीस—

किन्तु अपने इस तीसरे प्रयास में भी असफल होने के बाद क्रीमहिल्त रूडिगेयर को उसकी पवित्र-प्रतिज्ञा की याद दिलाती है और मांग करती है कि वह बरगेंडियों का क़त्ल कर अब अपने वचन को पूरा करे! इसपर परम सज्जन रूडिगेयर उसे तरह-तरह से समझाता है और अंत में अपनी सारी धन-सम्पत्ति उसे अर्पितकर भिखारी बनकर उसका राज्य छोड़ने को तैयार हो जाता है। किन्तु वह एक नहीं सुनती और सारी भावनायें और सारा त्याग आज्ञा-पालन के रूप में ही सामने देखना चाहती है। अतः निराश रूडिगेयर अस्त्र-शस्त्र से भली भाँति सुसज्जित होकर हाल की ओर बढ़ता है और पहली सीढ़ी पर खड़े होकर बरगेंडियों को सारी परिस्थिति स्पष्ट कर देता है। हैगेन सब कुछ सुन कर उसकी विशाल-हृदयता और उदारता की सराहना करता है और उससे एक ढाल माँगता है क्योंकि उसकी अपनी ढाल टुकड़े-टुकड़े हो चुकी है। वह दूसरे ही क्षण उसकी सहायता करता है और ढाल पाने पर हैगेन घोषित करता है कि आत्म-समर्पण करने के पहले वह अपने को एक अपूर्व वीर तो प्रमाणित कर ही देगा।

इसके बाद डंका बजता है, युद्ध आरम्भ होता है और अपने सैनिकों के साथ रूडि-

वे उस पर अधिकार कर लेते हैं। ऐसा होते ही हैगेन उसे राइन में गाड़ आता है और अपने प्रभुओं के अतिरिक्त किसी को भी उस स्थान का पता नहीं देता।

साहस बीस–

कुछ समय बीता कि हंगेरी के राजा एटनेल की पत्नी का स्वर्गवास हो चुका है। उसके कोई पुत्र नहीं है और उसे एक उत्तराधिकारी की आवश्यकता है जो उसके बाद उसके सिंहासन पर बैठे और राज्य करे, अतएव वह दुबारा विवाह करने का निश्चय करता है। वह इधर-उधर दृष्टि डालता और अन्त में महान् क्रीमहिल्त पर उसकी दृष्टि जा पड़ती है। वह अनुभव करता है कि इस महान पद के लिये उससे अधिक अधिकारिणी नारी का मिलना असम्भव है, अतएव वह विवाह के प्रस्ताव के साथ अपने प्रमुख सरदार रुडिगेयार को वोर्म्स भेजता है।...

रुडिगेयर का महल राह में है अतएव अपनी पत्नी और पुत्री के साथ थोड़े दिन ठहरने के बाद वह शीघ्र ही वोर्म्स पहुँचता है। यहाँ हैगेन उसका स्वागत करता है। हैगेन चार वर्षों तक अतिथि के रूप में एटसेल के दरबार में रह चुका है, अतएव वह उससे भली भाँति परिचित है।

× ×

राजदूत रुडिगेयर यथासमय अपना प्रस्ताव गुंथर के सामने रखता है। गुंथर तीन दिन का समय माँगता है ताकि वह अपनी बहन से बातचीत कर उसकी इच्छा-अनिच्छा का भी निश्चय कर सके! उसकी धारणा है कि क्रीमहिल्त यह प्रस्ताव स्वीकार कर लेगी! वह सन्तोष की साँस लेकर सोचता है कि ऐसा हो जाये तो क्या ही अच्छा हो, किन्तु हैगेन का कथन है कि यदि उसका विवाह एटसेल जैसे शक्ति शाली राजा से हो गया तो उनकी ख़ैर नहीं है, क्योंकि उस सूरत में वह किसी दिन भी अपने पति की हत्या का बदला उन सब से ले सकती है।.....

× ×

पहिले तो विधवा क्रीमहिल्त एटसेल के प्रस्ताव को सुनने से भी इन्कार कर देती है, किन्तु रुडिगेयर शपथ लेता है कि उसकी मर्यादा हंगेरी की मर्यादा है, उसकी हर तरह और हमेशा रक्षा की जायेगी और यह कि भूत या भविष्य में उसे आँख दिखलाने वाले या उसे किसी तरह हानि पहुँचाने को दुनिया से मिटा दिया जायेगा। इस पर वह अन्त में राज़ी हो जाती है और कहती है कि उसे एटसेल स्वीकार है।

× ×

इसके बाद अपनी अनन्य दासी एकावार्ट के सहित, निबलेग कोष का थोड़ा सा धन लेकर, जो अब भी उसके पास सुरक्षित है, क्रीमहिल्ट हंगेरी के लिये रवाना होती है।

साहस इक्कीस–

बरगेंडी के तीनों राजकुमार अपनी बहन को डेन्यूब तक पहुँचाते हैं और तब विदा होते हैं! क्रीमहिल्त आगे बढ़ती है और रूडिगेयर के साथ 'पासाऊ' पहुँचती है, जहाँ उसका

उस स्थान का पता न बतायेगा। वह कहता है कि इस संकल्प के कारण ही वह विवश है और उस विषय में कुछ भी नहीं बतला सकता !

× ×

इसी बीच में गुंथर भी आ जाता है। इस समय क्रीमहिल्त इतने आवेश में है कि उसे अपने तन-बदन का भी होश नहीं है, अतएव वह विशेषतया उस कोष के लिए ही अपने अंतिम भाई को भी मरवा डालती है, और उसका सिर लेकर हेगेन के पास जाती है ! वह साबित करती है कि उसका अंतिम स्वामी भी अब इस संसार में नहीं रहा ! वह उससे आग्रह करती है कि वह राइन के उस विशिष्ट स्थान पता बता दे जहाँ वह सारा कोष गड़ा-पड़ा है। किन्तु हेगेन सन्तोष की साँस लेकर उसकी आशा निराशा में बदल देता है। वह कहता है कि केवल एक-अकेला वह बचा है जिसे उसका पता है, अतएव अच्छा है कि यह रहस्य सदा एक रहस्य ही रहा-आये ! इस पर क्रीमहिल्त की इतने दिनों की सारी प्रतिहिंसा साकार हो उठती है, वह उत्तेजित हो उठती है, कभी-की ज़ीग्फ़ीत की तलवार तुरन्त हो म्यान से खींच लेती है और एक ही भरपूर वार में हेगेन का सिर धड़ से अलग कर देती है।

× ×

एटसेल और हिल्देब्रान्द दोनों में से एक भी इस पाप की कल्पना भी नहीं कर पाते कि क्रीमहिल्त हेगेन का काम तमाम कर देती है ! क्रीमहिल्त की इस निर्दयता से हिल्देब्रान्द की आँखों के डोरे लाल हो उठते हैं ! वह दूसरे ही क्षण क्रीमहिल्त की गर्दन उतार लेता है, जैसे कि वह हेगेन की मौत का बदला ले रहा हो !

× ×

क्रीमहिल्त के शव पर डिट्रिक और एटसेल के विलाप में काव्य का अन्त होता है।

———

साहस पच्चीस–

अ नहिल्त और उसके पुत्र को घर के विश्वसनीय नौकर-चाकरों पर छोड़कर बर्गेडियन रानी से आर्शीवाद प्राप्त करते हैं और यात्रा के लिये चल पड़ते हैं। (चूँकि इस दल के साथ वे लोग हैं जो निबेलउंग-कोष के एक-मात्र मालिक है, अतएव कवि आगे से उन्हें और उनके साथियों को 'निबेलॉग' के नाम से ही पुकारता है।'

हैगरी का रास्ता केवल हंगेन ही जानता है, अतएव वह पथ-प्रदर्शन करता है! शीघ्र ही सब लोग डेन्यूब पर आ पहुँचते हैं। वह पार जाने की कोई सुविधा न देखकर औरों से विश्राम और प्रतीक्षा करने की बात कह कर स्वयं जाने के लिए कुछ प्रबन्ध करने की बात सोचता है। वह नदी के निचले भाग की ओर क़दम बढ़ाता है कि उसकी दृष्टि तीन हंस-परियों पर पड़ती है। ये स्नान कर रही हैं और उसे देखते ही चौंक उठती है। वह उनके वस्त्र अपने अधिकार में कर उन्हें भविष्य-वाणी करने के लिये मजबूर करता है। एक हंस-परी अपने वस्त्र पाने के विचार से उसे कितनी ही मधुर-मधुर, सुखदायक बातें बतलाती हैं, किन्तु शेष दोनों परियाँ उससे किसी तरह अपने वस्त्र ले लेती हैं और तब भविष्य-भाषण करती हैं कि एक पुरोहित के अतिरिक्त और कोई भी सही-सलामत बरगेंडी न लौटेगा!

किन्तु, यह देखकर कि वह नाव की खोज में हैं, वे हंस-परियाँ उसे सूचित करतीं है कि यदि वह नदी के उस पार जाकर पास हैगेन खड़े मल्लाह को अपना नाम एमालुंग बतला देगा तो वह उसकी और उसे अन्य साथियों की सहायता निश्चिन-रूप से करेगा। हैगेन इतना सुनते ही उस मल्लाह से आग्रह करता है कि वह उसे दूसरे किनारे पर ले चले। वह तैयार हो जाता है। दूसरे किनारे पर पहुँचकर हैगेन उसी युक्ति से काम लेता है और बिना कुछ कहे-सुने उसकी बड़ी नाव में कूद पड़ता है, किन्तु दूसरे ही क्षण मल्लाह को सारी चलाकी का पता लग जाता है और वह और कुछ न पाकर अपने डाँड से ही उसकी भलीभाँति मरम्मत करता है। अब अपनी रक्षा के लिये हैगेन उसे मार डालता है। तत्पश्चात् वह उसकी नाव पर अधिकार करता, उसे बरगेडियों के पास लाता और कई बार में उन सबको उस पार पहुँचाता है। किन्तु अंतिम खेवे में उसकी निगाह नाव पर बैठे पुरोहित पर पड़ती है। उस पर दृष्टि पड़ते ही हंस-परियों की भविष्य-वाणी उसपर अधिकार जमा लेती है, अतएव उसे असत्य प्रमाणित करने के लिये वह उसे, सहसा ही, नाव से ढकेल देता है। किन्तु अपने लम्बे धार्मिक वस्त्रों के कारण पुरोहित डूबता नहीं और शीघ्र ही किनारे आ-लगता है, जहाँ से वह बरगंडी लौट आता है। हैगेन लक्ष्य करता है कि पुरोहित बच गया और बरगेंडी लौट गया, अतएव वह सोचता है कि हो-न-हो हंस परियों की बात सही है, और सचमुच ही अब कोई सकुशल बरगेंडी न लौटेगा। इस विचार के मन में घर करते ही वह बहुत घबड़ा-उठता है और सब लोगों के उतर जाने पर उस नाव को नदी में डुबा देता है।

अब अपने साथियों से आगे बढ़ने की बात कहकर उनकी रक्षा के लिये वह स्वयं

इटैलियन महाकाव्य–

लैटिन बहुत समय तक प्रमुख साहित्यक भाषा बनी-रही। इसका फल यह हुआ कि इटली-भाषा में बहुत अधिक काल तक किसी प्रकार के साहित्य का आविर्भाव और विकास न हो सका और यहाँ तक कि इटली में प्रचलित तमाम योरोपीय महाकाव्यों और रोमांसों की भाषा लैटिन ही रही। किंतु प्रायद्वीप के उत्तरी भाग में उनमें से कितने ही रोमांस और महाकाव्य प्रोवांसाल के लिये अपरिचित न थे। इसीलिए तेरहवीं शताब्दी में इटली भाषा में जो साहित्य आया वह प्रमुख-रूप से प्रोवांसाल-चारणों की कृतियों की छाया-मात्र था। इस काल के सर्वश्रेष्ठ कवियों में 'सॉरदेल्लो' भी बतलाया जाता है जिससे दान्ते *'परगेटोरियो' में वार्तालाप करता है।

इसके बाद ही इटली और विशेषतया वेनिस में 'शार्लमान चक्र' से प्रभावित कहानियाँ विशेषरूप से प्रचलित हुईं! फलस्वरूप इन प्राचीन महाकाव्यों और रूपकात्मक 'रोमाँ दिला रोज़' के इटली भाषा में कितने ही रुपान्तर हुये! किंतु सच पूछिये तो इटली की वास्तविक काव्य-धारा का विकास तो फ्रेड्रिक द्वितीय के समय में सिसिली में हुआ, और यहीं से बोलचाल की भाषा में काव्य रचना की चेष्टा का प्रचार सारे देश में हुआ। इन आरम्भ के कवियों ने प्रेम को ही अपना प्रमुख विषय माना और बहुत सतर्कता से प्रोवांसाल-शैली की शरण ली! इसके थोड़े समय बाद ही 'गिनचेल्ली' ने 'डाल्चे स्टिल नुओवो' अथवा नवीन-मधुर शैली को जन्म दिया! अतएव गिनचेल्ली ही इटली भाषा का ऐसा प्रथम और सच्चा कवि है जिसका कुछ भी उल्लेख किया जाना युक्ति-संगत कहा जा सकता है। इस तरह तेरहवीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध में 'बुओवो दि अन्तोना', 'रिनार्ड दि फ्रॉक्स' के भाषान्तर और कई दूसरे काव्य इटली भाषा के आरम्भिक महाकाव्यों के रूप में वेनिस में और अन्यत्र प्रचलित रहे। किंतु तेरहवीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में रोमांसों का गद्य रूप ही अधिक लोक-प्रिय हुआ! इन रोमांसों में आर्थर और उसके योद्धाओं की कहानियाँ, मार्को पोलो की यात्रा की कहानियाँ और ट्रॉय की कथा के नये रूप विशेषतया उल्लेखनीय हैं।

शीघ्र ही एक विचित्र स्थिति पैदा हुई। उत्तरी और मध्य योरोप में ऐसे कितने ही प्राणी इधर-उधर एक स्थान से दूसरे स्थान को आते जाते और भटकते दिखलाई देने लगे जिनका व्यवसाय था सारे सुलभ साधनों से कहानियाँ गढ़ना और कहना। वे सभी वर्गों और सभी

---

*वैतरणी—स्वर्ग की एक मंज़िल—

उसे नहीं भाता ! वह हैगेन से प्रश्न करती है कि वह उसकी स्वर्ण-राशि अपने साथ क्यों नहीं लाया ? हैगेन उत्तर देता है कि वह कोप राइन को अर्पित किया जा चुका है और अब वह प्रलय के दिन तक वहीं नहीं पड़ा रहेगा। इतना सुनते ही क्रीमहिल्त उसकी ओर से मुंह फेर लेती है और अन्य लोगों से आग्रह करती है कि वे अपने अस्त्र-शस्त्र दरवाजे पर रखकर अन्दर चलें। इसपर हैगेन राजकुमार के संकल्प का उल्लेख करता है और कहता है कि वे अगले तीन दिनों तक अस्त्र-शस्त्रों का परित्याग न करेंगे ! इसके बाद डिट्रिक इसका अनुमोदन करता है कि उसका अपना पूर्ण विश्वास है कि उसकी नीयत साबित नहीं है।

साहस उन्तीस—

यद्यपि तीनों राजकुमार क्रीमहिल्त के साथ महल में प्रवेश करते हैं तथापि हैगेन दरवाजे पर ही ठिठक रहता है, फोल्केयर नामक चारण को बुलाकर अपने पास बेंच पर बैठाता है, उससे अपने भय और अपनी आशंका का सविस्तार वर्णन करने के बाद अनुरोध करता है कि समय आने पर वह उसका साथ दे, और बदले में अवसर आने पर स्वय उसकी प्राण-रक्षा करने का संकल्प करता है !

× ×

क्रीमहिल्त अभी तो केवल हैगेन को ही नष्ट कर देना चाहती है, अतएव उसे महल के द्वार पर अकेले और इतने समीप पाकर चार सौ वीरों को बुलवाती है और हैगेन पर हमला करने का आदेश देती है। यही नहीं, वह उनसे कहती है कि वह भी उनके साथ चलेगी और उनके सामने उससे जवाब तलब करेगी !.........

× ×

क्रीमहिल्त को अपनी ओर आता हुआ देखकर फ़ोल्केयर हैगेन से कहता है कि उन्हें उसके सम्मान में खड़ा हो जाना चाहिये। इस पर हैगेन गम्भीर होकर उत्तर देता है कि वह ऐसी विनम्रता को उनकी दुर्बलता समझेगी, इसलिये उन्हें उसी प्रकार बल्कि और अकड़कर बैठ जाना चाहिये। इतने में रानी बिलकुल पास आ जाती हैं और, बजाय खड़े होने के उसे दिखलाने के लिये, हैगेन ज़ीगफ्रीत की तलवार अपनी गोदी में रख लेता है। यह देखकर क्रीमहिल्त उससे व्यंग्यात्मक ढंग से पूछती है कि उसके पति की हत्या उसी की है न ? हैगेन इसका कोई नहीं उत्तर देता, अतएव वह अपने सिपाहियों को उसे मार डालने की आज्ञा देती है, किन्तु उसकी अंगारों-सी आँखों की एक निगाह से ही सिपाहियों के दिल इस तरह बैठने लगते हैं कि वे भाग खड़े होते हैं। इसके बाद कोशिश करने के बाद भी रानी उन्हें रोकने और हैगेन पर हमला करवाने में सफल नहीं हो पाती।

× ×

शाम होती है ! हैगेन और फ़ोल्केयर दावत के कमरे में अपने अन्य मित्रों से मिलते हैं। यहाँ एटसेल औरों कि भाँति ही उनका भी स्वागत-सत्कार करता है, क्योंकि, एक

ने 'रिनाल्डो', जेरूसलाने 'कॉन्क्विस्टाटा' और 'सेट्टे जिऑरनाते देल मुन्दे क्रियातो' विश्व-रचना के सात दिन-आदि विषयों पर भी महाकाव्य गये रचे थे।

'एरियास्तो' के कुछ समकालीन कवियों ने इस महाकाव्य शैली का अनुकरण किया। इनमें ट्रिसिनिओ का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। इसने अपने 'इटैलिया लिबेराटा' नामक काव्य की रचना अनुकान्त छंद में की और छन्दों में गोथों पर 'बेलसरियस' की विजयों का वर्णन किया। किन्तु इसने विशेष यश 'सोफ़ोनिज़्बा' की रचना के द्वारा ही कमाया। 'सोफ़ोनिज़्बा' करुण-रस प्रधान-काव्य है। यह वह काव्य है जिसे आधुनिक साहित्य का वह पहला करुण-रस-प्रधान काव्य कहना चाहिये, जिसमें महाकाव्य के सारे नियमों और सारी परम्पराओं का यथाविधि निर्वाह किया गया है।

यद्यपि इसके बाद किसी उल्लेखनीय महाकाव्य की रचना नहीं हुई तथापि 'अलामन्नी' ने 'जिरोना इल कारतेज' और 'एवारिकदो' नामक महाकाव्य रचे। दोनों ही आवश्यकता से अधिक लम्बे हैं जिन्हें बिना ऊबे और थकान का अनुभव किये आद्यंत पढ़ डालना साधारण मनुष्य के वश की बात नहीं है।

इस क्रम में 'मैरिनस' वह अद्भुत कवि था जिसने विलक्षण कल्पनाओं को जन्म दिया और उनकी परम्परा चलाई। इसने अपनी 'आदोने' नामक कविता के २० पर्वों में 'वीनस' और 'एडोनिस' की कथा का विस्तार किया। इसने 'जेरुसलामे दिस्त्रुत्ता' और 'ला स्त्राजा देल इनोंचेंटी' की भी सृष्टि की और कहा जाता है कि इसकी कविता में कुछ वैसा ही रस प्राप्त होता है जैसा कि स्पेंसर' की!

'फॉरतिग्वेरी' अंतिम इटैलियन कवि था, जिसने एक लम्बा काव्य लिखा। उसकी 'रिकारदेत्तो' कितने ही गुणों के लिए सुविख्यात है। कहा जाता है कि किसी पुरस्कार के आकर्षण में काव्य का एक परिच्छेद नित्य लिखकर कवि ने वह पुरस्कार प्राप्त किया था।

इटली की श्रेष्ठ गद्य-रचनाओं में १८२० में 'मानसोनी' द्वारा लिखे-गये 'इ प्रोमेस्सी स्पोसी' नामक उपन्यास का नाम विशेष गौरव के साथ लिया जाता है। इसके बाद इटली के लेखकों ने इस दिशा में कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया। यह और बात है कि उन्होंने अपने समकालीन प्रमुख कवियों की रचनाओं के छन्द-बद्ध अनुवाद करने की बात सोची और 'मिल्टन' की 'पैराडाइज़ लॉस्ट', 'इलियड', 'ऑडिसी' 'ऑरगोनाटिका' और 'लूसियेड' आदि के अनुवाद सुन्दर और सफल भी रहे।

———

साहस बत्तीस–

इन बरगेंडियों के अतिरिक्त, जो इस समय सम्राट एटसेल के साथ दावत खा रहे हैं, शेष सब हैगेन के भाई दान्कावार्त के संरक्षण में अपने शयनागारों में विश्राम कर रहे हैं अतएव, सहसा ही, फिर कुछ हूण हमला कर देते हैं। बरगेंडी पहले से ही होशियार हैं इस लिये कुछ क्षणों में सारे दुश्मनों का सफ़ाया कर देते हैं, किन्तु इस प्रकार मारे-गये हूण प्रतिहिंसा की स्थायी अग्नि धधका देते हैं। फल यह होता है कि शीघ्र ही दूसरी सेनायें आती है और दान्कावार्त के अतिरिक्त सबका काम तमाम कर देती हैं।

× × ×

दुश्मनों की सेनाओं के बीच से किसी प्रकार निकल कर दान्कावार्त भोज के बड़े कमरे में पहुँचाता है। इधर यहाँ उसका भाई व्यंजनों का स्वाद लेने में व्यस्त है और उधर सारे योद्धा और सारे साथी अपने ही ख़ून की नदी में डूब-उतरा रहे हैं। ·· ·····

साहस तैंतीस–

भाई का आर्त्तनाद कान में पड़ते ही हैगेन क्रोध के मारे आपे से बाहर होकर अपनी तलवार म्यान से खींच लेता है और एटसेल के पुत्र पर इस तरह वार करता है कि दूसरे ही क्षण उसका सिर धड़ से अलग होकर उछल कर माँ की गोद में जा-गिरता है। तत्पश्चात् अपने भाई को ललकार कर, कि कोई बचकर न निकल पाये, हैगेन उन चारणों के हाथ काट डालता है जो कि उसे हंगरी आने का निमन्त्रण देने गये थे। इतना कर चुकने के बाद वह दायें-बायें जिसे भी पाता है गाजर-मूली की तरह काट डालता है।

× × ×

इधर पुत्र का कटा-हुआ सिर राजा-रानी को लकवा मार जाता है और लगता है जैसे कि अब वे जीवित मनुष्य न होकर सिंहासन पर प्रतिष्ठित प्राणहीन पत्थर-मात्र हैं। इसी समय दान्कावार्त को रखवाली के लिये द्वार पर भेजकर हैगेन स्वयं उनके सम्मुख जाता है और उन्हें ताना मारता है कि यदि उनकी इच्छा हो तो वे भी हथियार हाथ में लें और अपनी और अपने साथियों की रक्षा करें!

× × ×

यद्यपि अब बरगेंडी उन्मत्त होकर बड़ी बेरहमी से शत्रुओं के प्राण हरते हैं तथापि वे डिट्रिक और रूडिगेयर के उपकारों को नहीं भूलते और उनपर हमला करना पाप समझते हैं, अतएव ज्यों ही वे अपने साथियों के साथ बाहर जाने की आज्ञा मांगते हैं, उनकी प्रार्थना सहर्ष स्वीकार करते हैं।

× × ×

अब डिट्रिक अपने हाथों का सहारा देकर राजा और रानी को कमरे के बाहर लाता है।

'डिवाइना कॉमेडिया'—'स्वर्ग की मंज़िलें'—

'इन्फ़र्नो' या यमपुरी—

परिचय—

मध्य काल में यह किम्वदन्ती सर्वसाधारण में एक विश्वास बन गई थी कि लूसिफ़र या शैतान के आकाश से धरती पर गिरने से धरती में एक गहरा छेद हो गया, जो तब तक गहरा होता गया, तब तक कि शैतान धरती के ठीक बीचों बीच नहीं पहुँच गया! यह विचित्र छेद जेरुसलम[1] के ठीक नीचे माना गया है। महाकवि ने इसे नौ स्वतन्त्र वृत्तों में बाँटा है, जिन्हें एक दूसरे से जोड़े-रखने के लिये पुलों या सीढ़ियों की भाँति कटावदार चट्टानों की बात कवि ने सोची है। कवि की भावना के अनुरूप इनमें से प्रत्येक वृत्त में अपने-अपने निश्चित कर्मों के फल-स्वरूप अपराधी अपना-अपना दंड भोगते हैं।

पर्व एक—

तेरहवीं सदी के अन्त में, ३५ वर्ष की अवस्था में, 'दान्ते' का दावा है कि उसने जीवन-यात्रा की सीधी राह छोड़ी और मृत्यु के समान ही दूसरी विषम अनुभूतियों का परिचय प्राप्त करने के विचार से एक असाधारणतया टेढ़ा रास्ता पकड़ लिया—यही नहीं, उसने अपनी इन कटु अनुभूतियों को रूपक का रूप देकर सर्वसाधारण के लिये सुलभ भी कर दिया, ताकि दूसरे पापी सावधान हो जायँ!

'कवि' तन्द्रा की कोटि की सुषुप्ति से जागता है और अपने को एक ऐसे वन में पाता है, जिसके ऊपर के पर्वत-शिखर को सूर्य चूम रहा है! अब वह उस पर्वत पर चढ़ने की चेष्टा करता है, किन्तु पहले उसे दिखलाई पड़ता है भोग-विलास और लौकिक आनन्द का प्रतीक एक चित्तीदार तेंदुआ, फिर वह देखता है क्रोध और महत्त्वाकांक्षा का प्रतीक एक शेर और फिर उसे मिलता है लोभ और लिप्सा का प्रतीक एक भयानक भेड़िया, और, ये तीनों उसे एक ओर को ढकेल देते हैं। वह इन यमदूत सरीखे हिंसक पशुओं से डरकर भाग-खड़ा होता है, और उस

---

[1] पैलेस्टाइन की राजधानी—ईसाइयों का तीर्थ-स्थान।

बरगेंडी क्रीमहिल्त और एटसेल की सेनायें देखकर घबड़ाते नहीं, बल्कि उसी बहादुरी से उनका मुक़ाबला करने और उनसे युद्ध करने का हौसला रखते हैं, किन्तु लड़ने के पहले वे आश्वासन पाना चाहते हैं कि यदि वे विजयी हो जायें तो उन्हें बिना किसी प्रकार की छेड़छाड़ के उनके स्वदेश लौटने दिया जाय। इसके उत्तर में क्रीमहिल्त अपने पति से अनुरोध करती है कि वह उनकी शर्त अस्वीकार कर दे और कहे कि यदि ऐसा हो भी सकता है तो तभी हो सकता है जब वे हैगेन को तुरन्त ही उसे सौंप दें। एटसेल जैसे का तैसा वाक्य बरगेंडियों के सामने रख देता है, किन्तु वे इस प्रकार अपने एक साथी को दुश्मनों को सौंप देना अपमानजनक समझते हैं और एटसेल की शर्त ठुकरा देते हैं। इस पर क्रीमहिल्त आवेश में आज्ञा देती है कि बड़े कमरे में आग लगा दी जाये!

रानी के आदेशानुसार बड़े कमरे में आग लगा दी जाती है। रानी का ख़्याल है कि वह सारे बरगेंडियों को ज़िन्दा ही भून डालेगी, किन्तु होता कुछ और ही है। कमरा पत्थरों का बना है, अतएव उसपर आग का कोई असर नहीं पड़ता, बल्कि यह कि वह उन्हें शरण और देता है, और जितनी भी लपटें और चिनगारियाँ उसमें प्रवेश करती हैं, सभी रक्त में तिरोहित हो जाती हैं। इस प्रकार शत्रु सभी भाँति सुरक्षित रहते हैं।

किन्तु बाहर की अग्नि के ताप के कारण बरगेंडियों को इतनी भीषण प्यास लगती है कि वे निर्जीव हो उठते हैं। इसी समय हैगेन उनसे आग्रह करता है कि वे काटे गये दुश्मनों का ख़ून पियें और अपनी प्यास बुझायें। वे उसकी बात सहर्ष मानते हैं और इस प्रकार रक्तपान कर ६०० बरगेंडी एक बार फिर अपने दुश्मनों का सामना करने के लिये जी उठते हैं। सहसा ही क्रीमहिल्त की सेना हाल पर टूट पड़ती है।........

साहस सैंतीस—

किन्तु अपने इस तीसरे प्रयास में भी असफल होने के बाद क्रीमहिल्त रूडिगेयर को उसकी पवित्र-प्रतिज्ञा की याद दिलाती है और मांग करती है कि वह बरगेंडियों का क़त्ल कर अब अपने वचन को पूरा करे! इसपर परम सज्जन रूडिगेयर उसे तरह-तरह से समझाता है और अंत में अपनी सारी धन-सम्पत्ति उसे अर्पितकर भिखारी बनकर उसका राज्य छोड़ने को तैयार हो जाता है। किन्तु वह एक नहीं सुनती और सारी भावनायें और सारा त्याग आज्ञा-पालन के रूप में ही सामने देखना चाहती है। अतः निराश रूडिगेयर अस्त्र-शस्त्र से भली भाँति सुसज्जित होकर हाल की ओर बढ़ता है और पहली सीढ़ी पर खड़े होकर बरगेंडियों को सारी परिस्थिति स्पष्ट कर देता है। हैगेन सब कुछ सुन कर उसकी विशाल-हृदयता और उदारता की सराहना करता है और उससे एक ढाल माँगता है क्योंकि उसकी अपनी ढाल टुकड़े-टुकड़े हो चुकी है। वह दूसरे ही क्षण उसकी सहायता करता है और ढाल पाने पर हैगेन घोषित करता है कि आत्म-समर्पण करने के पहले वह अपने को एक अपूर्व वीर तो प्रमाणित कर ही देगा।

इसके बाद डंका बजता है, युद्ध आरम्भ होता है और अपने सैनिकों के साथ रूडि-

मेरे निर्माण के मूल में दैवी शक्ति सर्वोच्चविवेक और प्रथम प्रणय का हाथ है।

मेरे अस्तित्व के पूर्व सृष्टि नाम से शाश्वत उपादानों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था!

मैं चिरन्तन हूँ, मैं अनादि हूँ!

× ×

फिर भी, मुझमें प्रवेश करने वाले, समझ लो कि एक बार इधर आकर तुम फिर कभी उधर न जा सकोगे, और फिर तुम्हारी आशायें और अभिलाषायें सदा के लिये तिरोहित हो जायेंगी। अतएव समझ-बूझकर ही अगला चरण बढ़ाओ!'

दान्ते की दृष्टि इन वाक्यों पर पड़ती है, किन्तु वह इनका कुछ भी आशय नहीं समझ पाता, और वर्जिल से आग्रह करता है कि वह उसे उनका रहस्य बताये। उत्तर में वर्जिल कहता है कि अब वे यमलोक के निचले प्रदेश 'हेडीज़' नामक तल में उतरने वाले हैं।

× ×

वर्जिल यहाँ पहले भी आ चुका है, अतएव वह एक बेधड़क जानकार की तरह उसे नर्क की ड्यौढ़ी पर ले आता है, यहाँ के आसमान में एक भी तारा नहीं है और यहाँ की हवा की नब्ज़ में आहों, कराहों और पश्चातापों की आवाज़ साफ़ सुनाई देती है। यहाँ दान्ते भय से कांपने लगता है और जिज्ञासु हो उठता है कि अन्ततः यह सब क्या है! वर्जिल उत्तर देता है कि वे सारी आत्मायें जिन्होंने न तो यश कमाया और न अपयश, और वे सभी देवदूत जो स्वर्ग में युद्ध के समय युद्ध की ओर से अन्यमनस्क रहे, इस स्थान पर हैं! स्वर्ग, वैतरणी और नरक, तीनों ही इन्हें शरण देने से आनाकानी करते हैं, और मृत्यु कभी उनके पास फटक नहीं पाती, वह भी उनसे सदा के लिये मुंह मोड़ चुकी है!

इसी क्षण, जबकि वर्जिल अभी यह सब कह रहा है, ऐसी ही अभागी आत्माओं का दल का दल उनके पास से सर्र से निकल जाता है। दान्ते देखता है कि असंख्यक घातक कीड़े-मकोड़े उन्हें भयानक रूप से काट रहे हैं। इनमें अकस्मात् उसकी दृष्टि जा-पड़ती हैं 'पोप सेलेस्टाइन पंचम' पर जिसने कायरता और कर्महीनता के कारण ही अपना पद त्याग दिया था अर्थात् पाँच महीने की निश्चित अवधि समाप्त होने पर अपने पद को तिलांजलि दे दी थी। उसमें साहस नहीं था कि वह उसे सौंपे गये कार्य की कठिनाइयों का सामना करता!

इस प्रकार लज्जा से नीची दृष्टिवाली आत्माओं के पास से निकलने के बाद दान्ते एकेरॉन नामक मृत्यु की नदी के किनारे पहुँचता है। यहाँ उसे कैरन नामक प्रसिद्ध केवट उसकी ही ओर आता दिखलाई पड़ता है। वह इन मृतात्माओं में एक जीवित मनुष्य देखकर आश्चर्य से अवाक् हो उठता है और अत्यधिक उग्र होकर दान्ते को आज्ञा देता है कि वह उसी क्षण अपने लोक को लौट जाय। किन्तु तुरन्त ही, वर्जिल एक छोटा-सा वाक्य कहकर उसका मुंह बन्द कर देता है कि जहाँ इच्छा, और शक्ति समन्वित एवं एकाकार होती हैं, वहाँ विधि का विधान कुछ और ही होता है। अब कैरन किसी प्रकार की आपत्ति नहीं करता, और उन्हें अपनी छोटी

उस स्थान का पता न बतायेगा। वह कहता है कि इस संकल्प के कारण ही वह विवश है और उस विषय में कुछ भी नहीं बतला सकता !

× ×

इसी बीच में गुंथर भी आ जाता है। इस समय क्रीमहिल्त इतने आवेश में है कि उसे अपने तन-बदन का भी होश नहीं है, अतएव वह विशेषतया उस कोष के लिए ही अपने अंतिम भाई को भी मरवा डालती है, और उसका सिर लेकर हैगेन के पास जाती है ! वह साबित करती है कि उसका अंतिम स्वामी भी अब इस संसार में नहीं रहा ! वह उससे आग्रह करती है कि वह राइन के उस विशिष्ट स्थान पता बता दे जहाँ वह सारा कोष गड़ा-पड़ा है। किन्तु हैगेन सन्तोष की साँस लेकर उसकी आशा निराशा में बदल देता है। वह कहता है कि केवल एक-अकेला वह बचा है जिसे उसका पता है, अतएव अच्छा है कि यह रहस्य सदा एक रहस्य ही रहा-आये ! इस पर क्रीमहिल्त की इतने दिनों की सारी प्रतिहिंसा साकार हो उठती है, वह उत्तेजित हो उठती है, कभी-की ज़ीग्फ़ीत की तलवार तुरन्त हो म्यान से खींच लेती है और एक ही भरपूर वार में हैगेन का सिर धड़ से अलग कर देती है।

× ×

एटसेल और हिल्देब्रान्द दोनों में से एक भी इस पाप की कल्पना भी नहीं कर पाते कि क्रीमहिल्त हैगेन का काम तमाम कर देती है ! क्रीमहिल्त की इस निर्दयता से हिल्देब्रान्द की आँखों के डोरे लाल हो उठते हैं ! वह दूसरे ही क्षण क्रीमहिल्त की गर्दन उतार लेता है, जैसे कि वह हैगेन की मौत का बदला ले रहा हो !

× ×

क्रीमहिल्त के शव पर डिट्रिक और एटसेल के विलाप में काव्य का अन्त होता है।

———

इस प्रकार बातचीत में व्यस्त गुरु-शिष्य आहें भरती हुई आत्माओं के एक वन से पार होते हैं और अंत में एक ऐसे स्थान पर पहुँचते हैं, जहाँ आग जल रही है, जिसके चारों ओर सम्भ्रान्त आत्मायें जुटी हैं। यहाँ वर्जिल दान्ते को सूचित करता है कि इनमें प्रत्येक आत्मा यशस्वी और सम्मानित है। एक क्षण बाद ही वह उससे मिलने के लिये उसकी ओर आती हुई चार महान आत्माओं की ओर संकेत करता है, और उसके कान में धीरे से कहता है कि ये हैं 'होमर', 'होरास', 'ओविड', और 'ल्यूकन'! ये चारों समीप आते हैं, वर्जिल से कुछ देर तक कितनी ही बातें करते हैं और परिचय पाने पर अपनी काव्य-स्वर्गंगा के छठवें जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप में दान्ते का अलौकिक स्वागत करते हैं! दान्ते भी सबका परिचय प्राप्त करता है और इस समय ऐसे ही विषय छेड़ता है, जिनकी चर्चा ऐसे उच्चकोटि के समाज में ही हो सकती है। इस प्रकार उनसे बातें करते-करते वह एक ऐसे महल के समीप आ निकलता है, जो सात परकोटों और एक खाई से भलीभाँति सुरक्षित है! इसके बाद ही वे छहों कवि एक के बाद दूसरे सात फाटकों से जाते हैं और एक वनस्थली में आते हैं, जहाँ उन सब की कृतियाँ एक ही स्थान पर एकत्रित हैं। यहाँ वह हेक्टर, इनीयस, केमिला, [1]ल्यूक्रीशिया और उन तमाम दार्शनिकों, इतिहासकारों और गणित-विद्या विशारदों से भेंट करता है जो कि समय-समय पर हमारी पृथ्वी पर अवतरित हुये हैं। यद्यपि दान्ते की इच्छा है कि वह यहाँ थोड़ी देर रुके और उन सबसे कुछ और बातें करे, तथापि उसका नेता उसे आगे बढ़ने का आदेश देता है! शीघ्र ही वे चारों कवि अदृश्य हो जाते हैं और ये शेष बचे गुरु-शिष्य एक ऐसे स्थान में प्रवेश करते हैं, जहाँ के लिये सूर्य और सूर्य की प्रभा क्या, सूर्य की एक किरण और प्रभा की एक हलकी-सी झलक भी सपने की बात है।

पर्व पाँच–

इस घेरे से अपेक्षाकृत निचले घेरे में उतरकर वर्जिल और दान्ते नरक के दूसरे घेरे में पहुँचते हैं। यहाँ उन सारी आत्माओं को दंड दिया जाता है जिन्होंने अपने जीवन-काल में अपने पावन जीवन को अपने कृत्यों से सदैव ही अपावन किया है! यह घेरा व्यास में पहले घेरे से अपेक्षाकृत छोटा है! इसका अधिपति न्यायाधीश माइनॉस है! वह सभी नवागन्तुक आत्माओं के भाग्यों का निर्णय करता है, और अन्त में उन सबको अपनी पूँछ के फंदों में फाँसकर, उनके लिये निश्चित, विभिन्न घेरों में पहुँचा देता है।

माइनॉस की निगाह दान्ते पर पड़ती है और वह उसे भयानक-रूप से धमकाता है, किन्तु, जब वर्जिल एक बार फिर यह भेद खोलता है कि वे किसी अपेक्षाकृत अधिक महान शक्ति के द्वारा वहाँ भेजे गये हैं तो, माइनॉस भी उन्हें अपनी सीमाओं से जाने की अनुमति दे देता है।

वे दोनों आगे बढ़ते हैं। उनके हर बढ़ते पग के साथ यातनाग्रस्त आत्माओं का आर्त्तनाद

[1]रोमन चरित्र-नायिका

इटैलियन महाकाव्य-

लैटिन बहुत समय तक प्रमुख साहित्यक भाषा बनी-रही। इसका फल यह हुआ कि इटली-भाषा में बहुत अधिक काल तक किसी प्रकार के साहित्य का आविर्भाव और विकास न हो सका और यहाँ तक कि इटली में प्रचलित तमाम योरोपीय महाकाव्यों और रोमांसों की भाषा लैटिन ही रही। किंतु प्रायद्वीप के उत्तरी भाग में उनमें से कितने ही रोमांस और महाकाव्य प्रोवांसाल के लिये अपरिचित न थे। इसीलिए तेरहवीं शताब्दी में इटली भाषा में जो साहित्य आया वह प्रमुख-रूप से प्रोवांसाल-चारणों की कृतियों की छाया-मात्र था। इस काल के सर्वश्रेष्ठ कवियों में 'सॉरदेल्लो' भी बतलाया जाता है जिससे दान्ते *'परगेटोरियो' में वार्तालाप करता है।

इसके बाद ही इटली और विशेषतया वेनिस में 'शार्लमान चक्र' से प्रभावित कहानियाँ विशेषरूप से प्रचलित हुईं! फलस्वरूप इन प्राचीन महाकाव्यों और रूपकात्मक 'रोमाँ दिला रोज़' के इटली भाषा में कितने ही रुपान्तर हुये! किंतु सच पूछिये तो इटली की वास्तविक काव्य-धारा का विकास तो फ्रेड्रिक द्वितीय के समय में सिसिली में हुआ, और यहीं से बोलचाल की भाषा में काव्य रचना की चेष्टा का प्रचार सारे देश में हुआ। इन आरम्भ के कवियों ने प्रेम को ही अपना प्रमुख विषय माना और बहुत सतर्कता से प्रोवांसाल-शैली की शरण ली! इसके थोड़े समय बाद ही 'गिनचेल्ली' ने 'डाल्चे स्टिल नुओवो' अथवा नवीन-मधुर शैली को जन्म दिया! अतएव गिनचेल्ली ही इटली भाषा का ऐसा प्रथम और सच्चा कवि है जिसका कुछ भी उल्लेख किया जाना युक्ति-संगत कहा जा सकता है। इस तरह तेरहवीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध में 'बुओवो दि अन्तोना', 'रिनार्ड दि फ़ॉक्स' के भाषान्तर और कई दूसरे काव्य इटली भाषा के आरम्भिक महाकाव्यों के रूप में वेनिस में और अन्यत्र प्रचलित रहे। किंतु तेरहवीं शताब्दि के उत्तरार्द्ध में रोमांसों का गद्य रूप ही अधिक लोक-प्रिय हुआ! इन रोमांसों में आर्थर और उसके योद्धाओं की कहानियाँ, मार्को पोलो की यात्रा की कहानियाँ और ट्रॉय की कथा के नये रूप विशेषतया उल्लेखनीय हैं।

शीघ्र ही एक विचित्र स्थिति पैदा हुई। उत्तरी और मध्य योरोप में ऐसे कितने ही प्राणी इधर-उधर एक स्थान से दूसरे स्थान को आते जाते और भटकते दिखलाई देने लगे जिनका व्यवसाय था सारे सुलभ साधनों से कहानियाँ गढ़ना और कहना। वे सभी वर्गों और सभी

---

*वैतरणी—स्वर्ग की एक मंज़िल—

काल में वृकोदर रही हैं, जिन्होंने सदा ही परिमाण से अधिक भोजन किया है और जिन्होंने सदैव केवल अपने पेट पाटने की ही चिन्ता की है। इस कुत्ते के समीप पहुँचते ही वर्जिल उसके मांस के भूखे, ख़ून के प्यासे हिंसक जबड़ों में एक मुट्ठी धूल झोंक देता है ताकि वह उस पर और उसके शिष्य पर वार न कर सके, और शीघ्रता से उधर से होकर गुज़र जाता है। इसके बाद वह एक ऐसे स्थान में आता है जहाँ उसे और दान्ते को पृथ्वी पर धूलि फांकती हुई असंख्यक आत्माओं के ऊपर से हो कर चलना पड़ता है! इस तरह वे आगे बढ़ते हैं कि एक आत्मा उठ बैठती है, सहसा ही दान्ते से प्रश्न करती है कि क्या वह उसे वहीं नहीं पहिचानता, और फिर स्वयं ही अपना परिचय देती है कि वह फ्ज़ोरेंस के दैत्य-वृकोदर 'चाक्को' की आत्मा है। दांते कुछ समझ नहीं पाता, किन्तु मन-ही-मन सोचता है कि सम्भव है, इसमें कुछ भविष्य वाणी की शक्ति हो,अतएव वह उसी के नगर का भविष्य जानने को उत्सुक हो कर उससे उस आशय का प्रश्न करता है। चाक्को की आत्मा उत्तर देती है कि उस नगर का एक राजनैतिक-दल दूसरे को शीघ्र ही पराजित करने वाला है, किन्तु तीन साल बाद वह स्वयं भी कहीं का न रहेगा। इतना कहने के बाद आत्मा जैसे कुछ सोचने लगती है, किन्तु दूसरे ही क्षण फिर कहना आरम्भ करती है कि उस नगर में केवल दो न्याय-प्रिय व्यक्ति रह गये हैं, शेष सब जैसे के तैसे हैं। इसके बाद वह चुप हो जाती है और दान्ते दूसरा प्रश्न करता है कि अन्त में उसके मित्रों का क्या हुआ! इस पर वह आत्मा फिर मुखरित हो उठती है और कहती है कि उनमें कुछ हेडीज़ के विभिन्न प्रदेशों में हैं और, यदि वह इसी प्रकार और निचले प्रदेशों में उतरता रहा तो, उससे अनिवार्य-रूप से मिलेंगे! इतना ही नहीं, मित्रों की चर्चा आने पर वह दान्ते से आग्रह करती है कि वह अपनी मनोहर और मधुर दुनिया में लौटने पर उसके शेष मित्रों से उसकी चर्चा अवश्य करे। इसके बाद वह आँखें मूंद लेती है और उन तमाम अपराधियों में एक बार फिर लुप्त हो जाती है! वे सब-के-सब न्यूनाधिक अंधे हैं! इसी समय वर्जिल दान्ते को सूचित करता है कि देवदूत की अंतिम शंखध्वनि के समय तक इस आत्मा की मुक्ति सम्भव नहीं है। तत्पश्चात गुरु-शिष्य धूल और धूल में मिली आत्माओं के पथ से आगे बढ़ते हैं। एक बार फिर वर्जिल दान्ते को सम्बोधित करता है और कहता है कि यद्यपि पथ पर बिछी हुई पापात्माएं पूर्ण मुक्ति की आशा तो नहीं कर सकतीं, किन्तु तो भी उनके विकास का द्वार उनके लिये पूर्णतया बन्द नहीं है।

पर्व सात—

इस तरह बातें करते हुये दोनों यात्री चौथे घेरे में उतर आते हैं। इस प्रदेश का राजा प्ल्यूटस है। वह पहिले तो उनके उधर से आने पर आपत्ति करता है, किन्तु जब वर्जिल उसके स्वामी और किसी समय के सर्वोच्च देवदूत की चर्चा करता है, उसे अपने उस प्रदेश से हो कर जाने के अधिकार से अवगत करता है और बतलाता है कि उसे तो उस स्थान तक जाना ही है, जहाँ माइकेल ने शैतान को बन्दी कर रक्खा था, तो वह अत्यन्त विनम्र हो उठता है और उन्हें अपने प्रदेश से होकर आगे बढ़ने की अनुमति देता है।

ने 'रिनाल्डो', जेरूसलाने 'कॉन्क्विस्टाटा' और 'सेट्टे जिओरनाते देल मुन्दे क्रियातो' विश्व-रचना के सात दिन-आदि विषयों पर भी महाकाव्य गये रचे थे।

'एरिओस्तो' के कुछ समकालीन कवियों ने इस महाकाव्य शैली का अनुकरण किया। इनमें ट्रिसिनिओ का नाम विशेष रूप से लिया जा सकता है। इसने अपने 'इटैलिया लिबेराटा' नामक काव्य की रचना अनुकान्त छंद में की और इन्हीं में गोथों पर 'बेलसरियस' की विजयों का वर्णन किया। किन्तु इसने विशेष यश 'सोफ़ोनिज़्बा' की रचना के द्वारा ही कमाया। 'सोफ़ोनिज़्बा' करुण-रस प्रधान-काव्य है। यह वह काव्य है जिसे आधुनिक साहित्य का वह पहला करुण-रस-प्रधान काव्य कहना चाहिये, जिसमें महाकाव्य के सारे नियमों और सारी परम्पराओं का यथाविधि निर्वाह किया गया है।

यद्यपि इसके बाद किसी उल्लेखनीय महाकाव्य की रचना नहीं हुई तथापि 'अलामन्नी' ने 'जिरोना इल कारतेज' और 'एवारिकन्दो' नामक महाकाव्य रचे। दोनों ही आवश्यकता से अधिक लम्बे हैं जिन्हें बिना ऊबे और थकान का अनुभव किये आद्यंत पढ़ डालना साधारण मनुष्य के वश की बात नहीं है।

इस क्रम में 'मैरिनस' वह अद्भुत कवि था जिसने विलक्षण कल्पनाओं को जन्म दिया और उनकी परम्परा चलाई। इसने अपनी 'आदोने' नामक कविता के २० पर्वों में 'वीनस' और 'एडोनिस' की कथा का विस्तार किया। इसने 'जेरूसलामे दिस्त्रुत्ता' और 'ला स्त्राजा देल इनोंचेटी' की भी सृष्टि की और कहा जाता है कि इसकी कविता में कुछ वैसा ही रस प्राप्त होता है जैसा कि स्पेंसर' की !

'फॉरतिग्वेरी' अंतिम इटैलियन कवि था, जिसने एक लम्बा काव्य लिखा। उसकी 'रिकारदेत्तो' कितने ही गुणों के लिए सुविख्यात है। कहा जाता है कि किसी पुरस्कार के आकर्षण में काव्य का एक परिच्छेद नित्य लिखकर कवि ने वह पुरस्कार प्राप्त किया था।

इटली की श्रेष्ठ गद्य-रचनाओं में १८२० में 'मानसोनी' द्वारा लिखे-गये 'इ प्रोमेस्सी स्पोसी' नामक उपन्यास का नाम विशेष गौरव के साथ लिया जाता है। इसके बाद इटली के लेखकों ने इस दिशा में कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया। यह और बात है कि उन्होंने अपने समकालीन प्रमुख कवियों की रचनाओं के छन्द-बद्ध अनुवाद करने की बात सोची और 'मिल्टन' की 'पैराडाइज़ लॉस्ट', 'इलियड', 'ऑडिसी' 'ऑरगोनाटिका' और 'लूसियेड' आदि के अनुवाद सुन्दर और सफल भी रहे।

———

यहाँ आने पर उस पार पहुँचने के लिये वर्जिल पोत पर चढ़ना चाहता है, किन्तु 'फ्लेजियस' नाम का एक चिड़चिड़ा केवट नाक-भौं सिकोड़ने लगता है और उसके द्वारा सन्तुष्ट और शान्त किये जाने पर ही उसे अपनी नाव पर क़दम रखने देता है ! इस प्रकार स्वयं नाव पर पहुँच जाने पर वर्जिल दान्ते को भी अपने पास बुला लेता है। नाव चल पड़ती है और दान्ते देखता है कि इर दूसरे ही क्षण कोई न कोई सिर गंदे पानी के ऊपर उभर आता है और दूसरा डूब जाता है। वह विस्मय से इस दृश्य पर विचार करता रहता है कि ऐसा ही एक सिर उसके समीप निकल कर उससे प्रश्न करता है कि वह कौन है जो अपने निश्चित समय के पूर्व ही वहाँ आ गया है ! कवि तुरन्त ही उत्तर देता है कि उसका विचार वहाँ ठहरने का नहीं है और वह शीघ्र ही अपने लोक को लौट जायेगा। किन्तु इस उत्तर से ही उसका जी नहीं भरता और उसके सौहार्द से प्रभावित होकर वह उस आत्मा का परिचय भी पाना चाहता है। परन्तु, यह भाव मन में आते ही वह उस आरजेंटी नामक पापी को पहचान लेता है और घृणा से भरकर उसकी ओर से मुंह फेर लेता है। वर्जिल को उसका वह व्यवहार बहुत पसन्द आता है और जब दान्ते कामना करता है कि यह राक्षस सदा के लिये इस दलदल में डूब जाये और इस तरह डूबे कि इसका दम घुटता रहे और इसके प्राण भी घोर कष्ट से निकले तो उसका गुरु उसी ओर आती हुई प्रतिहिंसात्मक आत्माओं के एक दल की ओर संकेत करता है और कहता है कि उसकी इस इच्छा की पूर्ति के लिये ही वे आत्मायें आंधी की गति से उस ओर बढ़ी आ रही हैं। इतना सुनते ही आरजेंटी अपने ही दाँतों से अपना शरीर काटने लगता है और दलदल में डूब जाता है।

इस भाँति दान्ते की नाव आगे बढ़ती रहती है। थोड़ी देर बाद वर्जिल उसे सूचित करता है, कि अब वे शीघ्र ही डिस नामक उस महानगरी में पहुँचनेवाले हैं, जिसके ऊँचे स्तम्भ भीतर से आग के रंग के हैं और दूर से चमक रहे हैं।

कुछ क्षण बाद ही वे उस नगरी की खाई में पहुँचते हैं। यहाँ यात्री धीरे-धीरे उसकी लोहे की दीवालों को घेरकर खड़े हो जाते हैं, जिनपर नीचे की ओर झुक कर भ्रमित आत्मायें कोलाहल करने लगती हैं और जानना चाहती हैं कि वह कौन है जो मृतकों के प्रदेश में प्रवेश तो कर रहा है, किन्तु जिसने पहले कभी मृत्यु का अनुभव नहीं किया। इस पर दान्ते उन्हें सन्तुष्ट करने का संकेत करता है और वे सब अदृश्य हो जाती हैं, मानों उन्हें उस प्रदेश में प्रवेश करने का निमन्त्रण दे रही हों ! किन्तु जब यात्री फाटकों पर पहुँचते हैं तो वे देखते हैं कि वे उसी प्रकार बन्द हैं और उनका खुलना कठिन है ! वर्जिल उन सब की अधीरता अनुभव करता है और उन्हें बतलाता है कि वे दीवारों पर झुकी हुई दुष्आत्मायें वे हैं जिन्होंने हेडीज़ में ईसा के प्रवेश का भी विरोध किया था, किन्तु पहले 'ईस्टर' के दिन जिनकी शक्ति का विनाश किया गया था और इस प्रकार जिन्हें हार खानी पड़ी थी।

पर्व नव—

इस दृश्य से दान्ते भय से कांपने लगता है। उसे इस स्थिति में देखकर वर्जिल सूचित

'डिवाइना कॉमेडिया'—'स्वर्ग की मंज़िलें'—

'इन्फ़र्नो' या यमपुरी—

परिचय—

मध्य काल में यह किम्वदन्ती सर्वसाधारण में एक विश्वास बन गई थी कि लूसिफ़र या शैतान के आकाश से धरती पर गिरने से धरती में एक गहरा छेद हो गया, जो तब तक गहरा होता गया, तब तक कि शैतान धरती के ठीक बीचों बीच नहीं पहुँच गया ! यह विचित्र छेद जेरुसलम[1] के ठीक नीचे माना गया है। महाकवि ने इसे नौ स्वतन्त्र वृत्तों में बाँटा है, जिन्हें एक दूसरे से जोड़े-रखने के लिये पुलों या सीढ़ियों की भाँति कटावदार चट्टानों की बात कवि ने सोची है। कवि की भावना के अनुरूप इनमें से प्रत्येक वृत्त में अपने-अपने निश्चित कर्मों के फल-स्वरूप अपराधी अपना-अपना दंड भोगते हैं।

पर्व एक—

तेरहवीं सदी के अन्त में, ३५ वर्ष की अवस्था में, 'दान्ते' का दावा है कि उसने जीवन-यात्रा की सीधी राह छोड़ी और मृत्यु के समान ही दूसरी विषम अनुभूतियों का परिचय प्राप्त करने के विचार से एक असाधारणतया टेढ़ा रास्ता पकड़ लिया—यही नहीं, उसने अपनी इन कटु अनुभूतियों को रूपक का रूप देकर सर्वसाधारण के लिये सुलभ भी कर दिया, ताकि दूसरे पापी सावधान हो जायँ !

'कवि' तन्द्रा की कोटि की सुषुप्ति से जागता है और अपने को एक ऐसे वन में पाता है, जिसके ऊपर के पर्वत-शिखर को सूर्य चूम रहा है ! अब वह उस पर्वत पर चढ़ने की चेष्टा करता है, किन्तु पहले उसे दिखलाई पड़ता है भोग-विलास और लौकिक आनन्द का प्रतीक एक चित्तीदार तेंदुआ, फिर वह देखता है क्रोध और महत्त्वाकांक्षा का प्रतीक एक शेर और फिर उसे मिलता है लोभ और लिप्सा का प्रतीक एक भयानक भेड़िया, और, ये तीनों उसे एक ओर को ढकेल देते हैं। वह इन यमदूत सरीखे हिंसक पशुओं से डरकर भाग-खड़ा होता है, और उस

---

[1] पैलेस्टाइन की राजधानी—ईसाइयों का तीर्थ-स्थान।

समाधि से उठने का यत्न करता है और थोड़ा उठकर दान्ते को सूचित करता है कि दो बार खदेड़े जाने के बाद उसकी जाति के प्रतिद्वंदी ग्वेल्फ़्स एक बार फिर फ़्लोरेंस में लौट आये हैं। इसी समय एक दूसरा पापी अपने कफ़न के किनारे से सिर निकालकर बाहर झांकता है और बहुत उत्सुक होकर उन दोनों से अपने पुत्र ग्विडो का कुछ हाल-चाल जानना चाहता है। इस भाँति यह प्रमाणित हो जाता है कि इन अभागी आत्माओं को भूत और भविष्य दोनों का पूर्ण ज्ञान है, किन्तु वर्तमान इनके लिए एक रहस्य है। इस पर दान्ते इतना आश्चर्यचकित हो उठता है कि पहले तो उसके मुँह से शब्द नहीं निकलता किन्तु फिर वह भूतकाल में ग्विडो का उल्लेख करता है। उसके भूतकाल में बात आरम्भ करने के कारण आभागा पिता समझ-बैठता है कि उसका पुत्र मर गया है, अतएव एक हृदय-विदारक क्रन्दन के साथ वह अपने कफ़न में सिर गड़ा कर पड़ रहता है, जैसे कि अभी अभी यह दूसरी मृत्यु आई हो ! सहसा ही दान्ते अनुभव करता है कि अनजाने में ही उससे एक भयंकर भूल बन पड़ी है, जिसके कारण उस आत्मा को बड़ा कष्ट पहुँचा है, अतएव वह अपनी भूल सुधार का और कोई रास्ता न देखकर फ़ैरीनाटा से अनुरोध करता है कि वह जल्दी-से-जल्दी अपने पड़ोसी को सूचित कर दे कि उसका पुत्र अभी जीवित है और सकुशल है।

कहना न होगा कि अब तक दान्ते जो कुछ देखता-सुनता है, उसे समझ नहीं पाता, अतएव अधीर हो उठता है, और सोच-विचार में पड़ जाता है, तो भी दंडित पापियों पर सहानुभूति की एक दृष्टि डालता हुआ आगे बढ़ता है! शीघ्र ही वर्जिल उसकी व्यग्रता लक्ष्य करता और उसे इस विश्वास से धैर्य बंधाता है कि यात्रा के अंत में स्वयं बिएट्रिस उसके सारे प्रश्नों का सन्तोपजनक उत्तर देगी, उसकी सारी शंकाओं का समाधान करेगी !

पर्व ग्यारह—

अब दोनों कवि एक खाई पर आ निकलते हैं ! इसमें से ऐसी भीषण दुर्गन्धि निकल रही है कि उनका दम घुटने लगता है और वे एक पथरीली समाधि के पीछे शरण ग्रहण करने के लिए विवश हो जाते हैं। इस प्रकार जब कि वे यहाँ कुछ देर के लिए ठहर जाते हैं, दान्ते देखता है कि वह खाई न होकर एक समाधि है, जिस पर उस पोप एनैस्टैशियस का नाम खुदा हुआ है, जो कि अपने जीवन-काल में पथ-भ्रष्ट हो गया था। इस तरह थोड़ी देर तक उस स्थान पर खड़े रहने के कारण वे उस दुर्गन्धि के आदी हो-चलते हैं, और तब वर्जिल अपने सहचर मित्र को सूचित करता है कि अब वे सातवें घेरे के उन तीन क्रमिक उपघेरों से होकर निकलने वाले हैं, जहाँ उन तमाम हिंसक अथवा उग्र आत्माओं को दण्ड मिलता है, जिन्होंने अपनी इच्छा से बलात् कुछ ऐसे कार्य किये जिनके कारण ईश्वर को या उनके साथियों को किसी-न-किसी प्रकार पीड़ा पहुँची, उन्हें कष्ट हुआ !

मेरे निर्माण के मूल में दैवी शक्ति सर्वोच्चविवेक और प्रथम प्रणय का हाथ है।

मेरे अस्तित्व के पूर्व सृष्टि नाम से शाश्वत उपादानों के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं था!

मैं चिरन्तन हूँ, मैं अनादि हूँ!

× ×

फिर भी, मुझमें प्रवेश करने वाले, समझ लो कि एक वार इधर आकर तुम फिर कभी उधर न जा सकोगे, और फिर तुम्हारी आशायें और अभिलाषायें सदा के लिये तिरोहित हो जायेंगी। अतएव समझ-बूझकर ही अगला चरण बढ़ाओ!'

दान्ते की दृष्टि इन वाक्यों पर पड़ती है, किन्तु वह इनका कुछ भी आशय नहीं समझ पाता, और वर्जिल से आग्रह करता है कि वह उसे उनका रहस्य बताये। उत्तर में वर्जिल कहता है कि अब वे यमलोक के निचले प्रदेश 'हेडीज़' नामक तल में उतरने वाले हैं।

× ×

वर्जिल यहाँ पहले भी आ चुका है, अतएव वह एक बेधड़क जानकार की तरह उसे नर्क की चौढ़ी पर ले आता है, यहाँ के आसमान में एक भी तारा नहीं है और यहाँ की हवा की नब्ज़ में आहों, कराहों और पश्चातापों की आवाज़ साफ़ सुनाई देती है। यहाँ दान्ते भय से कांपने लगता है और जिज्ञासु हो उठता है कि अन्ततः यह सब क्या है! वर्जिल उत्तर देता है कि वे सारी आत्मायें जिन्होंने न तो यश कमाया और न अपयश, और वे सभी देवदूत जो स्वर्ग में युद्ध के समय युद्ध की ओर से अन्यमनस्क रहे, इस स्थान पर हैं! स्वर्ग, वैतरणी और नरक, तीनों ही इन्हें शरण देने से आनाकानी करते हैं, और मृत्यु कभी उनके पास फटक नहीं पाती, वह भी उनसे सदा के लिये मुंह मोड़ चुकी है!

इसी क्षण, जबकि वर्जिल अभी यह सब कह रहा है, ऐसी ही अभागी आत्माओं का दल का दल उनके पास से सर्र से निकल जाता है। दान्ते देखता है कि असंख्यक घातक कीड़े-मकोड़े उन्हें भयानक रूप से काट रहे हैं। इनमें अकस्मात् उसकी दृष्टि जा-पड़ती है 'पोप सेलेस्टाइन पंचम' पर जिसने कायरता और कर्महीनता के कारण ही अपना पद त्याग दिया था अर्थात् पाँच महीने की निश्चित अवधि समाप्त होने पर अपने पद को तिलांजलि दे दी थी। उसमें साहस नहीं था कि वह उसे सौंपे गये कार्य की कठिनाइयों का सामना करता!

इस प्रकार लज्जा से नीची दृष्टिवाली आत्माओं के पास से निकलने के बाद दान्ते एकेरॉन नामक मृत्यु की नदी के किनारे पहुँचता है। यहाँ उसे कैरन नामक प्रसिद्ध केवट उसकी ही ओर आता दिखलाई पड़ता है। वह इन मृतात्माओं में एक जीवित मनुष्य देखकर आश्चर्य से अवाक् हो उठता है और अत्यधिक उग्र होकर दान्ते को आज्ञा देता है कि वह उसी क्षण अपने लोक को लौट जाय। किन्तु तुरन्त ही, वर्जिल एक छोटा-सा वाक्य कहकर उसका मुंह बन्द कर देता है कि जहाँ इच्छा, और शक्ति समन्वित एवं एकाकार होती हैं, वहाँ विधि का विधान कुछ और ही होता है। अब कैरन किसी प्रकार की आपत्ति नहीं करता, और उन्हें अपनी छोटी

पथ-प्रदर्शन करने के लिये ही वह स्वयं उसके साथ भेजा गया है। इतना ही नहीं, इतना बतला कर वह उससे आग्रह करता है कि वह अपने किसी सहकारी को बुलाये और उसे आदेश दे कि वह उसे रक्त की नदी के उस पार कर दे क्योंकि किसी भी मृत-आत्मा की तरह वह स्वयं हवा पर नहीं चल सकता! उसकी बात समाप्त होते ही 'किरोंन' नेसियस को इस कार्य के लिये बुलाता है और निर्देश करता है कि वह कवि दान्ते को बड़ी होशियारी से नदी के पार ले जाय! नेसियस अपने नायक की आज्ञा का पालन करता है और दान्ते को साथ लेकर चल पड़ता है। राह में वह दान्ते से कितनी ही बातें करता है और इन बातों के सिलसिले में उसे बतलाता है कि इस रक्त की नदी में वे सभी हिंसक आत्मायें हैं, जिन्होंने अपने जीवन-काल में केवल रक्तपात में ही सुख पाया है, उदाहरण के लिये 'सिकन्दर', 'टाइनाइसियस'[1] आदि!

थोड़ी देर बाद ही दान्ते उस पार पहुँच जाता है और नेसियस अकेले लौट पड़ता है। पिछले क्षणों में यद्यपि वह साथ नेसियस के ही रहा है, तो भी उसका संरक्षक अपने उत्तरदायित्व के प्रति सर्वदा और सर्वथा सजग रहा है।

पर्व तेरह—

इसके बाद दोनों यात्री अब घोर घने जंगल में प्रवेश करते हैं! यह जंगल नरक के सातवें घेरे का दूसरा विभाग है। वर्जिल के कथनानुसार इस जंगल के प्रत्येक कँटीले झाड़-झंखाड़ में किसी-न-किसी आत्म-हंता का निवास है, और इस जंगल के पेड़ों की ऊंची शाखें हारपीज़[2] नामक राक्षसोंकी उपस्थिति की परिचायक हैं! इन राक्षसों के प्रायश्चित और चीत्कार से सारा वातावरण करुणा और भय से भर-उठा है, किन्तु वे अंकुरित होते ही हर पत्ते को बड़ी नृशंसता से निगल जाते हैं।

दान्ते पश्चातापों और आहों-कराहों की इस तीव्र वायु से द्रवित और भयांतकित हो-उठता है, और प्रश्नसूचक दृष्टि से वर्जिल की ओर देखता है। उत्तर में वर्जिल उसे आदेश देता है कि वह पास के किसी भी एक पेड़ से एक डाल तोड़ ले। वह अपने निर्देशक की आज्ञा का पालन करता है और देखता है कि उसके डाल तोड़ते ही उस स्थान से टप-टप कर रक्त की बूंदें चूने लगीं! इतना ही नहीं, उसे लगता है जैसे कि उसकी इस निर्दयता के लिये कोई बहुत उग्र होकर उसे फटकार भी रहा है! वह उत्सुक हो उठता है और तब उसे ज्ञात होता है कि उस विशिष्ट पेड़ पर निवास करने वाली आत्मा अपने जीवन काल में 'फ्रेड्रिक द्वितीय' की अन्तरंग सहायक-मंत्री रही थी, किन्तु जिसने अपने किन्हीं दुष्कृत्यों के कारण लज्जाजनक परिस्थिति में पड़ कर और अधिक अपमान न सह सकने के कारण आत्म-हत्या की शरण ली थी। वह यह सब बड़े ध्यान से सुन रहा है कि सहसा ही, उस प्रेतात्मा का कण्ठ भर आता है और एक आर्त्तनाद सुनाई पड़ने लगता है। दूसरे ही क्षण वह देखता है कि आगे-आगे दो नंगी आत्मायें अपना आपा खोये

---

[1] वह हत्यारा जिसने 'सिराक्यूज़' का वध किया था—

[2] वे राक्षस जिनका आधा शरीर स्त्रियों का होता है और आधा चिड़ियों का—

इस प्रकार बातचीत में व्यस्त गुरु-शिष्य आहें भरती हुई आत्माओं के एक वन से पार होते हैं और अंत में एक ऐसे स्थान पर पहुँचते हैं, जहाँ आग जल रही है, जिसके चारों ओर सम्भ्रान्त आत्मायें जुटी हैं। यहाँ वर्जिल दान्ते को सूचित करता है कि इनमें प्रत्येक आत्मा यशस्वी और सम्मानित है। एक क्षण बाद ही वह उससे मिलने के लिये उसकी ओर आती हुई चार महान आत्माओं की ओर संकेत करता है, और उसके कान में धीरे से कहता है कि ये हैं 'होमर', 'होरास', 'ओविड', और 'ल्यूकन'! ये चारों समीप आते हैं, वर्जिल से कुछ देर तक कितनी ही बातें करते हैं और परिचय पाने पर अपनी काव्य-स्वर्गंगा के छठवें जाज्वल्यमान नक्षत्र के रूप में दान्ते का अलौकिक स्वागत करते हैं! दान्ते भी सबका परिचय प्राप्त करता है और इस समय ऐसे ही विषय छेड़ता है, जिनकी चर्चा ऐसे उच्चकोटि के समाज में ही हो सकती है। इस प्रकार उनसे बातें करते-करते वह एक ऐसे महल के समीप आ निकलता है, जो सात परकोटों और एक खाई से भलीभाँति सुरक्षित है! इसके बाद ही वे छहों कवि एक के बाद दूसरे सात फाटकों से जाते हैं और एक वनस्थली में आते हैं, जहाँ उन सब की कृतियाँ एक ही स्थान पर एकत्रित हैं। यहाँ वह हेक्टर, इनीयस, केमिला, [1]ल्यूक्रीशिया और उन तमाम दार्शनिकों, इतिहासकारों और गणित-विद्या विशारदों से भेंट करता है जो कि समय-समय पर हमारी पृथ्वी पर अवतरित हुये हैं। यद्यपि दान्ते की इच्छा है कि वह यहाँ थोड़ी देर रुके और उन सबसे कुछ और बातें करे, तथापि उसका नेता उसे आगे बढ़ने का आदेश देता है! शीघ्र ही वे चारों कवि अदृश्य हो जाते हैं और ये शेष बचे गुरु-शिष्य एक ऐसे स्थान में प्रवेश करते हैं, जहाँ के लिये सूर्य और सूर्य की प्रभा क्या, सूर्य की एक किरण और प्रभा की एक हलकी-सी झलक भी सपने की बात है।

पर्व पाँच—

इस घेरे से अपेक्षाकृत निचले घेरे में उतरकर वर्जिल और दान्ते नरक के दूसरे घेरे में पहुँचते हैं। यहाँ उन सारी आत्माओं को दंड दिया जाता है जिन्होंने अपने जीवन-काल में अपने पावन जीवन को अपने कृत्यों से सदैव ही अपावन किया है! यह घेरा व्यास में पहले घेरे से अपेक्षाकृत छोटा है! इसका अधिपति न्यायाधीश माइनॉस है! वह सभी नवागन्तुक आत्माओं के भाग्यों का निर्णय करता है, और अन्त में उन सबको अपनी पूँछ के फंदों में फाँसकर, उनके लिये निश्चित, विभिन्न घेरों में पहुँचा देता है।

माइनॉस की निगाह दान्ते पर पड़ती है और वह उसे भयानक-रूप से धमकाता है, किन्तु, जब वर्जिल एक बार फिर यह भेद खोलता है कि वे किसी अपेक्षाकृत अधिक महान शक्ति के द्वारा वहाँ भेजे गये हैं तो, माइनॉस भी उन्हें अपनी सीमाओं से जाने की अनुमति दे देता है।

वे दोनों आगे बढ़ते हैं। उनके हर बढ़ते पग के साथ यातनाग्रस्त आत्माओं का आर्त्तनाद

---

[1]रोमन चरित्र-नायिका

लगा पाये हैं प्रत्युत वे तो परिधि पर थोड़ी देर और थोड़ी दूर तक यात्रा करने के बाद ही एक उप-घेरे से दूसरे में उतरते रहे हैं अतएव उन नदियों को न देख पाना कोई अचरज की बात नहीं है।

पर्व पन्द्रह—

इस अश्रु-प्रपात के किनारे इतने ऊँचे हैं कि वे दोनों कवि इस प्रदेश की जलती-हुई बालू और अग्नि-वर्षा के दुष्प्रभावों से पूरी तरह अछूते और भली भांति सुरक्षित रहते हैं। किंतु शीघ्र ही प्रेतात्माओं के एक दल से उनका सामना होता है, जिनमें हर एक उन्हें भयानक दृष्टि से घूर-घूर कर देखता है। इनमें से एक पापी दान्ते को पहिचान लेता है और उसे सम्बोधित करता है। इस पर पहले तो दान्ते कुछ समझ नहीं पाता किंतु फिर उसे भी याद आ जाता है और उसे यह देखकर विस्मय होता है कि उसके सामने उसका बूढ़ा स्कूलमास्टर 'सेर ब्रुनेतो' है। वह उसके साथ-साथ चलने लगता है और 'ब्रुनेतो' उसे बतलाता है कि उसे और उसके साथियों को दण्ड दिया गया है कि वे सौ साल तक बराबर इस अग्नि-वर्षा के नीचे चलते रहें, न क्षण भर को गरमी की रोक के लिये हाथ में पंखा लें और न पल भर को भी विराम के लिये रूकें! ब्रुनेतो की बात रुक जाती है किंतु वह स्वयं भी अपने पुराने शिष्य के विषय में कुछ जानना चाहता है और उससे प्रश्न करता है कि वह कैसे और क्यों उस निम्न-प्रदेश में आया। दान्ते उसे सन्तोष जनक उत्तर देता है। अंत में ब्रुनेतो भविष्यवाणी करता है कि यद्यपि उसे कितने ही संकटों का सामना करना होगा तो भी अंत में वह इतना यश लाभ करेगा कि अमर होकर-रहेगा।

पर्व सोरह—

वे उस पापात्मा को उसके भाग्य पर छोड़ कर अपनी राह लेते हैं। अब वे उस स्थान पर पहुंचते हैं जहां वह प्रपात, जिसकी धारा के साथ-साथ वे अबतक चलते रहे हैं, आठवें घेरे में बड़े वेग से गिरता है। यहाँ उन्हें उनकी ओर आती हुई तीन प्रेतात्मायें दिखलाई पड़ती हैं जो एक दूसरे के चारों ओर चक्कर काट रही हैं जैसे कि उनमें से हर एक-एक घूमता हुआ चक्र हो। वे दान्ते का वेष देखकर बोल उठती हैं कि हो-न-हो वह व्यक्ति अवश्य ही उनके अपने देश का है। दान्ते उनकी वाणी सुनता है और देखते ही भाँप लेता है कि वे तीनों तीन प्रसिद्ध ग्वेल्फ[1]-वीर हैं और जब वे उससे अपने निवास नगर कर हाल-चाल जानना चाहती है तो वह उनके नगर में इधर घटी-तमाम नवीनतम घटनाओं का सविस्तार वर्णन कर जाता है। प्रेतात्मायें सन्तोष की सांस लेती हैं और अदृश्य हो जाती हैं किन्तु इस प्रकार हवा हो जाने से पूर्व वे दान्ते से प्रार्थना करती हैं कि वह दुनिया में वापस लौटने पर उनके अपने नागरिक-परिचितों से उनकी चर्चा अवश्य करे और कहे कि वे सब उन्हें प्रायः याद आते हैं।

इसके बाद वे प्रपात के किनारे-किनारे खाई की सीमा पर आ-पहुँचते हैं। यहाँ

[1] एक जाति—

काल में वृकोदर रही हैं, जिन्होंने सदा ही परिमाण से अधिक भोजन किया है और जिन्होंने सदैव केवल अपने पेट पाटने की ही चिन्ता की है। इस कुत्ते के समीप पहुँचते ही वर्जिल उसके मांस के भूखे, ख़ून के प्यासे हिंसक जबड़ों में एक मुट्ठी धूल झोंक देता है ताकि वह उस पर और उसके शिष्य पर वार न कर सके, और शीघ्रता से उधर से होकर गुज़र जाता है। इसके बाद वह एक ऐसे स्थान में आता है जहाँ उसे और दान्ते को पृथ्वी पर धूलि फांकती हुई असंख्यक आत्माओं के ऊपर से हो कर चलना पड़ता है! इस तरह वे आगे बढ़ते हैं कि एक आत्मा उठ बैठती है, सहसा ही दान्ते से प्रश्न करती है कि क्या वह उसे वहीं नहीं पहिचानता, और फिर स्वयं ही अपना परिचय देती है कि वह फ़्लोरेंस के दैत्य-वृकोदर 'चाक्को' की आत्मा है। दाँते कुछ समझ नहीं पाता, किन्तु मन-ही-मन सोचता है कि सम्भव है, इसमें कुछ भविष्य वाणी की शक्ति हो, अतएव वह उसी के नगर का भविष्य जानने को उत्सुक हो कर उससे उस आशय का प्रश्न करता है। चाक्को की आत्मा उत्तर देती है कि उस नगर का एक राजनैतिक-दल दूसरे को शीघ्र ही पराजित करने वाला है, किन्तु तीन साल बाद वह स्वयं भी कहीं का न रहेगा। इतना कहने के बाद आत्मा जैसे कुछ सोचने लगती है, किन्तु दूसरे ही क्षण फिर कहना आरम्भ करती है कि उस नगर में केवल दो न्याय-प्रिय व्यक्ति रह गये हैं, शेष सब जैसे के तैसे हैं। इसके बाद वह चुप हो जाती है और दान्ते दूसरा प्रश्न करता है कि अन्त में उसके मित्रों का क्या हुआ! इस पर वह आत्मा फिर मुखरित हो उठती है और कहती है कि उनमें कुछ हेडीज़ के विभिन्न प्रदेशों में हैं और, यदि वह इसी प्रकार और निचले प्रदेशों में उतरता रहा तो, उससे अनिवार्य-रूप से मिलेंगे! इतना ही नहीं, मित्रों की चर्चा आने पर वह दान्ते से आग्रह करती है कि वह अपनी मनोहर और मधुर दुनिया में लौटने पर उसके शेष मित्रों से उसकी चर्चा अवश्य करे। इसके बाद वह आँखें मूंद लेती है और उन तमाम अपराधियो में एक बार फिर लुप्त हो जाती है! वे सब-के-सब न्यूनाधिक अंधे हैं! इसी समय वर्जिल दान्ते को सूचित करता है कि देवदूत की अंतिम शंखध्वनि के समय तक इस आत्मा की मुक्ति सम्भव नहीं है। तत्पश्चात गुरु-शिष्य धूल और धूल में मिली आत्माओं के पथ से आगे बढ़ते हैं। एक बार फिर वर्जिल दान्ते को सम्बोधित करता है और कहता है कि यद्यपि पथ पर बिछी हुई पापात्माएं पूर्ण मुक्ति की आशा तो नहीं कर सकतीं, किन्तु तो भी उनके विकास का द्वार उनके लिये पूर्णतया बन्द नहीं है।

पर्व सात—

इस तरह बातें करते हुये दोनों यात्री चौथे घेरे में उतर आते हैं। इस प्रदेश का राजा प्ल्यूटस है। वह पहिले तो उनके उधर से आने पर आपत्ति करता है, किन्तु जब वर्जिल उसके स्वामी और किसी समय के सर्वोच्च देवदूत की चर्चा करता है, उसे अपने उस प्रदेश से हो कर जाने के अधिकार से अवगत करता है और बतलाता है कि उसे तो उस स्थान तक जाना ही है, जहाँ माइकेल ने शैतान को बन्दी कर रक्खा था, तो वह अत्यन्त विनम्र हो उठता है और उन्हें अपने प्रदेश से होकर आगे बढ़ने की अनुमति देता है।

पर्व अठारह–

इस आठवें घेरे को 'मालेबोल्जे' या अशुभ, अपवित्र खाई कहते हैं। ये प्रदेश दस खाइयों में विभाजित है, जिनके बीच के चट्टानी मेहराब पुल के रूप में रास्ते का काम देते हैं। यह पूरा प्रदेश पत्थर और बर्फ़ का है! इसमें प्रधान खाई से प्रतिक्षण प्राणघातक भाप उठती रहती है।

दान्ते यहाँ की पहली खाई के समीप आता है, जहाँ अनेक सींगदार बैल अभागी आत्माओं को इस तरह लगातार कोड़े लगा रहे हैं कि उनका हाथ क्षण-भर को भी नहीं रुकता। वह इन दुरात्माओं में एक को लक्ष्य करता और उसे पहचान लेता है। यह पापी धरती पर विलासियों के लिये दुराचारिणी स्त्रियों की व्यवस्था करने वाला एक दलाल था जो इस समय अपने कर्मों का फल भोग रहा था। दान्ते इस पर विचार करता ही रहता है कि उसके सामने से अपराधियों का एक दूसरा दल निकलता है, जिन्हें दैत्य पशुओं की भाँति हाँक रहे हैं। इनमें भी उसकी दृष्टि 'अरगोनाटों'[1] के नेता 'जेसन' पर जा-टिकती है। यह वह व्यक्ति है जिसने 'कॉलचीज़' के राजा 'एटीज़' की पुत्री 'मिडिया' की सहायता से स्वर्णिम-ऊन प्राप्त कर अपने साथियों की महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति की थी, किन्तु जिसने आभारी होने की जगह अंत में मिडिया के साथ विश्वासघात किया था।

दोनों आगे बढ़ते हैं और एक पुल से इस प्रदेश के दूसरे विभाग में आते हैं, जहाँ अनेक पापी लीद के भीतर गड़े-पड़े हैं। इनका अपराध यह है कि जब वह जीवित थे तो इन्होंने अपनी चाटुकारी से लोगों का मन दूषित किया था! दान्ते इनमें से एक को पहिचानता और उससे कुछ बातचीत करना चाहता है। वह अपने गंदे वातावरण से उभरता और भारी मन से स्वीकार करता है कि उसे चापलूसी के कारण ही ये बुरे दिन देखने पड़े हैं और वह यहाँ पहुँच गया है जहाँ उसकी जीभ को किसी भी प्रकार का भोजन प्राप्त नहीं होता। बात समाप्त हो जाती है और इन अन्य विलासियों और चापलूसों में दान्ते की दृष्टि 'ताया'[2] नामक वेश्या पर भी पड़ती है जो अपना बोया काट रही है और अपने पूर्व पापों का प्रायश्चित कर रही है।

पर्व उन्नीस–

वे और आगे बढ़ते हैं और एक दूसरे चट्टानी-पुल की सहायता से तीसरी खाड़ी में आ पहुँचते हैं, जहाँ उन सब लोगों को यातना भोगनी पड़ती है, जिन्होंने अपने जीवन में घूस देकर धार्मिक पद प्राप्त किये थे और जिन्होंने धार्मिक पदों का क्रय-विक्रय किया था। यह सारे पापी सिर के बल कितनी ही धधकती हुई खाइयों में झोंके और डुबाए जा रहे हैं, जिनमें से उनके

[1] वे लोग जो सुनहले ऊन के लिये समुद्र की यात्राएँ करते थे—

[2] अनातोले फ्रांस का प्रसिद्ध उपन्यास—इस उपन्यास की नायिका—

यहाँ आने पर उस पार पहुँचने के लिये वर्जिल पोत पर चढ़ना चाहता है, किन्तु 'फ्लेजियस' नाम का एक चिड़चिड़ा केवट नाक-भौं सिकोड़ने लगता है और उसके द्वारा सन्तुष्ट और शान्त किये जाने पर ही उसे अपनी नाव पर क़दम रखने देता है ! इस प्रकार स्वयं नाव पर पहुँच जाने पर वर्जिल दान्ते को भी अपने पास बुला लेता है। नाव चल पड़ती है और दान्ते देखता है कि हर दूसरे ही क्षण कोई न कोई सिर गंदे पानी के ऊपर उभर आता है और दूसरा डूब जाता है। वह विस्मय से इस दृश्य पर विचार करता रहता है कि ऐसा ही एक सिर उसके समीप निकल कर उससे प्रश्न करता है कि वह कौन है जो अपने निश्चित समय के पूर्व ही वहाँ आ गया है ! कवि तुरन्त ही उत्तर देता है कि उसका विचार वहाँ ठहरने का नहीं है और वह शीघ्र ही अपने लोक को लौट जायेगा। किन्तु इस उत्तर से ही उसका जी नहीं भरता और उसके सौहार्द से प्रभावित होकर वह उस आत्मा का परिचय भी पाना चाहता है। परन्तु, यह भाव मन में आते ही वह उस ओरजेंटी नामक पापी को पहचान लेता है और घृणा से भरकर उसकी ओर से मुँह फेर लेता है। वर्जिल को उसका यह व्यवहार बहुत पसन्द आता है और जब दान्ते कामना करता है कि यह राक्षस सदा के लिये इस दलदल में डूब जाये और इस तरह डूबे कि इसका दम घुटता रहे और इसके प्राण भी घोर कष्ट से निकलें तो उसका गुरु उसी ओर आती हुई प्रतिहिंसात्मक आत्माओं के एक दल की ओर संकेत करता है और कहता है कि उसकी इस इच्छा की पूर्ति के लिये ही वे आत्मायें आंधी की गति से उस ओर बढ़ी आ रही हैं। इतना सुनते ही आरजेंटी अपने ही दाँतों से अपना शरीर काटने लगता है और दलदल में डूब जाता है।

इस भाँति दान्ते की नाव आगे बढ़ती रहती है। थोड़ी देर बाद वर्जिल उसे सूचित करता है, कि अब वे शीघ्र ही डिस नामक उस महानगरी में पहुँचनेवाले हैं, जिसके ऊँचे स्तम्भ भीतर से आग के रंग के हैं और दूर से चमक रहे हैं।

कुछ क्षण बाद ही वे उस नगरी की खाई में पहुँचते हैं। यहाँ यात्री धीरे-धीरे उसकी लोहे की दीवालों को घेरकर खड़े हो जाते हैं, जिनपर नीचे की ओर झुक कर भ्रमित आत्मायें कोलाहल करने लगती हैं और जानना चाहती हैं कि वह कौन है जो मृतकों के प्रदेश में प्रवेश तो कर रहा है, किन्तु जिसने पहले कभी मृत्यु का अनुभव नहीं किया। इस पर दान्ते उन्हें सन्तुष्ट करने का संकेत करता है और वे सब अदृश्य हो जाती हैं, मानों उन्हें उस प्रदेश में प्रवेश करने का निमन्त्रण दे रही हों ! किन्तु जब यात्री फाटकों पर पहुँचते हैं तो वे देखते हैं कि वे उसी प्रकार बन्द हैं और उनका खुलना कठिन है ! वर्जिल उन सब की अधीरता अनुभव करता है और उन्हें बतलाता है कि वे दीवारों पर झुकी हुई दुष्आत्मायें वे हैं जिन्होंने हेडीज़ में ईसा के प्रवेश का भी विरोध किया था, किन्तु पहले 'ईस्टर' के दिन जिनकी शक्ति का विनाश किया गया था और इस प्रकार जिन्हें हार खानी पड़ी थी।

पर्व नव—

इस दृश्य से दान्ते भय से कांपने लगता है। उसे इस स्थिति में देखकर वर्जिल सूचित

ने पृथ्वी पर उन्हें सौंपी गई धन-सम्पत्ति को अपना समझ लिया और उसे पचा लिया। ये सब इस खाई के उस गहरे, गाढ़े उबलते हुये द्रव्य में डूब उतरा रहे हैं, जिसकी दुर्गन्धि से दान्ते अनुमान करता है कि वह धूना है और जिसके कारण हठात् ही उसे वेनिस का वह स्थान याद आ जाता है, जहां जलयानों का निर्माण होता है। इसी समय वर्जिल दान्ते का ध्यान एक राक्षस की ओर आकर्षित करता है जो एक पापी को नचाकर, सिर के बल खाई में झोंक देता है और बिना इसकी चिन्ता किये कि उसका क्या हुआ, तुरन्त ही किसी दूसरे पापी की खोज में चल पड़ता है। दान्ते भरी-आँखों से यह दृश्य देखता है और यह भी कि किसी भी पापी का सिर ऊँची-काली लहरों के ऊपर उठा और उभरा कि कितने ही दैत्य झपटे और उन्होंने अपने लम्बे बर्छों की सहायता से उसे एक बार फिर डुबा दिया।

इधर दान्ते इन दृश्यों में तन्मय रहता है और उधर वर्जिल आशंकित हो उठता है। वह नहीं चाहता कि उसका शिष्य भी इन पतित प्रेतों का शिकार हो अतएव वह उसे निर्देश करता है कि वह पहले पुल के गुम्बज के पीछे छिप जाय और तब वहाँ की सारी विषम और दारुण परिस्थितियों का अध्ययन करे। दान्ते उस स्थान में छिप जाता है, किन्तु शीघ्र ही दूर के राक्षस की गरुड़-दृष्टि उस पर पड़ जाती है, जो उसे लक्ष्य कर उस पर आक्रमण करना चाहता है। परन्तु वर्जिल बहुत उग्र हो उठता है और घोषित करता है कि उनकी उस स्थान पर उपस्थिति की सारी ज़िम्मेदारी ईश्वरीय इच्छा और ईश्वर पर है। वह अपना यह वाक्य इतने प्रभावोत्पादक ढंग से, इतने सशक्त शब्दों में कहता है कि उस राक्षस के हाथ से बर्छा छूट-गिरता है, वह शक्तिहीन हो उठता है और उन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा पाता! अपने वाक्य का यह प्रभाव देखकर वर्जिल दान्ते को उस पुल की मीनार के पीछे से लौटा लेता है। इसके बाद वह बहुत कठोर और रूखे शब्दों में उस राक्षस को आज्ञा देता है कि वह अगुआ बने और अपने विकृत-मुख साथियों की अनेक श्रेणियों के बीच से सकुशल निकालकर उन्हें उस ओर पहुँचा दे। राक्षस वर्जिल की आज्ञा का पालन करता है, किन्तु जैसे ही गुरु-शिष्य उन पतित-आत्माओं के बीच से निकलते हैं, वे उन्हें देखकर तरह-तरह की वीभत्स और भयानक मुद्रायें बनाती हैं।

पर्व बाईस—

कितने ही युद्धों में सक्रिय-रूप से भाग लेने के कारण सैन्य-संचालन की सुव्यवस्था से परिचित होने के बाद भी इस समय, सहसा ही, दान्ते यह स्वीकार करता है कि इन दैत्य-सैनिकों से अधिक सुपरिचालित और सिद्ध-हस्त सैनिक उसने नहीं देखे। वह लक्ष्य करता है कि यथा समय इन दलों का एक सदस्य आगे आता है और या तो कितने ही नये आये हुये पापियों को कोलतार की उस खाई में ढकेल देता है या अपना बर्छा भोंक कर किसी पापी को उस खाई के ऊपर उठा लेता है, उसे कुछ देर तक झकझोरता है और फिर नचाकर उसमें फेंक देता है। वर्जिल इस दृश्य से करुणार्द्र हो-उठता है और एक पापात्मा से कुछ पूछता है। वह उत्तर देती

समाधि से उठने का यत्न करता है और थोड़ा उठकर दान्ते को सूचित करता है कि दो बार खदेड़े जाने के बाद उसकी जाति के प्रतिद्वंदी ग्वेल्फ़्स एक बार फिर फ़्लोरेंस में लौट आये हैं। इसी समय एक दूसरा पापी अपने कफ़न के किनारे से सिर निकालकर बाहर झांकता है और बहुत उत्सुक होकर उन दोनों से अपने पुत्र ग्विडो का कुछ हाल-चाल जानना चाहता है। इस भाँति यह प्रमाणित हो जाता है कि इन अभागी आत्माओं को भूत और भविष्य दोनों का पूर्ण ज्ञान है, किन्तु वर्तमान इनके लिए एक रहस्य है। इस पर दान्ते इतना आश्चर्यचकित हो उठता है कि पहले तो उसके मुँह से शब्द नहीं निकलता किन्तु फिर वह भूतकाल में ग्विडो का उल्लेख करता है। उसके भूतकाल में बात आरम्भ करने के कारण अभागा पिता समझ बैठता है कि उसका पुत्र मर गया है, अतएव एक हृदय-विदारक क्रन्दन के साथ वह अपने कफ़न में सिर गड़ा कर पड़ रहता है, जैसे कि अभी अभी यह दूसरी मृत्यु आई हो! सहसा ही दान्ते अनुभव करता है कि अनजाने में ही उससे एक भयंकर भूल बन पड़ी है, जिसके कारण उस आत्मा को बड़ा कष्ट पहुँचा है, अतएव वह अपनी भूल सुधार का और कोई रास्ता न देखकर फ़ैरीनाटा से अनुरोध करता है कि वह जल्दी-से-जल्दी अपने पड़ोसी को सूचित कर दे कि उसका पुत्र अभी जीवित है और सकुशल है।

कहना न होगा कि अब तक दान्ते जो कुछ देखता-सुनता है, उसे समझ नहीं पाता, अतएव अधीर हो उठता है, और सोच-विचार में पड़ जाता है, तो भी दंडित पापियों पर सहानुभूति की एक दृष्टि डालता हुआ आगे बढ़ता है! शीघ्र ही वर्जिल उसकी व्यग्रता लक्ष्य करता और उसे इस विश्वास से धैर्य बंधाता है कि यात्रा के अंत में स्वयं बिएट्रिस उसके सारे प्रश्नों का सन्तोषजनक उत्तर देगी, उसकी सारी शंकाओं का समाधान करेगी!

पर्व ग्यारह—

अब दोनों कवि एक खाई पर आ निकलते हैं! इसमें से ऐसी भीषण दुर्गन्धि निकल रही है कि उनका दम घुटने लगता है और वे एक पथरीली समाधि के पीछे शरण ग्रहण करने के लिए विवश हो जाते हैं। इस प्रकार जब कि वे यहाँ कुछ देर के लिए ठहर जाते हैं, दान्ते देखता है कि वह खाई न होकर एक समाधि है, जिस पर उस पोप एनैस्टैशियस का नाम खुदा हुआ है, जो कि अपने जीवन-काल में पथ-भ्रष्ट हो गया था। इस तरह थोड़ी देर तक उस स्थान पर खड़े रहने के कारण वे उस दुर्गन्धि के आदी हो-चलते हैं, और तब वर्जिल अपने सहचर मित्र को सूचित करता है कि अब वे सातवें घेरे के उन तीन क्रमिक उपघेरों से होकर निकलने वाले हैं, जहाँ उन तमाम हिंसक अथवा उग्र आत्माओं को दण्ड मिलता है, जिन्होंने अपनी इच्छा से बलात् कुछ ऐसे कार्य किये जिनके कारण ईश्वर को या उनके साथियों को किसी-न-किसी प्रकार पीड़ा पहुँची, उन्हें कष्ट हुआ!

ज़ो इस समय इस गुरु, जघन्य अपराध के कारण ही यह यातना भोग रहा है। इतना ही नहीं, यह भी निश्चित है कि उसे कुचलकर, उसके चौरस-पड़े शरीर के ऊपर से प्रेतात्माओं का दल-का दल निकलेगा! यह पाप-पंगु व्यक्ति, जिससे दान्ते कितनी ही देर तक बात करता है, उसे सूचित करता है कि ईसा को घृणा की दृष्टि से देखने वाले, उसकी अवमानना करनेवाले और उसके लिये दंड नियत करनेवाले 'अनेनायज़' जैसे दंड-विधान-समिति के कितने ही दूसरे सदस्य घेरे के दूसरे भागों में हैं।

थोड़ी देर के बाद वर्जिल अनुमान करता है कि इतनी देर तक इस प्रदेश को देखने से दान्ते का जी अवश्य ही भर गया होगा, अतएव वह बाहर निकलने की राह के लिये उत्सुक हो उठता है। शीघ्र ही एक दैत्य आता है और एक सीधे, चढ़ाईवाले रास्ते की ओर संकेत कर देता है!

पर्व चौबीस–

दोनों इसी मार्ग का अनुकरण करते हैं, किन्तु यह रास्ता इतना ऊबड़-खाबड़ है कि वर्जिल दान्ते को आधा साध लेता है और इस प्रकार आगे बढ़ने में उसकी सहायता करता है। यों हाँफते हुए जैसे कि थके होने के साथ-साथ, वे उस प्रान्त की जानकारी के लिये भी आवश्यकता से अधिक उत्सक हों, वे एक पहाड़ी पर पहुँचते हैं जिसके नीचे इस प्रदेश की सातवीं खाई है। यह असंख्यक डाकू-आत्माओं का निवास-स्थान है, जो कि इस समय भयानक-रूप से भीषण, हिंस्र अजगरों के शिकार बन रहे हैं, और जिनके हाथ पीछे की ओर सांपों की रस्सियों से जकड़े हुये हैं। ये अजगर इन पापात्माओं को लगातार डसते हैं और इतना डसते हैं कि वे राख हो जाती हैं, किन्तु दूसरे ही क्षण 'फ़ेयनिक्स'[1] की भाँति ही उठ बैठती हैं और फिर वही यातनायें भोगती हैं। दान्ते इस दृश्य से सिहर उठता है। अब वह इनमें से एक दस्यु से बातें भी करता है! वह अपने दुष्कृत्यों का वर्णन करने के बाद फ़्लोरेंस-विषयक कुछ भविष्य-वाणी करता है।

पर्व पच्चीस–

वह इतना ही कहकर नहीं रुकता, प्रत्युत अनेक रूप में ईश्वर की निन्दा करता है। उसकी यही चेष्टा चलती रहती है कि साँपों का एक दल उस पर आघात करता है। वह इनसे पिंड छुड़ा कर निकल भागना चाहता है, किन्तु दुर्भाग्य से आधे मनुष्य के और आधे घोड़े के (शरीरवाले) एक अद्भुत नर-पशु की पकड़ में आ जाता है! वह उसे घेर कर तरह-तरह से सताता है। वर्जिल बतलाता है कि इस अद्भुत प्राणी का नाम 'कैकस' है।

इसके बाद दोनों महाकवि और आगे बढ़ते हैं और तीन ऐसे अपराधियों को देखते हैं,

---

[1]अमरता की प्रतीक विदेशी पुराणों की एक चिड़िया जिसके विषय में कहा जाता है कि वह जल-मरने के बाद एक बार फिर जी-उठी थी और फिर २०० वर्ष तक जीती रही थी।

पथ-प्रदर्शन करने के लिये ही वह स्वयं उसके साथ भेजा गया है। इतना ही नहीं, इतना बतला कर वह उससे आग्रह करता है कि वह अपने किसी सहकारी को बुलाये और उसे आदेश दे कि वह उसे रक्त की नदी के उस पार कर दे क्योंकि किसी भी मृत-आत्मा की तरह वह स्वयं हवा पर नहीं चल सकता ! उसकी बात समाप्त होते ही 'किरॉन' नेसियस को इस कार्य के लिये बुलाता है और निर्देश करता है कि वह कवि दान्ते को बड़ी होशियारी से नदी के पार ले जाय ! नेसियस अपने नायक की आज्ञा का पालन करता है और दान्ते को साथ लेकर चल पड़ता है। राह में वह दान्ते से कितनी ही बातें करता है और इन बातों के सिलसिले में उसे बतलाता है कि इस रक्त की नदी में वे सभी हिंसक आत्मायें हैं, जिन्होंने अपने जीवन-काल में केवल रक्तपात में ही सुख पाया है, उदाहरण के लिये 'सिकन्दर', 'डाइनाइसियस'[1] आदि !

थोड़ी देर बाद ही दान्ते उस पार पहुँच जाता है और नेसियस अकेले लौट पड़ता है। पिछले क्षणों में यद्यपि वह साथ नेसियस के ही रहा है, तो भी उसका संरक्षक अपने उत्तरदायित्व के प्रति सर्वदा और सर्वथा सजग रहा है।

पर्व तेरह—

इसके बाद दोनों यात्री अब घोर घने जंगल में प्रवेश करते हैं ! यह जंगल नरक के सातवें घेरे का दूसरा विभाग है। वर्जिल के कथनानुसार इस जंगल के प्रत्येक कँटीले झाड़-झंखाड़ में किसी-न-किसी आत्म-हंता का निवास है, और इस जंगल के पेड़ों की ऊंची शाखें हारपीज़[2] नामक राक्षसोंकी उपस्थिति की परिचायक हैं ! इन राक्षसों के प्रायश्चित और चीत्कार से सारा वातावरण करुणा और भय से भर-उठा है, किन्तु वे अंकुरित होते ही हर पत्ते को बड़ी नृशंसता से निगल जाते हैं।

दान्ते पश्चातापों और आहों-कराहों की इस तीव्र वायु से द्रवित और भयांतकित हो-उठता है, और प्रश्नसूचक दृष्टि से वर्जिल की ओर देखता है। उत्तर में वर्जिल उसे आदेश देता है कि वह पास के किसी भी एक पेड़ से एक डाल तोड़ ले। वह अपने निर्देशक की आज्ञा का पालन करता है और देखता है कि उसके डाल तोड़ते ही उस स्थान से टप-टप कर रक्त की बूंदें चूने लगीं ! इतना ही नहीं, उसे लगता है जैसे कि उसकी इस निर्दयता के लिये कोई बहुत उग्र होकर उसे फटकार भी रहा है ! वह उत्सुक हो उठता है और तब उसे ज्ञात होता है कि उस विशिष्ट पेड़ पर निवास करने वाली आत्मा अपने जीवन काल में 'फ्रेड्रिक द्वितीय' की अन्तरंग सहायक-मंत्री रही थी, किन्तु जिसने अपने किन्हीं दुष्कृत्यों के कारण लज्जाजनक परिस्थिति में पड़ कर और अधिक अपमान न सह सकने के कारण आत्म-हत्या की शरण ली थी। वह यह सब बड़े ध्यान से सुन रहा है कि सहसा ही, उस प्रेतात्मा का कण्ठ भर आता है और एक आर्त्तनाद सुनाई पड़ने लगता है। दूसरे ही क्षण वह देखता है कि आगे-आगे दो नंगी आत्मायें अपना आपा खोये

[1] वह हत्यारा जिसने 'सिराक्यूज़' का वध किया था—

[2] वे राक्षस जिनका आधा शरीर स्त्रियों का होता है और आधा चिड़ियों का—

इस समय उनके पास से जाती हुई आत्माओं में से कितनी ही अपने नाम बतलाती है और दान्ते चौंक उठता है क्योंकि इनमें वे पापी भी शामिल हैं जिन्होंने इटैलियन-राज्यों के पारस्परिक संघर्ष में नेतृत्व किया है। इतना ही नहीं, वह 'बरट्रेंड द बॉर्न' को देखते ही भय से काँपने लगता है क्योंकि उसे इंग्लैंड के हेनरी द्वितीय के विरुद्ध उसके पुत्र को लड़ने के लिये भड़काने के कारण इस समय दण्ड मिल रहा है। वह अपना सिर अपने ही हाथों में इस प्रकार लटका कर ले-चल रहा है, जैसे कि कोई साधारण व्यक्ति लालटेन लेकर चले।

पर्व उन्तीस—

अब इस घेरे के लोमहर्षक दृश्यों को इस प्रकार देखते-देखते दान्ते को लगता है कि वह अचेत हो जायेगा। उसे ज्ञात होता है कि इसकी परिधि २१ मील है। इसके बाद ही वह दूसरे पुल पर आ जाता है। यहाँ उसे लगता है जैसे कि किसी अस्पताल-की-सी आहों कराहों से उनके कान शीघ्र ही बहरे हो जायेंगे। इस दसवीं खाई की गहराई में आँख गड़ाने पर उसे कितने ही प्रकार के रोगों के रोगी दिखलाई पड़ते हैं और उसे शीघ्र ही पता चलता है कि इनमें कितने ही धूर्त्त और असंख्यक रसायन-विद् अपने पापों का दण्ड भोग रहे हैं। इनमें दान्ते एक ऐसे आदमी को भी लक्ष्य करता है जो मनुष्यों को उड़ना सिखा देने का दावा करने के कारण अपने जीवन-काल में जीवित जला दिया गया, और इस प्रकार उसके मरने के बाद न्यायाधीश को उसका यह दावा को इतना बेहूदा और इतना हास्यास्पद जंचा कि उसने बिल्कुल निर्दय हो कर उसे भी वही दंड दिया जो कि उसने जादूगरों, रसायन-विदों और दूसरे पाखंडियों और बहाने बाज़ों के लिये नियत और निश्चित कर-रक्खा था!

पर्व तीस—

इसी समय दान्ते का ध्यान वर्जिल कितने ही पापियों की ओर आकर्षित करता और उन्हें संकेत से दिखलाता है। इनमें से कुछ अपने जीवन-काल में वंचक और ठग थे, कुछ माया-जाल और पाखंडों में अभ्यस्त थे और शेष दूसरों के विरुद्ध अपवादों के गढ़ने और फैलाने में दक्ष। इनमें वह स्त्री भी दिखलाई पड़ती है जिसने जोसेफ़ और सिनान[1] पर कितने ही आरोप लगाये थे, जिन्होंने ट्राजनों से लकड़ी के घोड़े को शहर में ले जाने का आग्रह किया था।

वे अपराधी इन यातनाओं पर भी सन्तोष न कर एक-दूसरे पर क्रूर और निर्मम व्यंग्य-बाणों का प्रहार कर रहे हैं और पारस्परिक-कष्टों और संकटों को कई गुना और असह्य बना रहे

विशेष—पिछले पृष्ठ में हज़रत मोहम्मद का चर्चा आयी है। इस सम्बंध में इतना कह देना आवश्यक है कि दान्ते के समय में साम्प्रदायिक भावना अथवा वैयक्तिक जाति-चेतना लोगों में इतनी अधिक जागरूक थी की हज़रत मोहम्मद को भी दान्ते का शिकार बनना पड़ा! हमें इसका क्षोभ है, किन्तु उसकी अपनी विवशता के नाते हमें इस महान कलाकार को क्षमा ही कर देना होगा!

[1] एक यूनानी दास।

लगा पाये हैं प्रत्युत वे तो परिधि पर थोड़ी देर और थोड़ी दूर तक यात्रा करने के बाद ही एक उप-घेरे से दूसरे में उतरते रहे हैं अतएव उन नदियों को न देख पाना कोई अचरज की बात नहीं है।

पर्व पन्द्रह–

इस अश्रु-प्रपात के किनारे इतने ऊँचे हैं कि वे दोनों कवि इस प्रदेश की जलती-हुई बालू और अग्नि-वर्षा के दुष्प्रभावों से पूरी तरह अछूते और भली भांति सुरक्षित रहते हैं। किंतु शीघ्र ही प्रेतात्माओं के एक दल से उनका सामना होता है,जिनमें हर एक उन्हें भयानक दृष्टि से घूर-घूर कर देखता है। इनमें से एक पापी दान्ते को पहिचान लेता है और उसे सम्बोधित करता है। इस पर पहले तो दान्ते कुछ समझ नहीं पाता किंतु फिर उसे भी याद आ जाता है और उसे यह देखकर विस्मय होता है कि उसके सामने उसका बूढ़ा स्कूलमास्टर 'सेर ब्रुनेतो' है। वह उसके साथ-साथ चलने लगता है और 'ब्रुनेतो' उसे बतलाता है कि उसे और उसके साथियों को दण्ड दिया गया है कि वे सौ साल तक बराबर इस अग्नि-वर्षा के नीचे चलते रहें, न क्षण भर को गरमी की रोक के लिये हाथ में पंखा लें और न पल भर को भी विराम के लिये रूकें। ब्रुनेतो की बात रुक जाती है किंतु वह स्वयं भी अपने पुराने शिष्य के विषय में कुछ जानना चाहता है और उससे प्रश्न करता है कि वह कैसे और क्यों उस निम्न-प्रदेश में आया। दान्ते उसे सन्तोष जनक उत्तर देता है। अंत में ब्रुनेतो भविष्यवाणी करता है कि यद्यपि उसे कितने ही संकटों का सामना करना होगा तो भी अंत में वह इतना यश लाभ करेगा कि अमर होकर-रहेगा।

पर्व सोरह–

वे उस पापात्मा को उसके भाग्य पर छोड़ कर अपनी राह लेते हैं। अब वे उस स्थान पर पहुंचते हैं जहाँ वह प्रपात, जिसकी धारा के साथ-साथ वे अबतक चलते रहे हैं, आठवें घेरे में बड़े वेग से गिरता है। यहाँ उन्हें उनकी ओर आती हुई तीन प्रेतात्मायें दिखलाई पड़ती है जो एक दूसरे के चारों ओर चक्कर काट रही है जैसे कि उनमें से हर एक-एक घूमता हुआ चक्र हो। वे दान्ते का वेष देखकर बोल उठती हैं कि हो-न-हो वह व्यक्ति अवश्य ही उनके अपने देश का है। दान्ते उनकी वाणी सुनता है और देखते ही भाँप लेता है कि वे तीनों तीन प्रसिद्ध ग्वेल्फ[1]-वीर हैं और जब वे उससे अपने निवास नगर कर हाल-चाल जानना चाहती है तो वह उनके नगर में इधर घटी-तमाम नवीनतम घटनाओं का सविस्तार वर्णन कर जाता है। प्रेतात्मायें सन्तोष की सांस लेती हैं और अदृश्य हो जाती हैं किन्तु इस प्रकार हवा हो जाने से पूर्व वे दान्ते से प्रार्थना करती हैं कि वह दुनिया में वापस लौटने पर उनके अपने नागरिक-परिचितों से उनकी चर्चा अवश्य करे और कहे कि वे सब उन्हें प्रायः याद आते हैं।

इसके बाद वे प्रपात के किनारे-किनारे खाई की सीमा पर आ-पहुँचते हैं। यहाँ

---

[1] एक जाति–

उसके पैर के नीचे आ जाय ! वर्जिल की चेतावनी सुनते ही वह अपने पैरों पर दृष्टि डालता है और तब उसे ज्ञात होता है कि वह एक ऐसे हिम-सागर पर खड़ा है, जिसमें असंख्यक पापी फँसे पड़े हैं, और जिनके केवल सिर ही बाहर नज़र आते हैं ! इतना ही नहीं, वह यह भी देखता है कि उन पापियों के गालों पर लगातार बहने वाले आँसू हिम का रूप धारण कर चुके हैं और इस प्रकार उनके सिर भी जैसे तुषार से ढक गये और उसमें गड़ गये हैं।

दान्ते अब पापियों की ओर ध्यान से देखता है और उसकी दृष्टि एक-दूसरे से इस प्रकार सटे खड़े दो पापियों पर पड़ती है जिनके सिर के बाल एक दूसरे में गुंथकर एक हो चुके हैं। वह उत्सुक हो उठता है और उनका परिचय पाना चाहता है। उसे मालूम होता है कि वे दो सगे भाई हैं, जिन्होंने उत्तराधिकार के मामले में झगड़ कर एक दूसरे को मार डाला है। वह इस विशिष्ट अपराध के अपराधी का परिचय पाकर कुछ चौंक उठता है और तभी उसे बतलाया जाता है कि प्रेतपुरी के इस विभाग का नाम 'कैना' है। यह पतित से पतित हत्यारों का प्रदेश है और इसमें भी नर्क के अन्य प्रदेशों की भाँति ही अनगिनत पापात्माओं की भीड़ है।

अब वह निर्देशक के साथ इस हिम-तल पर आगे बढ़ता है कि उसका पैर फिर झील से बाहर निकले एक सिर से टकरा जाता है। वह चौंक उठता है, उससे कुछ पूछना चाहता है और इसके लिये वर्जिल की अनुमति चाहता है। वह आज्ञा दे देता है। दान्ते प्रश्न करता है। वह अपराधी पहले तो कुछ बोलने से इन्कार करता है, किन्तु, जब दान्ते केवल यह कहकर ही नहीं रह जाता कि यदि वह इस प्रकार मौन रहा तो वह उसके सिर के सारे बाल खींच कर नोच डालेगा, प्रत्युत वह उसके बालों को दो-चार झटके भी देता है तो, वह मुखरित होता और स्वीकार करता है कि वह एक विश्वासघाती राजद्रोही है। वह यह भी बतलाता है कि वह स्थान 'ऐंटिनोरा' नामक प्रदेश के सबसे निचले घेरे का दूसरा विभाग है जिसमें उस-जैसे अगणित पापी अपनी करनी का फल भोग रहे हैं।

पर्व तैंतीस—

वह अपनी बात पूरी करता ही है कि दान्ते की दृष्टि एक दूसरे पापी पर पड़ती है जो अपने किसी साथी का सिर बड़े चाव से काट-कुतर कर खा रहा है। वह इस दृश्य से घबड़ा-उठता है किन्तु वर्जिल उसे धैर्य बंधाने के बाद बतलाता है कि इस मानव-मांस-भक्षी का नाम 'काउन्ट-उगोलिनो डे गेराडेस्की' है ! इसे उसके राजनीतिक साथियों ने प्रमुख पादरी रूजियेरो के नेतृत्व में बहुत छल-छद्म से गिरफ्तार करने के बाद उसके दो बेटों और दो पोतों के साथ पीसा की फ़ैमीन-मीनार में बन्द-कर मार डाला था। इतना सुनने के बाद दान्ते जिज्ञासु दृष्टि से 'काउन्ट' की ओर देखता है जैसे कि वह उसके मुंह से उसकी आत्म-कथा सुनना चाहता हो ! काउन्ट उसका मतलब तुरन्त ही समझ लेता है और उसकी अतीत की स्मृतियाँ हरी हो-उठती हैं। सहसा ही उसका दिल भारी हो जाता है, उसकी आँखें भर-उठती हैं और उसका गला रूँध जाता है। फिर भी, वह पहले उस दिन के भय और उस दिन की आशंका का वर्णन करता है जिस दिन

पर्व अठारह—

इस आठवें घेरे को 'मालेबोल्जे' या अशुभ, अपवित्र खाई कहते हैं। ये प्रदेश दस खाइयों में विभाजित है, जिनके बीच के चट्टानी महराब पुल के रूप में रास्ते का काम देते हैं। यह पूरा प्रदेश पत्थर और बर्फ का है। इसमें प्रधान खाई से प्रतिक्षण प्राणघातक भाप उठती रहती है।

दान्ते यहाँ की पहली खाई के समीप आता है, जहाँ अनेक सींगदार बैल अभागी आत्माओं को इस तरह लगातार कोड़े लगा रहे हैं कि उनका हाथ क्षण-भर को भी नहीं रुकता। वह इन दुरात्माओं में एक को लक्ष्य करता और उसे पहचान लेता है। यह पापी धरती पर विलासियों के लिये दुराचारिणी स्त्रियों की व्यवस्था करने वाला एक दलाल था जो इस समय अपने कर्मों का फल भोग रहा था। दान्ते इस पर विचार करता ही रहता है कि उसके सामने से अपराधियों का एक दूसरा दल निकलता है, जिन्हें दैत्य पशुओं की भाँति हाँक रहे हैं। इनमें भी उसकी दृष्टि 'अरगोनाटों'[1] के नेता 'जेसन' पर जा-टिकती है। यह वह व्यक्ति है जिसने 'कॉलचीज़' के राजा 'एटीज़' की पुत्री 'मिडिया' की सहायता से स्वर्णिम-ऊन प्राप्त कर अपने साथियों की महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति की थी, किन्तु जिसने आभारी होने की जगह अंत में मिडिया के साथ विश्वासघात किया था।

दोनों आगे बढ़ते हैं और एक पुल से इस प्रदेश के दूसरे विभाग में आते हैं, जहाँ अनेक पापी लीद के भीतर गड़े-पड़े हैं। इनका अपराध यह है कि जब यह जीवित थे तो इन्होंने अपनी चाटुकारी से लोगों का मन दूषित किया था! दान्ते इनमें से एक को पहिचानता और उससे कुछ बातचीत करना चाहता है। वह अपने गंदे वातावरण से उभरता और भारी मन से स्वीकार करता है कि उसे चापलूसी के कारण ही ये बुरे दिन देखने पड़े हैं और वह यहाँ पहुँच गया है जहाँ उसकी जीभ को किसी भी प्रकार का भोजन प्राप्त नहीं होता। बात समाप्त हो जाती है और इन अन्य विलासियों और चापलूसों में दान्ते की दृष्टि 'ताया'[2] नामक वेश्या पर भी पड़ती है जो अपना बोया काट रही है और अपने पूर्व पापों का प्रायश्चित कर रही है।

पर्व उन्नीस—

वे और आगे बढ़ते हैं और एक दूसरे चट्टानी-पुल की सहायता से तीसरी खाड़ी में आ पहुँचते हैं, जहाँ उन सब लोगों को यातना भोगनी पड़ती है, जिन्होंने अपने जीवन में घूस देकर धार्मिक पद प्राप्त किये थे और जिन्होंने धार्मिक पदों का क्रय-विक्रय किया था। यह सारे पापी सिर के बल कितनी ही धधकती हुई खाइयों में झोंके और डुबाए जा रहे हैं, जिनमें से उनके

---

[1] वे लोग जो सुनहले ऊन के लिये समुद्र की यात्राएँ करते थे—

[2] अनातोले फ्रांस का प्रसिद्ध उपन्यास—इस उपन्यास की नायिका—

इस 'टोलोमिया' नामक प्रदेश में दंड-भोग से अपने पापों का प्रायश्चित कर रही है। इतना सुनने पर दान्ते उसे किसी भी प्रकार की सहायता देने से इन्कार कर देता है और अपने पाठकों से उसकी सहायता न करने के लिये क्षमा मांगता है कि ऐसी अधम आत्माओं के साथ हमारा दुर्व्यवहार ही हमारे सर्वाधिक सौजन्य का परिचायक है।

पर्व चौंतीस—

अब वर्जिल दान्ते का ध्यान एक ऐसी वस्तु की ओर आकर्षित करता है जो दूर से हवा से चलने वाली एक चक्की-सी दिखलाई पड़ती है। इसके बाद दान्ते को उस तीव्र और निर्मम झोंके से थोड़ा-बहुत बचाने के विचार से वह उसे अपने पीछे कर लेता है और सैकड़ों पापात्माओं के निकट से वेग से निकल जाता है। उसी क्षण दान्ते के एक प्रश्न के उत्तर में वह उसे सूचित करता है कि इस प्रदेश का नाम 'जुदेका' है। यहाँ अपने मन को दृढ़ और कड़ा कर लेने के बाद ही अगला क़दम उठाना और बढ़ाना चाहिये।

× ×

शीघ्र ही दान्ते सर्दी से इतना अधिक जकड़ जाता है कि उसे लगता है कि वह हवा में लटका हुआ जीवन और मृत्यु के आकाश के तारे गिन रहा है और उनके बीच की दूरी तय कर रहा है। दूसरे ही क्षण उसकी निगाह नरक के इन निचले प्रदेशों के अधिपति शैतान पर पड़ती है! वह कमर तक बर्फ़ में गड़ा हुआ है और उसके चमगादड़-जैसे परों की फड़फड़ाहट से ही इन प्रदेशों में वायु का संचालन सम्भव है। उसके दृश्य-मात्र से उसके होश उड़ने-से लगते हैं, किन्तु वह सम्हलता है और शैतान का वर्णन करते समय कहता है कि इस शैतान के शरीर और एक राक्षस के आकार-प्रकार में वही भेद है जो कि राक्षस और एक सामान्य मनुष्य की देह में! इतना ही नहीं, प्रत्युत वह सोच नहीं पाता कि शैतान को अपनी किस वस्तु पर गर्व है, क्योंकि यदि वह उतना सुन्दर भी होता जितना कि असुन्दर है तो भी उसकी ईश्वर की निन्दा, उसका विरोध और पापों का प्रचार और प्रतिपादन समझ में आता, किंतु साधारणतया तो किसी असाधारण कारण की कल्पना नहीं की जा सकती :—

'घोर असुन्दर होने पर भी
कैसे कर लेता है
अपने स्रष्टा का वह घोर विरोध,
उसकी सत्ता का उपहास!
बात समझ में आती यदि वह
उतना ही सुन्दर होता औ' फिर ढाता सबपर तूफ़ान,
दुख के, संकट के तूफ़ान!'

इसके बाद दान्ते शैतान के तीन सिरों का वर्णन करता है जो, क्रम से, पीले, सफ़ेद और हरे हैं। वह अपने एक मुँह में 'जूडास' को, दूसरे में 'ब्रूटस' को और तीसरे में 'कैसियस' को

ने पृथ्वी पर उन्हें सौंपी-गई धन-सम्पत्ति को अपना समझ लिया और उसे पचा लिया। ये सब इस खाई के उस गहरे, गाढ़े उबलते हुये द्रव्य में डूब उतरा रहे हैं, जिसकी दुर्गन्धि से दान्ते अनुमान करता है कि वह धूना है और जिसके कारण हठात् ही उसे वेनिस का वह स्थान याद आ जाता है, जहाँ जलयानों का निर्माण होता है। इसी समय वर्जिल दान्ते का ध्यान एक राक्षस की ओर आकर्षित करता है जो एक पापी को नचाकर, सिर के बल खाई में झोंक देता है और बिना इसकी चिन्ता किये कि उसका क्या हुआ, तुरन्त ही किसी दूसरे पापी की खोज में चल पड़ता है। दान्ते भरी-आँखों से यह दृश्य देखता है और यह भी कि किसी भी पापी का सिर ऊँची-काली लहरों के ऊपर उठा और उभरा कि कितने ही दैत्य झपटे और उन्होंने अपने लम्बे बर्छों की सहायता से उसे एक बार फिर डुबा दिया।

इधर दान्ते इन दृश्यों में तन्मय रहता है और उधर वर्जिल आशंकित हो उठता है। वह नहीं चाहता कि उसका शिष्य भी इन पतित प्रेतों का शिकार हो अतएव वह उसे निर्देश करता है कि वह पहले पुल के गुम्बज के पीछे छिप जाय और तब वहाँ की सारी विषम और दारुण परिस्थितियों का अध्ययन करे। दान्ते उस स्थान में छिप जाता है, किन्तु शीघ्र ही दूर के राक्षस की गरुड़-दृष्टि उस पर पड़ जाती है, जो उसे लक्ष्य कर उस पर आक्रमण करना चाहता है। परन्तु वर्जिल बहुत उग्र हो उठता है और घोषित करता है कि उनकी उस स्थान पर उपस्थिति की सारी ज़िम्मेदारी ईश्वरीय इच्छा और ईश्वर पर है। वह अपना यह वाक्य इतने प्रभावोत्पादक ढंग से, इतने सशक्त शब्दों में कहता है कि उस राक्षस के हाथ से बर्छा छूट-गिरता है, वह शक्तिहीन हो उठता है और उन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा पाता! अपने वाक्य का यह प्रभाव देखकर वर्जिल दान्ते को उस पुल की मीनार के पीछे से लौटा लेता है। इसके बाद वह बहुत कठोर और रूखे शब्दों में उस राक्षस को आज्ञा देता है कि वह अगुआ बने और अपने विकृत-मुख साथियों की अनेक श्रेणियों के बीच से सकुशल निकालकर उन्हें उस ओर पहुँचा दे। राक्षस वर्जिल की आज्ञा का पालन करता है, किन्तु जैसे ही गुरु-शिष्य उन पतित-आत्माओं के बीच से निकलते हैं, वे उन्हें देखकर तरह-तरह की वीभत्स और भयानक मुद्रायें बनाती हैं।

पर्व बाईस–

कितने ही युद्धों में सक्रिय-रूप से भाग लेने के कारण सैन्य-संचालन की सुव्यवस्था से परिचित होने के बाद भी इस समय, सहसा ही, दान्ते यह स्वीकार करता है कि इन दैत्य-सैनिकों से अधिक सुपरिचालित और सिद्ध-हस्त सैनिक उसने नहीं देखे। वह लक्ष्य करता है कि यथा समय इन दलों का एक सदस्य आगे आता है और या तो कितने ही नये आये हुये पापियों को कोलतार की उस खाई में ढकेल देता है या अपना बर्छा भोंक कर किसी पापी को उस खाई के ऊपर उठा लेता है, उसे कुछ देर तक झकझोरता है और फिर नचाकर उसमें फेंक देता है। वर्जिल इस दृश्य से करुणार्द्र हो-उठता है और एक पापात्मा से कुछ पूछता है। वह उत्तर देती

'परगेटोरियो' या वैतरणी–

पर्व एक–

नरक या प्रेतपुरी का वर्णन करने के बाद दान्ते उस प्रदेश का गुणगान करना चाहता है जहाँ मानवीय पापात्मायें अपने पापों से मुक्त होकर शुद्ध होती हैं और स्वर्ग में प्रवेश करने की तैयारी करती हैं। उसे यह कार्य बड़ा दुरूह मालूम होता है, अतएव वह काव्य, संगीत और कला की (यूनानी) अधिष्ठात्री 'म्यूज़ेज़' से सहायता की याचना करता है। अब वह अपने चारों ओर दृष्टि डालता है और अपने को एक बड़े प्यारे, नीलम संसार में पाता है। वह कामना करता है कि वह युग-युग तक नीलम की भाँति ही प्रतिक्षण रंग बदलने वाले इस मोहक सांसारिक-सौन्दर्य के रस का पान करता रहे। उसकी इस मोहमयी कामना का कारण केवल यह है कि वह इसके पूर्णतया विरोधी, अंधकारमय जगत से अभी-अभी बाहर निकला है।

सवेरा होने वाला है कि इसी क्षण उसकी दृष्टि चार मूलगत सदाचरणों और सद्गुणों के प्रतीक 'दक्षिणी क्रॉस' नामक चार सितारों पर जा ठहरती है और वह ईश्वर-भक्ति मिश्रित भय से सिहर उठता है। वह कुछ देर तक इन तारों पर कुछ विचार करता रहता है, किन्तु शीघ्र ही अपने सहचर के लिये चिंतित हो उठकर उत्तर की ओर घूम पड़ता है और देखता है कि वर्जिल इस प्रदेश के संरक्षक 'कैटो' से वार्त्तालाप कर रहा है। वह शैतान के प्रदेश में उससे मिला है, उसके साथ आया है और अब आश्चर्य प्रकट कर रहा है कि वह इतनी सरलता से उस चिरबन्धन से मुक्त हो गया!

× ×

इसीबीच में वर्जिल स्वयं अभिवादन कर दान्ते को भी अभिवादन करने का संकेत करता है। कहना न होगा कि इसी स्थिति में लैटिन-महाकवि 'कैटो' को सारी कथा सुना जाता है कि कैसे स्वर्ग की एक स्त्री ने दान्ते को किंकर्त्तव्यविमूढ़ देखकर उससे प्रार्थना की कि वह जाये और उसकी सहायता करे, और वह भी इस प्रकार कि नरक में उसका नेतृत्व करने के बाद वैतरणी में पापात्माओं के पापों का धुलना और उनका शुद्ध होना उसे दिखला और समझा दे! इतना-कह जाने के बाद वह कहता है कि उसे सौंपे गये कार्य का पूर्ण-रूप से सफल होना तभी सम्भव है जब वह उसे अपने संरक्षित प्रदेश में प्रवेश करने की अनुमति दे दे! 'कैटो' इतनी मधुर शब्दावली से द्रवित हो उठता है और वर्जिल से कहता है कि वह अपने मुख के करुण

ज़ो इस समय इस गुरु, जघन्य अपराध के कारण ही यह यातना भोग रहा है। इतना ही नहीं, यह भी निश्चित है कि उसे कुचलकर, उसके चौरस-पड़े शरीर के ऊपर से प्रेतात्माओं का दल-का दल निकलेगा ! यह पाप-पंगु व्यक्ति, जिससे दान्ते कितनी ही देर तक बात करता है, उसे सूचित करता है कि ईसा को घृणा की दृष्टि से देखने वाले, उसकी अवमानना करनेवाले और उसके लिये दंड नियत करनेवाले 'अनेनायज़' जैसे दंड-विधान-समिति के कितने ही दूसरे सदस्य घेरे के दूसरे भागों में हैं।

थोड़ी देर के बाद वर्जिल अनुमान करता है कि इतनी देर तक इस प्रदेश को देखने से दान्ते का जी अवश्य ही भर गया होगा, अतएव वह बाहर निकलने की राह के लिये उत्सुक हो उठता है। शीघ्र ही एक दैत्य आता है और एक सीधे, चढ़ाईवाले रास्ते की ओर संकेत कर देता है !

पर्व चौबीस–

दोनों इसी मार्ग का अनुकरण करते हैं, किन्तु यह रास्ता इतना ऊबड़-खाबड़ है कि वर्जिल दान्ते को आधा साध लेता है और इस प्रकार आगे बढ़ने में उसकी सहायता करता है। यों हाँफते हुए जैसे कि थके होने के साथ-साथ, वे उस प्रान्त की जानकारी के लिये भी आवश्यकता से अधिक उत्सुक हों, वे एक पहाड़ी पर पहुँचते हैं जिसके नीचे इस प्रदेश की सातवीं खाई है। यह असंख्यक डाकू-आत्माओं का निवास-स्थान है, जो कि इस समय भयानक-रूप से भीषण, हिंस्र अजगरों के शिकार बन रहे हैं, और जिनके हाथ पीछे की ओर सांपों की रस्सियों से जकड़े हुये हैं। ये अजगर इन पापात्माओं को लगातार डसते हैं और इतना डसते हैं कि वे राख हो जाती हैं, किन्तु दूसरे ही क्षण 'फ़ेयनिक्स'[1] की भाँति ही उठ बैठती है और फिर वही यातनायें भोगती हैं। दान्ते इस दृश्य से सिहर उठता है। अब वह इनमें से एक दस्यु से बातें भी करता है ! वह अपने दुष्कृत्यों का वर्णन करने के बाद फ़्लोरेंस-विषयक कुछ भविष्य-वाणी करता है।

पर्व पच्चीस–

वह इतना ही कहकर नहीं रुकता, प्रत्युत अनेक रूप में ईश्वर की निन्दा करता है। उसकी यही चेष्टा चलती रहती है कि साँपों का एक दल उस पर आघात करता है। वह इनसे पिंड छुड़ा कर निकल भागना चाहता है, किन्तु दुर्भाग्य से आधे मनुष्य के और आधे घोड़े के (शरीरवाले) एक अद्‌भुत नर-पशु की पकड़ में आ जाता है ! वह उसे घेर कर तरह-तरह से सताता है। वर्जिल बतलाता है कि इस अद्‌भुत प्राणी का नाम 'कैकस' है।

इसके बाद दोनों महाकवि और आगे बढ़ते हैं और तीन ऐसे अपराधियों को देखते हैं,

[1] अमरता की प्रतीक विदेशी पुराणों की एक चिड़िया जिसके विषय में कहा जाता है कि वह जल-मरने के बाद एक बार फिर जी-उठी थी और फिर ५०० वर्ष तक जीती रही थी।

कि वे अब शुद्ध स्वर्ग के लिये तैयार हो और अन्तिम बार वहाँ पहुँच कर अपनी आँखों से अन्धकार का वह पर्दा हटा दें जिसने कि अब तक ईश्वर को उनकी आँखों से ओझल कर रखा है। इतना सुनकर सब ही आत्मायें कहारों के एक झुंड की भाँति ही तितर-बितर हो जाती हैं और पहाड़ पर चढ़ना आरम्भ कर देती हैं। थोड़ा देर बाद वर्जिल और दान्ते भी धीरे-धीरे उनका अनुकरण करते हैं!

पर्व तीन—

रास्ता टेढ़ा और ढालू है, अतएव दान्ते को बड़ा कष्ट होता है और यह कष्ट कई गुना हो उठता है जब वह देखता है कि केवल उसी की परछाईं पृथ्वी पर पड़ रही है। वह समझता है कि वर्जिल ने उसका साथ छोड़ दिया, किन्तु मुड़कर देखते ही वह उसे अपने पीछे-पीछे आता हुआ पाता है! वर्जिल एक क्षण में ही उसकी अधीरता समझ जाता है और उसे बतलाता है कि शरीर-मुक्त आत्माओं की छाया पृथ्वी पर नहीं पड़ा करती! इस तरह बातें करते-करते वे पहाड़ के शिखर पर आ पहुँचते हैं और उसके भयंकर रूप में ढालू, ऊबड़-खाबड़, चट्टानी किनारों को देखकर उनका साहस टूटने-लगता है। वे एक दरार की खोज में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाते हैं ताकि उसकी सहायता से ऊपर चढ़ सकें, किन्तु सारा श्रम व्यर्थ जाता है! तुरंत ही सहसा वे देखते हैं कि दूर से बायीं ओर से मुमुक्षु आत्माओं का एक दल धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ा-आ रहा है। शीघ्र ही वह उनके पास आ-जाता है और बहुत विनम्र होकर दान्ते से रास्ता पूछता है। दान्ते इस दल का बड़ा मनोरंजक वर्णन करता है। वह कहता है कि दो तीन आत्मायें इस प्रकार इस भाग्यशाली दल के आगे-आगे चलती हैं और बाक़ी इस तरह उनके पीछे-पीछे जैसे कि भेड़ों के एक बड़े दल से दो-तीन भेड़ें छूट जायें, और दौड़-दौड़ कर आगे हो जायें किंतु शेष भयभीत-सी पृथ्वी पर आँख और नाक झुकाये हुये बिल्कुल वही करें जो कि उनकी नेता-भेड़ें करें मानो यदि वे रुक जायें तो वे उन्हें चारों ओर से घेर कर खड़ी हो जायें और इस प्रकार यह प्रमाणित कर दें कि वे बड़ी सरल और शान्त हैं, यहाँ तक कि वे यह भी नहीं जानना चाहतीं कि उन्होंने उनका साथ क्यों छोड़ दिया! अस्तु—

जो भी हो इस दल की सारी आत्मायें एक जीवित मनुष्य को देख कर चौंक-उठती हैं, किन्तु जब वर्जिल उन्हें सूचित करता है और विश्वास दिलाता है कि दान्ते ईश्वरीय इच्छा के कारण ही यहाँ आया है तो वे बड़ी कृतज्ञतापूर्वक सामने के सीधे और सकरे रास्ते की ओर संकेत कर देती हैं। यह रास्ता 'परगेटरी' के प्रवेश-द्वार का काम देता है। इसके बाद ही उस बड़े दल का एक सदस्य दल के बाहर आता है और दान्ते से पूछता है कि क्या उसे नेपिल्स और सिसिली के राजा 'मान.फ्रेड' की याद नहीं है, और क्या वह उसे नहीं पहिचानता! इतना ही नहीं, वह उससे अनुरोध करता है कि दुनिया में लौटने पर वह राजकुमारी से मिले और कहे कि उसके पिता को अपने पापों के लिये बड़ा दुःख है, वह उनके लिये बड़ा पश्चाताप कर रहा है और उसने उससे आग्रह किया है कि वह स्वयं भी ईश्वर से उसके परीक्षा-काल के कम हो जाने की प्रार्थना करे।

इस समय उनके पास से जाती हुई आत्माओं में से कितनी ही अपने नाम बतलाती है और दान्ते चौंक उठता है क्योंकि इनमें वे पापी भी शामिल हैं जिन्होंने इटैलियन-राज्यों के पारस्परिक संघर्ष में नेतृत्व किया है। इतना ही नहीं, वह 'बरट्रेंड द बॉर्न' को देखते ही भय से काँपने लगता है क्योंकि उसे इंग्लैंड के हेनरी द्वितीय के विरुद्ध उसके पुत्र को लड़ने के लिये भड़काने के कारण इस समय दण्ड मिल रहा है। वह अपना सिर अपने ही हाथों में इस प्रकार लटका कर ले-चल रहा है, जैसे कि कोई साधारण व्यक्ति लालटेन लेकर चले।

पर्व उन्तीस—

अब इस घेरे के लोमहर्षक दृश्यों को इस प्रकार देखते-देखते दान्ते को लगता है कि वह अचेत हो जायेगा। उसे ज्ञात होता है कि इसकी परिधि २१ मील है। इसके बाद ही वह दूसरे पुल पर आ जाता है। यहाँ उसे लगता है जैसे कि किसी अस्पताल-की-सी आहों कराहों से उनके कान शीघ्र ही बहरे हो जायेंगे। इस दसवीं खाई की गहराई में आँख गड़ाने पर उसे कितने ही प्रकार के रोगों के रोगी दिखलाई पड़ते हैं और उसे शीघ्र ही पता चलता है कि इनमें कितने ही धूर्त और असंख्यक रसायन-विद् अपने पापों का दण्ड भोग रहे हैं। इनमें दान्ते एक ऐसे आदमी को भी लक्ष्य करता है जो मनुष्यों को उड़ना सिखा देने का दावा करने के कारण अपने जीवन-काल में जीवित जला दिया गया, और इस प्रकार उसके मरने के बाद न्यायाधीश को उसका यह दावा को इतना बेहूदा और इतना हास्यास्पद जंचा कि उसने बिल्कुल निर्दय हो कर उसे भी वही दंड दिया जो कि उसने जादूगरों, रसायन-विदों और दूसरे पाखंडियों और बहाने बाज़ों के लिये नियत और निश्चित कर-रक्खा था!

पर्व तीस—

इसी समय दान्ते का ध्यान वर्जिल कितने ही पापियों की ओर आकर्षित करता और उन्हें संकेत से दिखलाता है। इनमें से कुछ अपने जीवन-काल में वंचक और ठग थे, कुछ माया-जाल और पाखंडों में अभ्यस्त थे और शेष दूसरों के विरुद्ध अपवादों के गढ़ने और फैलाने में दक्ष। इनमें वह स्त्री भी दिखलाई पड़ती है जिसने जोसेफ़ और सिनान[1] पर कितने ही आरोप लगाये थे, जिन्होंने ट्राजनों से लकड़ी के घोड़े को शहर में ले जाने का आग्रह किया था।

वे अपराधी इन यातनाओं पर भी सन्तोष न कर एक-दूसरे पर क्रूर और निर्मम व्यंग्य-बाणों का प्रहार कर रहे हैं और पारस्परिक-कष्टों और संकटों को कई गुना और असह्य बना रहे

विशेष—पिछले पृष्ठ में हज़रत मोहम्मद का चर्चा आयी है। इस सम्बंध में इतना कह देना आवश्यक है कि दान्ते के समय में साम्प्रदायिक भावना अथवा वैयक्तिक जाति-चेतना लोगों में इतनी अधिक जागरूक थी की हज़रत मोहम्मद को भी दान्ते का शिकार बनना पड़ा! हमें इसका क्षोभ है, किन्तु उसकी अपनी विवशता के नाते हमें इस महान कलाकार को क्षमा ही कर देना होगा!

[1] एक यूनानी दास।

प्रियजनों के विषय में कितने ही प्रश्न करती हैं। ये सभी पापात्मायें वे हैं जो हिंसात्मक मृत्यु के बाद भी इस बात में आस्था रखती हैं कि एक-न-एक दिन उन पर अवश्य ही भगवद्-कृपा होगी और ऐसा सही भी है। दान्ते इनमें से किसी को भी नहीं पहिचानता अतएव वह मौन होकर उनकी भयानक, हिंसात्मक मौतों के वर्णन सुनता है और वचन देता है कि वह उनके सभी मित्रों और सभी प्रियजनों से उनकी चर्चा करेगा और उनके सौभाग्यों की सराहना भी!

पर्व छः—

इस बीच में वर्जिल आगे बढ़ता रहता है अतएव आवश्यक हो जाता है कि दान्ते भी उसका साथ दे, यद्यपि ऐसा होना बहुत सरलता से सम्भव नहीं है, चूंकि वे आत्मायें रह-रहकर उसके वस्त्र खींचती हैं और चाहती हैं कि वे जो कुछ कह रही हैं वह सुन ले! अंत में स्वयं अपने काल के प्रसिद्ध लोगों और प्रसिद्ध ऐतिहासिक महान पुरुषों की दुखभरी गाथायें सुनते-सुनते उसका हृदय फटने लगता है और वह वर्जिल से प्रश्न करता है कि क्या प्रार्थनाओं की विधि के विधान में कुछ परिवर्तन नहीं हो सकता? इस पर वर्जिल उसे बतलाता है कि सचा प्रेम एक दूसरी ही विभूति है, उसके द्वारा कितनी ही असम्भावनायें सम्भावनाओं में बदली जा सकती हैं और कितनी ही अनहोनी घटनायें घटाई जा सकती हैं। इतना ही नहीं, वह कहता है कि शीघ्र ही वह 'बियेट्रिस' से मिलेगा और तब वह देखेगा कि उसका यह कथन अक्षरशः सत्य है! इस प्रकार यह आशा बंधते ही कि वह अपनी प्रेमिका से आमने-सामने बातें कर सकेगा, दान्ते चंचल हो उठता है और वर्जिल से प्रार्थना करता है कि वह और वेग से आगे बढ़े! कहना न होगा कि उस के थके हुये पैरों में जैसे पर लग जाते हैं। इसी समय वर्जिल दान्ते का ध्यान एक अलग खड़ी हुई पापात्मा की ओर आकृष्ट करता है। वह उसे तुरन्त ही पहिचान लेता है। वह कवि 'सॉरदेल्लो' है! वह बड़ा शोक प्रकट करता है क्योंकि उसका (और दान्ते का भी) निवास-नगर मेन्तुआ इस समय राजनीतिक उथल-पुथल और चढ़ावों-उतारों के कारण उसी प्रकार डगमगा उठा और अस्त-व्यस्त हो-उठा है जैसे कि एक नाविकहीन पोत तूफ़ान में पड़ जाये और उसके अंजर-पंजर ढीले हो जायें!

पर्व सात—

यह बातचीत चलती रहती है कि वर्जिल 'सॉरदेल्लो' से कहता है कि चूंकि उसमें निष्ठा, श्रद्धा, आस्था और विश्वास की कमी है अतएव उसने आशा त्याग कर यह सोच लिया है कि स्वर्ग तो उसे मिलने से रहा! इतना सुनते ही कवि बड़ी श्रद्धा और भक्ति से उसके एकदम समीप आ-खड़ा होता है और कहता है कि वह तो 'लैटियम' की श्री एवं मर्यादा हैं, उसे इसप्रकार की धारणा शोभा नहीं देती। इसके बाद ही वह एक बार फिर बड़े आदर से पूछता है कि वह आ कहां से रहा है! इस पर वर्जिल सारी कथा बतला-जाता है कि कैसे किसी स्वर्गीय प्रेरणा से

उसके पैर के नीचे आ जाय ! वर्जिल की चेतावनी सुनते ही वह अपने पैरों पर दृष्टि डालता है और तब उसे ज्ञात होता है कि वह एक ऐसे हिम-सागर पर खड़ा है, जिसमें असंख्यक पापी फँसे पड़े हैं, और जिनके केवल सिर ही बाहर नज़र आते हैं ! इतना ही नहीं, वह यह भी देखता है कि उन पापियों के गालों पर लगातार बहने वाले आँसू हिम का रूप धारण कर चुके हैं और इस प्रकार उनके सिर भी जैसे तुषार से ढक गये और उसमें गड़ गये हैं।

दान्ते अब पापियों की ओर ध्यान से देखता है और उसकी दृष्टि एक-दूसरे से इस प्रकार सटे खड़े दो पापियों पर पड़ती है जिनके सिर के बाल एक दूसरे में गुंथकर एक हो चुके हैं। वह उत्सुक हो उठता है और उनका परिचय पाना चाहता है। उसे मालूम होता है कि वे दो सगे भाई हैं, जिन्होंने उत्तराधिकार के मामले में झगड़ कर एक दूसरे को मार डाला है। वह इस विशिष्ट अपराध के अपराधी का परिचय पाकर कुछ चौंक उठता है और तभी उसे बतलाया जाता है कि प्रेतपुरी के इस विभाग का नाम 'कैना' है। यह पतित से पतित हत्यारों का प्रदेश है और इसमें भी नर्क के अन्य प्रदेशों की भाँति ही अनगिनत पापात्माओं की भीड़ है।

अब वह निर्देशक के साथ इस हिम-तल पर आगे बढ़ता है कि उसका पैर फिर झील से बाहर निकले एक सिर से टकरा जाता है। वह चौंक उठता है, उससे कुछ पूछना चाहता है और इसके लिये वर्जिल की अनुमति चाहता है। वह आज्ञा दे देता है। दान्ते प्रश्न करता है। वह अपराधी पहले तो कुछ बोलने से इन्कार करता है, किन्तु, जब दान्ते केवल यह कहकर ही नहीं रह जाता कि यदि वह इस प्रकार मौन रहा तो वह उसके सिर के सारे बाल खींच कर नोच डालेगा, प्रत्युत वह उसके बालों को दो-चार झटके भी देता है तो, वह मुखरित होता और स्वीकार करता है कि वह एक विश्वासघाती राजद्रोही है। वह यह भी बतलाता है कि वह स्थान 'एँटिनोरा' नामक प्रदेश के सबसे निचले घेरे का दूसरा विभाग है जिसमें उस-जैसे अगणित पापी अपनी करनी का फल भोग रहे हैं।

पर्व तैंतीस—

वह अपनी बात पूरी करता ही है कि दान्ते की दृष्टि एक दूसरे पापी पर पड़ती है जो अपने किसी साथी का सिर बड़े चाव से काट-कुतर कर खा रहा है। वह इस दृश्य से घबड़ा-उठता है किन्तु वर्जिल उसे धैर्य बंधाने के बाद बतलाता है कि इस मानव-मांस-भक्षी का नाम 'काउन्ट-उगोलिनो डे गेराडेस्की' है ! इसे उसके राजनीतिक साथियों ने प्रमुख पादरी रूजियेरो के नेतृत्व में बहुत छल-छद्म से गिरफ्तार करने के बाद उसके दो बेटों और दो पोतों के साथ पीसा की फ़ैमीन-मीनार में बन्द-कर मार डाला था। इतना सुनने के बाद दान्ते जिज्ञासु दृष्टि से 'काउन्ट' की ओर देखता है जैसे कि वह उसके मुंह से उसकी आत्म-कथा सुनना चाहता हो ! काउन्ट उसका मतलब तुरन्त ही समझ लेता है और उसकी अतीत की स्मृतियाँ हरी हो-उठती हैं। सहसा ही उसका दिल भारी हो जाता है, उसकी आँखें भर-उठती है और उसका गला रूँध जाता है। फिर भी, वह पहले उस दिन के भय और उस दिन की आशंका का वर्णन करता है जिस दिन

दूसरे ही क्षण वे सारी आत्मायें संध्या की ईश-वन्दना में तल्लीन हो जाती हैं और इसकी समाप्ति एक इतने कोमल सरस और भक्ति भावना से ओत-प्रोत मधुर गीत से होती है कि दान्ते और वर्जिल दोनों की चेतन-शक्तियां भावनाओं के लहराते हुये सागर में डूबने-उतराने लगती हैं। इस प्रार्थना की समाप्ति पर, सहसा ही, सारी आत्माओं की दृष्टि प्रकाश की ऊंचाई पर जा टिकती है, जैसे कि इस प्रकार टकटकी लगा कर वे अपनी युग-युग की आशा का साकार संसार देख लेना चाहती हैं। एक क्षण बाद ही गुरु-शिष्य देखते हैं कि दो हरित वसन-धारी देवदूत, जिनके हाथों में लपटों के समान हीं दहकती हुई तलवारें हैं, आकाश से उनकी घाटी की ओर आये और उसके दोनों किनारों पर के टीलों पर उतरे! ये देवदूत वे स्वर्गीय योद्धा हैं जिन्हें ईसा की माता 'मेरी' ने 'ईडेन'[1] के समान ही अलौकिक इस घाटी में भेजा है ताकि ऐसा न हो कि रात्रि के समय कोई साँप वहाँ रेंग आये और उस पर किसी की निगाह न पड़े! 'सॉरदेल्लो' यह सब लक्ष्य करता है और उन्हें एक दूसरे विश्राम-स्थल में ले जाता है, जो कि पत्तियों से भली भाँति सुरक्षित है। यहाँ अयाचित् ही दान्ते की भेंट एक अपने ऐसे मित्र से होती है, जिसके विषय में उसकी धारणा थी कि वह नरक की यातनायें सह रहा है। यह मित्र उसे बतलाता है कि अपनी पुत्री की प्रार्थनाओं के कारण ही ऐसा है कि वह इस स्थान पर है और नरक में घुट-घुट कर उसका दम नहीं निकल रहा है; यों तो उसकी पत्नी बड़ी निकम्मी निकली, उसने उसके मरते ही दूसरा विवाह कर लिया! वह इतना कह कर मौन हो जाता है।

× ×

इस समय सहसा ही दान्ते की निगाह उन तीन तारों पर जा गड़ती है जो कि आस्था, आशा और उदारता एव, दानशीलता के प्रतीक हैं, किन्तु दूसरे ही क्षण 'सॉरदेल्लो' उसे वह साँप संकेत से दिखलाता है जिसे देखते ही देवदूत झपट-पड़ते हैं और मार डालते हैं।

पर्व नव—

अब दान्ते गहरी नींद में सो जाता है, किन्तु, जैसे ही ज्योति की प्रथम किरण रात की काली चादर में से पृथ्वी पर झांकने का यत्न करती है, वह एक स्वप्न देखता है कि एक सोने के पंख का गरुड़ आया और उसे एक धधकती हुई आग की ओर ले गया, किन्तु इसमें जल कर वे दोनों ही भस्म हो गये! एक क्षण बाद ही वह इस रोमांचकारी स्वप्न से चौंककर उठ-बैठता है और अपने को एक दूसरे ही स्थान में पाता है, जहाँ वर्जिल के अतिरिक्त उसके आसपास और कोई नहीं है। यही नहीं, वह यह भी लक्ष्य करता है कि इस समय पूरी धूप चढ़ आई है यानी सूर्य को उदय हुये कम-से-कम दो घंटे हो चुके हैं! वर्जिल उसे हतबुद्धि देख कर रहस्य बतलाता है और विश्वास दिलाता है कि 'संत लूशिया'[2] की कृपा से वह निद्रावस्था में ही परगेटरी के प्रवेश-द्वार पर आ-पहुँचा है।

---

[1]आदम और ईव का स्वर्ग-सा बाग़— [2]ईश्वरानुकम्पा का एक प्रकार—

इस 'टोलोमिया' नामक प्रदेश में दंड-भोग से अपने पापों का पायश्चित कर रही है। इतना सुनने पर दान्ते उसे किसी भी प्रकार की सहायता देने से इन्कार कर देता है और अपने पाठकों से उसकी सहायता न करने के लिये क्षमा मांगता है कि ऐसी अधम आत्माओं के साथ हमारा दुर्व्यवहार ही हमारे सर्वाधिक सौजन्य का परिचायक है।

पर्व चौंतीस—

अब वर्जिल दान्ते का ध्यान एक ऐसी वस्तु की ओर आकर्षित करता है जो दूर से हवा से चलने वाली एक चक्की-सी दिखलाई पड़ती है। इसके बाद दान्ते को उस तीव्र और निर्मम झोंके से थोड़ा-बहुत बचाने के विचार से वह उसे अपने पीछे कर लेता है और सैकड़ों पापात्माओं के निकट से वेग से निकल जाता है। उसी क्षण दान्ते के एक प्रश्न के उत्तर में वह उसे सूचित करता है कि इस प्रदेश का नाम 'जुदेका' है। यहाँ अपने मन को दृढ़ और कड़ा कर लेने के बाद ही अगला क़दम उठाना और बढ़ाना चाहिये।

× ×

शीघ्र ही दान्ते सर्दी से इतना अधिक जकड़ जाता है कि उसे लगता है कि वह हवा में लटका हुआ जीवन और मृत्यु के आकाश के तारे गिन रहा है और उनके बीच की दूरी तय कर रहा है। दूसरे ही क्षण उसकी निगाह नरक के इन निचले प्रदेशों के अधिपति शैतान पर पड़ती है! वह कमर तक बर्फ़ में गड़ा हुआ है और उसके चमगादड़-जैसे परों की फड़फड़ाहट से ही इन प्रदेशों में वायु का संचालन सम्भव है। उसके दृश्य-मात्र से उसके होश उड़ने-से लगते हैं, किन्तु वह सम्हलता है और शैतान का वर्णन करते समय कहता है कि इस शैतान के शरीर और एक राक्षस के आकार-प्रकार में वही भेद है जो कि राक्षस और एक सामान्य मनुष्य की देह में! इतना ही नहीं, प्रत्युत वह सोच नहीं पाता कि शैतान को अपनी किस वस्तु पर गर्व है, क्योंकि यदि वह उतना सुन्दर भी होता जितना कि असुन्दर है तो भी उसकी ईश्वर की निन्दा, उसका विरोध और पापों का प्रचार और प्रतिपादन समझ में आता, किंतु साधारणतया तो किसी असाधारण कारण की कल्पना नहीं की जा सकती :—

'घोर असुन्दर होने पर भी
कैसे कर लेता है
अपने स्रष्टा का वह घोर विरोध,
उसकी सत्ता का उपहास!
बात समझ में आती यदि वह
उतना ही सुन्दर होता औ' फिर ढाता सबपर तूफ़ान,
दुख के, संकट के तूफ़ान!'

इसके बाद दान्ते शैतान के तीन सिरों का वर्णन करता है जो, क्रम से, पीले, सफ़ेद और हरे हैं। वह अपने एक मुँह में 'जूडास' को, दूसरे में 'ब्रूटस' को और तीसरे में 'कैसियस' को

'डेविड'[1] 'दाऊद' के समक्ष नाच रहा है और एक में रोमन-राजा 'ट्रैजन'[2] अनाथों विधवा की प्रार्थना स्वीकार कर रहा है। वे यहीं पर आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि आत्माओं का एक दल उनकी ओर चला आ रहा है! इस दल का प्रत्येक सदस्य अपनी पीठ पर लदे बोझ के बोझ से दोहरा हुआ जा रहा है, [illegible] आगे बढ़ रहा है और पग-पग पर कराह उठता है – 'अब मैं अधिक नहीं सह सकता', मुझसे अब और नहीं सहा जाता!

दर्प अहंकार—

यह दुखी आत्माएँ इस बोझे के नीचे [illegible] झाड़-झाड़ कर अपने अहंकार के पाप का प्रायश्चित्त कर रही है और [illegible] की याद के गीतों में उस पर प्रार्थना करती है और दया, क्षमा और नम्रता की दुहाई देती है। दान्ते उनसे बहुत प्रभावित होता है और वह भी ईश्वर से उनकी मुक्ति के लिये विनय करता है। इसके बाद वह उनसे पूछता है कि क्या उसे कोई ऐसी सुविधा मिल सकेगी जिससे वह इस पर्वत से ऊपर जा सके। इस पर एक आत्मा उससे अपने साथ साथ आने को कहती है क्योंकि उस आत्मा का [illegible] शीघ्र ही दान्ते के अभीष्ट स्थान में निकलने वाला है। वह बेचारा बोझ के भार के कारण सिर नहीं उठा पाता किन्तु यह स्वीकार करता है कि पृथ्वी पर उसमें इतनी अति थी कि उसका दम्भ और पाखंड उसके साथियों के लिये असह्य हो उठा और, यही नहीं कि उन्होंने विरुद्ध विद्रोह किया प्रत्युत, उन्होंने उसे मार भी डाला। इतना सुनकर दान्ते उसका मुँह देखने के लिये झुकता है और देखता है कि वह एक साधारण-सा कलाकार है, जो यह दावा करता रहा है कि वह अपने ढंग का अकेला कलाकार है, संसार में उसका कोई दूसरा सानी नहीं। कहना न होगा कि इस समय उसे अपने इसी पाप का फल भोगना पड़ रहा है।

दान्ते इस साधारण कलाकार के साथ-साथ आगे बढ़ता है और वह बात-बात में अपने कितने ही सहयोगियों के नाम उसे गिना जाता है। इसी समय वर्जिल उसका ध्यान उसके पैर के नीचे के एक चबूतरे की ओर आकृष्ट करता है। दान्ते देखता है कि उस पर 'ब्रायरियस', 'निमरॉड' 'नायोबी' आदि उन सभी लोगों का नाम खुदा हुआ है, जिन्होंने अपने जीवनकाल में अपनी तुलना देवताओं से की थी, जो अपने मुँह से सुकृत्यों का गुणगान करते कभी थकते

[1] 'इज़रायल' प्रदेश का राजा और ईसा का पूर्वज, जो उसको प्रसन्न करने के लिये ही एक बार अपनी कमर में मामूली मलमल लपेटकर 'परम पिता' की पालकी के चारों ओर नाचा था।

[2] कहा जाता है कि रोमन-राजा ट्रैजन शिकार पर जा रहा था कि एक संकट-ग्रस्त बुढ़िया ने उसका रास्ता घेर लिया किन्तु वह जल्दी में था अतः उसने उसे आश्वासन दिया कि वह लौटने पर उसकी आवश्यक सहायता करेगा। इस पर बुढ़िया ने कहा है कि वह न लौटा तो? राजा ने यह सुना और उत्तर दिया कि यदि वह न लौटा तो भी उसकी जगह जो भी होगा उसकी फरियाद सुनेगा! किंतु इतना कहने के बाद ही उसने पता नहीं क्या सोचा और उसकी सहायता करना उसने अपना प्राथमिक कर्त्तव्य समझा।

'परगेटोरियो' या वैतरणी—

पर्व एक—

नरक या प्रेतपुरी का वर्णन करने के बाद दान्ते उस प्रदेश का गुणगान करना चाहता है जहाँ मानवीय पापात्मायें अपने पापों से मुक्त होकर शुद्ध होती हैं और स्वर्ग में प्रवेश करने की तैयारी करती हैं। उसे यह कार्य बड़ा दुरूह मालूम होता है, अतएव वह काव्य, संगीत और कला की (यूनानी) अधिष्ठात्री 'म्यूज़ेज़' से सहायता की याचना करता है। अब वह अपने चारों ओर दृष्टि डालता है और अपने को एक बड़े प्यारे, नीलम संसार में पाता है। वह कामना करता है कि वह युग-युग तक नीलम की भाँति ही प्रतिक्षण रंग बदलने वाले इस मोहक सांसारिक-सौन्दर्य के रस का पान करता रहे। उसकी इस मोहमयी कामना का कारण केवल यह है कि वह इसके पूर्णतया विरोधी, अंधकारमय जगत से अभी-अभी बाहर निकला है।

सवेरा होने वाला है कि इसी क्षण उसकी दृष्टि चार मूलगत सदाचरणों और सद्गुणों के प्रतीक 'दक्षिणी क्रॉस' नामक चार सितारों पर जा ठहरती है और वह ईश्वर-भक्ति मिश्रित भय से सिहर उठता है। वह कुछ देर तक इन तारों पर कुछ विचार करता रहता है, किन्तु शीघ्र ही अपने सहचर के लिये चिंतित हो उठकर उत्तर की ओर घूम पड़ता है और देखता है कि वर्जिल इस प्रदेश के संरक्षक 'कैटो' से वार्त्तालाप कर रहा है। यह शैतान के प्रदेश में उससे मिला है, उसके साथ आया है और अब आश्चर्य प्रकट कर रहा है कि वह इतनी सरलता से उस चिरबन्धन से मुक्त हो गया!

× ×

इसीबीच में वर्जिल स्वयं अभिवादन कर दान्ते को भी अभिवादन करने का संकेत करता है। कहना न होगा कि इसी स्थिति में लैटिन-महाकवि 'कैटो' को सारी कथा सुना जाता है कि कैसे स्वर्ग की एक स्त्री ने दान्ते को किंकर्त्तव्यविमूढ़ देखकर उससे प्रार्थना की कि वह जाये और उसकी सहायता करे, और वह भी इस प्रकार कि नरक में उसका नेतृत्व करने के बाद वैतरणी में पापात्माओं के पापों का धुलना और उनका शुद्ध होना उसे दिखला और समझा दे! इतना-कह जाने के बाद वह कहता है कि उसे सौंपे गये कार्य का पूर्ण-रूप से सफल होना तभी सम्भव है जब वह उसे अपने संरक्षित प्रदेश में प्रवेश करने की अनुमति दे दे! 'कैटो' इतनी मधुर शब्दावली से द्रवित हो उठता है और वर्जिल से कहता है कि वह अपने मुख के करुण

पर उसने बड़ी खुशी मनाई थी, अतएव इस समय वह उसी हृदयहीनता और कृतघ्नता का प्रायश्चित कर रही है। वह सोच नहीं सकती कि कोई खुली आँखों से उसके साथियों के बीच में इस प्रकार घूमे, इसीलिये दान्ते को देखकर बड़ा आश्चर्य करती है, और उसका परिचय पाना चाहती है। वह यह भी जानना चाहती है कि आखिर वह कैसे वहाँ तक पहुँच सका! अंत में सब कुछ सुनने-समझने के बाद वह उसके सम्मान में प्रार्थनायें गाती है और अनुरोध करती है कि वह उसके देशवासियों को आगाह कर दे कि वे व्यर्थ की महानता की आशाओं में न फंसे और व्यर्थ की ईर्ष्या का पाप न कमायें।

पर्व चौदह—

वे एक दूसरे पर झुकी हुई दो आत्माओं, जिनका ऊपर उल्लेख हो चुका है, दान्ते और वर्जिल को देखते ही एक-दूसरे से प्रश्न करती हैं कि आखिर ये कौन हो सकते हैं? वे इस प्रकार आपस में व्यस्त हैं कि रोम और फ्लोरेंस के नाम उनके कानों में पड़ते हैं और इनका उल्लेख होते ही वे गरम हो उठती हैं और कहती हैं कि इन टाइबर और आरनो नदी के किनारे रहने वालों का नैतिक-पतन घोर लज्जाजनक है।

× ×

थोड़ी देर बाद दान्ते अपने निर्देशक के साथ इस स्थान से आगे बढ़ता ही है कि उसे 'जो मुझे पायेगा मार डालेगा' आशय का विलाप सुनाई पड़ता है और उसके बाद धड़ाके की आवाज़ से उसके कान बहरे होने लगते हैं।

पर्व पन्द्रह—

इस तरह सदैव एक ही दिशा में इस पर्वत का चक्कर लगाते हुये दान्ते लक्ष्य करता है कि अब सूर्य डूबने वाला है! इसी समय पिछले चढ़ाऊ रास्तों में सब से कम ढालू रास्ते से एक तेजस्वी देवदूत उन्हें उस दूसरे तल्ले पर ले आता है, जहाँ कि क्रोधी अपने क्रोध नामक पाप का प्रायश्चित करते हैं। इस तल्ले पर चढ़ते समय वह देवदूत 'धन्य-धन्य हैं दयावान सब', और 'तुम तो भाग्यवान हो विजयी' बड़े कोमल स्वरों में गाता है और दान्ते की भौं से 'पा' कर दूसरा चिन्ह भी पोंछ देता है अर्थात् दान्ते को ईर्ष्या के पाप से भी मुक्त कर देता है। किन्तु जब दान्ते वर्जिल से आग्रह करता है कि वह उन सारी चीज़ों पर प्रकाश डाले तो वह उसे विश्वास दिलाता है कि जब उसकी भौं के शेष पाँच कलंक-चिन्ह भी पुंछ जायेंगे या मिट जायेंगे तो स्वयं बियेट्रिस उससे मिलेगी, वही उसकी उत्सुकता शान्त करेगी और उसकी शंका का समाधान भी।

× × ×

इस तीसरे तल पर दान्ते और वर्जिल अपने को कोहरे से घिरा हुआ पाते हैं। दान्ते इस धूमिल वातावरण में दृष्टि गड़ाने पर एक मन्दिर देखता है! इस मन्दिर में १२ वर्ष का किशोर

कि वे अब मुक्ति-दर्शन के लिये तैयार हो और अविलम्ब वहाँ पहुँच कर अपनी आँखों से अन्धकार का वह पर्दा हटा दें जिसने कि अब तक ईश्वर को उनकी आँखों से ओझल कर रक्खा है। इतना सुनकर स्वच्छन्द आत्मायें कबूतरों के एक झुंड की भाँति ही तितर-बितर हो जाती हैं और पहाड़ पर चढ़ना आरम्भ कर देती हैं। थोड़ी देर बाद वर्जिल और दान्ते भी धीरे-धीरे उनका अनुकरण करते हैं!

पर्व तीन—

रास्ता बीहड़ और ढालू है, अतएव चलने को बड़ा कष्ट होता है और यह कष्ट कई गुना हो उठता है जब वह देखता है कि केवल उसी की परछाईं पृथ्वी पर पड़ रही है। वह समझता है कि वर्जिल ने उनका साथ छोड़ दिया, किन्तु मुड़कर देखते ही वह उसे अपने पीछे-पीछे आता हुआ पाता है! वर्जिल एक क्षण में ही उसकी अधीरता समझ जाता है और उसे बतलाता है कि शरीर-मुक्त आत्माओं की छाया पृथ्वी पर नहीं पड़ा करती! इस तरह बातें करते-करते वे पहाड़ के शिखर पर आ पहुँचते हैं और उसके भयंकर रूप में ढालू, ऊबड़-खाबड़, पहाड़ी किनारों को देखकर उनका साहस टूटने-लगता है। वे एक दरार की खोज में इधर-उधर दृष्टि दौड़ाते हैं ताकि उसकी सहायता से ऊपर चढ़ सकें, किन्तु सारा श्रम व्यर्थ जाता है! दूसरे ही क्षण वे देखते हैं कि दूर से बाईं से मुक्तिकाम आत्माओं का एक दल धीरे-धीरे उनकी ओर बढ़ा-आ रहा है। शीघ्र ही वह उनके पास आ-जाता है और बहुत विनम्र होकर दान्ते से रास्ता पूछता है। दान्ते इस दल का बड़ा मनोरंजक वर्णन करता है। वह कहता है कि दो तीन आत्मायें इस प्रकार इस भाग्यशाली दल के आगे-आगे चलती हैं और बाक़ी इस तरह उनके पीछे-पीछे जैसे कि भेड़ों के एक बड़े दल से दो-तीन भेड़ें फूट भागें, और दौड़-दौड़ कर आगे हो जायें किंतु शेष भयभीत-सी पृथ्वी पर आँख और नाक झुकाये हुये बिल्कुल वही करें जो कि उनकी नेता-भेड़ें करें यानी यदि वे रुक जायें तो वे उन्हें चारों ओर से घेर कर खड़ी हो जायें और इस प्रकार यह प्रमाणित कर दें कि वे बड़ी सरल और शान्त हैं, यहाँ तक कि वे यह भी नहीं जानना चाहतीं कि उन्होंने उनका साथ क्यों छोड़ दिया! अस्तु—

यों भी हो इस दल की सारी आत्मायें एक जीवित मनुष्य को देख कर चौंक-उठती हैं, किन्तु जब वर्जिल उन्हें सूचित करता है और विश्वास दिलाता है कि दान्ते ईश्वरीय इच्छा के कारण ही यहाँ आया है तो वे बड़ी कृतज्ञतापूर्वक सामने के सीधे और सकरे रास्ते की ओर संकेत कर देती हैं। यह रास्ता 'परगेटरी' के प्रवेश-द्वार का काम देता है। इसके बाद ही उस बड़े दल का एक सदस्य दल के बाहर आता है और दान्ते से पूछता है कि क्या उसे नेपिल्स और सिसिली के राजा 'मान्फ्रेड' की याद नहीं है, और क्या वह उसे नहीं पहिचानता! इतना ही नहीं, वह उससे अनुरोध करता है कि दुनिया में लौटने पर वह राजकुमारी से मिले और कहे कि उसके पिता को अपने पापों के लिये बड़ा दुःख है, वह उनके लिये बड़ा पश्चाताप कर रहा है और उसने उससे आग्रह किया है कि वह स्वयं भी ईश्वर से उसके परीक्षा-काल के कम हो जाने की प्रार्थना करे!

देता है। वर्जिल उनके तर्क सुनता है और उनसे कुछ प्रश्न करता है। उत्तर में दो आत्मायें जो शेष का नेतृत्व कर रही है, अपने तर्कों की पुष्टि के लिये निष्कपट स्नेह के कितने ही उदाहरण उपस्थित करती हैं! इतने में ही कुछ और पापात्मायें वहां आ पहुँचती हैं, जिन्होंने अपने जीवन-काल में साहसिक घटनाओं से भरे हुए कर्मठ जीवन की अपेक्षा कायरतापूर्ण, आरामतलबी अधिक पसन्द की, किन्तु अब जिन्हें उसके लिए बहुत अधिक दुःख है!

पर्व उन्नीस—

अब रात हो जाती है। दान्ते सो जाता है। नींद में वह यूलिसीज के, परीशान करनेवाली 'साइरेन' नामक समुद्र-परी के और दर्शन' अथवा 'सत्य' के स्वप्न देखता है। इसके बाद सवेरा होता है और वर्जिल उसे दूसरी सीढ़ी के समीप ले आता है। यहां फिर एक दूत उन्हें मिलता है, जो, जैसे हवा में तैरा कर, उन्हें ऊपर पहुँचा देता है और दान्ते के माथे से एक और 'पा' का चिन्ह पोंछ देता है। इस बीच में वह बराबर गाता रहा है—

'जिसे दुःख है निज पापों पर
वही धन्य है, धन्य,
क्योंकि मिलेगी उसको शान्ति!'

× ×

इस पाँचवें घेरे में लोभी आत्मायें दण्डित होती हैं। उन्हें शृंखला से इस तरह धरती से जकड़ दिया जाता है कि धरती में और उनमें कोई अन्तर नहीं रह जाना और तब वे धरती को कितने ही समय तक अपने पश्चाताप के आंसुओं से भिगोती रहती हैं! ऐसे ही एक पापी से दान्ते बातें करने लगता है। वह बतलाता है कि वह 'पोप ऐडरियन पंचम' है! वह पोप बनने के एक महीने बाद ही मर गया और उसे अपने अतीत के कुकर्मों के लिये बहुत क्षोभ है! इतना सुनते ही दान्ते सम्वेदना से भर-उठता है और इस विशाल व्यक्तित्व का अभिवादन करता है। वह उत्तर में उससे आग्रह करता है कि धरती पर लौटने पर वह पोप के परिवार की स्त्रियों से कह दे वे उसके पापों का प्रायश्चित कर डालें क्योंकि वे अब भी उनके घर पर मंडरा रहे हैं। शीघ्र ही दान्ते आगे बढ़ता है।

पर्व बीस—

थोड़ी दूर जाने पर इस पांचवें तल के रास्तों पर बिछी हुई आत्माओं में दान्ते की निगाह फ्रांसीसी राजाओं की तीसरी पीढ़ी के प्रवर्त्तक 'ह्यू ग्यूइज़ कैपेट' पर पड़ती है। इसे वह इस अशिव पौधे की जड़ बतलाता है, क्योंकि इस पीढ़ी के कितने ही काले कारनामें उसकी निगाह से गुज़र चुके हैं! कहना न होगा कि अपनी प्रस्तुत रचना के कुछ ही वर्ष पहले उसने देखा और समझा कि 'फ़िलिप चुतुर्थ' ने धन के लिये 'पोप बॉनिफ़ेस' को मरवा डालने की यत्न किया और उसमें सफलता प्राप्त कर घोर पाप कमाया! ·····इस प्रकार घृणा से भर कर वह आगे

प्रियजनों के विषय में कितने ही प्रश्न करती हैं। ये सभी पापात्मायें वे हैं जो हिंसात्मक मृत्यु के बाद भी इस बात में आस्था रखती हैं कि एक-न-एक दिन उन पर अवश्य ही भगवद्-कृपा होगी और ऐसा सही भी है। दान्ते इनमें से किसी को भी नहीं पहिचानता अतएव वह मौन होकर उनकी भयानक, हिंसात्मक मौतों के वर्णन सुनता है और वचन देता है कि वह उनके सभी मित्रों और सभी प्रियजनों से उनकी चर्चा करेगा और उनके सौभाग्यों की सराहना भी!

पर्व छः–

इस बीच में वर्जिल आगे बढ़ता रहता है अतएव आवश्यक हो जाता है कि दान्ते भी उसका साथ दे, यद्यपि ऐसा होना बहुत सरलता से सम्भव नहीं है, चूंकि वे आत्मायें रह-रहकर उसके वस्त्र खींचती हैं और चाहती हैं कि वे जो कुछ कह रही हैं वह सुन ले! अंत में स्वयं अपने काल के प्रसिद्ध लोगों और प्रसिद्ध ऐतिहासिक महान पुरुषों की दुखभरी गाथायें सुनते-सुनते उसका हृदय फटने लगता है और वह वर्जिल से प्रश्न करता है कि क्या प्रार्थनाओं की विधि के विधान में कुछ परिवर्तन नहीं हो सकता? इस पर वर्जिल उसे बतलाता है कि सचा प्रेम एक दूसरी ही विभूति है, उसके द्वारा कितनी ही असम्भावनायें सम्भावनाओं में बदली जा सकती हैं और कितनी ही अनहोनी घटनायें घटाई जा सकती हैं। इतना ही नहीं, वह कहता है कि शीघ्र ही वह 'बियेट्रिस' से मिलेगा और तब वह देखेगा कि उसका यह कथन अक्षरशः सत्य है! इस प्रकार यह आशा बंधते ही कि वह अपनी प्रेमिका से आमने-सामने बातें कर सकेगा, दान्ते चंचल हो उठता है और वर्जिल से प्रार्थना करता है कि वह और वेग से आगे बढ़े! कहना न होगा कि उस के थके हुये पैरों में जैसे पर लग जाते हैं। इसी समय वर्जिल दान्ते का ध्यान एक अलग खड़ी हुई पापात्मा की ओर आकृष्ट करता है। वह उसे तुरन्त ही पहिचान लेता है। वह कवि 'सॉरदेल्लो' है! वह बड़ा शोक प्रकट करता है क्योंकि उसका और दान्ते का भी) निवास-नगर मेन्तुआ इस समय राजनीतिक उथल-पुथल और चढ़ावों-उतारों के कारण उसी प्रकार डगमगा उठा और अस्त-व्यस्त हो-उठा है जैसे कि एक नाविकहीन पोत तूफ़ान में पड़ जाये और उसके अंजर-पंजर ढीले हो जायें!

पर्व सात–

यह बातचीत चलती रहती है कि वर्जिल 'सॉरदेल्लो' से कहता है कि चूंकि उसमें निष्ठा, श्रद्धा, आस्था और विश्वास की कमी है अतएव उसने आशा त्याग कर यह सोच लिया है कि स्वर्ग तो उसे मिलने से रहा! इतना सुनते ही कवि बड़ी श्रद्धा और भक्ति से उसके एकदम समीप आ-खड़ा होता है और कहता है कि वह तो 'लैटियम' की श्री एवं मर्यादा हैं, उसे इसप्रकार की धारणा शोभा नहीं देती। इसके बाद ही वह एक बार फिर बड़े आदर से पूछता है कि वह आ कहां से रहा है! इस पर वर्जिल सारी कथा बतला-जाता है कि कैसे किसी स्वर्गीय प्रेरणा से

देता है। वर्जिल उनके तर्क सुनता है और उनसे कुछ प्रश्न करता है। उत्तर में दो आत्मायें जो शेष का नेतृत्व कर रही है, अपने तर्कों की पुष्टि के लिये निष्कपट स्नेह के कितने ही उदाहरण उपस्थित करती हैं ! इतने में ही कुछ और पापात्मायें वहां आ पहुँचती हैं, जिन्होंने अपने जीवन-काल में साहसिक घटनाओं से भरे हुए कर्मठ जीवन की अपेक्षा कायरतापूर्ण, आरामतलबी अधिक पसन्द की, किन्तु अब जिन्हें उसके लिए बहुत अधिक दुःख है !

पर्व उन्नीस—

अब रात हो जाती है। दान्ते सो जाता है। नींद में वह यूलिसीज के, परीशान करनेवाली 'साइरेन' नामक समुद्र-परी के और दर्शन' अथवा 'सत्य' के स्वप्न देखता है। इसके बाद सवेरा होता है और वर्जिल उसे दूसरी सीढ़ी के समीप ले आता है। यहां फिर एक दूत उन्हें मिलता है, जो, जैसे हवा में तैरा कर, उन्हें ऊपर पहुँचा देता है और दान्ते के माथे से एक और 'पा' का चिन्ह पोंछ देता है। इस बीच में वह बराबर गाता रहा है—

'जिसे दुःख है निज पापों पर
वही धन्य है, धन्य,
क्योंकि मिलेगी उसको शान्ति !'

× ×

इस पाँचवें घेरे में लोभी आत्मायें दण्डित होती हैं। उन्हें शृंखला से इस तरह धरती से जकड़ दिया जाता है कि धरती में और उनमें कोई अन्तर नही रह जाता और तब वे धरती को कितने ही समय तक अपने पश्चाताप के आंसुओं से भिगोती रहती हैं ! ऐसे ही एक पापी से दान्ते बातें करने लगता है। वह बतलाता है कि वह 'पोप ऐडरियन पंचम' है ! वह पोप बनने के एक महीने बाद ही मर गया और उसे अपने अतीत के कुकर्मों के लिये बहुत क्षोभ है ! इतना सुनते ही दान्ते सम्वेदना से भर-उठता है और इस विशाल व्यक्तित्व का अभिवादन करता है। वह उत्तर में उससे आग्रह करता है कि धरती पर लौटने पर वह पोप के परिवार की स्त्रियों से कह दे वे उसके पापों का प्रायश्चित कर डालें क्योंकि वे अब भी उनके घर पर मंडरा रहे हैं। शीघ्र ही दान्ते आगे बढ़ता है।

पर्व बीस—

थोड़ी दूर जाने पर इस पांचवें तल के रास्तों पर बिछी हुई आत्माओं में दान्ते की निगाह फ्रांसीसी राजाओं की तीसरी पीढ़ी के प्रवर्त्तक 'ह्यूग्यूइज़ कैपेट' पर पड़ती है। इसे वह इस अशिव पौधे की जड़ बतलाता है, क्योंकि इस पीढ़ी के कितने ही काले कारनामें उसकी निगाह से गुज़र चुके हैं ! कहना न होगा कि अपनी प्रस्तुत रचना के कुछ ही वर्ष पहले उसने देखा और समझा कि 'फ़िलिप चुतुर्थ' ने धन के लिये 'पोप बॉनिफ़ेस' को मरवा डालने की यत्न किया और उसमें सफलता प्राप्त कर घोर पाप कमाया ! ·····इस प्रकार घृणा से भर कर वह आगे

दूसरे ही क्षण वे सारी आत्मायें संध्या की ईश-वन्दना में तल्लीन हो जाती हैं और इसकी समाप्ति एक इतने कोमल सरस और भक्ति भावना से ओत-प्रोत मधुर गीत से होती है कि दान्ते और वर्जिल दोनों की चेतन-शक्तियाँ भावनाओं के लहराते हुये सागर में डूबने-उतराने लगती हैं। इस प्रार्थना की समाप्ति पर, सहसा ही, सारी आत्माओं की दृष्टि प्रकाश की ऊंचाई पर जा टिकती है, जैसे कि इस प्रकार टकटकी लगा कर वे अपनी युग-युग की आशा का साकार संसार देख लेना चाहती हैं। एक क्षण बाद ही गुरु-शिष्य देखते हैं कि दो हरित वसन-धारी देवदूत, जिनके हाथों में लपटों के समान ही दहकती हुई तलवारें हैं, आकाश से उनकी घाटी की ओर आये और उसके दोनों किनारों पर के टीलों पर उतरे! ये देवदूत वे स्वर्गीय योद्धा हैं जिन्हें ईसा की माता 'मेरी' ने 'ईडेन'[1] के समान ही अलौकिक इस घाटी में भेजा है ताकि ऐसा न हो कि रात्रि के समय कोई साँप वहाँ रेंग आये और उस पर किसी की निगाह न पड़े! 'सॉरदेल्लो' यह सब लक्ष्य करता है और उन्हें एक दूसरे विश्राम-स्थल में ले जाता है, जो कि पत्तियों से भली भाँति सुरक्षित है। यहाँ अयाचित् ही दान्ते की भेंट एक अपने ऐसे मित्र से होती है, जिसके विषय में उसकी धारणा थी कि वह नरक की यातनायें सह रहा है। यह मित्र उसे बतलाता है कि अपनी पुत्री की प्रार्थनाओं के कारण ही ऐसा है कि वह इस स्थान पर है और नरक में घुट-घुट कर उसका दम नहीं निकल रहा है; यों तो उसकी पत्नी बड़ी निकम्मी निकली, उसने उसके मरते ही दूसरा विवाह कर लिया! वह इतना कह कर मौन हो जाता है।

× ×

इस समय सहसा ही दान्ते की निगाह उन तीन तारों पर जा गड़ती है जो कि आस्था, आशा और उदारता एवं, दानशीलता के प्रतीक हैं, किन्तु दूसरे ही क्षण 'सॉरदेल्लो' उसे वह साँप संकेत से दिखलाता है जिसे देखते ही देवदूत झपट-पड़ते हैं और मार डालते हैं।

पर्व नव—

अब दान्ते गहरी नींद में सो जाता है, किन्तु, जैसे ही ज्योति की प्रथम किरण रात की काली चादर में से पृथ्वी पर झांकने का यत्न करती हैं, वह एक स्वप्न देखता है कि एक सोने के पंख का गरुड़ आया और उसे एक धधकती हुई आग की ओर ले गया, किन्तु इसमें जल कर वे दोनों ही भस्म हो गये! एक क्षण बाद ही वह इस रोमांचकारी स्वप्न से चौंककर उठ-बैठता है और अपने को एक दूसरे ही स्थान में पाता है, जहाँ वर्जिल के अतिरिक्त उसके आसपास और कोई नहीं है। यही नहीं, वह यह भी लक्ष्य करता है कि इस समय पूरी धूप चढ़ आई है यानी सूर्य को उदय हुये कम-से-कम दो घंटे हो चुके हैं! वर्जिल उसे हतबुद्धि देख कर रहस्य बतलाता है और विश्वास दिलाता है कि 'संत लूशिया'[2] की कृपा से वह निद्रावस्था में ही परगेटरी के प्रवेश-द्वार पर आ-पहुँचा है।

---

[1]आदम और ईव का स्वर्ग-सा बाग़— [2]ईश्वरानुकम्पा का एक प्रकार—

कि उसकी इस लम्बी यातना का इससे भी बड़ा कारण यह है कि उसमें ईसाई मत को स्वीका करने का साहस न था ! इतना बतलाने के बाद वह 'टेरेंस'[1], 'सिसिलिया'[2], 'प्लॉटस'[3] औ 'वैरो'[4] आदि अपने देशवासियों के कुशल समाचार वर्जिल से पूछता है और उसे पता लगत है कि वे भी उसी तरह के अन्य अंधे प्रदेशों में पड़े हैं जहाँ वे दूसरे अन्य मूर्त्तिपूजक कवियों प्रायः मिलते और हास-परिहास करते हैं।

इस बीच में दान्ते भक्ति से अपने साथियों की बातचीत सुनता रहता, काव्य माधुर की रहस्यात्मक प्रेरणाओं पर मनन करता रहता और धीरे-धीरे उनके पीछे-पीछे चलता रहता है शीघ्र ही वे एक निर्मल स्रोत के किनारे उगे हुये एक पेड़ के समीप आ-निकलते हैं ! यह पे फलों से लदा हुआ है ! इस पेड़ से रह-रहकर ध्वनि आती है जो उन्हें पेटूपन के पाप के विरुद्ध सावधान करती है, क्योंकि इस प्रदेश में पेटुओं को दंड दिया जाता है। यही नहीं, वह अपन बात के समर्थन में 'डेनियल' और 'बैपटिस्ट जॉन' जैसे विशिष्ट लोगों के उदाहरण सामने रखती है और कहती है कि वे इस नियम के अपवाद रहे हैं—इस पाप से बचने के लिये ही 'डेनियल' दाल से ही सन्तोष करता रहा है और जॉन टिड्डियों और जंगली शहद से !

पर्व तेईस—

दान्ते अब भी गूंगे की भांति इस भेद भरे पेड़ को विस्मय से देख रहा है कि वर्जिल उसे आगे बढ़ने को कहता है ! उन्हें अभी भी लम्बी मंज़िल तय करनी है। दान्ते आदेश का पालन करता है और शीघ्र ही गुरु-शिष्य कुछ ऐसी आत्माओं से मिलते हैं जो सिसक-सिसक कर रो रही हैं, जिनकी आँखों में पाताल की गहराई के गड़े हो चुके हैं और जो इस तरह झुकी हुई हैं कि उनके शरीर की हड्डियाँ खाल के बीच से बाहर निकल आई हैं। इनमें से एक दान्ते को पहचानती है और दान्ते को यह देखकर बहुत आश्चर्य होता है कि उसका मित्र 'फॉरेसे' इस दयनीय स्थिति में है ! दो कंकाल-मात्र आत्मायें उसके आगे पीछे चल रही हैं और उसे सम्हाल रही हैं, ताकि वह चलते-चलते कहीं गिर न पड़े। इस पर फ़ॉरेसे उत्तर देता है कि यद्यपि वह और उसके साथी दिन रात खाते-पीते रहते हैं तथापि वे कभी सन्तुष्ट नहीं होते और भूख और प्यास के मारे मरे जा रहे हैं, उनमें कुछ भी शक्ति शेष नहीं है। इतना सुनकर दान्ते एक बार फिर प्रश्न करता है और जानना चाहता है कि आख़िर ऐसा क्या है कि वह इतनी जल्दी 'परगेटरी' के इस ऊंचे तल्ले पर आ पहुँचा है, क्योंकि उसे मरे तो अभी पांच वर्ष ही हुये हैं। फ़ॉरेसे उत्तर देता है कि अपनी पत्नी की लगातार प्रार्थनाओं के कारण ही वह एक बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे कारागारों से जल्दी-जल्दी मुक्त होता रहा है और इतने थोड़े समय में ही इस प्रदेश में आ गया है। दान्ते सब कुछ सुनता है और अन्त में उस प्रदेश में आने का

---

[1] एक रोमन सुखांत कवि। [2] दूसरा रोमन-सुखान्त कवि। [3] रोमन नाटककार। [4] एक रोमन-दुखान्त-कवि।

'डेविड'[1] नाच रहे हैं कि सम्राट् नाच रहा है और एक में रोमन-राजा ट्रैजन[2] अनाथा विधवा की प्रार्थना स्वीकार कर रहा है। ये सभी पर आगे बढ़ते हैं और देखते हैं कि आत्माओं का एक दल उनकी ओर चला आ रहा है। इस दल का प्रत्येक सदस्य अपनी पीठ पर भारी बोझ के बोझ से दोहरा हुआ जा रहा है, प्रत्येक धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है और पग-पग पर कराह उठता है – 'अब मैं अधिक नहीं सह सकता, मुझसे अब और नहीं सहा जाता!'

दर्प व्यापार—

यह दुःखी आत्माएँ इस संसार के भारी बोझ लादकर चाट-चाट कर अपने अहंकार के पाप का प्रायश्चित्त कर रही हैं और जनक की याद के शब्दों में ऊपर कर प्रार्थना करती हैं और दया, क्षमा और सहायता की दुहाई देती हैं। दान्ते उनसे बहुत प्रभावित होता है और वह भी ईश्वर से उनकी मुक्ति के लिये विनय करता है। इसके बाद वह उनसे पूछता है कि क्या उसे कोई ऐसी सुविधा मिल सकेगी जिससे वह इस पर्वत से चढ़ जा सके। इस पर एक आत्मा उससे अपने साथ साथ चलने को कहती है क्योंकि उन आत्मा का दल-का-दल शीघ्र ही दान्ते के अभीष्ट स्थान से निकलने जाता है। यह बन्दा बोझ के भार के कारण सिर नहीं उठा पाता किन्तु वो यह स्वीकार करता है कि धरती पर उसमें इतनी शक्ति थी कि उसका दम्भ और पाखंड उसके साथियों के लिये असह्य हो उठा और, यही नहीं कि उनके विरुद्ध विद्रोह किया प्रत्युत, उन्होंने उसे मार भी डाला। इतना सुनकर दान्ते उसका मुँह देखने के लिये झुकता है और देखता है कि वह एक साधारण-सा कलाकार है, जो यह दावा करता रहा है कि वह अपने ढंग का अकेला कलाकार है, संसार में उसका कोई दूसरा सानी नहीं। कहना न होगा कि इस समय उसे अपने इसी पाप का फल भोगना पड़ रहा है।

दान्ते इस साधारण कलाकार के साथ-साथ आगे बढ़ता है और वह बात-बात में अपने कितने ही सहयोगियों के नाम उसे गिना जाता है। इसी समय वर्जिल उसका ध्यान उसके पैर के नीचे के एक चबूतरे की ओर आकृष्ट करता है। दान्ते देखता है कि उस पर 'ब्रायरियस', 'निमरॉड' 'नायोबी' आदि उन सारे लोगों का नाम खुदा हुआ है, जिन्होंने अपने जीवनकाल में अपनी तुलना देवताओं से की थी, जो अपने थोड़े से सुकृत्यों का गुणगान करते कभी थकते

[1] 'इजरायल' प्रदेश का राजा और ईसा का पूर्वज, जो उसको प्रसन्न करने के लिये ही एक बार अपनी कमर में साधारण मलमल लपेटकर 'परम पिता' की पालकी के चारों ओर नाचा था।

[2] कहा जाता है कि रोमन-राजा ट्रैजन शिकार पर जा रहा था कि एक संकट-ग्रस्त बुढ़िया ने उसका रास्ता घेर लिया किन्तु वह जल्दी में था अतः उसने उसे आश्वासन दिया कि वह लौटने पर उसकी आवश्यक सहायता करेगा। इस पर बुढ़िया ने कहा है कि वह न लौटा तो? राजा ने यह सुना और उत्तर दिया कि यदि वह न लौटा तो भी उसकी जगह जो भी होगा उसकी फरियाद सुनेगा! किंतु इतना कहने के बाद ही उसने पता नहीं क्या सोचा और उसकी सहायता करना उसने अपना प्राथमिक कर्त्तव्य समझा।

सकता है। इतने में उनका प्रश्न सुनता है और उत्तर देना ही चाहता है कि उसका ध्यान उन पापात्माओं के एक दूसरे दल की ओर आकृष्ट हो जाता है। ये पापात्मायें जल्दी में एक दूसरे को चूमती हैं, एक दूसरे को पार करती हुई आगे बढ़ती हैं और पल-पल पर पासीफ़ी[1] जैसे कुलटाओं की चर्चा करता और उन लोगों की निन्दा करती हैं जिनका कि सोडम[2] और गोमोरा[3] के विनाश में हाथ था! इन्हें देखकर दान्ते को अपने उत्तर की याद आती है। वह प्रश्नकर्ता को अपना परिचय देने के बाद यहाँ पहुँचने से सम्बन्धित सारी कथा बतला जाता है और यह आशा प्रकट करता है कि ईश्वर की कृपा से वह शीघ्र ही स्वर्ग में पहुँच जायेगा! इतना सुनकर यह प्रश्न करने वाली आत्मा दान्ते का आभार मानती है और स्वीकार करती है कि उसने अपने जीवनकाल में बिना किसी यम नियम की चिन्ता किये सांसारिक एवं शारीरिक प्रेम का जी भरकर प्रसार किया है। इतना ही नहीं, वह कहती है कि यदि वह संकेत से दिखलाये तो वह निश्चित रूप से उसके सहयोगियों में से कितने ही लोगों को पहिचान लेगा। इसके बाद वह दान्ते की स्तुति करती है और एक बार फिर उस आग में खो जाती है, जो कि उसकी शुद्धि कर उसे स्वर्ग के योग्य बना रही है।

पद सत्ताईस—

संध्या का समय है सूर्य डूबना ही चाहता है कि उसी समय एक देवदूत 'धन्य हैं शुद्ध-हृदय' के बोल गाता हुआ उनके समीप आता है। वह उन महाकवियों को यह सूचित करने के बाद कि उनके और स्वर्ग के बीच में केवल एक आग की दीवाल का अन्तर शेष रह गया है, उन्हें यह विश्वास दिलाता है कि उनका एक बाल भी बांका न होगा, वे बिना किसी प्रकार के भ्रम के उसके अन्दर से निकल सकते हैं। किन्तु आग की दीवाल का नाम सुनते ही दान्ते के होश उड़ जाते हैं! वह पीछे ठिठक-रहता है, और वर्जिल आदि आगे निकल जाते हैं! कुछ ही क्षणों में वर्जिल पीछे मुड़कर देखता है और उसकी भयाशंकित मुद्रा लक्ष्य कर उसे याद दिलाता है कि अब उसे अधीर नहीं होना चाहिये, क्योंकि इस आग की दीवाल को पार करते ही वह स्वर्ग में पहुँच जायेगा और वहाँ उसे बियेट्रिस मिलेगी! इतना सुनते ही दान्ते सारी चिन्ता और आशंकाओं से मुक्त हो-उठता है और धू-धू करती हुई आग की भट्टी में कूद पड़ता है। वर्जिल और स्टैटियस उसका अनुकरण करते हैं और शीघ्र ही ये तीनों एक चढ़ाऊ रास्ते पर आ-निकलते हैं। यहाँ ये अलग-अलग टीलों पर आराम करते हैं किन्तु दान्ते तबतक आसमान के सितारे देखता और गिनता रहता है जबतक कि उसे नींद नहीं आ जाती और वह स्वप्न नहीं देखता कि एक कुंज में एक अपूर्व सुन्दरी फूल चुन रही है और अपने से और अपनी बहिन से सम्बंधित एक गीत गा रही है। वह कहती है कि उसका अपना नाम 'ली' है, जो मध्य-युगीन

1 क्रीट के राजा माइनॉस की पत्नी। [2] एक नगर— [3] एक नगर जहाँ के सेब पतित देवदूतों को पसन्द हैं।

पर उसने बड़ी खुशी मनाई थी, अतएव इस समय वह उस हृदयहीनता और कृतघ्नता का प्रायश्चित कर रही है। वह सोच नहीं सकती कि कोई खुली आँखों से उसके साथियों के बीच में इस प्रकार घूमे, इसीलिये दान्ते को देखकर बड़ा आश्चर्य करती है, और उसका परिचय पाना चाहती है। वह यह भी जानना चाहती है कि आखिर वह कैसे वहाँ तक पहुँच सका! अंत में सब कुछ सुनने-समझने के बाद वह उसके सम्मान में प्रार्थनायें गाती है और अनुरोध करती है कि वह उसके देशवासियों को आगाह कर दे कि वे व्यर्थ की महानता की आशाओं में न फंसे और व्यर्थ की ईर्ष्या का पाप न कमायें।

पर्व चौदह—

वे एक दूसरे पर झुकी हुई दो आत्माओं, जिनका ऊपर उल्लेख हो चुका है, दान्ते और वर्जिल को देखते ही एक-दूसरे से प्रश्न करती हैं कि आखिर ये कौन हो सकते हैं? वे इस प्रकार आपस में व्यस्त हैं कि रोम और फ़्लोरेंस के नाम उनके कानों में पड़ते हैं और इनका उल्लेख होते ही वे गरम हो उठती हैं और कहती हैं कि इन टाइबर और आरनो नदी के किनारे रहने वालों का नैतिक-पतन घोर लज्जाजनक है।

× ×

थोड़ी देर बाद दान्ते अपने निर्देशक के साथ इस स्थान से आगे बढ़ता ही है कि उसे 'जो मुझे पायेगा मार डालेगा' आशय का विलाप सुनाई पड़ता है और उसके बाद धड़ाके की आवाज़ से उसके कान बहरे होने लगते हैं।

पर्व पन्द्रह—

इस तरह सदैव एक ही दिशा में इस पर्वत का चक्कर लगाते हुये दान्ते लक्ष्य करता है कि अब सूर्य डूबने वाला है! इसी समय पिछले चढ़ाऊ रास्तों में सब से कम ढालू रास्ते से एक तेजस्वी देवदूत उन्हें उस दूसरे तल्ले पर ले आता है, जहाँ कि क्रोधी अपने क्रोध नामक पाप का प्रायश्चित करते हैं। इस तल्ले पर चढ़ते समय वह देवदूत 'धन्य-धन्य हैं दयावान सब', और 'तुम तो भाग्यवान हो विजयी' बड़े कोमल स्वरों में गाता है और दान्ते की भौं से 'पा' कर दूसरा चिन्ह भी पोंछ देता है अर्थात् दान्ते को ईर्ष्या के पाप से भी मुक्त कर देता है। किन्तु जब दान्ते वर्जिल से आग्रह करता है कि वह उन सारी चीज़ों पर प्रकाश डाले तो वह उसे विश्वास दिलाता है कि जब उसकी भौं के शेष पाँच कलंक-चिन्ह भी पुंछ जायेंगे या मिट जायेंगे तो स्वयं बियेट्रिस उससे मिलेगी, वही उसकी उत्सुकता शान्त करेगी और उसकी शंका का समाधान भी।

× × ×

इस तीसरे तल पर दान्ते और वर्जिल अपने को कोहरे से घिरा हुआ पाते हैं। दान्ते इस धूमिल वातावरण में दृष्टि गड़ाने पर एक मन्दिर देखता है! इस मन्दिर में १२ वर्ष का किशोर

प्रकाश हो रहा है। दूसरे ही क्षण अद्भुत, मधुर संगीत उसके कानों में पड़ता है और वह देखता है कि अलौकिक श्री से जगमग करती हुई आत्माओं का एक दल उसकी ओर बढ़ा आ रहा है। यह आत्मायें इतनी कान्तिमान हैं कि इनके पद-चिन्हों में इन्द्र-धनुष रह-रहकर झलक उठता है। इनका नेतृत्व वयोवृद्ध धर्म-गुरुओं का एक दल कर रहा है और इनका अनुकरण ईसा की जीवनी के चारों लेखक श्रद्धापूर्वक कर रहे हैं। इनके पीछे ग्राइफ़ॉन[1] नामक विचित्र पशु है! यह पशु एक भव्य रथ खींच रहा है जो ईसाई गिर्जे या पोप के धार्मिक आसन का प्रतीक है, ! इसे देखकर सहज में ही यह धारणा होती है कि ऐसा दिव्य रथ रोम की किसी राजसी विजय के अवसर पर भी शायद ही दिखलाई पड़ा हो। इस रथ के रक्षक भी अनेकों हैं, जिनमें दान, आस्था और आशा जैसी तीन सद्वृत्तियों और दूरदर्शिता आदि चार नैतिक नीतियों के अतिरिक्त संत ल्यूक, संत पॉल, गिर्जे के चारों महान् डॉक्टर और धर्माचार्य संत जॉन आदि विशेषतया उल्लेखनीय हैं।

पर्व तीस–

हमारा कवि दान्ते अब एक अद्भुत प्रकाश देखता है! यह प्रकाश सात शाखा-वाली एक मोमबत्ती से फूट रहा है और कुमारी ऊषा की हीरक-कांति से सारे स्वर्ग को जगर-मगर कर रहा है। इसी समय जब कि चारों ओर से प्रार्थनाओं के स्वर उसे सुनाई पड़ते हैं, वह देखता है कि एक रथ में एक स्त्री विराजमान है, जिस पर सफेद पर्दा पड़ा हुआ है। वह यह भी देखता है कि देवतागण उस पर फूल बरसा रहे हैं, और, यद्यपि इस समय वह दूसरे रूप में है तो भी, वह उसे दृष्टि पड़ते ही पहचान लेता है जैसे कि यह उसके लिए स्वाभाविक हो। यह स्त्री और कोई न होकर बियेट्रिस है! बियेट्रिस स्वर्गीय ज्ञान की प्रतीक है। इस प्रकार सहसा ही युग-युग की अभिलाषा साकार देखकर वह अचरज से अवाक हो-उठता है और यन्त्र-चालित सा वर्जिल की ओर मुड़ता है किन्तु देखता है कि वह अदृश्य हो चुका है। दान्ते का धीरज छूट जाता है।

× ×

उसकी अधीरता का अर्थ समझकर बियेट्रिस उसे यह वचन देकर सान्त्वना देती है कि वह चिन्तित न हो, इसके बाद वह स्वयं उसका पथ-प्रदर्शन करेगी। इतना कहकर वह एक क्षण रुकती है और फिर कड़े-मधुर शब्दों में बीती-बातों के लिये उसकी इतनी भर्त्सना करती है कि उसकी दृष्टि लज्जा से नीचे झुककर पैरों पर जा पड़ती है। यहीं पास के प्रकृति के दर्पण के प्रतीक एक सोते में वह अपनी परीशानी की परछाईं देखता है और अपने किये पर इतना पश्चात्ताप करता है कि बियेट्रिस द्रवित हो-उठती है। वह उसे समझाती है कि जिस भयानक रास्ते से वह यहां आया है, वह स्वयं उसने उसके लिये चुना है और स्वयं वह उसे उस राह से

---

[1]एक कल्पित पशु जिसका शरीर और जिसके पैर शेर के हों किंतु जिसकी चोंच और जिसके पर बाज़ के हों।

देता है। वर्जिल उनके तर्क सुनता है और उनसे कुछ प्रश्न करता है। उत्तर में दो आत्मायें जो शेष का नेतृत्व कर रही है, अपने तर्कों की पुष्टि के लिये निष्कपट स्नेह के कितने ही उदाहरण उपस्थित करती हैं ! इतने में ही कुछ और पापात्मायें वहां आ पहुँचती हैं, जिन्होंने अपने जीवन-काल में साहसिक घटनाओं से भरे हुए कर्मठ जीवन की अपेक्षा कायरतापूर्ण, आरामतलबी अधिक पसन्द की, किन्तु अब जिन्हें उसके लिए बहुत अधिक दुःख है !

पर्व उन्नीस—

अब रात हो जाती है। दान्ते सो जाता है। नींद में वह यूलिसीज के, परीशान करनेवाली 'साइरेन' नामक समुद्र-परी के और दर्शन' अथवा 'सत्य' के स्वप्न देखता है। इसके बाद सवेरा होता है और वर्जिल उसे दूसरी सीढ़ी के समीप ले आता है। यहां फिर एक दूत उन्हें मिलता है, जो, जैसे हवा में तैरा कर, उन्हें ऊपर पहुँचा देता है और दान्ते के माथे से एक और 'पा' का चिन्ह पोंछ देता है। इस बीच में वह बराबर गाता रहा है—

'जिसे दुःख है निज पापों पर
वही धन्य है, धन्य,
क्योंकि मिलेगी उसको शान्ति !'

× ×

इस पाँचवें घेरे में लोभी आत्मायें दण्डित होती हैं। उन्हें शृंखला से इस तरह धरती से जकड़ दिया जाता है कि धरती में और उनमें कोई अन्तर नही रह जाता और तब वे धरती को कितने ही समय तक अपने पश्चाताप के आंसुओं से भिगोती रहती हैं ! ऐसे ही एक पापी से दान्ते बातें करने लगता है। वह बतलाता है कि वह 'पोप ऐडरियन पंचम' है ! वह पोप बनने के एक महीने बाद ही मर गया और उसे अपने अतीत के कुकर्मों के लिये बहुत क्षोभ है ! इतना सुनते ही दान्ते सम्वेदना से भर-उठता है और इस विशाल व्यक्तित्व का अभिवादन करता है। वह उत्तर में उससे आग्रह करता है कि धरती पर लौटने पर वह पोप के परिवार की स्त्रियों से कह दे वे उसके पापों का प्रायश्चित कर डालें क्योंकि वे अब भी उनके घर पर मंडरा रहे हैं। शीघ्र ही दान्ते आगे बढ़ता है।

पर्व बीस—

थोड़ी दूर जाने पर इस पांचवें तल के रास्तों पर बिछी हुई आत्माओं में दान्ते की निगाह फ्रांसीसी राजाओं की तीसरी पीढ़ी के प्रवर्त्तक 'ह्य ग्यूइज़ कैपेट' पर पड़ती है। इसे वह इस अशिव पौधे की जड़ बतलाता है, क्योंकि इस पीढ़ी के कितने ही काले कारनामें उसकी निगाह से गुज़र चुके हैं ! कहना न होगा कि अपनी प्रस्तुत रचना के कुछ ही वर्ष पहले उसने देखा और समझा कि 'फ़िलिप चुतुर्थ' ने धन के लिये 'पोप बॉनिफ़ेस' को मरवा डालने की यत्न किया और उसमें सफलता प्राप्त कर घोर पाप कमाया ! ····इस प्रकार घृणा से भर कर वह आगे

रहे और फिर आंखों में चकाचौंध हो जाने के कारण किसी वस्तु पर किसी प्रकार दृष्टि न गड़ा सके। दूसरे शब्दों में, वह अनुभव करता है कि हर वस्तु से, जिस पर वह दृष्टि डालता है, बियेट्रिस के रूप की किरणें फूट रही हैं और उसकी निगाह कहीं जमती नहीं। इसके बाद ही वह और स्टैटियस विनम्र भाव से बियेट्रिस के विराट और विशद् जुलूस के साथ हो जाते हैं! यह जुलूस एक वन में प्रविष्ट होने के बाद एक पेड़ के तने को घेर लेता है। इसी तने से वह रथ बांध दिया जाता है।

कहना होगा कि दूसरे ही क्षण के उस पेड़ की सूखी डालियों में किसलय निकल जाते हैं, उनमें कलियाँ मुस्कराने लगती हैं! ऐसे मधुमय क्षण में देवदूतों के स्वर्गीय संगीत से विभोर होकर दान्ते गहरी नींद में सो जाता है और एक ऐसा रोमांचकारी स्वप्न देखता है कि जागने पर पागलों की भाँति बियेट्रिस के लिये इधर-उधर देखने लगता है! उसे 'लीथ' से इसपार लानेवाली वह परी उसकी चिन्ता लक्ष्य करती है और उसे संकेत से बियेट्रिस को दिखला-देती है! वह इस रहस्यपूर्ण पेड़ के सहारे आराम कर रही है। इसी समय बियेट्रिस अपने स्थान से उठती है और दान्ते से कहती है कि अब वह उसके रथ के भाग्य का व्यंग्य देखे और समझे! कवि रथ की ओर घूम पड़ता है और देखता है कि 'राज्यसत्ता' का प्रतीक एक बाज़ आकाश से पृथ्वी पर उतरा, उसने उस पेड़ को बुरी तरह चीर-फाड़ डाला, उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले, और उस रथ पर हमला किया जो कि गिर्जे का प्रतीक है, और जिसमें धर्म-सम्बन्धी, मूलगत भ्रम की प्रतीक एक लोमड़ी इधर-उधर सिर मार रही है, जैसे कि किसी आखेट की खोज में हो। यही नहीं, दान्ते यह भी लक्ष्य करता है कि यद्यपि बियेट्रिस रथ के समीप गई, और उसने तुरन्त ही उस लोमड़ी का नशा उतार दिया तथापि उस बाज़ ने उस रथ में अपना घोंसला बना लिया। इसी समय एक दूसरे दैत्य को अपनी पीठ पर लादे हुये, ७ प्रमुख पापों का प्रतीक, सात सिरों का एक राक्षस उस रथ के नीचे से निकला! वह, क्रम से, पहिले कुछ देर तक एक वैश्या को मनुहार करता रहा और फिर उसे सुधारने के लिये कुछ देर तक उसे तरह-तरह के दंड देता रहा।

पर्व तैंतीस—

इसी समय सात धार्मिक-वृत्तियाँ एक प्रार्थना गाती हैं। इसके बाद बियेट्रिस दान्ते और स्टैटियस को अपना अनुकरण करने का संकेत करती है और दान्ते को विशेषतया चुप देखकर उसके इस मौन का कारण जानने को उत्सुक हो-उठती है। दान्ते उत्तर देता है कि वह उसका प्रश्न स्वयं जानती है, उसे बतलाने की आश्यकता नहीं है। इस पर वह उसे अभी-अभी घटी तमाम घटनाओं का रहस्य समझाती है और आग्रह करती है कि वह उसे मनुष्य-जाति तक पहुँचा दे!

इस तरह बातें करते-करते दान्ते 'यूनो' नामक दूसरी धारा के समीप पहुँच जाता है। यहाँ बियेट्रिस उसे उस प्रपात का पानी पीने का संकेत करती है। वह झुकता है और इस नव-जीवन-प्रदाता जल के एक घूंट के बाद ही अनुभव करता है कि वह शुद्ध एवं पवित्र हो गया और अब वह नक्षत्र-लोक तक पहुँचने का अधिकारी है।

देता है। वर्जिल उनके तर्क सुनता है और उनसे कुछ प्रश्न करता है। उत्तर में दो आत्मायें जो शेष का नेतृत्व कर रही है, अपने तर्कों की पुष्टि के लिये निष्कपट स्नेह के कितने ही उदाहरण उपस्थित करती हैं! इतने में ही कुछ और पापात्मायें वहां आ पहुँचती हैं, जिन्होंने अपने जीवन-काल में साहसिक घटनाओं से भरे हुए कर्मठ जीवन की अपेक्षा कायरतापूर्ण, आरामतलबी अधिक पसन्द की, किन्तु अब जिन्हें उसके लिए बहुत अधिक दुःख है!

पर्व उन्नीस—

अब रात हो जाती है। दान्ते सो जाता है। नींद में वह यूलिसीज के, परीशान करनेवाली 'साइरेन' नामक समुद्र-परी के और दर्शन' अथवा 'सत्य' के स्वप्न देखता है। इसके बाद सवेरा होता है और वर्जिल उसे दूसरी सीढ़ी के समीप ले आता है। यहां फिर एक दूत उन्हें मिलता है, जो, जैसे हवा में तैरा कर, उन्हें ऊपर पहुँचा देता है और दान्ते के माथे से एक और 'पा' का चिन्ह पोंछ देता है। इस बीच में वह बराबर गाता रहा है—

'जिसे दुःख है निज पापों पर
वही धन्य है, धन्य,
क्योंकि मिलेगी उसको शान्ति!'

× ×

इस पाँचवें घेरे में लोभी आत्मायें दण्डित होती हैं। उन्हें शृंखला से इस तरह धरती से जकड़ दिया जाता है कि धरती में और उनमें कोई अन्तर नहीं रह जाता और तब वे धरती को कितने ही समय तक अपने पश्चाताप के आंसुओं से भिगोती रहती हैं! ऐसे ही एक पापी से दान्ते बातें करने लगता है। वह बतलाता है कि वह 'पोप ऐडरियन पंचम' है! वह पोप बनने के एक महीने बाद ही मर गया और उसे अपने अतीत के कुकर्मों के लिये बहुत क्षोभ है! इतना सुनते ही दान्ते सम्वेदना से भर-उठता है और इस विशाल व्यक्तित्व का अभिवादन करता है। वह उत्तर में उससे आग्रह करता है कि धरती पर लौटने पर वह पोप के परिवार की स्त्रियों से कह दे वे उसके पापों का प्रायश्चित कर डालें क्योंकि वे अब भी उनके घर पर मंडरा रहे हैं। शीघ्र ही दान्ते आगे बढ़ता है।

पर्व बीस—

थोड़ी दूर जाने पर इस पांचवें तल के रास्तों पर बिछी हुई आत्माओं में दान्ते की निगाह फ्रांसीसी राजाओं की तीसरी पीढ़ी के प्रवर्त्तक 'ह्यूग्यूइज़ कैपेट' पर पड़ती है। इसे वह इस अशिव पौधे की जड़ बतलाता है, क्योंकि इस पीढ़ी के कितने ही काले कारनामें उसकी निगाह से गुज़र चुके हैं! कहना न होगा कि अपनी प्रस्तुत रचना के कुछ ही वर्ष पहले उसने देखा और समझा कि 'फ़िलिप चुतुर्थ' ने धन के लिये 'पोप बॉनिफ़ेस' को मरवा डालने की यत्न किया और उसमें सफलता प्राप्त कर घोर पाप कमाया! .....इस प्रकार घृणा से भर कर वह आगे

उनके दैवी आवर्त्तनों का रहस्य समझाती है और वायदा करती है कि वह उसे 'सत्य कि तुम मुझे प्रेम करते हो' का भी मर्म बतलायेगी !

पर्व तीन—

चन्द्रमा के इस मोतिया वातावरण को भेद कर, दूसरे ही क्षण, उसकी दृष्टि कुछ भक्त-स्त्रियों पर जा-पड़ती है और बियेट्रिस उसे उनसे बातें करने का संकेत देती है ! वह निकट आकर उनको सम्बोधित करता है और उसे पता लगता है कि उनमें से एक उसके मित्र फ़ॉरेसे की बहिन पिकार्डा है जिसे उसके सन्यास ग्रहण करने के बाद उसका पति भगा ले गया था। यद्यपि उसे अपने धार्मिक संकल्पों का पालन करने में ही अत्यधिक प्रसन्नता होती तो भी वह एक पति-भक्ता स्त्री प्रमाणित हुई। वह कहती है कि जबतक सर्वशक्तिमान अपने पास नहीं बुला लेते वह और उसकी साथ की आत्मायें अपने लिये नियुक्त इस जगत में ही प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं:—

'वह अपनी चिर-संगिनियों के साथ मधुर मुस्काई,
और मुदित होकर बोली यों'
जैसे खनक उठे ममता की याकि प्रेम की प्रथम किरण—
बंधु, दान है सर्वोपरि !
अरे, दान की शक्ति सदैव,
निश्चित करती है हम सब की आशायें औ' अभिलाषायें,
और विवश हम हो जाते हैं
करने को सन्तोष पास जो केवल उससे,
कभी नहीं हम उड़ पाते हैं 'उसकी' अभिलाषा के आगे !'

उसका कथन है कि अनेकानेक अभिलाषाओं के साथ उसकी साथी-आत्माओं की यह भी कामना है कि वे सब ईसा की पत्नियाँ हो जायें, तो भी वे शांतिपूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन करती हैं और यह समझकर कि परमपिता की इच्छा ही उनकी इच्छा है, और उसकी इच्छा में ही उनकी मुक्ति है, वे अपना सारा समय ईश्वर भजन में व्यतीत करती है।

शीघ्र ही वे सारी आत्मायें लुप्त हो जाती है और दान्ते बियेट्रिस की ओर देखने लगता है। उसकी इच्छा है कि वह इस विषय पर और प्रकाश डाले।

पर्व चार—

दान्ते की प्रश्न सूचक दृष्टि के उत्तर में बियेट्रिस कहती है कि अपनी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी करना पाप है और ऐसा पाप करने पर विवश होने वालों को स्वर्ग कभी भी क्षमा नहीं करता। उसका कहना है कि निष्काम आत्मा सदैव अजेय है और यह कि अपनी इच्छा-शक्ति के कारण ही संत लॉरेंस और 'म्यूसियस स्किवोला' इतनी बहादुरी से आग का सामना कर सके थे ! इसके बाद, वह उसे दिखलाती है कि केवल सत्य ही ज्ञान-पिपासु मस्तिष्क को सन्तुष्ट कर सकता है।

कि उसकी इस लम्बी यातना का इससे भी बड़ा कारण यह है कि उसमें ईसाई मत को स्वीकार करने का साहस न था ! इतना बतलाने के बाद वह 'टेरेंस'[1], 'सिसिलिया'[2], 'प्लॉटस'[3] और 'वैरो'[4] आदि अपने देशवासियों के कुशल समाचार वर्जिल से पूछता है और उसे पता लगता है कि वे भी उसी तरह के अन्य अंधे प्रदेशों में पड़े हैं जहाँ वे दूसरे अन्य मूर्त्तिपूजक कवियों से प्रायः मिलते और हास-परिहास करते हैं।

इस बीच में दान्ते भक्ति से अपने साथियों की बातचीत सुनता रहता, काव्य माधुरी की रहस्यात्मक प्रेरणाओं पर मनन करता रहता और धीरे-धीरे उनके पीछे-पीछे चलता रहता है। शीघ्र ही वे एक निर्मल स्रोत के किनारे उगे हुये एक पेड़ के समीप आ-निकलते हैं ! यह पेड़ फलों से लदा हुआ है ! इस पेड़ से रह-रहकर ध्वनि आती है जो उन्हें पेटूपन के पाप के विरुद्ध सावधान करती है, क्योंकि इस प्रदेश में पेटुओं को दंड दिया जाता है। यही नहीं, वह अपनी बात के समर्थन में 'डेनियल' और 'बैपटिस्ट जॉन' जैसे विशिष्ट लोगों के उदाहरण सामने रखती है और कहती है कि वे इस नियम के अपवाद रहे हैं—इस पाप से बचने के लिये ही 'डेनियल' दाल से ही सन्तोष करता रहा है और जॉन टिड्डियों और जंगली शहद से !

पर्व तेईस—

दान्ते अब भी गूंगे की भांति इस भेद भरे पेड़ को विस्मय से देख रहा है कि वर्जिल उसे आगे बढ़ने को कहता है ! उन्हें अभी भी लम्बी मंज़िल तय करनी है। दान्ते आदेश का पालन करता है और शीघ्र ही गुरु-शिष्य कुछ ऐसी आत्माओं से मिलते हैं जो सिसक-सिसक कर रो रही हैं, जिनकी आँखों में पाताल की गहराई के गड्ढे हो चुके हैं और जो इस तरह झुकी हुई हैं कि उनके शरीर की हड्डियाँ खाल के बीच से बाहर निकल आई हैं। इनमें से एक दान्ते को पहचानती है और दान्ते को यह देखकर बहुत आश्चर्य होता है कि उसका मित्र 'फॉरेसे' इस दयनीय स्थिति में है ! दो कंकाल-मात्र आत्मायें उसके आगे पीछे चल रही हैं और उसे सम्हाल रही हैं, ताकि वह चलते-चलते कहीं गिर न पड़े। इस पर फ़ॉरेसे उत्तर देता है कि यद्यपि वह और उसके साथी दिन रात खाते-पीते रहते हैं तथापि वे कभी सन्तुष्ट नहीं होते और भूख और प्यास के मारे मरे जा रहे हैं, उनमें कुछ भी शक्ति शेष नहीं है। इतना सुनकर दान्ते एक बार फिर प्रश्न करता है और जानना चाहता है कि आख़िर ऐसा क्या है कि वह इतनी जल्दी 'परगेटरी' के इस ऊँचे तल्ले पर आ पहुँचा है, क्योंकि उसे मरे तो अभी पांच वर्ष ही हुये हैं। फ़ॉरेसे उत्तर देता है कि अपनी पत्नी की लगातार प्रार्थनाओं के कारण ही वह एक बाद दूसरे और दूसरे के बाद तीसरे कारागारों से जल्दी-जल्दी मुक्त होता रहा है और इतने थोड़े समय में ही इस प्रदेश में आ गया है। दान्ते सब कुछ सुनता है और अन्त में उस प्रदेश में आने का

---

[1] एक रोमन सुखांत कवि। [2] दूसरा रोमन-सुखान्त कवि। [3] रोमन नाटककार। [4] एक रोमन-दुखान्त-कवि।

है, अतएव सैबाइन्स के अपहरण से लेकर अपने समय तक की प्रमुख-प्रमुख घटनाओं का वर्णन बड़े मनोरंजक ढंग से कर-जाता है। वह महान सेनापतियों की महान विजयों पर विशेष ज़ोर देता है और उस युग की विशेष चर्चा करता है जब स्वर्ग को यह बात सुनाई गई कि गहन और चिरन्तन शान्ति के अवतार ईश्वर को ही सारी दुनिया के लिये चिंतित होने का अधिकार है, अन्य किसी को नहीं! यही नहीं, वह राज्य के संकट काल का और ग्वेल्फ़्स[1] और गिब्बेलाइन्स[2] के उत्तराधिकार सम्बन्धी पारस्परिक संघर्ष का भी विशेष उल्लेख करता है। इसके बाद वह कहता है कि बुद्ध लोक में वे लोग बसते हैं जिन्होंने पृथ्वी पर अपना सारा जीवन मर्यादा और यश की प्राप्ति की साधना में बिताया है। इनमें वह उस 'रेमान्ड-बेरेंज़ेयर' की चर्चा विशेष-रूप से करता है, जिसकी चार पुत्रियाँ यथासमय रानियाँ बनीं!

पर्व सात—

इस संलाप के बाद अपने अन्य साथी-देवदूतों के साथ जस्टीनियन अदृश्य हो जाता है और उचित प्रोत्साहन पाकर दान्ते बियेट्रिस से प्रश्न करता है कि माना कि प्रतिहिंसा की भावना निन्दनीय है, किन्तु यदि वह उचित और न्यायसंगत हो तो न्याय उसे कैसे और क्या दंड दे सकता है। इस पर वह उत्तर देती है कि जिस तरह आदम का अनुकरण करने से पतन होता है और मृत्यु प्राप्त होती है, उसी प्रकार, मंगलमय ईश्वर को धन्यवाद है कि, श्रद्धा से ईसा के अनुसरण के द्वारा एक बार फिर जीवन प्राप्त हो सकता है, परमपिता की माया विचित्र है।

पर्व आठ—

इस बीच में दान्ते की दृष्टि बराबर बियेट्रिस पर जमी-रहती है। बात चलती रहती है और दान्ते को पता भी नहीं चलता कि वह तीसरे स्वर्ग में पहुँचा दिया जाता है! इस लोक का नाम 'शुक्रलोक' है! यह लोक पराक्रमी युवराजों द्वारा परिचालित होता है और यह वह प्रेम-लोक है जहाँ बियेट्रिस का सौन्दर्य कई गुना होकर निखर उठता और दमकने लगता है! दान्ते देखता है कि यहाँ प्रेम में अति करने के कारण अपूर्ण रह-गई आत्माओं का दल चक्राकार रास्तों पर बराबर घूम रहा है। इनमें से एक तेजस्वी आत्मा दान्ते के समीप आती है! वह उसे अपनी सेवायें अर्पित करती है और अपना परिचय देती है कि वह नेपिल्स के राबर्ट के भाई और हंगेरी के राजा 'चार्ल्स मार्टिल' की आत्मा है! ज्ञान का प्यासा दान्ते परिचय पाते ही उससे पूछता है कि यह कैसे सम्भव है कि मधुमय बसन्त माधुरी का बीज बो दे, किन्तु फलस्वरूप उसे मिले विषमता और कटुता! इस पर वह बड़ा व्यवस्थित उत्तर देती है कि प्रायः लड़के अपने माँ-बाप से बिल्कुल भिन्न होते हैं। अपने इस तर्क को बल देने के लिये वह 'ईसेन' और 'जैकब' के उदाहरण भी देती है और कहती है कि कभी-कभी हाँ ऐसा होता है कि प्रकृति अपनी इच्छा

१-२—दान्ते के समय के दो प्रमुख राजनैतिक दल-

सकता है । इतने में उनका प्रश्न सुनता है और उत्तर देना ही चाहता है कि उसका ध्यान उन पापात्माओं के एक दूसरे दल की ओर आकृष्ट हो जाता है । ये पापात्मायें जल्दी में एक दूसरे को चूमती हैं, एक दूसरे को प्यार किये हुई आगे बढ़ती हैं और पल-पल पर पासीफ़ी[1] जैसे दुराचारियों की चर्चा करता और उन लोगों की निन्दा करती हैं जिनका कि सोडम[2] और गोमोरा[3] के विनाश में हाथ था ! दूसरे ही क्षण दान्ते को अपने उत्तर की याद आती है । वह प्रश्नकर्त्ता को अपना परिचय देने के बाद वहाँ पहुँचने से सम्बन्धित सारी कथा बतला जाता है और यह आशा प्रकट करता है कि ईश्वर की कृपा से वह शीघ्र ही स्वर्ग में पहुँच जायेगा ! इतना सुनकर वह प्रश्न करने वाली आत्मा दान्ते का आभार मानती है और स्वीकार करती है कि उसने अपने जीवनकाल में बिना किसी यम नियम की चिन्ता किये सांसारिक एवं शारीरिक प्रेम का जो भरपूर प्रसार किया है । इतना ही नहीं, वह कहती है कि यदि वह संकेत से दिखलाये तो वह निश्चित रूप से उसके सहयोगियों में से कितने ही लोगों को पहिचान लेगा । इसके बाद वह दान्ते की स्तुति करती है और एक बार फिर उस आग में खो जाती है, जो कि उसकी शुद्धि कर उसे स्वर्ग के योग्य बना रही है ।

पद सत्ताईस—

संध्या का समय है सूर्य डूबना ही चाहता है कि उसी समय एक देवदूत 'धन्य हैं शुद्ध-हृदय के लोग' गाता हुआ उनके समीप आता है । वह उन महाकवियों को यह सूचित करने के बाद कि उनके और स्वर्ग के बीच में केवल एक आग की दीवाल का अन्तर शेष रह गया है, उन्हें वह विश्वास दिलाता है कि उनका एक बाल भी बांका न होगा, वे बिना किसी प्रकार के श्रम के उसके अन्दर से निकल सकते हैं । किन्तु आग की दीवाल का नाम सुनते ही दान्ते के होश उड़ जाते हैं ! वह पीछे ठिठक-रहता है, और वर्जिल आदि आगे निकल जाते हैं ! कुछ ही क्षणों में वर्जिल पीछे मुड़कर देखता है और उसकी भयातंकित मुद्रा लक्ष्य कर उसे याद दिलाता है कि अब उसे अधीर नहीं होना चाहिये, क्योंकि इस आग की दीवाल को पार करते ही वह स्वर्ग में पहुँच जायेगा और वहाँ उसे बियेट्रिस मिलेगी ! इतना सुनते ही दान्ते सारी चिन्ता और आशंकाओं से मुक्त हो-उठता है और धू-धू करती हुई आग की भट्टी में कूद पड़ता है । वर्जिल और स्टैटियस उसका अनुकरण करते हैं और शीघ्र ही वे तीनों एक चढ़ाऊ रास्ते पर आ-निकलते हैं । यहाँ वे अलग-अलग टीलों पर आराम करते हैं किन्तु दान्ते तबतक आसमान के सितारे देखता और गिनता रहता है जबतक कि उसे नींद नहीं आ जाती और वह स्वप्न नहीं देखता कि एक कुंज में एक अपूर्व सुन्दरी फूल चुन रही है और अपने से और अपनी बहिन से सम्बंधित एक गीत गा रही है । वह कहती है कि उसका अपना नाम 'ली' है, जो मध्य-युगीन

1 क्रीट के राजा माइनॉस की पत्नी । 2 एक नगर— 3 एक नगर जहाँ के सेव पतित देवदूतों को पसन्द हैं !

कैसे दीनता से हाथ पकड़ने के बाद उसने अपने अनुयायियों की जड़ें मज़बूत कीं, उनका संगठन किया, ईश्वरीय अनुकम्पा प्राप्त की, कैसे अपने द्वारा आरम्भ किये सद्कार्य को चलाते-रहने और आगे बढ़ाते रहने के लिये 'संत डॉमिनिक' जैसे योग्य शिष्य और उनके प्रतिद्वंदी तैयार किये और कैसे, अंत में, सुगन्धि बनकर दैविक-पवित्रता के साथ एकाकार होने में सफलता प्राप्त की। इसके बाद वह कहता है कि 'संत फ्रैंसिस' के कितने ही अनुयायी इन प्रकाश-परिधियों में देखे जा सकते हैं, कहना न होगा कि इन्हीं प्रकाश-परिधियों का दूसरा नाम 'सूर्य्य-लोक' है।

पर्व बारह—

इसी समय, जब कि एक के बाद दूसरे इन्द्रधनुषी-चक्र दान्ते को घेरते हैं, 'संत-बुआनावेन्तुरा' 'संत डॉमिनिक' की मानव-जाति के प्रति की गई तमाम अमूल्य सेवाओं का वर्णन करता है। इस प्रकार दान्ते उसकी अपूर्व आसक्ति, अदम्य उत्साह, और गहन श्रद्धा का गुणगान सुनकर कृतकृत्य हो-उठता है।

पर्व तेरह—

इस समय, जब कि दान्ते और बियेट्रिस सूर्य्य के सारे प्रदेश का चक्कर लगाते हुये उन ज्योति-चक्रों को देखकर अचरज, भय और यशोगान में अवाक् हो उठते हैं, संत टॉमस एक्वाइ-नस' दान्ते की कितनी ही समस्यायें सुलझाता और उसे सचेत करता है कि बिना पूरी तरह तोले और सोचे-समझे वह किसी प्रस्ताव को कभी भी कार्य-रूप में परिणित न करे।

पर्व चौदह—

इस प्रकार एक के बाद दूसरे घेरे पार करते हुए दान्ते और बियेट्रिस स्वर्ग के अन्तरतम प्रदेश में पहुँचते हैं। यहाँ बियेट्रिस 'सालोमन' को आदेश देती है कि वह स्वर्ग के अंतिम निर्णय के बाद की धर्मात्माओं की जीवनी का वर्णन कर दान्ते के संदेहों को दूर करे! 'सालोमन' दूसरे ही क्षण आदेश का पालन करता है और इतने गंभीर शब्दों में अपनी वाक्य-चातुरी का प्रदर्शन करता है कि लगता है कि 'संत जेब्रेईल' 'मेरी' को अपना सन्देश सुना रहा है!

× ×

जैसे ही 'सालोमन' अपनी वक्तृता समाप्त करता है, सैकड़ों कंठों से एक साथ निनादित 'तथास्तु' का शब्द दान्ते के कानों में पड़ता है और 'सालोमन' उससे आकाश की ओर देखने का आग्रह करता है, जहाँ इस प्रदेश की सारी आत्मायें क्रॉस के रूप में एकत्रित हैं। ये पुण्यात्मायें वे हैं जो स्वर्गीय-श्री से कांतिमान हैं, और जिनकी धमनियों में स्वर्गीय संगीत बज रहा है और यह क्रॉस वह क्रॉस है जो कि ईसा के रूप की किरणों से प्रतिपल ज्योतिर्मय हैं और जिसका अधिकारी केवल वह है जिसने ईसाई धर्म की दीक्षा ली है और इसके बाद ईसा का अनुसरण किया है।

प्रकाश हो रहा है। दूसरे ही क्षण अद्भुत, मधुर संगीत उसके कानों में पड़ता है और वह देखता है कि अलौकिक श्री से जगमग करती हुई आत्माओं का एक दल उसकी ओर बढ़ा आ रहा है। यह आत्मायें इतनी कान्तिमान हैं कि इनके पद-चिन्हों में इन्द्र-धनुष रह-रहकर झलक उठता है। इनका नेतृत्व वयोवृद्ध धर्म-गुरुओं का एक दल कर रहा है और इनका अनुकरण ईसा की जीवनी के चारों लेखक श्रद्धापूर्वक कर रहे हैं। इनके पीछे ग्राइफ़ॉन नामक विचित्र पशु है! यह पशु एक भव्य रथ खींच रहा है जो ईसाई गिर्जे या पोप के धार्मिक आसन का प्रतीक है,! इसे देखकर सहज में ही यह धारणा होती है कि ऐसा दिव्य रथ रोम की किसी राजसी विजय के अवसर पर भी शायद ही दिखलाई पड़ा हो। इस रथ के रक्षक भी अनेकों हैं, जिनमें दान, आस्था और आशा जैसी तीन सद्वृत्तियों और दूरदर्शिता आदि चार नैतिक नीतियों के अतिरिक्त संत ल्यूक, संत पॉल, गिर्जे के चारों महान् डॉक्टर और धर्माचार्य संत जॉन आदि विशेषतया उल्लेखनीय हैं।

पर्व तीस–

हमारा कवि दान्ते अब एक अद्भुत प्रकाश देखता है! यह प्रकाश सात शाखा-वाली एक मोमबत्ती से फूट रहा है और कुमारी ऊषा की हीरक-कांति से सारे स्वर्ग को जगर-मगर कर रहा है। इसी समय जब कि चारों ओर से प्रार्थनाओं के स्वर उसे सुनाई पड़ते हैं, वह देखता है कि एक रथ में एक स्त्री विराजमान है, जिस पर सफेद पर्दा पड़ा हुआ है। वह यह भी देखता है कि देवतागण उस पर फूल बरसा रहे हैं, और, यद्यपि इस समय वह दूसरे रूप में है तो भी, वह उसे दृष्टि पड़ते ही पहचान लेता है जैसे कि यह उसके लिए स्वाभाविक हो। यह स्त्री और कोई न होकर बियेट्रिस है! बियेट्रिस स्वर्गीय ज्ञान की प्रतीक है। इस प्रकार सहसा ही युग-युग की अभिलाषा साकार देखकर वह अचरज से अवाक हो-उठता है और यन्त्र-चालित सा वर्जिल की ओर मुड़ता है किन्तु देखता है कि वह अदृश्य हो चुका है। दान्ते का धीरज छूट जाता है।

× ×

उसकी अधीरता का अर्थ समझकर बियेट्रिस उसे यह वचन देकर सान्त्वना देती है कि वह चिन्तित न हो, इसके बाद वह स्वयं उसका पथ-प्रदर्शन करेगी। इतना कहकर वह एक क्षण रुकती है और फिर कड़े-मधुर शब्दों में बीती-बातों के लिये उसकी इतनी भर्त्सना करती है कि उसकी दृष्टि लज्जा से नीचे झुककर पैरों पर जा पड़ती है। यहीं पास के प्रकृति के दर्पण के प्रतीक एक सोते में वह अपनी परीशानी की परछाईं देखता है और अपने किये पर इतना पश्चात्ताप करता है कि बियेट्रिस द्रवित हो-उठती है। वह उसे समझाती है कि जिस भयानक रास्ते से वह यहां आया है, वह स्वयं उसने उसके लिये चुना है और स्वयं वह उसे उस राह से

---

[1]एक कल्पित पशु जिसका शरीर और जिसके पैर शेर के हों किंतु जिसकी चोंच और जिसके पर बाज़ के हों।

विराजमान देखता है। इसी 'संत लूशिया' की प्रेरणा से बियेट्रिस ने दान्ते को स्वर्ग में आमन्त्रित किया था!

पर्व तैंतीस—

'मेरी' सारे प्रार्थी समुदाय को मुँह मांगा वरदान दे रही है, और कभी-कभी तो, ऐसा भी करती है कि मांग सामने नहीं आ पाती, और उसकी पूर्ति हो जाती है। इसी समय 'संत बरनर्ड' बहुत भावभरे शब्दों में, उससे प्रार्थना करता है कि वह स्वर्गीय ऐश्वर्य की एक हल्की-सी झांकी दान्ते को देख लेने दे! तत्पश्चात यह देख कर कि 'मेरी' प्रसन्न है और प्रार्थना उसके अनुकूल पड़ रही है, वह दान्ते से ऊपर की ओर देखने का आग्रह करता है।

× ×

पाठकों को ध्यान होगा कि थोड़े समय पहले दान्ते की आखों से माया का अंतिम पर्दा भी हटाया जा चुका है, अतएव अपनी विशुद्ध और विमल दृष्टि की कृपा से वह 'त्रिदेव' के क्षणिक दर्शन करता है। यह मूर्ति अलौकिक प्रेम का संयुक्त-रूप है और मानवीय भाव-प्रकाशन के लिये इतनी दुर्लभ और इतनी उदात्त है कि दान्ते घोषित करता है कि वह शब्दों द्वारा व्यक्त होने के लिये बनी ही नहीं!

× ×

अंत में दान्ते पाठकों को विश्वास दिलाता है कि यद्यपि इसके कारण उसकी आँखों में चकाचौंध पैदा हो गई है, तथापि इस अलौकिक छवि से उसका जी अभी भरा नहीं और उसकी अभिलाषा निरन्तर चंचल रहनेवाले सृष्टि-चक्र की भांति बढ़ती ही जा रही है। इसका कारण भी है, और वह यह कि उसे शक्ति प्रदान करने में उस प्रेम का हाथ है जो कि आकाश सूर्य्य और आकाश के सितारों को जीवन और गति प्रदान करता है! उसकी कामना है कि यह दृश्य सदैव ही उसकी आँखों के आगे रहे!

× ×

इस प्रकार यह महान काव्य समाप्त होता है!

———

रहे और फिर आंखों में चकाचौंध हो जाने के कारण किसी वस्तु पर किसी प्रकार दृष्टि न गड़ा सके। दूसरे शब्दों में, वह अनुभव करता है कि हर वस्तु से, जिस पर वह दृष्टि डालता है, बियेट्रिस के रूप की किरणें फूट रही हैं और उसकी निगाह कहीं जमती नहीं। इसके बाद ही वह और स्टैटियस विनम्र भाव से बियेट्रिस के विराट और विशद् जुलूस के साथ हो जाते हैं! यह जुलूस एक वन में प्रविष्ट होने के बाद एक पेड़ के तने को घेर लेता है। इसी तने से वह रथ बांध दिया जाता है।

कहना होगा कि दूसरे ही क्षण के उस पेड़ की सूखी डालियों में किसलय निकल जाते हैं, उनमें कलियाँ मुस्कराने लगती हैं! ऐसे मधुमय क्षण में देवदूतों के स्वर्गीय संगीत से विभोर होकर दान्ते गहरी नींद में सो जाता है और एक ऐसा रोमांचकारी स्वप्न देखता है कि जागने पर पागलों की भाँति बियेट्रिस के लिये इधर-उधर देखने लगता है! उसे 'लीथ' से इसपार लानेवाली वह परी उसकी चिन्ता लक्ष्य करती है और उसे संकेत से बियेट्रिस को दिखला-देती है! वह इस रहस्यपूर्ण पेड़ के सहारे आराम कर रही है। इसी समय बियेट्रिस अपने स्थान से उठती है और दान्ते से कहती है कि अब वह उसके रथ के भाग्य का व्यंग्य देखे और समझे! कवि रथ की ओर घूम पड़ता है और देखता है कि 'राज्यसत्ता' का प्रतीक एक बाज़ आकाश से पृथ्वी पर उतरा, उसने उस पेड़ को बुरी तरह चीर-फाड़ डाला, उसके टुकड़े-टुकड़े कर डाले, और उस रथ पर हमला किया जो कि गिर्जे का प्रतीक है, और जिसमें धर्म-सम्बन्धी, मूलगत भ्रम की प्रतीक एक लोमड़ी इधर-उधर सिर मार रही है, जैसे कि किसी आखेट की खोज में हो। यही नहीं, दान्ते यह भी लक्ष्य करता है कि यद्यपि बियेट्रिस रथ के समीप गई, और उसने तुरन्त ही उस लोमड़ी का नशा उतार दिया तथापि उस बाज़ ने उस रथ में अपना घोंसला बना लिया। इसी समय एक दूसरे दैत्य को अपनी पीठ पर लादे हुये, ७ प्रमुख पापों का प्रतीक, सात सिरों का एक राक्षस उस रथ के नीचे से निकला! वह, क्रम से, पहिले कुछ देर तक एक वैश्या को मनुहार करता रहा और फिर उसे सुधारने के लिये कुछ देर तक उसे तरह-तरह के दंड देता रहा।

पर्व तैंतीस—

इसी समय सात धार्मिक-वृत्तियाँ एक प्रार्थना गाती हैं। इसके बाद बियेट्रिस दान्ते और स्टैटियस को अपना अनुकरण करने का संकेत करती है और दान्ते को विशेषतया चुप देखकर उसके इस मौन का कारण जानने को उत्सुक हो-उठती है। दान्ते उत्तर देता है कि वह उसका प्रश्न स्वयं जानती है, उसे बतलाने की आवश्यकता नहीं है। इस पर वह उसे अभी-अभी घटी तमाम घटनाओं का रहस्य समझाती है और आग्रह करती है कि वह उसे मनुष्य-जाति तक पहुँचा दे!

इस तरह बातें करते-करते दान्ते 'यूनो' नामक दूसरी धारा के समीप पहुँच जाता है। यहाँ बियेट्रिस उसे उस प्रपात का पानी पीने का संकेत करती है। वह झुकता है और इस नव-जीवन-प्रदाता जल के एक घूंट के बाद ही अनुभव करता है कि वह शुद्ध एवं पवित्र हो गया और अब वह नक्षत्र-लोक तक पहुँचनें का अधिकारी है।

'अय्यामेअरब' नामक ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

× ×

अब्बासिया के द्वारा बग़दाद की स्थापना होते ही फ़ारस ने राजनीति में ही नहीं, साहित्य में भी अपना रंग दिखलाना और लोगों को प्रभावित करना आरंभ कर दिया। किन्तु ख़लीफ़ा-वर्ग के राज्यों की प्रमुख-भाषा इस समय भी अरबी थी! अरबी-साहित्य की महानतम कृति 'अलिफ़लैला' है! यह कथा-सूत्र में गुंथी कुछ कहानियों का संग्रह है और इसके लेखक का नाम-आदि सबकुछ लापता है। इसकी कथा-वस्तु का सारांश है यह है कि किसी अरबी बादशाह ने स्त्रियों के त्रिया-चरित्र और उनके दुराचारों से अपनी रक्षा करने के लिये निश्चय किया कि वह प्रतिदिन सुबह एक पत्नी चुनेगा और दूसरे दिन सुबह होते-होते उसे मरवा डालेगा। उसने इस निश्चय के अनुसार कार्य भी किया। अतः उसकी नृशंसता और इस घोर हत्या से तंग आकर दो बहिनों ने उसका अन्त कर देने का संकल्प किया और इस कार्य में अपने जान की बाज़ी लगा-देने की ठान ली! इनमें बड़ी बहिन बादशाह से प्रस्ताव कर उसकी रानी बन गई और रानी बन जाने के बाद उससे गिड़गिड़ाने लगी कि वह उसकी बहन को वह अंतिम रात उसके साथ बिता-लेने की आज्ञा दे दे। राजा मान गया और अपनी बहन का दिल बहलाने के बहाने रानी ने एक कहानी कहना आरम्भ किया, किंतु चालाकी से उसे अधूरा ही छोड़ दिया। उधर बादशाह इस कहानी का बाक़ी हिस्सा सुनने के लिये इतना उत्सुक हो गया कि दूसरा दिन हो गया और नियम के अनुसार उसने उसके मार डालने की आज्ञा न दी! किंतु एक कहानी समाप्त हुई और दूसरी शुरू हो गई! इस तरह वह चतुर कहानी कहनेवाली अपनी कहानियों से अपने पति और अपनी बहिन को पूरे १०१ दिनों तक मन्त्र-मुग्ध करती रही।

इस शृंखला की सारी कहानियों का वास्तविक जन्म-स्थान फ़ारस है और ये सभी 'हज़ार अफ़साने' नामक ग्रंथ में मिलती हैं, जिसका दसवीं शताब्दी में अरबी में अनुवाद हुआ! किंतु कुछ अधिकारियों का दावा है कि इन कहानियों का जन्म-स्थान भारतवर्ष है और सिकन्दर की दिग्विजय के कुछ ही वर्ष पहिले वे यहाँ से फ़ारस गईं! जो भी हो यह सब कहानियां इतनी प्रचलित हैं कि सभी सभ्य भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है और, यहाँ तक कि, अब ये गद्यात्मक महाकाव्य कहलाती हैं!

अरब इसके अतिरिक्त भी एक वीर-काव्य को लेकर भी बड़ी-बड़ी डींगें मार सकता है। इसका नाम 'क़ससे आरतार' है! इसका लेखक 'अल असमई' (७३६-८३१), को बतलाया जाता है। इसमें मुहम्मद के अवतार के पहले के अरब इतिहास की सारी प्रमुख घटनाओं का वर्णन है, अतएव इसे 'अरब की इलियड' भी कहते हैं!

× ×

'क़ससे बनहिलाल' और 'क़ससे अबूज़ैद,' ३८ पौराणिक कथा-चक्र के ही एक भाग हैं, और मिश्र में आज भी अत्यधिक प्रचलित हैं!

उनके दैवी आवर्त्तनों का रहस्य समझाती है और वायदा करती है कि वह उसे 'सत्य कि तुम मुझे प्रेम करते हो' का भी मर्म बतलायेगी !

पर्व तीन—

चन्द्रमा के इस मोतिया वातावरण को भेद कर, दूसरे ही क्षण, उसकी दृष्टि कुछ भक्त-स्त्रियों पर जा-पड़ती है और बियेट्रिस उसे उनसे बातें करने का संकेत देती है ! वह निकट आकर उनको सम्बोधित करता है और उसे पता लगता है कि उनमें से एक उसके मित्र फ़ॉरेसे की बहिन पिकार्डा है जिसे उसके सन्यास ग्रहण करने के बाद उसका पति भगा ले गया था। यद्यपि उसे अपने धार्मिक संकल्पों का पालन करने में ही अत्यधिक प्रसन्नता होती तो भी वह एक पति-भक्ता स्त्री प्रमाणित हुई। वह कहती है कि जबतक सर्वशक्तिमान अपने पास नहीं बुला लेते वह और उसकी साथ की आत्मायें अपने लिये नियुक्त इस जगत में ही प्रसन्न और सन्तुष्ट हैं:—

'वह अपनी चिर-संगिनियों के साथ मधुर मुस्काई,
और मुदित होकर बोली यों'
जैसे खनक उठे ममता की याकि प्रेम की प्रथम किरण—
बंधु, दान है सर्वोपरि !
अरे, दान की शक्ति सदैव,
निश्चित करती है हम सब की आशायें औ' अभिलाषायें,
और विवश हम हो जाते हैं
करने को सन्तोष पास जो केवल उससे,
कभी नहीं हम उड़ पाते हैं 'उसकी' अभिलाषा के आगे !'

उसका कथन है कि अनेकानेक अभिलाषाओं के साथ उसकी साथी-आत्माओं की यह भी कामना है कि वे सब ईसा की पत्नियाँ हो जायें, तो भी वे शांतिपूर्वक अपने कर्त्तव्य का पालन करती हैं और यह समझकर कि परमपिता की इच्छा ही उनकी इच्छा है, और उसकी इच्छा में ही उनकी मुक्ति है, वे अपना सारा समय ईश्वर भजन में व्यतीत करती है।

शीघ्र ही वे सारी आत्मायें लुप्त हो जाती है और दान्ते बियेट्रिस की ओर देखने लगता है। उसकी इच्छा है कि वह इस विषय पर और प्रकाश डाले।

पर्व चार—

दान्ते की प्रश्न सूचक दृष्टि के उत्तर में बियेट्रिस कहती है कि अपनी इच्छा के विरुद्ध कुछ भी करना पाप है और ऐसा पाप करने पर विवश होने वालों को स्वर्ग कभी भी क्षमा नहीं करता। उसका कहना है कि निष्काम आत्मा सदैव अजेय है और यह कि अपनी इच्छा-शक्ति के कारण ही संत लॉरेंस और 'म्यूसियस स्किवोला' इतनी बहादुरी से आग का सामना कर सके थे ! इसके बाद, वह उसे दिखलाती है कि केवल सत्य ही ज्ञान-पिपासु मस्तिष्क को सन्तुष्ट कर सकता है।

'अय्यामेअरब' नामक ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

× ×

अब्बासिया के द्वारा बग़दाद की स्थापना होते ही फ़ारस ने राजनीति में ही नहीं, साहित्य में भी अपना रंग दिखलाना और लोगों को प्रभावित करना आरंभ कर दिया। किन्तु खलीफा-वर्ग के राज्यों की प्रमुख-भाषा इस समय भी अरबी थी! अरबी-साहित्य की महानतम कृति 'अलिफ़लैला' है! यह कथा-सूत्र में गुंथी कुछ कहानियों का संग्रह है और इसके लेखक का नाम-आदि सबकुछ लापता है। इसकी कथा-वस्तु का सारांश है यह है कि किसी अरबी बादशाह ने स्त्रियों के त्रिया-चरित्र और उनके दुराचारों से अपनी रक्षा करने के लिये निश्चय किया कि वह प्रतिदिन सुबह एक पत्नी चुनेगा और दूसरे दिन सुबह होते-होते उसे मरवा डालेगा। उसने इस निश्चय के अनुसार कार्य भी किया। अतः उसकी नृशंसता और इस घोर हत्या से तंग आकर दो बहिनों ने उसका अन्त कर देने का संकल्प किया और इस कार्य में अपने जान की बाज़ी लगा-देने की ठान ली! इनमें बड़ी बहिन बादशाह से प्रस्ताव कर उसकी रानी बन गई और रानी बन जाने के बाद उससे गिड़गिड़ाने लगी कि वह उसकी बहन को वह अंतिम रात उसके साथ बिता-लेने की आज्ञा दे दे। राजा मान गया और अपनी बहन का दिल बहलाने के बहाने रानी ने एक कहानी कहना आरम्भ किया, किंतु चालाकी से उसे अधूरा ही छोड़ दिया। उधर बादशाह इस कहानी का बाक़ी हिस्सा सुनने के लिये इतना उत्सुक हो गया कि दूसरा दिन हो गया और नियम के अनुसार उसने उसके मार डालने की आज्ञा न दी! किंतु एक कहानी समाप्त हुई और दूसरी शुरू हो गई! इस तरह वह चतुर कहानी कहनेवाली अपनी कहानियों से अपने पति और अपनी बहिन को पूरे १०१ दिनों तक मन्त्र-मुग्ध करती रही।

इस शृंखला की सारी कहानियों का वास्तविक जन्म-स्थान फ़ारस है और ये सभी 'हज़ार अफ़साने' नामक ग्रंथ में मिलती हैं, जिसका दसवीं शताब्दी में अरबी में अनुवाद हुआ! किंतु कुछ अधिकारियों का दावा है कि इन कहानियों का जन्म-स्थान भारतवर्ष है और सिकन्दर की दिग्विजय के कुछ ही वर्ष पहिले वे यहाँ से फ़ारस गईं! जो भी हो यह सब कहानियां इतनी प्रचलित हैं कि सभी सभ्य भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है और, यहाँ तक कि, अब ये गद्यात्मक महाकाव्य कहलाती हैं!

अरब इसके अतिरिक्त भी एक वीर-काव्य को लेकर भी बड़ी-बड़ी डींगें मार सकता है। इसका नाम 'क़ससे आरतार' है! इसका लेखक 'अल असमई' (७३६-८३१), को बतलाया जाता है। इसमें मुहम्मद के अवतार के पहले के अरब इतिहास की सारी प्रमुख घटनाओं का वर्णन है, अतएव इसे 'अरब की इलियड' भी कहते हैं!

× ×

'क़ससे बनहिलाल' और 'क़ससे अबूज़ैद,' ३८ पौराणिक कथा-चक्र के ही एक भाग हैं, और मिश्र में आज भी अत्यधिक प्रचलित हैं!

है, अतएव सैंबाइन्स के अपहरण से लेकर अपने समय तक की प्रमुख-प्रमुख घटनाओं का वर्णन बड़े मनोरंजक ढंग से कर-जाता है। वह महान सेनापतियों की महान विजयों पर विशेष ज़ोर देता है और उस क्षण की विशेष चर्चा करता है जब स्वर्ग को यह बात सुनाई गई कि गहन और चिरन्तन शान्ति के अवतार ईश्वर को ही सारी दुनिया के लिये चिंतित होने का अधिकार है, अन्य किसी को नहीं! यही नहीं, वह राज्य के संकट काल का और ग्वेल्फ़्स [1] और गिल्बेलाइन्स [2] के उत्तराधिकार सम्बन्धी पारस्परिक संघर्ष का भी विशेष उल्लेख करता है। इसके बाद वह कहता है कि बुद्ध लोक में वे लोग बसते हैं जिन्होंने पृथ्वी पर अपना सारा जीवन मर्यादा और यश की प्राप्ति की साधना में बिताया है। इनमें वह उस 'रेमान्ड-बेरेंज़ेयर' की चर्चा विशेष-रूप से करता है, जिसकी चार पुत्रियाँ यथासमय रानियाँ बनीं!

पर्व सात–

इस संलाप के बाद अपने अन्य साथी-देवदूतों के साथ जस्टीनियन अदृश्य हो जाता है और उचित प्रोत्साहन पाकर दान्ते बियेट्रिस से प्रश्न करता है कि माना कि प्रतिहिंसा की भावना निन्दनीय है, किन्तु यदि वह उचित और न्यायसंगत हो तो न्याय उसे कैसे और क्या दंड दे सकता है। इस पर वह उत्तर देती है कि जिस तरह आदम का अनुकरण करने से पतन होता है और मृत्यु प्राप्त होती है, उसी प्रकार, मंगलमय ईश्वर को धन्यवाद है कि, श्रद्धा से ईसा के अनुकरण के द्वारा एक बार फिर जीवन प्राप्त हो सकता है, परमपिता की माया विचित्र है।

पर्व आठ–

इस बीच में दान्ते की दृष्टि बराबर बियेट्रिस पर जमी-रहती है। बात चलती रहती है और दान्ते को पता भी नहीं चलता कि वह तीसरे स्वर्ग में पहुँचा दिया जाता है! इस लोक का नाम 'शुक्रलोक' है! यह लोक पराक्रमी युवराजों द्वारा परिचालित होता है और यह वह प्रेम-लोक है जहाँ बियेट्रिस का सौन्दर्य कई गुना होकर निखर उठता और दमकने लगता है! दान्ते देखता है कि यहाँ प्रेम में अति करने के कारण अपूर्ण रह-गई आत्माओं का दल चक्राकार रास्तों पर बराबर घूम रहा है। इनमें से एक तेजस्वी आत्मा दान्ते के समीप आती है! वह उसे अपनी सेवायें अर्पित करती है और अपना परिचय देती है कि वह नेपिल्स के राबर्ट के भाई और हंगेरी के राजा 'चार्ल्स मार्टिल' की आत्मा है! ज्ञान का प्यासा दान्ते परिचय पाते ही उससे पूछता है कि यह कैसे सम्भव है कि मधुमय वसन्त माधुरी का बीज बो दे, किन्तु फलस्वरूप उसे मिले विषमता और कटुता! इस पर वह बड़ा व्यवस्थित उत्तर देती है कि प्रायः लड़के अपने माँ-बाप से बिल्कुल भिन्न होते हैं। अपने इस तर्क को बल देने के लिये वह 'ईसेन' और 'जैकब' के उदाहरण भी देती है और कहती है कि कभी-कभी हाँ ऐसा होता है कि प्रकृति अपनी इच्छा

१-२—दान्ते के समय के दो प्रमुख राजनैतिक दल-

बनवा दिया जिसे एक लम्बी कामना के बाद भी 'फ़िरदौसी' मूर्तिमान न कर सका था और मर गया था !

× ×

इस प्रकार खोज करने पर पता चलता है कि इन फ़ारसी शाहों अथवा राजाओं ने अपने देश की कथाओं को एकत्रित करने के कितने ही फुटकर प्रयत्न किये, किन्तु इनमें से इने-गिने ही सफल हो सके और कुछ गिनती की कथायें ही फ़ारस लाई जा सकीं क्योंकि अरबों की विजय के समय इनमें से बहुतेरी इधर-उधर भटक कर लुप्त हो गईं ।

× ×

यद्यपि कुछ अधिकारियों का दावा है कि फ़िरदौसी का काव्य फ़ारस का पूरा इतिहास है तथापि इसमें अनहोनी और अलौकिक घटनाओं की मात्रा इतनी अधिक है कि यदि इसकी शैली इतनी अपूर्व और आश्चर्यजनक न होती तो इसका अब तक काल के सिर पर चढ़कर अमर रहना असम्भव हो जाता। ख़ैर, कवि का अपना दावा तो यह है कि उसने जो कुछ भी लिखा है उस पर किसी ज्वार-भाटे या मौत की छाया पड़ने से तो रही ही, वह ऐसा भी है कि काल के विस्तृत समुद्र में इस छोर से उस छोर तक फैले हुये अजन्मे-मनुष्य भी उसे पढ़ेंगे और उस पर मनन करेंगे !

कैसे दीनता से हाथ पकड़ने के बाद उसने अपने अनुयायियों की जड़ें मज़बूत कीं, उनका संगठन किया, ईश्वरीय अनुकम्पा प्राप्त की, कैसे अपने द्वारा आरम्भ किये सद्कार्य को चलाते रहने और आगे बढ़ाते रहने के लिये 'संत डॉमिनिक' जैसे योग्य शिष्य और उनके प्रतिद्वंदी तैयार किये और कैसे, अंत में, सुगन्धि बनकर दैविक-पवित्रता के साथ एकाकार होने में सफलता प्राप्त की। इसके बाद वह कहता है कि 'संत फ्रैंसिस' के कितने ही अनुयायी इन प्रकाश-परिधियों में देखे जा सकते हैं, कहना न होगा कि इन्हीं प्रकाश-परिधियों का दूसरा नाम 'सूर्य्य-लोक' है।

पर्व बारह—

इसी समय, जब कि एक के बाद दूसरे इन्द्रधनुषी-चक्र दान्ते को घेरते हैं, 'संत-बुआनावेन्तुरा' 'संत डॉमिनिक' की मानव-जाति के प्रति की गई तमाम अमूल्य सेवाओं का वर्णन करता है। इस प्रकार दान्ते उसकी अपूर्व आसक्ति, अदम्य उत्साह, और गहन श्रद्धा का गुणगान सुनकर कृतकृत्य हो-उठता है।

पर्व तेरह—

इस समय, जब कि दान्ते और बियेट्रिस सूर्य्य के सारे प्रदेश का चक्कर लगाते हुये उन ज्योति-चक्रों को देखकर अचरज, भय और यशोगान में अवाक् हो उठते हैं, संत टॉमस एक्वाइ-नस' दान्ते की कितनी ही समस्यायें सुलझाता और उसे सचेत करता है कि बिना पूरी तरह तोले और सोचे-समझे वह किसी प्रस्ताव को कभी भी कार्य-रूप में परिणित न करे।

पर्व चौदह—

इस प्रकार एक के बाद दूसरे घेरे पार करते हुए दान्ते और बियेट्रिस स्वर्ग के अन्तरतम प्रदेश में पहुँचते हैं। यहाँ बियेट्रिस 'सालोमन' को आदेश देती है कि वह स्वर्ग के अंतिम निर्णय के बाद की धर्मात्माओं की जीवनी का वर्णन कर दान्ते के संदेहों को दूर करे! 'सालोमन' दूसरे ही क्षण आदेश का पालन करता है और इतने गंभीर शब्दों में अपनी वाक्य-चातुरी का प्रदर्शन करता है कि लगता है कि 'संत जेब्रेईल' 'मेरी' को अपना सन्देश सुना रहा है।

× ×

जैसे ही 'सालोमन' अपनी वक्तृता समाप्त करता है, सैकड़ों कंठों से एक साथ निनादित 'तथास्तु' का शब्द दान्ते के कानों में पड़ता है और 'सालोमन' उससे आकाश की ओर देखने का आग्रह करता है, जहाँ इस प्रदेश की सारी आत्मायें क्रॉस के रूप में एकत्रित हैं। ये पुण्यात्मायें वे हैं जो स्वर्गीय-श्री से कांतिमान हैं, और जिनकी धमनियों में स्वर्गीय संगीत बज रहा है और यह क्रॉस वह क्रॉस है जो कि ईसा के रूप की किरणों से प्रतिपल ज्योतिर्मय है और जिसका अधिकारी केवल वह है जिसने ईसाई धर्म की दीक्षा ली है और इसके बाद ईसा का अनुसरण किया है।

शासन करता है कि फ़ारस पृथ्वी का स्वर्ग बन जाता है।

इस लम्बे राज्य-काल के अंतिम दिनों में फ़रीदूँ अपने तीनों पुत्रों को पत्नियों की खोज में अरब भेजता है और उनके लौटने पर उनकी शारीरिक और मानसिक परीक्षा लेने के लिये एक परवाले-राक्षस का रूप बनाकर उनका रास्ता घेर लेता है। इस पर सबसे बड़ा लड़का यह कहकर, बहादुरी से, पीछे हट जाता है कि बुद्धिमान और चालाक व्यक्ति राक्षसों से नहीं लड़ा करते, किन्तु उसका छोटा भाई बिल्कुल लापरवाही से बिना अपनी रक्षा की चिन्ता किये, उसका सामना करने के लिये आगे बढ़ता है, और तीसरा, न केवल अपने भाई को बचाने के लिये ही बल्कि व्यावहारिक बुद्धि से इस दैत्य की गर्दन उतार लेने के लिये भी, अपने भाई के साथ अगला क़दम उठाता है। इस प्रकार यह सब देख-समझकर राजा अपना वास्तविक रूप धारण कर लेता है और कहता है कि गोकि वह अपने राज्य को तीन भागों में विभाजित करना चाहता है तो भी फ़ारस और ईरान का सर्व श्रेष्ट राज्य-भाग वह ईर्ज नामक अपने छोटे पुत्र को ही देगा क्योंकि उसने साहस के साथ-साथ बुद्धिमानी का भी परिचय दिया है।

शीघ्र ही राजकुमारों का विवाह हो जाता है और थोड़े समय बाद ईर्ज नामक छोटे पुत्र के यहाँ एक पुत्री का जन्म होता है। इस कन्या का लालन-पालन उसका बाबा फ़रीदूँ करता है। यथा समय यही पुत्री मनूचेहर नामक पुत्र की माँ होती है।

अब राज्य का बटवारा होता है और बाक़ी दोनों भाई एक होकर ईर्ज का राज्य-भाग भी उससे छीन लेना चाहते हैं। बात बढ़ जाती है और यद्यपि वह स्वयं मार डाला जाता है, किन्तु उसका नाती मनूचेहर अपने नाना की मृत्यु का बदला लेने के लिये अपने चचेरे नानाओं को हरा देता और मरवा डालता है। इसके बाद वह स्वयं सिंहासन ग्रहण करता है और अपने [illegible] को अभी अभी जीते राज्यों में से एक राज्य का शासक बना देता है। यह काले बालों वाला आदमी अपने नये वैभव से फूला नहीं समाता और तबतक उसका पूरा-पूरा सुख भोगता है जबतक उसे यह ज्ञात नहीं होता कि उसके अभी-अभी हुए पुत्र के बाल हिम से सफ़ेद हैं।

विराजमान देखता है। इसी 'संत लूशिया' की प्रेरणा से वियेट्रिस ने दान्ते को स्वर्ग में आमन्त्रित किया था!

पर्व तैंतीस—

'मेरी' सारे प्रार्थी समुदाय को मुँह मांगा वरदान दे रही है, और कभी-कभी तो, ऐसा भी करती है कि मांग सामने नहीं आ पाती, और उसकी पूर्ति हो जाती है। इसी समय 'संत बरनर्ड' बहुत भावभरे शब्दों में, उससे प्रार्थना करता है कि वह स्वर्गीय ऐश्वर्य की एक हल्की-सी झांकी दान्ते को देख लेने दे! तत्पश्चात यह देख कर कि 'मेरी' प्रसन्न है और प्रार्थना उसके अनुकूल पड़ रही है, वह दान्ते से ऊपर की ओर देखने का आग्रह करता है।

× ×

पाठकों को ध्यान होगा कि थोड़े समय पहले दान्ते की आखों से माया का अंतिम पर्दा भी हटाया जा चुका है, अतएव अपनी विशुद्ध और विमल दृष्टि की कृपा से वह 'त्रिदेव' के क्षणिक दर्शन करता है। यह मूर्ति अलौकिक प्रेम का संयुक्त-रूप है और मानवीय भाव-प्रकाशन के लिये इतनी दुर्लभ और इतनी उदात्त है कि दान्ते घोषित करता है कि वह शब्दों द्वारा व्यक्त होने के लिये बनी ही नहीं!

× ×

अंत में दान्ते पाठकों को विश्वास दिलाता है कि यद्यपि इसके कारण उसकी आँखों में चकाचौंध पैदा हो गई है, तथापि इस अलौकिक छवि से उसका जी अभी भरा नहीं और उसकी अभिलाषा निरन्तर चंचल रहनेवाले सृष्टि-चक्र की भाँति बढ़ती ही जा रही है। इसका कारण भी है, और वह यह कि उसे शक्ति प्रदान करने में उस प्रेम का हाथ है जो कि आकाश सूर्य्य और आकाश के सितारों को जीवन और गति प्रदान करता है! उसकी कामना है कि यह दृश्य सदैव ही उसकी आँखों के आगे रहे!

× ×

इस प्रकार यह महान काव्य समाप्त होता है!

———

अरबी और फ़ारसी महाकाव्य–

ज्योंही कोई अरब ऊँट पर सवार होकर ऊँट की प्रकृति के अनुसार उसके अनगढ़ किन्तु दृढ़ कूबड़ पर इस तरह झुका कि उसका शरीर क़रीब-क़रीब दोहरा हो गया, उसी समय उदास, सुनसान और लम्बे रेगिस्तानों में इस पार से उस पार जाते हुये कारवानों ने उस अरब के कंठ में स्वर ही नहीं प्रत्युत गीतों की भी सृष्टि की। किन्तु इन ऊँट-सवारों द्वारा इस प्रकार रेगिस्तानी राहों में गाई गईं सारी कवितायें बहुत छोटी हैं, न तो वे महाकाव्यों-सी धारावाहिक हैं और न उनकी भाँति वेगपूर्ण! फिर, ये रूप मिलती भी नहीं, क्योंकि छठवीं शताब्दी में पहली बार यात्रियों ने अरबी-भाषा को व्यक्त करने के लिये सीरिया की वर्णमाला का सहारा लिया और तब कहीं प्रचलित और प्रिय गीतों के शब्द-बद्ध रूप सुरक्षित रख-छोड़ने की प्रथा आरम्भ हुई, अतएव इस समय के पहले का अधिकांश साहित्य अनुपलब्ध है! कहना न होगा काव्य का लिखित-रूप सामने आते ही कवि को विद्वान, भविष्य-द्रष्टा और न जाने क्या-क्या समझा-जाने लगा, यहाँ तक कि वे जादू जगाने और शत्रु की बरबादी का दिन निश्चित कर देने के लिये 'बलग्रमी' की भाँति ही घेरे जाने लगे।

इस्लाम के पूर्व की सबसे पुरानी कवितायें सुनहरी स्याही में लिखी जाती थीं और काबा और मक्का में रखवा दी जाती थीं। आज भी अरब इन्हें उसी श्रद्धा और आदर की दृष्टि से देखता है और 'मुक्तामाल' से नाम से पुकारता है।

इसमें से अधिकांश कविताओं ने पूर्व में महाकाव्य का रूप धारण कर लिया। इनमें कुछ निश्चित नियमों का पालन किया गया है, और इन सभी कविताओं में कवि ने अनिवार्य-रूप से अपनी कविता का आरम्भ उस स्थान के उल्लेख से किया है जिसे कि वह और उसके साथी पीछे छोड़ आये हैं। इसके बाद उसने स्वयं तो आवश्यक-रूप में शोक प्रकट किया ही है, अपने साथियों से भी आग्रह किया है कि वे रुकें और उन तमाम रेगिस्तान के निवासियों की याद में आंसू बहायें, जो कि अपने बिछुड़े-साथी अथवा पानी की खोज में अपने अन्य मित्रों और स्वजनों से अलग हुये और फिर कभी न लौटे! इसके बाद वह प्रेम के संसार में आता है और तीव्र वासनाओं द्वारा सताये जाने पर हार्दिक क्षोभ प्रकट कर नीले आसमान को छूने की चेष्टा की है। इस प्रकार हमारी बुद्धि और हमारा मन अपनी ओर आकर्षित कर, पुरस्कार की आशा से सामयिक बादशाह, शाहज़ादे या हाकिम का गुणगान कर उसने कविता समाप्त कर दी है। कहना न होगा कि इन बादशाहों, शाहज़ादों और हाकिमों की उदारता ही इनकी जीविका-वृत्ति थी। ऐसे सामन्त युग में सामन्त-यशोगान की प्रथा स्वाभाविक है।

निकट पूर्व में आज भी ऐसे कितने ही लोग मिलते हैं, जिनका व्यवसाय है कहानी कहना, इसके लिये इधर से उधर यात्रायें करना और कविताओं और युग-युग से चली-आनेवाली पौराणिक कहानियों के द्वारा नगरों और खेमों में रहनेवाली जनता का मनोरंजन कर जीवन बिता देना। इन सारी कथाओं में रेगिस्तानी झगड़ों और रेगिस्तानी लड़ाइयों का वर्णन है। ये सभी

'अय्यामेअरब' नामक ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

× ×

अब्बासिया के द्वारा बग़दाद की स्थापना होते ही फ़ारस ने राजनीति में ही नहीं, साहित्य में भी अपना रंग दिखलाना और लोगों को प्रभावित करना आरंभ कर दिया। किन्तु खलीफा-वर्ग के राज्यों की प्रमुख भाषा इस समय भी अरबी थी! अरबी-साहित्य की महानतम कृति 'अलिफ़लैला' है! यह कथा-सूत्र में गुंथी कुछ कहानियों का संग्रह है और इसके लेखक का नाम-आदि सबकुछ लापता है। इसकी कथा-वस्तु का सारांश है यह है कि किसी अरबी बादशाह ने स्त्रियों के त्रिया-चरित्र और उनके दुराचारों से अपनी रक्षा करने के लिये निश्चय किया कि वह प्रतिदिन सुबह एक पत्नी चुनेगा और दूसरे दिन सुबह होते-होते उसे मरवा डालेगा। उसने इस निश्चय के अनुसार कार्य भी किया। अतः उसकी नृशंसता और इस घोर हत्या से तंग आकर दो बहिनों ने उसका अन्त कर देने का संकल्प किया और इस कार्य में अपने जान की बाज़ी लगा-देने की ठान ली! इनमें बड़ी बहिन बादशाह से प्रस्ताव कर उसकी रानी बन गई और रानी बन जाने के बाद उससे गिड़गिड़ाने लगी कि वह उसकी बहन को वह अंतिम रात उसके साथ बिता-लेने की आज्ञा दे दे। राजा मान गया और अपनी बहन का दिल बहलाने के बहाने रानी ने एक कहानी कहना आरम्भ किया, किंतु चालाकी से उसे अधूरा ही छोड़ दिया। उधर बादशाह इस कहानी का बाक़ी हिस्सा सुनने के लिये इतना उत्सुक हो गया कि दूसरा दिन हो गया और नियम के अनुसार उसने उसके मार डालने की आज्ञा न दी! किंतु एक कहानी समाप्त हुई और दूसरी शुरू हो गई! इस तरह वह चतुर कहानी कहनेवाली अपनी कहानियों से अपने पति और अपनी बहिन को पूरे १०१ दिनों तक मन्त्र-मुग्ध करती रही।

इस शृंखला की सारी कहानियों का वास्तविक जन्म-स्थान फ़ारस है और ये सभी 'हज़ार अफ़साने' नामक ग्रंथ में मिलती हैं, जिसका दसवीं शताब्दी में अरबी में अनुवाद हुआ! किंतु कुछ अधिकारियों का दावा है कि इन कहानियों का जन्म-स्थान भारतवर्ष है और सिकन्दर की दिग्विजय के कुछ ही वर्ष पहिले वे यहाँ से फ़ारस गई! जो भी हो यह सब कहानियां इतनी प्रचलित हैं कि सभी सभ्य भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है और, यहाँ तक कि, अब ये गद्यात्मक महाकाव्य कहलाती हैं!

अरब इसके अतिरिक्त भी एक वीर-काव्य को लेकर भी बड़ी-बड़ी डींगें मार सकता है। इसका नाम 'क़ससे आरतार' है! इसका लेखक 'अल असमई' (७३६-८३१), को बतलाया जाता है। इसमें मुहम्मद के अवतार के पहले के अरब इतिहास की सारी प्रमुख घटनाओं का वर्णन है, अतएव इसे 'अरब की इलियड' भी कहते हैं!

× ×

'क़ससे बनहिलाल' और 'क़ससे अबूज़ैद,' इस पौराणिक कथा-चक्र के ही एक भाग हैं, और मिश्र में आज भी अत्यधिक प्रचलित हैं!

'शाहनामा' या सम्राटों की कथा—

'शाहनामा' फ़ारसी का प्रमुख महाकाव्य है। इसकी रचना 'अबुल क़ासिम मंसूर' नामक कवि ने की थी! इस कवि की स्वर माधुरी से प्रसन्न होकर उसके स्वामी ने उसे 'फ़िरदौसी' या स्वर्ग के-गायक की उपाधि दी थी। अतएव 'अबुल क़ासिम', 'फ़िरदौसी' के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध है। यह 'अरब का होमर' भी कहा जाता है।

× ×

फ़ारस के शाह महमूद ने, जिसका जीवन-काल अनुमानतः ६२० ई० है, अपने देश की तमाम प्रसिद्ध और प्रचलित कथाओं को पद्य-बद्ध करा-डालने का संकल्प किया और प्रत्येक १००० पदों के लिये १००० स्वर्ण-मुद्रायें देने का वायदा कर यह कार्य 'फ़िरदौसी' को सौंपा। 'फ़िरदौसी' इस सुयोग से बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि उसकी बहुत दिनों की साध थी कि वह एक घाट बनवाये और बराबर बढ़-आनेवाली पास की नदी की हानि से अपने नगर की रक्षा करे, अतएव उसने इस कृपा के लिये शाह को हृदय से धन्यवाद देकर आग्रह किया कि वह उसका वह पारिश्रमिक अपने पास रक्खे और पुस्तक समाप्त होने पर ही उसे इकट्ठा दे!

इस प्रकार कार्य आरम्भ हुआ और साठ हज़ार पदों की यह रचना तेंतीस वर्षों में समाप्त हुई। अब जब शाह के प्रधान मंत्री ने पद गिने तो उसकी नीयत बिगड़ गई, और उसने ६०,००० स्वर्ण मुद्राओं की जगह उतनी ही रजत-मुद्रायें 'फ़िरदौसी' के पास भिजवा दीं। इस पर फ़िरदौसी इतना खीझ उठा कि उसने वह सारी सम्पत्ति सम्पत्ति-लादकर लानेवालों में बाँट दी और एक बड़ी ही अपमानजनक, गंदी कविता लिखकर शाह के पास भेजी! इसके बाद ही वह माज़िनदरान भाग गया, परन्तु वहाँ अधिक दिन न टिका और बग़दाद आ-पहुँचा। यहाँ वह अधिक समय तक इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा और अन्त में फिर तूस लौट आया!

सदियों से कहावत चली आती है कि इस बीच में शाह को अपने महामंत्री की काली-करतूत का पूरा-पूरा पता चल गया, अतएव, यह सुनते ही कि फ़िरदौसी एक बार फिर लौट आया है, शाह ने तुरन्त ही ६०,००० स्वर्ण-मुद्रायें उसके पास भेजीं, किन्तु उसका यह पुरस्कार उसके पास तब पहुँचा जब वह दम तोड़ चुका था और उसकी लाश क़ब्र में दफ़नाई जा रही थी। उसकी पुत्री ने भी आवश्यकता से कहीं अधिक देर से भेजा गया-वह घृणित धन अस्वीकार कर दिया। अंत में उसके एक सम्बन्धी ने वे ६०,००० मुद्रायें लेकर उनसे वह घाट

'अय्यामेअरब' नामक ग्रंथ में संग्रहीत हैं।

× ×

अब्बासिया के द्वारा बग़दाद की स्थापना होते ही फ़ारस ने राजनीति में ही नहीं, साहित्य में भी अपना रंग दिखलाना और लोगों को प्रभावित करना आरंभ कर दिया। किन्तु ख़लीफ़ा-वर्ग के राज्यों की प्रमुख-भाषा इस समय भी अरबी थी! अरबी-साहित्य की महानतम कृति 'अलिफ़लैला' है! यह कथा-सूत्र में गुंथी कुछ कहानियों का संग्रह है और इसके लेखक का नाम-आदि सबकुछ लापता है। इसकी कथा-वस्तु का सारांश है यह है कि किसी अरबी बादशाह ने स्त्रियों के त्रिया-चरित्र और उनके दुराचारों से अपनी रक्षा करने के लिये निश्चय किया कि वह प्रतिदिन सुबह एक पत्नी चुनेगा और दूसरे दिन सुबह होते-होते उसे मरवा डालेगा। उसने इस निश्चय के अनुसार कार्य भी किया। अतः उसकी नृशंसता और इस घोर हत्या से तंग आकर दो बहिनों ने उसका अन्त कर देने का संकल्प किया और इस कार्य में अपने जान की बाज़ी लगा-देने की ठान ली! इनमें बड़ी बहिन बादशाह से प्रस्ताव कर उसकी रानी बन गई और रानी बन जाने के बाद उससे गिड़गिड़ाने लगी कि वह उसकी बहन को वह अंतिम रात उसके साथ बिता-लेने की आज्ञा दे दे। राजा मान गया और अपनी बहन का दिल बहलाने के बहाने रानी ने एक कहानी कहना आरम्भ किया, किंतु चालाकी से उसे अधूरा ही छोड़ दिया। उधर बादशाह इस कहानी का बाक़ी हिस्सा सुनने के लिये इतना उत्सुक हो गया कि दूसरा दिन हो गया और नियम के अनुसार उसने उसके मार डालने की आज्ञा न दी! किंतु एक कहानी समाप्त हुई और दूसरी शुरू हो गई! इस तरह वह चतुर कहानी कहनेवाली अपनी कहानियों से अपने पति और अपनी बहिन को पूरे १०१ दिनों तक मन्त्र-मुग्ध करती रही।

इस श्रृंखला की सारी कहानियों का वास्तविक जन्म-स्थान फ़ारस है और ये सभी 'हज़ार अफ़साने' नामक ग्रंथ में मिलती हैं, जिसका दसवीं शताब्दी में अरबी में अनुवाद हुआ! किंतु कुछ अधिकारियों का दावा है कि इन कहानियों का जन्म-स्थान भारतवर्ष है और सिकन्दर की दिग्विजय के कुछ ही वर्ष पहिले वे यहाँ से फ़ारस गईं! जो भी हो यह सब कहानियां इतनी प्रचलित हैं कि सभी सभ्य भाषाओं में इनका अनुवाद हो चुका है और, यहाँ तक कि, अब ये गद्यात्मक महाकाव्य कहलाती हैं!

अरब इसके अतिरिक्त भी एक वीर-काव्य को लेकर भी बड़ी-बड़ी डींगें मार सकता है। इसका नाम 'क़ससे आरतार' है! इसका लेखक 'अल असमई' (७३९-८३१), को बतलाया जाता है। इसमें मुहम्मद के अवतार के पहले के अरब इतिहास की सारी प्रमुख घटनाओं का वर्णन है, अतएव इसे 'अरब की इलियड' भी कहते हैं!

× ×

'क़ससे बनहिलाल' और 'क़ससे अबूज़ैद,' ३८ पौराणिक कथा-चक्र के ही एक भाग हैं, और मिश्र में आज भी अत्यधिक प्रचलित हैं!

'शाहनामा' या सम्राटों की कथा—

'शाहनामा' फ़ारसी का प्रमुख महाकाव्य है। इसकी रचना 'अबुल क़ासिम मंसूर' नामक कवि ने की थी। इस कवि की स्वर माधुरी से प्रसन्न होकर उसके स्वामी ने उसे 'फ़िरदौसी' या स्वर्ग के-गायक की उपाधि दी थी। अतएव 'अबुल क़ासिम', 'फ़िरदौसी' के नाम से ही अधिक प्रसिद्ध है। यह 'अरब का होमर' भी कहा जाता है।

× ×

फ़ारस के शाह महमूद ने, जिसका जीवन-काल अनुमानतः ६२० ई० है, अपने देश की तमाम प्रसिद्ध और प्रचलित कथाओं को पद्य-बद्ध करा-डालने का संकल्प किया और प्रत्येक १००० पदों के लिये १००० स्वर्ण-मुद्रायें देने का वायदा कर यह कार्य 'फ़िरदौसी' को सौंपा। 'फ़िरदौसी' इस सुयोग से बहुत प्रसन्न हुआ क्योंकि उसकी बहुत दिनों की साध थी कि वह एक घाट बनवाये और बराबर बढ़-आनेवाली पास की नदी की हानि से अपने नगर की रक्षा करे, अतएव उसने इस कृपा के लिये शाह को हृदय से धन्यवाद देकर आग्रह किया कि वह उसका यह पारिश्रमिक अपने पास रक्खे और पुस्तक समाप्त होने पर ही उसे इकट्ठा दे!

इस प्रकार कार्य आरम्भ हुआ और साठ हज़ार पदों की यह रचना तैंतीस वर्षों में समाप्त हुई। अब जब शाह के प्रधान मंत्री ने पद गिने तो उसकी नीयत बिगड़ गई, और उसने ६०,००० स्वर्ण मुद्राओं की जगह उतनी ही रजत-मुद्रायें 'फ़िरदौसी' के पास भिजवा दीं। इस पर फ़िरदौसी इतना खीझ उठा कि उसने वह सारी सम्पत्ति सम्पत्ति-लादकर लानेवालों में बाँट दी और एक बड़ी ही अपमानजनक, गंदी कविता लिखकर शाह के पास भेजी! इसके बाद ही वह माज़िनदरान भाग गया, परन्तु वहाँ अधिक दिन न टिका और बग़दाद आ-पहुँचा। यहाँ वह अधिक समय तक इधर-उधर मारा-मारा फिरता रहा और अन्त में फिर तूस लौट आया!

सदियों से कहावत चली आती है कि इस बीच में शाह को अपने महामंत्री की काली-करतूत का पूरा-पूरा पता चल गया, अतएव, यह सुनते ही कि फ़िरदौसी एक बार फिर लौट आया है, शाह ने तुरन्त ही ६०,००० स्वर्ण-मुद्रायें उसके पास भेजीं, किन्तु उसका यह पुरस्कार उसके पास तब पहुँचा जब वह दम तोड़ चुका था और उसकी लाश क़ब्र में दफ़नाई जा रही थी। उसकी पुत्री ने भी आवश्यकता से कहीं अधिक देर से भेजा गया-वह घृणित धन अस्वीकार कर दिया। अंत में उसके एक सम्बन्धी ने वे ६०,००० मुद्रायें लेकर उनसे वह घाट

बनवा दिया जिसे एक लम्बी कामना के बाद भी 'फ़िरदौसी' मूर्तिमान न कर सका था और मर गया था !

× ×

इस प्रकार खोज करने पर पता चलता है कि इन फ़ारसी शाहों अथवा राजाओं ने अपने देश की कथाओं को एकत्रित करने के कितने ही फुटकर प्रयत्न किये, किन्तु इनमें से इने-गिने ही सफल हो सके और कुछ गिनती की कथायें ही फ़ारस लाई जा सकीं क्योंकि अरबों की विजय के समय इनमें से बहुतेरी इधर-उधर भटक कर लुप्त हो गईं ।

× ×

यद्यपि कुछ अधिकारियों का दावा है कि फ़िरदौसी का काव्य फ़ारस का पूरा इतिहास है तथापि इसमें अनहोनी और अलौकिक घटनाओं की मात्रा इतनी अधिक है कि यदि इसकी शैली इतनी अपूर्व और आश्चर्यजनक न होती तो इसका अब तक काल के सिर पर चढ़कर अमर रहना असम्भव हो जाता । ख़ैर, कवि का अपना दावा तो यह है कि उसने जो कुछ भी लिखा है उस पर किसी ज्वार-भाटे या मौत की छाया पड़ने से तो रही ही, वह ऐसा भी है कि काल के विस्तृत समुद्र में इस छोर से उस छोर तक फैले हुये अजन्मे-मनुष्य भी उसे पढ़ेंगे और उस पर मनन करेंगे !

और राज्य भर में फैलकर प्रजा को दुःखी करती है। फलतः दुर्बुद्धि को मौका मिलता है। वह अरब के राजकुमार ज़ोहाक को प्रेरित करती है और वह जमशेद को भगाकर उसकी गद्दी पर बैठ जाता है। यद्यपि ज़ोहाक सात्विक प्रकृति का सरल भाव व्यक्ति है तथापि दुर्बुद्धि उसे अपने वश में कर लेती है और रसोइये के रूप में उसकी सेवा करने लगती है।

एक बार वह रसोइया अपने किसी कार्य से ज़ोहाक को खुश कर लेता है और पुरस्कार स्वरूप उसके कंधों के बीच के स्थान को चूमने की आज्ञा चाहता है। राजा कुछ समझ नहीं पाता और उसको यह आज्ञा दे देता है। किन्तु जैसे ही रसोइया आदरपूर्वक चूमने लगता है, वैसे ही वहाँ से दो काले साँप निकल पड़ते हैं। वे किसी प्रकार मारे नहीं जा सकते और मनुष्यों के दिमागों को भोजन-स्वरूप में पाने पर ही शान्त और स्थिर रह सकते हैं। कहना न होगा कि इस घटना के बाद से उसे लोग साधारणतया 'साँपोंवाला राजा' कहने लगते हैं।

ज़ोहाक अधीर हो उठता है और अंत में अपनी प्रजा को इन अद्भुत साँपों का शिकार बनाने पर विवश हो जाता है। यह शिकार आरम्भ हो जाता है और प्रति दिन दो मनुष्यों की हत्या होती है। फल यह होता है कि यह क्रम चलता-जाता है और आनेवाले १००० वर्षों में पूरा राज्य वीरान हो जाता है। स्वभावतः सारे फ़ारस-निवासी अपने राजा पर खीझ उठते हैं और जब उसका सबसे अंतिम पुत्र भी साँपों के भोजन के लिये पकड़वा-मँगवाया जाता है तो कावा नामक एक लोहार विद्रोह कर-उठता है। वह अपने चमड़े के अंगे से झंडे का काम लेकर ढेर सारे लोगों को अपने चारों ओर जमा कर लेता है और उनसे कहता है कि उनके इस चमड़े के अंगे को अपनी आशीष-ध्वजा मानकर यदि वे उसके नीचे युद्ध करने का संकल्प करें तो वह उनकी भेंट जमशेद के फ़रीदूँ नामक पुत्र से करा सकता है। उसका कहना है कि उसका जन्म बहुत रहस्यात्मक ढंग से जमशेद के प्रवास के समय हुआ है और उसे ही वास्तव में उनका राजा होना चाहिये। इस पर सारे फ़ारस-निवासी आनन्द से विह्वल हो-उठते हैं और उस झंडे को अपना झंडा मानकर उसके नीचे लड़ने का संकल्प करने के बाद उस लोहार के नेतृत्व में फ़रीदूँ से भेंट करने जाते हैं।

× ×

इधर यद्यपि एक स्नेहमयी गाय ने ही एक रहस्यात्म ढङ्ग से माँ और दाई के रूप में फ़रीदूँ का लालन-पालन किया है तो भी ज़ोहाक उसे कई बार स्वप्न में देखता है! शीघ्र ही उसका भय साकार होता है।

जमशेद का पुत्र फ़रीदूँ अपनी माता-गाय के मरते ही उसकी बड़ी-बड़ी हड्डियों से एक गदा तैयार करता है और इस प्रकार हथियार से लैस होकर अपने देश-वासियों के साथ ज़ोहाक पर हमला करता और उसे हरा देता है। इसके बाद वह ज़ोहाक को लोहे की ज़ंजीरों के द्वारा एक पहाड़ में जकड़वा देता है। वहाँ साँपों का शिकार हो-गये तमाम लोग-भूत बनकर उसे १००० वर्ष तक सताते रहते हैं।

इस प्रकार फ़रीदूँ अपनी शक्ति से जीते हुए इस राज्य पर ५०० वर्षों तक इस तरह

शासन करता है कि फ़ारस पृथ्वी का स्वर्ग बन जाता है।

इस लम्बे राज्य-काल के अंतिम दिनों में फ़रीदूँ अपने तीनों पुत्रों की पत्नियों की खोज में अरब भेजता है और उनके लौटने पर उनकी शारीरिक और मानसिक परीक्षा लेने के लिये एक परवाले-राक्षस का रूप बनाकर उनका रास्ता घेर लेता है। इस पर सबसे बड़ा लड़का यह कहकर, चतुराई से, पीछे हट जाता है कि बुद्धिमान और चालाक व्यक्ति राक्षसों से नहीं लड़ा करते, किन्तु उसका छोटा भाई बिल्कुल लापरवाही से बिना अपनी रक्षा की चिन्ता किये, उसका सामना करने के लिये आगे बढ़ता है, और तीसरा, न केवल अपने भाई को बचाने के लिये ही बल्कि व्यावहारिक बुद्धि से इस दैत्य की गर्दन उतार लेने के लिये भी, अपने भाई के साथ अगला क़दम उठाता है। इस प्रकार यह सब देख-समझकर राजा अपना वास्तविक रूप धारण कर लेता है और कहता है कि गोकि वह अपने राज्य को तीन भागों में विभाजित करना चाहता है तो भी फ़ारस और ईरान का सर्व श्रेष्ठ राज्य-भाग वह ईर्ज नामक अपने छोटे पुत्र को ही देगा क्योंकि उसने साहस के साथ-साथ बुद्धिमानी का भी परिचय दिया है।

शीघ्र ही राजकुमारों का विवाह हो जाता है और थोड़े समय बाद ईर्ज नामक छोटे पुत्र के यहाँ एक पुत्री का जन्म होता है! इस कन्या का लालन-पालन उसका बाबा फ़रीदूँ करता है। यथा समय यही पुत्री मनूचेहर नामक पुत्र की माँ होती है।

अब राज्य का बटवारा होता है और बाक़ी दोनों भाई एक होकर ईर्ज का राज्य-भाग भी उससे छीन लेना चाहते हैं। बात बढ़ जाती है और यद्यपि वह स्वयं मार डाला जाता है, किन्तु उसका नाती मनूचेहर अपने नाना की मृत्यु का बदला लेने के लिये अपने चचेरे नानाओं को हरा देता और मार डालता है। इसके बाद वह स्वयं सिंहासन ग्रहण करता है और अपने मित्र साम को अभी अभी जीते राज्यों में से एक राज्य का शासक बना देता है। यह काले बालों वाला आदमी अपने नये वैभव से फूला नहीं समाता और तबतक उसका पूरा-पूरा सुख भोगता है जबतक उसे यह ज्ञात नहीं होता कि उसके अभी-अभी हुए पुत्र के बाल हिम से सफ़ेद हैं।

विस्तृत आकाश में उड़ने योग्य ले-जाने और उड़ने लगते हैं।

किन्तु ज़ाल के आठ वर्ष के होते ही उसका पिता अपनी भयंकर भूल अनुभव करता है और सोचता है कि उसने बड़ा भारी पाप किया है। इसी समय यह स्वप्न देखकर वह बहुत सन्तोष और सुख लाभ करता है कि उसका पुत्र अभी जीवित है और 'सीमुर्ग़' की देख-रेख में बड़ा हो रहा है। अतएव वह शीघ्र ही उस पहाड़ पर जाता है और उस देवी विहग से अपने पुत्र की भीख मांगता है। इस पर वह सोने के परोंवाली बाज़ की मादा उस बच्चे को एक पर देकर आदेश देता है कि आवश्यता पड़ने पर वह उसे आग में डाल दे। इसके बाद उसे जी भर प्यार करने के बाद वह उसे उसके पिता को सौंप देता है।

- अब उसका पिता किशोर ज़ाल का पालन-पोषण करता है, किन्तु थोड़े ही दिनों में अपनी शक्ति और अपनी वीरता के लिये वह इतना प्रसिद्ध हो जाता है कि अब निर्विवाद हो जाता है कि समय आने पर वह संसार का महानतम योद्धा बनेगा।

थोड़े समय बाद अपनी युवावस्था के आरम्भ में ही यह वीर काबुल की यात्रा करता है। यहाँ उसकी निगाह रोदाबा नामक राजकुमारी पर पड़ती है। यह 'राजकुमारी सांपोंवाले' राजा की जाति की है। इधर भूरे बालोंवाले इस युवा योद्धा के आने की सूचना से राज-दरबार में इतनी खलबली मच जाती है कि राजकुमारी उसकी प्रशंसा-मात्र से उससे प्रेम करने लगती है और उससे मिलने को उत्सुक हो-उठती है।

एक दिन राजकुमारी की कुछ दासियाँ ज़ाल के पड़ाव के समीप गुलाब के फूल चुन रही हैं कि ज़ाल एक चिड़िया पर निशाना लगाता है। यह चिड़िया इन दासिओं के बीच आ-गिरती है और इस तरह इन सबको उसके पास पहुँचने का सुयोग मिल जाता है। उधर वह स्वयं भी रोदाबा के सौन्दर्य की इतनी प्रशंसा सुन चुका है कि उसकी दासिओं को अपने समीप पाते ही वह उनसे उसके विषय में कितने ही प्रश्न करता है और उनके चलते समय राजकुमारी के लिये कितने ही रत्न उन्हें देता है। वे इन उपहारों को रोदाबा के पास ले जाती हैं। ये उपहार भेंट की कड़ी बन जाते हैं और राजकुमारी तुरन्त ही ज़ाल को बुलवा भेजती है। वह जाता है और राजकुमारी को खिड़की के नीचे पहुंचकर ऐसे मधुर स्वरों में विहाग गाता है कि राजकुमारी दूसरे ही क्षण बारजे पर आ जाती है और अपने लम्बे-काले केश-पाश नीचे लटकाकर संकेत करती है कि वह इनके सहारे ऊपर चढ़ आये। किन्तु यह सोचकर कि राजकुमारी को किसी प्रकार की चोट न पहुँचे वह उसकी वेणी का सहारा न लेकर एक क्षण बाद ही कमन्द की युक्ति से सरलता से उसके पास पहुँच जाता है। वहाँ यह फ़ारस का 'रोमियो' अपनी इस 'जूलियट' का प्रणय लेकर उसे पत्नी बना लेने की प्रतिज्ञा करता है।

प्रातःकाल इस अज्ञात, रहस्य-संयोग की बात राजा और रानी के कानों तक पहुँचती है। अब वे इस युवा वीर को बुलवाते हैं और भरे-दरबार में चाहते हैं कि वह अपने को राज-कुमारी का अधिकारी सिद्ध करे। इस पर ज़ाल छः पहेलियाँ सुलझाकर अपनी बुद्धिमत्ता का ही परिचय नहीं देता, बल्कि अपनी अन्य योग्यताओं और विशेषताओं के विस्मयजनक उदाहरण भी

उनके सामने रखता है। इसी समय देववाणी होती है कि इस संयोग के परिणामस्वरूप एक ऐसे अभूतपूर्व योद्धा का जन्म होगा जो अपनी मातृ-भूमि की सभी प्रकार मर्यादा बढ़ायेगा। इस प्रकार अब सब भाँति सन्तुष्ट होकर राजा-रानी उसे अपनी पुत्री के साथ विवाह करने की अनुमति दे देते हैं।

विवाह हो जाता है और यह नव दम्पति कितने ही वर्षों तक सुख और आनन्द का जीवन व्यतीत करते हैं कि एक दिन रोदावा का प्राण संकट में पड़ जाता है। ज़ाल को उस देव-विहग की बात याद है, अतएव वह तुरन्त ही उसके द्वारा दिया गया पर आग में डाल देता है, किन्तु घबड़ाहट के कारण उसका हाथ इस तरह काँप रहा है कि उसका एक कोना ही जल पाता है। फिर भी उसका कोना ही इतना अधिक हो जाता है कि 'सीमुर्ग़' तुरन्त ही आ-पहुँचती है। यहाँ पहुँचते ही वह पहले अपने प्रिय बालक की चिन्ता करती है और फिर उसके कान में जादू का एक ऐसा शब्द फूँक देती कि है उसके द्वारा वह अपनी पत्नी की जान तो बचा ही लेता है, रुस्तम नामक वीर, और शक्तिशाली पुत्र का प्रतापी पिता होना भी उसी समय निश्चित कर लेता है।

यथा समय रुस्तम का जन्म होता है। रुस्तम अभी तक पैदा हुये किसी भी बच्चे से अधिक बली और सुन्दर है। उसे पालन के लिये दस दाइयों की आवश्यकता होती है और माँ का दूध छोड़ते ही वह पाँच पुरुषों के बराबर भोजन करता है। इस प्रकार आठ वर्ष की आयु तक वह इस योग्य हो जाता है कि अपने एक घूँसे से ही किसी भी श्वेत, उन्मत्त हाथी के प्राण हर लेता है। यही नहीं, यह फ़ारसीभीम अपने बचपन में ऐसे कितने ही अनहोने कार्य कर अपने अभूतपूर्व शौर्य का परिचय देता है।

अंत में जब तातारों का सरदार अफ़रासियाब उसके राज्य पर हमला करता है और शस्त्रों से उसका संहार करना चाहता है तो रुस्तम युद्ध में भाग लेने की इच्छा प्रकट करता है। उधर संकट ग्रस्त फ़ारस-निवासी 'ज़ाल' के पास जाकर इस भयंकर शत्रु का सामना कर उसे हराने की प्रार्थना करते ही हैं कि वह वीर अपने बुढ़ापे की दुहाई देकर क्षुब्ध होकर उत्तर देता है कि अब वह स्वयं तो इस कार्य के योग्य नहीं रह गया, किन्तु उसका पुत्र रुस्तम उसके स्थान पर दुश्मन से लोहा लेगा! इसके बाद रुस्तम को युद्ध-क्षेत्र के लिये विदा करने से पहिले वह चाहता है कि वह अपने लिये कोई उपयुक्त घोड़ा चुन ले। दूसरे ही क्षण सैकड़ों घोड़े उसके सामने लाये जाते हैं और वह उन सब में से रक्ष्श (बिजली) नामक एक ऐसा गुलाबी रंग का बछड़ा चुनता है जिस पर अब तक कोई सवार ही नहीं हो सका है। यह घोड़ा उसके रास हाथ में लेते ही उससे परच जाता है और किसी की आज्ञा पालन करने के नाम पर पहली बार रुस्तम के संकेत पर नाचता है। इसके बाद रुस्तम अपनी गदा सँभालता है और दुर्बुद्धि के द्वारा रण-स्थल में भेजे गये शत्रुओं का सामना करने के लिये प्रस्थान करता है! वह रण-स्थल में पहुँचते ही शत्रु को मार भगाता है और पुराने शाही वंश के कैकोबाद को तख़्त पर बैठालता है।

यह बुद्धिमान कैकोबाद सौ वर्ष तक बड़ी शान्ति राज्य करता है, किन्तु उसका

उत्तराधिकारी-पुत्र कैकाऊस बड़ा मूर्ख प्रमाणित होता है। वह अपने राज्य विस्तार से सन्तोष न कर माज़िनदरान के राज्य को भी जीत लेना चाहता है! माज़िनदरान इस समय दैत्यों के हाथ में हैं, किन्तु एक स्वर से उसका गुणगान सुनकर कैकाऊस उसके लिये इतना ललचा-उठता है कि वह किसी अन्य संकट की चिन्ता नहीं करता!

कैकाऊस का यह प्रस्ताव ज़ाल तक पहुँचता है। ज़ाल उसका घोर विरोध करता है और उसे रोकने का भी यत्न करता है, किन्तु वह एक नहीं सुनता और माज़िनदरान को जीत लेने के लिये कूच कर देता है। यहाँ पहुँचने पर वह हार जाता है और वह दैत्य उसकी और उसकी सेना की आँखें फोड़ने के बाद उन्हें जेलख़ानों में डलवा देते हैं। किन्तु जैसे ही इस दुदर्शा की सूचना ज़ाल को मिलती है वह तुरन्त ही रुस्तम को इस मूर्ख शासक की सहायता करने के लिये रवाना करता है और कहता है कि यदि उसे ऊबड़-खाबड़ रास्ता पसन्द हो और यदि वह राह की सारी कठिनाइयों का बहादुरी से सामना करने को तैयार हो तो वह उसे एक ऐसा रास्ता बतला सकता है, जो उसे सात दिन में ही माज़िनदरान पहुँचा दे, गोकि यों तो साधारणतया वहाँ पहुँचने में छः महीने लगते हैं और कैकाऊस को वह मंजिल तय करने में छः महीने लगे भी हैं।

स्वभावतः रुस्तम अपेक्षाकृत समीप का छोटा रास्ता अपने लिये चुनता है और रवाना होता है। पहले दिन वह एक जंगली गधे का शिकार करता है, जिसे रात को विश्राम करने के पहिले भून कर खाता है। कुछ भुना हुआ मांस बच रहता है। उसकी सुगन्धि से आकृष्ट होकर एक शेर उसके पड़ाव में आ-पहुँचता है और रुस्तम पर आघात करना ही चाहता है कि उसका साहसी घोड़ा उस पर टूट पड़ता है और अपनी टापों और अपने दाँतों के सहारे उससे तब तक लड़ता रहता है जब तक कि अन्त में हिंसक शेर मर नहीं जाता! इधर शेर मरता है, यह लड़ाई रुकती है और उधर रुस्तम जाग-उठता है। वह एक क्षण में ही सारी परिस्थिति समझ लेता है और इस लापरवाही से अपनी जान संकट में डाल देने के लिये रख़्श को बहुत डांटता है और आदेश देता है कि भविष्य में जब कभी ऐसा अवसर आये वह उसे अपनी सहायता के लिये अवश्य बुला ले!

दूसरे दिन की यात्रा में रुस्तम इधर-उधर भटकते एक भेंड़े का पीछा करता है और शीघ्र ही एक पहाड़ी झरने के समीप पहुँच कर प्यास से मरते-मरते बचता है! तीसरी रात को उसका घोड़ा अस्सी गज़ लम्बे एक राक्षस को अपनी ओर आता हुआ देख कर अपने स्वामी को जगाता है, क्योंकि उसे आदेश मिल चुका है कि बिना उसे सूचित किये वह किसी शत्रु पर हमला न करे! वह कितनी ही बार हिनहिनाता है और उसके हर बार हिनहिनाते ही राक्षस अदृश्य हो जाता है। रुस्तम उठता है और आसपास कुछ न देख कर विश्राम में विघ्न डालने के लिये रख़्श की बड़ी भर्त्सना करता है। किन्तु तीसरी बार उसकी दृष्टि राक्षस की अंगारे जैसी आँखों पर पड़ जाती है और वह तुरन्त ही आक्रमण कर उसके प्राण हर लेता है। चौथे दिन और भी महत्वपूर्ण साहस भरी घटनायें घटती हैं और पांचवे दिन रुस्तम जादू के देश से जा रहा है कि उसे एक जादूगरनी मिलती है जो नाना प्रकार के छल-छद्मों से उसे जीत लेना चाहती है। वह

उसे दावत देती है और वह स्वीकर करता है, किंतु ज्योंही वह दावत में मदिरा का पात्र उसकी ओर बढ़ाती है, रुस्तम उससे आग्रह करता है कि ईश्वर के नाम पर वह उसे स्वयं पी डाले! जादूगरनी विवश हो जाती है और उस मदिरा का पान करते ही उसका बनावटी रूप उससे कोसों दूर भाग जाता है। अब रुस्तम उसका सिर उतार लेता है।

छठे दिन रुस्तम किसी ऐसे प्रदेश से निकलता है जहाँ सूरज कभी चमकता ही नहीं। यहाँ उसका बुद्धिमान घोड़ा उसे रास्ता दिखलाता है। इस प्रकार सातवें दिन वह ऐसे प्रान्त में पहुँचता है जहाँ घोर प्रकाश है और जहाँ वह विश्राम करने के लिये लेट-रहता है। इसी समय माज़िनदरान के निवासी उसका अचरज पूर्ण घोड़ा खोलकर ले-भागते हैं! इतने में रुस्तम सो कर उठता है और अपना घोड़ा वहाँ-देख कर घबड़ा जाता है, किंतु उसे पता लगता है कि घोड़ा अपने छुटकारे के लिये बराबर लड़ता रहा है। वह उसकी टापों के निशानों का सहारा लेता है और उनका अनुकरण कर शीघ्र हो माज़िनदरान पहुँच जाता है। यहाँ उन राक्षसों से वह इतना भयंकर युद्ध करता है कि वे घोड़ा तो लौटाल ही देते हैं, उसे उस गुफ़ा का रास्ता भी बतला देते हैं जिसमें उसके देश-वासी क़ैदी रक्खे गये हैं।

इस गुफ़ा के सामने पहुँचते ही वह देखता है उससे लड़ने के लिये कितने ही राक्षस तैयार-खड़े हैं। वह शीघ्र ही उन सब का काम तमाम करता है। इसके बाद वह उस फ़ारसी-नरक में प्रवेश करता है, और अपने साथियों से मिलता है। वह उन सब को अन्धा पा कर बहुत खीझ-उठता है और कोई यत्न न देख कर श्वेत दैत्य का रक्त बूँद बूँद कर उनकी आँखों में टपकाता है! फलतः विस्माय की बात है कि वे सब पहले की भाँति ही देखने लगते हैं।

इस भाँति रुस्तम विश्वविजयी की उपाधि प्राप्त करने के बाद अस्थिर-बुद्धि कैकाऊस को उसके राज्य तक पहुँचा आता है। किन्तु वह अपनी पिछली बड़ी भूल से ही सन्तुष्ट नहीं होता और एक के बाद दूसरी भयंकर भूलें करता है, यहा तक कि अपने द्वारे बनाये हुये एक विशेष प्रकार के वायूवान पर चढ़ कर हवा में उड़ने की कोशिश करता है। यह जहाज़ और कुछ न होकर के एक दरी है, जिसके चार कोनों पर चार भूखे बाज़ बंधे हुये हैं! ये बाज़ ऊंचाई पर लटके हुये गोश्त के टुकड़ों लोभ से इस दरी के साथ ऊंचे उड़ने का प्रयास करते हैं। किन्तु एक बार फिर रुस्तम अपने अध्यवसाय और यत्न से इस मूर्ख राजा कैकाऊस की प्राण-रक्षा करता है।

× ×

इसी बीज में पर्यटन करते-करते रुस्तम किसी राजा के दरबार में आ पहुँचता है! इस राजा पुत्री उसकी चर्चा-मात्र से उस पर मोहित हो जाती है और उसकी असावधानी में उसका घोड़ा खुलवा लेती है। रुस्तम बहुत क्रोधित हो उठता है और राजा से अपने घोड़े की मांग करता है। इस पर राजा उसे विश्वास दिलाता है कि दूसरे दिन उसका घोड़ा उसे मिल जायेगा। इसी रात में सुन्दरी राजकुमारी तहमीना सब की आँख बचा कर उसके कमरे में घुस आती है, उसे जगाती है और उसे वचन देती है कि यदि वह उससे विवाह कर लेगा तो उसे उसका घोड़ा निश्चित

रूप से मिल जायेगा। रुस्तम उसके सौन्दर्य और उसकी शालीनता पर इतना रीझ-उठता है कि उसका प्रस्ताव स्वीकार कर उसके आकर्षण में फँस जाता है और-कुछ काल उसके पास ही रहा-आता है।

इसी बीच में मूर्ख शासक कैकाऊस को उसकी सहायता और सेवाओं की आवश्यकता होती है! किन्तु, तहमीना को इस समय अपने साथ नहीं ले सकता क्योंकि वह गर्भवती है अतएव रुस्तम उससे हृदय से विदा लेता है। चलते समय वह उसे एक अर्द्ध पारदर्शी ताबीज़ देता है, जिसपर सीमुर्ग की मूर्ति बनी हुई है और वह अपनी सहचरी को आदेश देता है कि यह आभूषण वह उसके होनेवाले शिशु को पहना दे।

समय आने पर वह सुन्दरी राजकुमारी मनोहर पुत्र की माता बनती है जिसका नाम वह सोहराब (सूरज की रोशनी) रखती है किन्तु, उसे डर है कि पुत्र-जन्म की बात सुनते ही थोड़े समय बाद रुस्तम आयेगा और युद्ध-विद्या की शिक्षा देने के लिये उसके प्रिय-पुत्र को उससे छीनकर बहुत दूर ले जायगा, अतएव वह पुत्र के स्थान पर पुत्री-जन्म की सूचना उसके पास भेज देती है ....कहना न होगा कि फ़ारस में लड़कियों को अधिक महत्व नहीं दिया जाता, इसीलिये रुस्तम अपने शिशु के विषय में भविष्य में पूछ ताछ नहीं करता और अपने राजा की सेवाओं में इतना अधिक व्यस्त रहता है कि उसे दुबारा अपनी पत्नी से मिलने का अवकाश भी नहीं मिलता। उधर सोहराब बड़ा होता-रहता है।

थोड़े समय बाद सोहराब सयाना होता है और अपने पिता से मिलने को उत्सुक हो-उठता है। तहमीना को आशंका है कि अपने पिता का परिचय पाते ही सोहराब भी उसकी भाँति ही युद्ध में भाग लेने लगेगा, अतएव वह बहुत दिनों तक उसके पिता और उसके जन्म की बात उससे नहीं बतलाती। किन्तु अंत में वह देखती है कि वह उसे अपने साथ बांधकर न रख पायेगी, अतएव वह उससे सारी कथा विस्तार से बतलाती है।

किशोर सोहराब आरम्भ से ही रुस्तम का अन्ध-प्रशंसक है, अतः अब अपने को उसका पुत्र जान कर गद्गद् हो उठता है और आनन्द से फूला नहीं समाता!

× ×

इधर सारे फ़ारस-निवासी इस मूर्ख राजा से तंग आने के कारण पीछा छुड़ाना चाहते हैं और अब सोहराब चाहता है कि उसके स्थान पर उसका पिता फ़ारस पर राज्य करे अतएव वह तातारों को फ़ारस के विरोध में सहायता देने का वचन देता है और लड़ाई के मैदान के लिये अपनी माता से विदा माँगता है। उसकी माँ उसे इस चेतावनी के साथ विदा देती है कि वह ध्यान रक्खे और अपने पिता से कभी लोहा न ले। किन्तु इस चेतावनी के बाद भी उसका दिल नहीं मानता और वह सोचती है कि कहीं ऐसा न हो कि सोहराब अपने पिता को न पहिचान पाये, अतएव वह दो ऐसे स्वामिभक्त सेवक उसके साथ कर देती है जोकि रुस्तम को भली भाँति जानते-पहिचानते हैं।

उधर तातारों का सरदार अफ़्रासियाब सोहराब की सहायता का आश्वासन पाकर

बहुत प्रसन्न होता है और अपने सब वीरों को सचेत कर देता है कि फ़ारस की सेना में रुस्तम को देखकर भी कोई सांस न ले और सोहराब को किसी प्रकार का संकेत न करे। वह बड़ी चालाकी का दम भरता है और समझता है कि इस प्रकार अनजाने में पिता पुत्र के द्वारा अवश्य ही मार डाला जायगा। इतना ही नहीं, उसे तो यह भी विश्वास है कि इस प्रकार पिता-पुत्र दोनों से मुक्ति पाकर वह स्वयं फ़ारस का राजा हो जायेगा!

× ×

लड़ाई छिड़ती है और सोहराब को अपने अपूर्व साहस का परिचय देने के लिये कई बार विरोधियों से गुँथ जाना पड़ता है। एक बार तो उसे एमेज़न[1] देश की एक वीरांगना की चुनौती स्वीकार करनी पड़ती है किंतु वह चालाकी से अपने प्राण-बचाकर निकल भागती है! इस बीच में सोहराब के हृदय में यह आशा बराबर बनी रहती है कि कभी-न-कभी तो वह क्षण आयेगा ही जब उसका और उसके पिता का सामना होगा। इसीलिये जैसे ही कोई विशेष शत्रु योद्धा उसके सम्मुख आता है और लड़ाई भयंकर हो-उठती है, वह अपने साथियों की ओर उत्सुक दृष्टि से देखने लगता है और उसका परिचय पाना चाहता है, ताकि यह निश्चित हो जाय कि वह वीर-विशेष रुस्तम ही है!

इसी बीच में अपना खेल बिगड़ता देखकर मूर्ख राजा रुस्तम को बुलवा भेजता है! रुस्तम सारी परिस्थिति का ठीक अनुमान कर लेने के लिये जासूस के रूप में तातारों की सेना में प्रवेश करता है। वहाँ उसकी दृष्टि सोहराब पर जा पड़ती है।

वह सोहराब की वीरता की कितनी ही बातें इस समय के पहले भी सुन चुका है, किन्तु इस समय वह उससे इस बुरी तरह प्रभावित होता है कि उसकी प्रशंसा करने पर विवश हो जाता है। इसी समय सोहराब की सहायता के लिये उसकी माँ के द्वारा भेजे गये उन दो सेवकों की दृष्टि रुस्तम पर पड़ती है और वे सोहराब को संकेत करना ही चाहते हैं कि रुस्तम उन दोनों को तलवार के घाट उतार देता है। इस प्रकार कोई ऐसा व्यक्ति वहाँ नहीं रहता जो कि पिता-पुत्र का सामना होने पर पिता को उसके पुत्र का परिचय दे और पुत्र से कहे कि उसका प्रतिद्वंदी और कोई नहीं बल्कि उसका पिता रुस्तम है।

उस किशोर का गर्व चूर करे। किंतु रुस्तम डरता है कि कहीं ऐसा न हो कि ऐसा वीर और इतना साहसी नव-युवक अपने विरोधी का नाम सुनते ही हतोत्साहित हो जाय और मैदान से भाग खड़ा हो, अथवा कहीं ऐसा न हो कि उसे अपने ऊपर आवश्यकता से अधिक घमंड हो-उठे कि उसके लिये रुस्तम को भी हथियार ग्रहण करना पड़ा और वह हार जाय, अतएव वह एक दूसरे ही वेश में मैदान में उतरता है !

उधर एक लम्बे-तगड़े, बूढ़े योद्धा को अपनी ओर आता हुआ देखकर सोहराव अजब ढङ्ग से हिल-उठता है। इसी समय उसके हृदय से ध्वनि होती है कि रुस्तम यही है, रुस्तम यही है, अतएव इस प्रकार पूर्व-सूचना पाकर वह उसकी ओर दौड़ता है और बहुत विनीत होकर उससे उसका नाम पूछता है। उधर रुस्तम का हृदय भी इस युवक को देखकर एक अद्भुत कोमलता से भर जाता है और वह मन ही मन स्वीकार करता है कि यदि सोहराव उसका पुत्र होता अथवा उसके एक पुत्र होता जो देखने में सोहराव की तरह होता तो उसे सचमुच ही बड़ी प्रसन्नता होती ! उसका विचार है कि उस स्थिति में वह प्रयत्न करता कि वह अपनी चुनौती वापिस ले ले ! किन्तु दूसरे ही क्षण वह सँभलता है और सोहराव की उत्कंठा की चिन्ता न कर बहुत दृढ़ता से अपना नाम बतलाने से इन्कार कर देता है ! इसके बाद यह देखकर कि वह अपनी हट पर अड़ा हुआ है रुस्तम उससे कहता है कि वह बेकार की बकबक न कर युद्ध करे !

× ×

युद्ध आरम्भ होता है और आरम्भ के तीन दिनों में शक्ति और रण-कौशल में पिता और पुत्र दोनों ही बराबर उतरते हैं। किन्तु इस बीच में सोहराव रुस्तम की ओर बराबर आकृष्ट होता-रहता है। इसीलिये एक बार गिर पड़ने पर भी वह बूढ़े योद्धा को उठकर सँभल लेने का समय देता है और उस पर आघात नहीं करता। यही नहीं कई बार वह उससे लड़ाई रोक कर तलवारों को म्यानों में रखने का भी आग्रह करता है। दूसरी ओर रुस्तम को भी उसी प्रकार की भावनायें सताती रहती हैं, किन्तु वह उनसे बराबर संघर्ष करता रहता है और अपने विरोधी पर ताने कसते हुये दूने और चौगुने उत्साह से गुंथा-रहता है।

किन्तु पाँचवें दिन जैसे ही रुस्तम सोहराव की ओर बढ़ता है, फ़ारसी जोश के मारे आपे से बाहर हो जाते हैं और रुस्तम-रुस्तम के युद्ध के नारे लगाने लगते हैं। इस प्रियतम नाम की ध्वनि-मात्र से ही सोहराव के हाथ-पैर इस तरह ढीले हो उठते हैं कि न तो वह उसका सामना करने योग्य रह जाता है और न उसका वार बचाने योग्य ! फल यह होता है कि वह अपने पिता के घातक प्रहार के साथ ही पृथ्वी पर ढ़ह-पड़ता है।.. ...उसका अंतिम क्षण समीप है, किन्तु वह कराह-कराह कर अपने विरोधी को सचेत करता है कि वह अपनी विजय पर ईमानदारी की छाप लगाकर गर्व न करे, क्योंकि उसके पिता के नाम के अतिरिक्त कोई भी शक्ति उसे इस प्रकार निहत्था न कर सकती थी और उस स्थिति में युद्ध का परिणाम कुछ और भी हो सकता था।

मायावी राज़ सोहराव का यह वाक्य सुनते ही रुस्तम प्रश्नसूचक दृष्टि से चारों ओर देखता है और

दूसरे ही क्षण उसे ज्ञात होता है कि वह वीर जिसपर उसने इस प्रकार घातक प्रहार किया है उस का, अपना पुत्र है। इसके बादही उसकी निगाह पक्षी के चित्रवाले सोहराब के उस तावीज़ पर पड़ती है और इस प्रकार इस सत्य की पुष्टि भी हो जाती है। अब रुस्तम के संताप और शोक का ठिकाना नहीं रहता! उसका हृदय फटने लगता है और वह अपने मरते-हुये पुत्र पर पछाड़ खाकर गिर पड़ता है।

रुस्तम का क्या रुस्तम तो सोहराब का पिता ही है, सोहराब का घोड़ा रक्श भी उसके लिये फूट-फूटकर रोता है कि वह कितने स्नेह से उस पर सवारी करता रहा है!

× ×

अब रुस्तम अपने पुत्र की प्राण-रक्षा के लिये व्याकुल हो-उठता है और मूर्ख राजा कैकाऊस से वह जादू का लेप मांगता है जो कि युगों से उसके पास है। लेकिन वह राजा लेप देने में आनाकानी करता रहता है कि इसीबीच में सोहराब अपने पिता की गोद में अपना दम तोड़ देता है। शीघ्र ही भग्न-हृदय पिता उसकी अन्त्येष्टि-क्रिया करता और उसका शव आग की विकराल लपटों को सौंप देता है। इसके बाद वह उसके फूल और अपने सवार से सूना उसका घोड़ा उसकी माँ के पास भेज देता है। उसकी माँ पुत्र-शोक सहन नहीं कर पाती और तुरन्त ही प्राण-त्याग देती है।

× ×

किन्तु हमें बतलाया जाता है कि दूसरी ओर वह मूर्ख राजा इतना भाग्यवान प्रमाणित होता है कि उसके यहाँ स्यावूश नामक एक बड़े योग्य और विशाल-हृदय पुत्र का जन्म होता है। वह बड़ा होता है किंतु इस समय उसकी माँ मर जाती है और उसकी सौतेली माँ उसके विरुद्ध उसके पिता के कान भरती है। अंत में उसके सयाने होते-होते राजा उससे इतनी ईर्ष्या करने लगता है कि वह घर छोड़ देने पर विवश हो जाता है और अब रुस्तम उसका पालन-पोषण करता है। थोड़े दिनों बाद जब वह फिर अपने राज्य में लौटता है उसकी सौतेली माँ उसे मरवा डालने के लिये षड्यन्त्र रचती है और अपने पति से शिकायत करती है कि स्यावूश उसे बुरी नज़र से देखता है और उसे अपनी प्रियतमा बनाने की चेष्टा में है। इस पर राजा को इतना क्रोध आता है कि वह अपने पुत्र से आग में कूदकर परीक्षा देने को कहता है। अतएव बड़े-बड़े भट्टे धधकाये जाते हैं और वह सच्चरित्र किशोर उसमें बेधड़क कूद पड़ता है। इस समय दया का देव-दूत और उसकी मृत माता की आत्मा उसके दायें बायें खड़ी होकर उसे हर प्रकार की हानि से बचाती है। अंत में आग के प्रभावों से सभी प्रकार अछूता रहकर वह अपने को निष्कलंक सिद्ध कर देता है। अब राजा अपनी पत्नी पर क्रोध से लाल हो-उठता है कि उसने उसके पुत्र पर झूठा कलंक लगाया। और चाहता है कि वह भी स्यावूश की भांति ही अग्नि परिक्षा देकर अपने सतीत्व की सच्चता प्रमाणित करे। किन्तु स्यावूश अपनी विमाता की निर्बलता जानता है, और वहीं स्थिति के समय उसका पक्ष ग्रहण कर और उसे आग में भस्म होने से बचा लेता है।

इस प्रकार की घटनायें आये-दिन प्रति दिन घटती रहती हैं अतएव आप

दरबार से स्याउश का भी झगड़ा हो जाता है और वह तातारों के देश में आकर उनके दल का एक सदस्य बन जाता है और शीघ्र ही वह अफ़रासियाब की पुत्री से विवाह भी कर लेता है। किन्तु वह इतना गुणवान है और इस कारण ही इतनी उन्नति करता है कि उसका ससुर उससे जलने लगता है और उसे मार डालता है। फिर भी, वह उसका नाम चलानेवाले-उसके शिशु का नाश नहीं कर पाता क्योंकि ऐसा अभागा क्षण आने के पहले ही पीरवीज़ा नामक एक दयावान, रक्षक उसे चुरा ले जाता है और उसे एक गड़रिये को सौंप देता है कि वह उसे पाल-पोस कर बड़ा करे!

कुछ वर्षों बाद अफ़रासियाब को पता लगता है कि उसका नाती अभी जीवित है, अतएव वह उसे मार डालने की योजना बनाता है, किन्तु उसका दयावान संरक्षक अफ़रासियाब को विश्वास दिलाता है कि वह बुद्धिशून्य है और उसे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकता! यद्यपि उसे इस संरक्षक की बात पर पूरा विश्वास नहीं होता तो भी वह उस कैख़ुसरो नामक बालक को बुलवा भेजता है। इसी बीच में वह दयावान संरक्षक उसे सारा भेद बतला देता है। फलतः अपने नाना के दरबार में आनेपर उसके सवालों के जवाब में वह ऐसे-ऐसे ऊट-पटांग और बेतुके जवाब देता है कि अफ़रासियाब सन्तोष से कह उठता है कि वह सचमुच ही जड़ है!

वह किशोर युवा होता है और जवान होते ही कुछ राजद्रोहियों का नेतृत्व इतनी सफलता से करता है कि अपने नाना को गद्दी से ही नहीं उतार देता, बल्कि वह फ़ारस का राज्य भी एक बार फिर छीन लेता है! इस राज्य पर उसके पूर्वजों के नाते उसका स्वाभाविक अधिकार है। इसके बाद वह फ़ारस में कितने ही वर्षों तक राज्य करता है, और अंत में इस दुनिया से इतना अधिक ऊब-उठता है कि फ़ारस के मंगलमय देवता आयुज़् से प्रार्थना करता है कि वह उसे अपनी शरण में लेकर अपने हृदय में स्थान दे! इस पर वह देवता उसे स्वप्न देता है कि जैसे ही उसके राज्य की सुव्यवस्था और उसके उत्तराधिकारी की घोषणा हो जायेगी, उसकी प्रार्थना स्वीकृत होगी, अतः अब वह सारे आवश्यक प्रबन्ध करने के बाद दूसरी दुनिया के लिये प्रयाण करता है। इस समय वह अपने अनेकानेक मित्रों को अपने साथ आने से रोकता है क्योंकि वह जानता है कि वह राह उनके लिये बड़ी कठिन साबित होगी। फिर भी उसके कुछ सेवक उसके इस आदेश का पालन न कर उसका अनुसरण करते हैं और शीघ्र ही एक ऐसे स्थान पर पहुँचते हैं जहाँ इतनी कड़ी सर्दी पड़ती है कि वे ठंड से जम कर बर्फ़ हो जाते और मर जाते हैं। इस प्रकार कैख़ुसरो फिर अकेला हो जाता है और अपनी यात्रा पर आगे बढ़ता है, जहाँ से फिर कभी नहीं लौटता!

कैख़ुसरो का चुना हुआ उत्तराधिकारी बड़ा न्याय-प्रिय राजा साबित होता है, किन्तु वह भी शीघ्र ही अपने इस्फ़न्दयार नामक पुत्र से जलने लगता है। यह इस्फ़न्दयार बड़ा पराक्रमी और महान योद्धा है और अपनी योग्यता और कौशल के कारण रुस्तम की भाँति ही युद्ध में सात बार विजयी होता है। वह भी देवों, भेड़ियों और शेरों से लोहा लेता और परोंवाले बड़े-बड़े मायावी राक्षसों और अनेकानेक भूत-प्रेतों को अपने वश में कर लेता है।...एक बार उसे पता

चलता है कि आजागप नामक राक्षसों के राजा ने अपनी दो बहिनों को क़ैद कर रक्खा है। इतना सुनते ही वह उन्हें छुड़ाने के लिये चल पड़ता है किन्तु वह जानता है कि केवल शक्ति से ही वह उस सुरक्षित प्रदेश में प्रविष्ट न हो सकेगा अतएव कुछ लोगों को अपने बोरों में छिपाने के बाद वह एक व्यापारी का रूप धारण करता है और चतुरता से राक्षस-राज के महल में प्रविष्ट होता है। यहाँ पहुँचते ही वह अपने शत्रुओं को नशे में चूर कर देता है और फिर अपने बोरों में छिपे हुये सिपाहियों की सहायता से अपने कार्य में सफलता प्राप्त करता है।

किन्तु एक दिन उसका पिता उसे रुस्तम को दरबार में बाँध लाने का आदेश देता है। यह कार्य इस्फ़न्दयार को इतना अप्रिय लगता है कि वह रुस्तम के पास जाकर उससे सारी स्थिति बतला देता है और अपनी परवशता और निर्बलता के लिये दुःख प्रकट कर कहता है कि यदि वह स्वेच्छा से न जाना चाहेगा तो उसे अपनी शक्ति का सहारा लेना पड़ेगा। किन्तु रुस्तम उसकी धमकी में नहीं आता और दृढ़ता से कहता है कि उसका बन्दी बनना या उसके पिता के दरबार में जाना असम्भव है। इस पर दोनों योद्धाओं में युद्ध होता है और संध्या को रुस्तम और उसका घोड़ा इतनी बुरी तरह घायल हो जाते हैं कि इस्फ़न्दयार को इस बात का पूरा विश्वास हो जाता है कि दूसरे दिन उनका लड़ाई में भाग लेना असम्भव है!

फिर भी, अपने घायल पुत्र को देखते ही बूढ़े ज़ाल को उस अधजले अलौकिक पर की याद हो-आती है और वह उसे आग में डाल देता है। दूसरे ही क्षण 'सीमुर्ग' आ-उपस्थित होती है और अपने सुनहले पर के स्पर्श-मात्र से घोड़े के सारे घावों को भरने के बाद रुस्तम की कोख में गड़ा-हुआ भाला अपनी चोंच से खींच-निकालती है। इस प्रकार अपने स्नेही पुत्र को भला-चंगा करने के बाद वह अदृश्य हो जाती है अब रुस्तम और उसका घोड़ा दोनों इतने स्वाभाविक और इतने स्वस्थ हो जाते हैं कि दूसरे दिन फिर लड़ाई के मैदान में नज़र आते हैं।

इस बार इस्फ़न्दयार रुस्तम के प्रहार सम्हाल और सह नहीं पाता, नीचे आ जाता है और दम-तोड़ते-तोड़ते उससे क्षमा मांगता है और घोषित करता है कि उसकी मृत्यु का सारा पाप रुस्तम पर न हो कर उसकी पिता की घृणा एवं ईर्ष्या प्रधान प्रकृति पर है, जिसके कारण ही उसे उसके वरुद्ध हथियार उठाना पड़ा। अन्त में वह उसे अपना पुत्र सौंप कर प्रार्थना करता है कि वह उसकी देख-रेख करे! उत्तर में बूढ़ा योद्धा रुस्तम उसकी प्रार्थना को अपना पवित्र कर्त्तव्य समझता है और जब तक जीता है उसके पुत्र की भलाई के लिये कुछ उठा नहीं रखता।

× +

रुस्तम विधि का यह विधान जानता है कि इस्फ़न्दयार की हत्या करने वाला बड़ी गंदी मौत मरेगा अतएव वह हर प्रकार के संकटों का सामना करने के लिये थोड़ा-बहुत तैयार है, किन्तु वह क्या जाने कि उसका सौतेला, छोटा भाई ही उससे इतना जलने लगा है कि तलवारों और भालों से पटी हुई सात खाइयों के द्वारा उसने उसे मार डालने की योजना बनाई है, और वे सारी खाइयाँ उस रास्ते में खोदी जा रही है, जिससे हो कर वह अभी-अभी अपने राजा से आशीर्वाद और सम्मान प्राप्त करने जाने वाला है!

शीघ्र ही वह मृत्यु के उस पथ पर चलता है। उसका घोड़ा रक़्श आगे बढ़ते ही उसे लिये-दिये पहली खाई में भहरा पड़ता है कि रुस्तम एड़ लगाता है और वह फिर किसी भाँति बाहर निकल आता है। किन्तु पहली खाई से मुक्ति पाते ही वह दूसरी और तीसरी खाइयों में भहरा कर लुढ़क पड़ता है, फिर भी वह निडर-घोड़ा किसी प्रकार गिरता-पड़ता आगे बढ़ता रहता है कि सातवीं खाई के सिरे पर पहुँचते-पहुँचते वह और उसका स्वामी भीषण रूप से घायल हो जाते और अचेत हो जाते हैं।

अब रुस्तम को इस स्थिति में देख कर उसका कपटी, छली, अनाचारी, सौतेला भाई उसके समीप आता है और यह निश्चय कर लेना चाहता है कि वह जीवित है कि मर गया! इस प्रकार उसके समीप आते ही रुस्तम उससे धनुष-बाण के लिये गिड़गिड़ाता है और कहता है कि वह घायल हो गया तो क्या है, उसकी कामना है कि अपने अंतिम क्षण तक वह अपने राज्य की जंगली जानवरों से रक्षा करे। अतएव बिना किसी प्रकार का कोई संदेह किये वह धनुष-बाण उस खाई में फेंक देता है और इनके अन्दर पहुँचते ही रुस्तम धनुष पर बाण चढ़ाकर उसे ऐसी भयानक और यम की-सी दृष्टि से देखता है कि वह डर के मारे दौड़ कर एक पेड़ के पीछे जा-छिपता है किन्तु अन्यायी पर उचित ढंग से क्रुद्ध रुस्तम की राह में कोई वस्तु बाधक नहीं होती और वह ऐसा सधा हुआ निशाना लगता है कि तीर पेड़ के तने को चीरता हुआ उस धूर्त्त के कलेजे को बुरी तरह छेद देता है। इस प्रकार हत्यारा अपनी कायरता पूर्ण चालाकियों का दंड भोगता है!

× ×

अंत में रुस्तम अन्यायी से बदला लेने का सुयोग देने के लिये ईश्वर को धन्यवाद देता और अपने स्वामिभक्त घोड़े के समीप ही अंत में प्राण त्याग देता है!

× ×

इधर अपने पुत्र की मृत्यु का शोक-समाचार पाते ही ज़ाल उन्मत्त हो-उठता है और अपनी सेना को आदेश देता है कि क़ाबुल की ईंट-ईंट उखाड़-फेंकी जाये! इसके बाद वह रुस्तम का शव प्राप्त करने की चेष्टा करता है और उसका और उसके प्रिय घोड़े का शव मिलते ही बड़ी पवित्रता से उन दोनों को सीस्तान में समाधिस्थ करता है। कहना न होगा कि इस स्थान पर ऐसी दिव्य समाधि बनवाई जाती है जिसे आज भी चांद-सूरज आँखें फाड़-फाड़कर देखते हैं।

ब्रिट्रिश-द्वीप-समूह के महाकाव्य

एक युग था, कि यूनानी यूनान के पश्चिम में रहनेवाली जातियों को 'केल्टस्' नाम से पुकारते थे, किंतु रोम, स्विटज़रलैंड, जरमनी, बेलजियम और ब्रिट्रिश द्वीप-समूह के निवासियों की ही गिनती इस जाति में करते थे ! फिर भी कहा जा सकता है कि कितनी हो विभिन्न जातियां इस एक केल्ट-जाति में सम्मिलित थीं, जिनमें सबकी अपनी-अपनी भाषायें थीं और सबके थे अपने-अपने रीति-रिवाज ! अनुमान किया जाता है कि ब्रिट्रिश और आयरिश नामक ऐसी ही दो जातियाँ बहुत आरम्भ में इंग्लैंड और आयरलैंड में जा बसीं और तब तक फूलती फलती रहीं जब तक कि आए-आये-दिन होने वाले संघर्ष से उनकी शान्ति भंग न हुई।

ये केल्ट्स ड्र्यूडिक मतावलम्बी थे अर्थात् ये धार्मिक जीवन पसन्द करते थे और पादरियों और न्यायाधीशों का विशेष आदर करते थे ! इनके पुरोहित वे कवि चारण और भाट होते थे जो धार्मिक कर्त्तव्यों, सामाजिक नियमों और वीर-कथाओं को पद्य-पद्ध करने में ही कुशल न होते थे, प्रत्युत उनके पाठ में भी पारंगत होते थे।

रोमन राज्य के चार सौ वर्षों में इंग्लैंड के केल्टस् ने अधिकांशतः रोमन-सभ्यता स्वीकार कर ली किंतु आयरिश और उनके स्वजन, स्कॉच-लोगों पर इस सभ्यता का बहुत कम प्रभाव पड़ा ! इस कारण आयरलैंड, स्कॉटलैंड और वेल्स में ही प्राचीनतम साहित्य की झांकी मिलती है, क्योंकि ईसाई धर्म की स्थापना के बाद छठवीं शताब्दी तक केवल उन्ही देशों के चारण अधिकारी रह कर न्यायाधीश का कार्य करते रहे ! यद्यपि सुना जाता है कि संत पैट्रिक ने इन आयरिश चारणों की बड़ी भर्त्सना की और इन जंगली मूर्तिपूजकों को मंत्र के द्वारा भूत-प्रेत जगाने से रोकने की भरसक चेष्टा की, फिर भी ये अपनी संस्कृति का मोह न छोड़ सके और अपनी प्राचीन विशेषताओं से अलग न हो सके। ये अपने सिर के बीच का थोड़ा सा स्थान मुँड़वा कर अपने विशेष पद की अनवरत घोषणा करते रहे ! इनमें भी वे चारण जो सारंगी पर अपनी रचनायें गा सकते थे, उन चारणों से कहीं अधिक ऊँचे समझे जाते थे जो जादू-जगत का भूत-प्रेत के आवाहन में ही अपना नाम कर लिया करते थे ! किंतु ये सब अपनी कविताओं सामाजिक नियमों के पद्यों और मन्त्रों का मौखिक पाठ-मात्र करते थे, क्योंकि किसी प्रमाण के अभाव में यह आवश्यक-रूप से मानना पड़ता है कि ईसाई धर्म के जन्म के पूर्व तक इनमें से किसी ने भी अपनी रचना को लिखित रूप नहीं दिया !

आयरलैंड की सबसे जोरदार कथाओं का एक चक्र माना गया है ! इस चक्र का केन्द्र बिन्दु है किसी अज्ञात द्वारा रचित 'टैन बो कूल्नी' या 'कूली के पशु' ! इसमें बताया गया है कि कैसे कान्नाट की महारानी 'मैव' ने एक महत्वपूर्ण, भूरे बैल को पाने के लिए अपने पति के ही विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी है और कैसे इसका प्रधान नायक 'कुचुलैन' अकेले युद्ध कर 'मैव' के पति 'अलस्टर' के राज्य की रक्षा करता और विरोध का नाश करता है । इस चक्र की अन्य अनेक कथाएँ आज भी जीवित हैं जो वीर-पुरुषों की कितनी ही मनोरंजक कहानियों को प्रकाश में लाती और नायकों और नायिकाओं के जन्म से लेकर मृत्यु तक के जीवन का पूर्ण विवरण बताती है ।

इस चक्र के बाद आयरिश-साहित्य में 'फीनियन' या 'ओसियेनिक' कविताओं और कहानियों को लेकर एक दूसरे महाकाव्य-चक्र की रचना की है । इस चक्र का चरित्र-नायक 'फिन' या 'फिनन' नामक एक वीर है जो तीसरी शताब्दि में कुछ सिपाहियों के दस्तों का नेतृत्व करता है । इसके प्रसिद्ध 'ओइसिन' की एक-सा कविताएँ 'बुक ऑफ लिस्मोर' में मिलती हैं ; कहना न होगा कि बारहवीं और तेरहवीं शताब्दि में इस चक्र में विशेष जीवन संचार हुआ और फिर अठारहवीं शताब्दि तक यह खूब विस्तृत और विकसित होता गया । इसी समय इसमें एक नई कहानी जोड़ी गई !

× ×

आयरलैंड के कुछ प्रारम्भिक कवियों के नाम उसके इतिहास में आज भी सुरक्षित हैं । उदाहरण के लिए 'दाल्गी फार्गेल्ल' और 'ओलेन फोगिल' के नामों की ओर विशेष संकेत किया जा सकता है । ये 'दाल्गी फार्गेल्ल' वह सुप्रसिद्ध कलाकार हैं जिन्होंने संत पैट्रिक की जीवनी को पद्य-बद्ध करने का प्रयत्न किया था और जो आज भी उसी प्रकार जी रही है; और यह 'ओलेन फोगिल' वह [illegible] कवि है जिसकी एक कविता ११०५ में संकलित 'बुक ओफ़ दि डन काउ' में आज भी प्राप्य है ।

तेरहवीं शताब्दि तक के अधिकांश उपरोक्त कवि और चारण स्कॉटलैण्ड को भी अपना जीवन-क्षेत्र मानते रहे । यहाँ तक कि बहुत समय तक स्कॉटलैण्ड में रहने के कारण इसी समय का एक कवि 'स्कॉचमैन' की उपाधि से विभूषित भी हुआ !

× ×

सत्रहवीं शताब्दि के बाद आयरिश साहित्य का ह्रास आरम्भ होते ही सारी आयरिश कविताएँ ज्यों की त्यों स्कॉच भाषा में ढाल दी गईं और इस प्रकार 'गैलिक साहित्य' की नींव पड़ी ! यह साहित्य 'रिफ़ॉर्मेशन' के समय तक दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति करता रहा । केवल मौखिक काव्य-पाठ का आधार लेकर इस साहित्य के उदाहरणों की खोजकर उनको प्रकाश में लाने का और उन्हें 'पोयम्स-आफ ओशियन'[1] के नाम से अंग्रेजी भाषा में संकलित करने का सारा श्रेय जेम्स

[1]सोलहवीं शताब्दि का महत्वपूर्ण, धार्मिक आन्दोलन

मेकफ़रसन नामक एक पहाड़ी की है! यद्यपि इसने अपनी कृति को अनुवाद-मात्र माना है तथापि उसकी काफ़ी आलोचना ही नहीं हुई, प्रत्युत उसे 'साहित्यिक बदमाश' का तमगा तक दे दिया गया और कहा गया कि उसमें प्रतिभा का अभाव तो है ही, ज्ञान की कमी भी साफ़ नज़र आती है जब कि ऐसे फुटकर पदों को अमर और दृढ़ रूप देने के लिए ज्ञान परम आवश्यक है।

× ×

वेल्श (वेल्स के निवासी) और सब कुछ होने के साथ-साथ एक काव्यात्मक जाति भी हैं। इन्हें 'टैलीसिन', 'एन्यूरिन', 'ल्यवार्च हेन' और 'मार्लिन' आदि अपने चार कवियों पर विशेष अभिमान है। इन सब की रचनाओं में महाकाव्यों के गुण तो मिलते ही हैं, उनमें 'आरथूरियन-चक्र' के कुछ चरित्रों का उल्लेख भी मिलता है। यही नहीं, कुछ पद्य-बद्ध ऐतिहासिक और रोमांटिक कहानियां-भी इन वेल्सवासियों के अधिकार हैं। कहा जाता है कि इनके मूल-रूप के लुप्त हो जाने के बहुत समय बाद तक इनका काव्यात्मक रूप विशेषतया लोकप्रिय और प्रचलित रहा! ऐसी ग्यारह कहानियों का अनुवाद 'शारलाट गेस्ट' नामक एक महिला ने किया है। इस संग्रह का नाम 'मैबीनोगियन' है, जो कि 'मैबीनोगी' का बहुवचन है। 'मैबीनोगी' उस प्रकार कथा को कहते हैं जिसका अध्ययन और मनन प्रत्येक चारण के लिये आवश्यक हो जाता चारण कला में सिद्धि प्राप्त करने लिये जिसका सहारा लेना अनिवार्य ही नहीं नियम भी है। इनमें से कुछ का सम्बन्ध महान 'आरथूरियन-चक्र' से है, क्योंकि 'आर्थर' दक्षिणी वेल्स का विशेष लोक-प्रिय चरित्र-नायक है और यहाँ के क्‌ प्रसिद्ध स्थानों के साथ उसका और उसके दरबार का नाम आज भी जुड़ा हुआ है।

यद्यपि 'आर्थर' सम्बन्धी ऐतिहासिक सामग्री उतनी ही कम मिलती है जितनी कि रोलैंड विषयक तो भी इन दोनों को चरित्र-नायक मानकर इतने महाकाव्य रचे गये हैं कि उन्हें ठीक-ठीक समझने के लिये चक्रों में बांट देना आवश्यक हो गया है! इस प्रकार इन महाकाव्यों के कितने ही चक्र हैं। अधिक कुछ ज्ञात न होने पर भी इन महाकाव्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सम्भवतः आर्थर एक छोटी-सी सेना का नेता था, जो धीरे-धीरे उन्नति करता रहा और एक बार प्रधान सेनाध्यक्ष बन-बैठा, दूसरी बार सम्राट के नाम से प्रसिद्ध हुआ और तीसरी और अंतिम बार सारे ब्रिटेन का अधिपत्ति बन-गया!

आर्थर सम्बंधी यह कथायें 'दक्षिणी वेल्स' से 'कार्नवाल' आईं और 'कार्नवाल' से 'आरमोरिका' पहुँचीं, जहाँ इन्हें सदा के लिये चक्रों में बांट दिया गया। इसके बाद जब-तब इनमें नई-नई कथायें जुड़ती रहीं और ये सम्पन्न होती रही कि अंत में 'होली ग्रेले' की पौराणिक कथा भी इनमें आ मिली! 'होली ग्रेल' का जन्म-स्थान 'प्रोवेंस' है! ये यहीं से चारण-यात्रियों के द्वारा ब्रिटेन में आईं और प्रचलित हुईं।

× ×

इस प्रकार 'केल्टिक' तन्तुओं और अंग्रेज़ी साहित्य पर उनके प्रभाव का वर्णन करने के

बाद 'ट्यूटनों' के आक्रमणों की चर्चा नितान्त आवश्यक है, क्योंकि अंग्रेज़ी-विचार, अंग्रेज़ी भाषा, अंग्रेज़ी आचार विचार और अंग्रेज़ी साहित्य—सब कुछ मूल रूप से 'ट्यूटन' ही है। यहाँ इन आक्रमणों के इतिहास से हमारा कोई प्रयोजन नहीं, हमें तो केवल इतना जानना है कि ये आक्रमणकारी सुगठित भाषा और सुगठित साहित्य अपने साथ लाये, जिसे फिर उन्होंने ही जन-समूह पर लाद दिया। अतएव इस समय के प्राप्त ग्रन्थों में केवल 'ब्यूवुल्फ़' ही ऐसा प्रदीप, इतना ही, अंग्रेज़ी महाकाव्य है, जो मूल-रूप में 'ट्यूटन' है और जो बहुत से आक्रमणों के घरों में गाया जाता रहा है। इसके अतिरिक्त 'विडसिथ' और 'डिओर' की कुछ प्राचीन कविताएँ भी हमें मिलती हैं जो इन लोगों के समय तक चली आई हैं।

'दी वैण्डरर' 'दि सी फ़ेरर', 'दि रूइन', 'बैटल ऑफ़ मैल्डन' और 'लार्ड ऑफ़ ब्रूनानबर' आदि ऐसी कथाओं का उल्लेख भी आवश्यक है, जो बाद में अंग्रेज़ी गद्य-गीतिकाओं में ढाल दी गईं! इसी समय महान् राष्ट्रीय-जागृति ने 'दि बैटिल ऑफ़ मैल्डन' या 'बिरथनोथ डैथ' को जन्म दिया। यह वह पुरानी गाथा है जो कि छपाई के आने से पूर्व ही सौभाग्य से प्रकाशित हो चुकी थी। इसमें कवि ने बतलाया है कि कैसे ९३ जहाज़ों के साथ 'बाइकिंग मैनकैंफ़' इंग्लैंड आया, कैसे उसने समुद्री किनारों को उजाड़ दिया और कैसे वह अंत में हार कर युद्ध में खेत आए!

'कैडमन' इंग्लैंड का सबसे पहला ईसाई-कवि है जिसने प्रेम या युद्ध के गीत गाने के बजाय धार्मिक ग्रंथों की व्यापक व्याख्या की और सृष्टि का ऐसा जीता-जागता वर्णन किया कि कहा जाता है कि मिल्टन ने इससे प्रेरणा ग्रहण की, जैसा कि उसके पैराडाइज़ लोस्ट के कितने ही पदों से बिल्कुल स्पष्ट भी है। 'कैडमन' कितनी ही कविताओं का रचयिता माना जाता है जिनमें 'जेनेसिस' 'एक्ज़ोडस' और 'डैनियल' प्रमुख हैं। यद्यपि साधारणतया इसने बाइबिल की कथा-वस्तु का ही सहारा लिया है, फिर भी 'जेनेसिस' के आरम्भ में देवदूतों के पतन का विशद् वर्णन है। अतः यह कहना सत्य है कि मिल्टन के कथानक के सबसे अधिक चिन्तात्मक अंश इसी वर्णन की देन हैं।

इसके बाद 'कैनेवुल्फ़' कृत 'क्राइस्ट', 'जूलियाना,' 'एलेनी' और 'एंड्रियाज' नामक महाकाव्य हमारे सामने आते हैं। ये सभी अलंकृत पद्य के अच्छे उदाहरण हैं। इन सबमें 'एलेनी' विशेष महत्वपूर्ण है। यह चौदह पर्वों में विभाजित है और इसमें 'सम्राज्ञी हेलेना' द्वारा 'क्रॉस' की खोज से सम्बन्धित कथा पर प्रकाश डाला गया है। तत्पश्चात 'गिल्डाज़' और 'नेन्नियस' की 'हिस्टोरिया ब्रिटोनम' सम्मुख आती है। यह वह पहला ग्रंथ है जिसमें ट्राय से भागे हुये लोगों का इंग्लैंड और आयरलैंड में आ-बसने का, सम्भवतः, पहला काल्पनिक वर्णन है और जिसमें आर्थर के महान कृत्यों और 'मरलिन' नामक एक चारण की भविष्य वाणियों का उल्लेख है। अतएव इसमें काल्पनिक कहानियों के वे तन्तु निश्चित रूप से मिलते हैं जिन्होंने विकसित होकर 'मानमाउथ के जिओफ़्रे' द्वारा लिखित 'हिस्ट्री ऑफ़ ब्रिटेन' का रूप धारण कर लिया। यों तो 'जिओफ़्रे' का कथन है कि उसने अपनी सामग्री एक ऐसे प्राचीन ग्रंथ से एकत्रित की है जो लुप्त हो चुका है।

[1] जर्मनी के आदिम-निवासी जो आर्य थे और जिनमें स्कैंडिनेवियनों की भी संख्या काफ़ी थी—

इस सामग्री के अतिरिक्त एक और भी बहुत मनोरंजक और महत्वपूर्ण कथा-चक्र उपलब्ध है। इस कथा चक्र का सम्बन्ध स्वर्ग के एक पत्र से है जिसमें रविवार के दिन मनाये जानेवाले धर्माचरणों की शिक्षा दी गई है। किन्तु जहाँ एक ओर धार्मिक-कथाओं के कई चक्र मिलते हैं वहीं दूसरी ओर सांसारिक कथाओं का भी अभाव नहीं है, जिनमें सिकन्दर का अरस्तू को पत्र, 'दि वन्डर्स ओफ् दि ईस्ट' ('पूर्व के आश्चर्य') और 'दि स्टोरी ओफ एपोलोनियस ओफ टायर', ('टायर के एपोलोनियस की कथा') आदि सर्वप्रमुख हैं।

+ ×

पर नार्मनों की विजय के बाद फ्रेंच इंगलैंड की साहित्यिक भाषा बनी। इसी समय आधुनिक रोमांस का जन्म हुआ और फ्रांस और ब्रिटेन के कितने ही मिथकों और शार्लमेन और आर्थर की कथाओं से सम्बन्धित बहुतेरे रोमांस चक्र अस्तित्व में आये! इसी समय 'मानमाउथ' के 'जिओफ्रे' ने खुल कर अपनी कल्पना का सदुपयोग किया और ब्रिटेन के प्रारम्भिक इतिहास की सामग्री प्रस्तुत की। यह तथाकथित इतिहास और कुछ न होकर वास्तव में गद्यात्मक रोमांस है, जिससे अगली पीढ़ियों के कितने ही कलाकारों को प्रेरणा और साहित्य-वस्तु मिली। इसी समय 'वेस' और 'लेयामन' के 'रोमां दि ब्रुत' अलग-अलग मनोहर रूप में हमारे सम्मुख आते हैं। ये दोनों कलाकार अपनी रचना में हमें सूचित करते हैं कि ब्रिटेन 'ब्रुत' या 'ब्रूटस' शब्द से बना है और यह 'ब्रुत' या 'ब्रूटस' एक ट्राय से भागे हुये शरणार्थी का नाम है जो कि आयनस के परिवार का सदस्य था। इतना ही नहीं, बल्कि ये हमें आर्थर और ब्रिटेन के और दूसरे आरम्भिक राजाओं का इतिहास भी बतलाते हैं।

× +

बारहवीं शताब्दि के अंतिम वर्षों में 'आर्थर' का यश अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा, उससे अनुप्राणित साहित्य अन्तराष्ट्रीय सम्पत्ति बन गया और कितने ही बाहरी कवि भी उसे अपनी रचनाओं से सम्पन्न करने में लग गये! इस समय तक 'आर्थर' के हाथ में ब्रिटेन के अतिरिक्त स्वप्न या परी-देश की बाग-डोर भी आ गई थी। इसके बाद आर्थर की जीवनी आर्थर की पौराणिक कथा बन गई और फिर उसका प्रचार सर्वत्र हो गया।

यह १२०० से १५०० तक का समय तुफान्त रोमांसों का युग कहा जाता है। इस युग में सारे लोक-प्रिय और प्रचलित कथा- चक्र नये सांचे में ढाले गये और उनका विस्तार किया गया! इसी समय यूनानी और लैटिन महाकाव्यों का सर्व-साधारण के लिये अनुवाद किया गया और साहित्य और कला का अन्तराष्ट्रीय आदान-प्रदान चल पड़ा। इस प्रकार अन्य देशों के रोमांसों के साथ-साथ हुआं दि बोरदोओर दि फ्रोरसन्स आफ् आयमन' जैसे फ्रेंच-रोमांसों के कितने ही प्रशंसक ब्रिटेन में पैदा हो गये, यहाँ तक कि अपने 'एमिड समर नाइट्सड्रीम' के कुछ चरित्रों को शेक्सपियर ने 'हुआं दि बोरदो' जैसे एक फ्रेंच रोमांस के रंग में रंग डाला! इसी समय किसी देश-भक्त कवि ने सिकन्दर के प्रचलित रोमांस की जड़ उखाड़-फेंकने के लिये 'रिचर्ड कर दि लिआन यानी 'शेर-दिल-रिचर्ड' के रोमांस का विकास और प्रचार किया। इसमें लेखक ने बतलाया कि कैसे इस राजा ने शेर को पछाड़ कर उसका कलेजा निकाल लिया और यह उपाधि प्राप्त की।

इस प्रकार ऐसे कितने ही रोमांस रचे गये जिनमें पूर्व की मादकता और माधुरी है, जादू की अनदेखी, मनोहर दुनिया है और प्रेम के हरे-भरे संसार का निश्छल प्रदर्शन है। कहने को तो इस युग में वीर और प्रेम-काव्य का ही प्राधान्य रहा है, किन्तु धार्मिक या अन्य प्रकार के कथानकों का भी अभाव नहीं रहा है; वे जहाँ-तहाँ सफलता से प्रयोग में लाये गये हैं।

× ×

अब चॉसर का युग आया और इस नये कवि के साथ नई भाषा तो आई ही, नये कथानक भी साहित्य-जगत में चमकने लगे! यद्यपि उनका व्यक्तित्व और सौन्दर्य उनकी कथा-वस्तु के अनुरूप दूसरे लेखकों की देन है, तथापि 'चॉसर' की 'कैन्टरबरी टेल्स' सूक्ष्म महाकाव्य हैं। यों तो 'नाइट्स टेल' (वीर-गाथा) या 'ट्राइलस और क्रेसिडा' आदि सभी कथानक प्रशंसनीय महाकाव्यों के उपादानों से भरे पड़े हैं।

'चॉसर' के बाद 'स्पेंसर' हमारा दूसरा महाकवि है। 'फेयरीक्वीन' इसका रूपक महाकाव्य है जो कि अभाग्यवशात् अधूरा ही रह गया—यद्यपि यह 'ऐरिऑस्तो' और दूसरे इटैलियन कवियों से स्पष्टतया प्रभावित है तथापि इसके असाधारणतया मनोहर चित्रों में प्रकृति और आदि-सृष्टि के दूसरे उपादानों के दिल की धड़कनें साफ़ सुनाई देती हैं और सचमुच ही इसके रूपकमय कथानक से काव्य के सौष्ठव में चार चांद लग गये हैं।

इनके अतिरिक्त दो और महत्व पूर्ण, किन्तु कम प्रचलित, महाकाव्य हैं जिनका उल्लेख करना आवश्यक है। ये हैं 'विलियम वारनर' कृत ऐतिहासिक महाकाव्य 'ऐलबियन्स इंग्लैंड' ('ऐलबियन का इंग्लैंड'-१५८६) और 'सेमुयल डैनियल' रचित 'सिविल-वार्स' (गृह-युद्ध-१५९५) ! यही नहीं, बल्कि 'ड्रैटन' ने भी गृह-युद्धों के कथानक को लेकर 'दि बैरन्स वार' नामक महा काव्य की रचना की और इसके बाद-'पोलियाल्बियन' नामक वर्णन-प्रधान, देश-भक्तिपूर्ण एक दूसरा महाकाव्य लिख डालने का संकल्प किया, जिसमें उसने सारे इंग्लैंड की यात्रा की और सारी असंख्यक, प्रचलित कहानियों का मनोरंजक वर्णन किया !

'ड्रैटन' के अतिरिक्त 'अब्राहम काउले' ने भी एक महाकाव्य रचा। यह 'डेविडेइस' या 'डेविड के कष्ट' शीर्षक महाकाव्य चार भागों में विभाजित है! इसके आरम्भ में स्वर्ग और नरक में हो-रही उन दो न्याय-सभाओं का वर्णन किया गया है जो कि इस योग्य-व्यक्ति के जीवन पर विचार करने के लिये बुलाई गई थीं।

'काउले' के बाद 'ड्राइडेन' का नाम सम्मुख आता है। 'ड्राइडेन' केवल एक अनुवादक ही न था, बल्कि उसने 'आर्थर' सम्बंधी एक महाकाव्य की रूप-रेखा भी सामने रक्खी थी। लगभग इसी समय 'पोप' भी 'ब्रुट' पर एक महाकाव्य लिखने की बात सोच रहा था, किन्तु उसका संकल्प पूरा न हो सका और वह 'इलियड' के अनुवादक के रूप में ही, अपेक्षाकृत, अधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध बना—रहा।

× ×

यद्यपि 'कीट्स' बहुत थोड़ी उम्र में ही मर गया, फिर भी, उसकी कई महत्वपूर्ण कृतियाँ हमारा ध्यान बरबस अपनी ओर खींच लेती हैं। 'एन्डिमियन' एक पूर्ण और पौराणिक महाकाव्य

है, 'हाइपेरियन' दूसरा किन्तु आंशिक महाकाव्य है और 'इसाबेला' एक पुराने रोमांस का नवीन रूपान्तर है।

'कीट्स' के समकालीन 'शैली' ने भी महाकाव्यात्मक पद्यों से ओत-प्रोत कविताएँ लिखीं जिनमें 'एलेस्टर' या 'स्पिरिट ऑफ़ दि सॉलिट्यूड', 'दि रिवोल्ट ऑफ़ इस्लाम', 'एडोनेइस' और 'प्रोमिथ्यूज़-अनबाउन्ड' आदि विशेषतया उल्लेखनीय हैं। दूसरी ओर 'बाइरन' और 'स्कॉट' ने भी ऐसी कितनी ही कवितायें लिखीं जो महाकाव्यों के अधिकाधिक समीप हैं।

'कॉलेरिज' की 'दि ऐनशियेन्ट मैरिनर' नामक की प्रसिद्ध कविता को भी कभी-कभी प्रधान महाकाव्य कहा जाता है, यद्यपि यह माना जाता है कि उसकी 'काइस्टाबेल' पुराने 'रोमांस-कल्पनादि एवँचर, का ही दूसरा रूप है।

× ×

'सदे' ने 'आरमिडिस'[1] डि गाउल' और 'पालमेरिन'[2] नामक दो काव्यात्मक रोमांसों का अनुवाद कर बड़ा यश कमाया। यही नहीं, प्रत्युत उसने एक ओर तो 'थलाबा' और 'दि कर्स-आफ़ केहामा' नामक पूर्वी महाकाव्य रचे और दूसरी ओर 'मैडॉक', 'जोन ऑफ़ आर्क' और 'रॉडेरिक' नामक अंतिम गोथों पर ऐसी कवितायें लिखी जिन्हें महाकाव्य के गुणों से अलंकृत कहने में शायद ही किसी अधिकारी को कोई आपत्ति हो?

'मूर' यद्यपि गीतकार था तथापि लाला रुख़ नामक पूर्वी महाकाव्य का रचयिता माना जाता है।

अब 'मैकाले' और 'ले हन्ट' पर दृष्टि जा टिकती है। 'मैकाले' की अनेकानेक कृतियों में से, कम-से-कम, 'लेज़ आफ़ ऐंशियेंट रोम' में तो महाकाव्य का रंग है ही और इसी प्रकार 'ले हन्ट' की 'स्टोरी ऑफ रिमिनी' में भी।

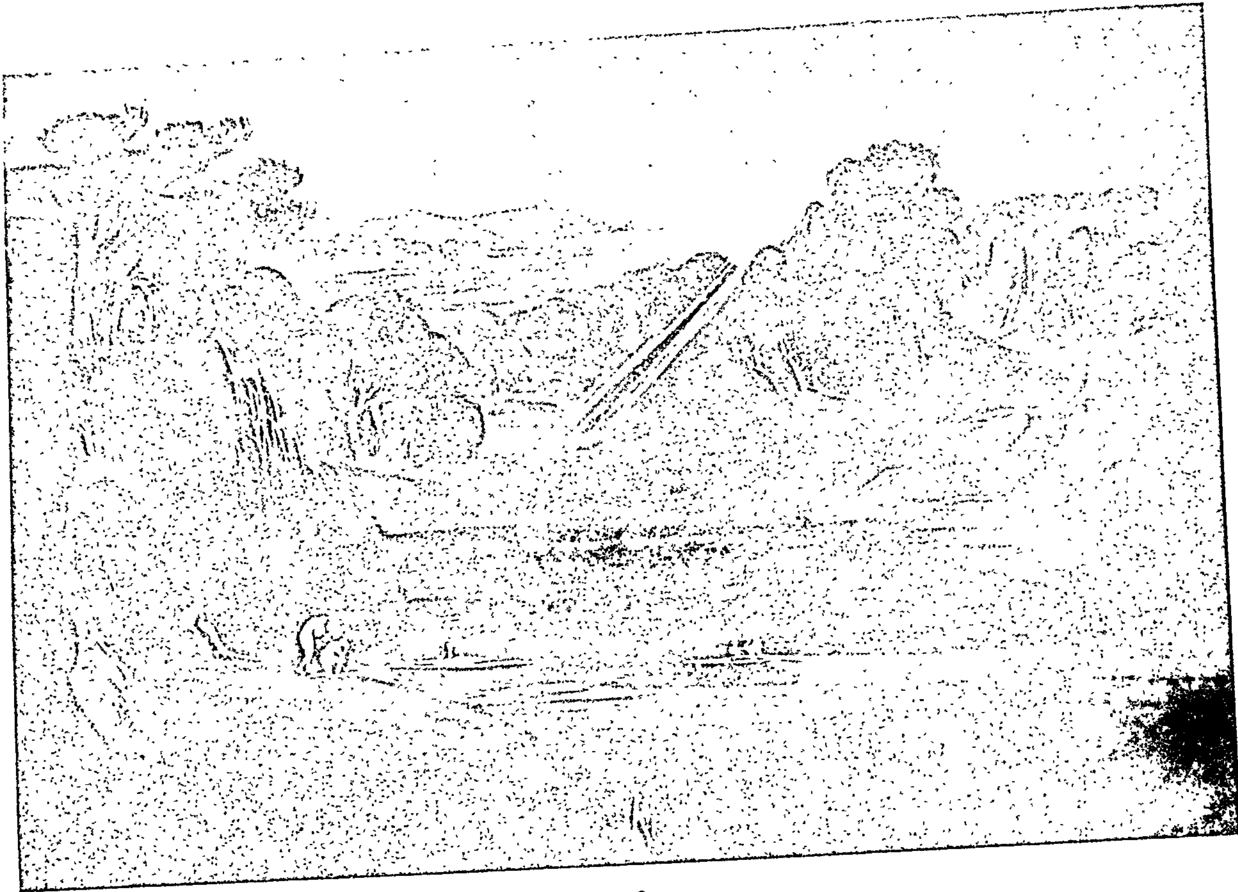
'मैथिउ आरनल्ड', 'स्विनबर्न' 'विलियम मॉरिस' और 'सर लेविस मारिस' की ओर भी प्रायः संकेत किया जाता है। 'आरनल्ड' और 'स्विनबर्न' दोनों ने ही 'ट्रिस्ट्रैम' के कथानक से लाभ उठाया है और शेष दोनों ने पुरानी सर्वकलीन प्रचलित कथाओं से प्रेरणा ग्रहण की है।

पीछे 'आर्थर' और उससे सम्बंधित कथा-चक्रों की काफ़ी चर्चा हो चुकी है, किन्तु 'आइडिलज़ आफ़ दि किंग' (राजा के चारणगाह) की रचना कर आर्थर की कथा को नवीनतम और सर्वाधिक कलात्मक रूप देने का सारा श्रेय 'विक्टोनियन-युग' के राष्ट्र-कवि 'टेनिसन' को ही है। कुछ आलोचक उसकी 'एनॉक आरडेन' को पारिवारिक महाकाव्य का सुन्दर उदाहरण मानते हैं।

इधर के लेखकों में कुछ फुटकर उपन्यासकारों को गद्यात्मक-महाकाव्यों का लेखक बतलाया जा रहा है। अब, अन्त में 'टामस वेस्टवुड', 'श्रीमती ट्रास्क' और 'स्टीफ़ेन फ़िलिप्स' की चर्चा भी आवश्यक जान पड़ती है। 'टामस वेस्टवुड' ने दि क्वेस्ट आफ़ दि सैंग्रियल की रचना मनोहर पद्यों में की है, 'अन्डर किंग कान्स्टैंटाइन' 'आयूरियन चक्र' को 'श्रीमती ट्रास्क' की महत्वपूर्ण देन है; और 'फ़िलिप्स' 'यूलिसीज़' और 'राजा एल्फ्रेड' के गुणगायक के रूप में हमारे आदर का पात्र है।

---

[1]एक वीरता-प्रधान स्पेनिश रोमांस। [2]पुर्तगाल का एक महाकाव्य।



पृथ्वी का स्वर्ग—'ईडेन'

'पैराडाइज़ लॉस्ट–'

पर्व एक–

मिल्टन आरम्भ में सूचित करता है कि वह त्रिशंकु नहीं बनना चाहता वरन् उसकी कामना है कि वह मनुष्य के प्रति किये गये ईश्वर के सारे व्यवहारों को न्याय-संगत ठहराये। इसके बाद वह कहता है कि मनुष्य का पतन उस शैतान-साँप के कारण हुआ जो कि अपने साथियों के साथ स्वर्ग से निकाल दिया गया था और जिसने स्वर्ग से बदला लेने के विचार से मनुष्य-जाति की जननी को पाप करने के लिये उभारा था !

कवि का कथन है कि यह पिशाच आकाश से तलहीन खाड़ी में फेंक दिये जाने के बाद अस्फॉल्ट की धधकती हुई एक झील में जा-रुकता है ! यहाँ बीते हुये सुख के क्षणों की याद और इस स्थान की चिरन्तन-यातना के कारण उसका दम घुटने लगता है और वह अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाता है कि अन्धकार में भी लपटों की ज्योति के सहारे उसकी आँख उन सभी लोगों पर पड़ती है जो उसकी भाँति ही ईश्वरीय-न्याय के शिकार हुये हैं और भयानक यातना भोग रहे हैं ! यह दृश्य देखते ही वह घोर घृणा से भर-उठता है और अजेय इच्छा-शक्ति से तनकर ईश्वर के सामने कभी न झुकने और कभी न आत्म-समर्पण करने के पक्के इरादे के साथ प्रतिज्ञा करता है कि वह जब तक स्वयं् स्वर्ग का स्वामी न बन जायेगा, ईश्वर से बराबर लड़ता रहेगा। उसे पूरा विश्वास है कि उसके साथी उसे धोखा न देंगे !

उस शैतान के पास ही जलती हुई चिकनी मिट्टी पर उसका साहसी-साथी बियेलज़ेबव[1] पड़ा हुआ है। वह ईश्वर के पीछे पड़ने और फलस्वरूप और घोड़ दण्ड पाने से डरने के कारण शैतान के प्रस्ताव का समर्थन नहीं करता ! किंतु शैतान उसे समझाता है कि निर्बल बनना सारे दुःखों और संकटों का आवाहन करना है, अतः उन्हें दुर्बलता से पीछा छुड़ाकर कुछ कर डालने के बाद ही मर-मिटने की बात सोचनी चाहिये, इस तरह तड़प-तड़प और कलप-कलप कर नहीं। इसके बाद वह उससे ईश्वर की योजनाओं में अपनी टांग अड़ाकर उसके मनोरथों पर पानी-फेर-देने का आग्रह करता है ! इसी समय निगाह ऊँची करने पर वह अनुभव करता है कि ईश्वर ने पापियों को सज़ा देनेवालों को वापिस बुला लिया है ! यही नहीं, वह यह भी देखता है कि गंधक

---

[1]एक पतित देवदूत-

की वर्षा रुक गई है और बिजली उन पर आकाश ढा-देने से हाथ खींच-चुकी है। अतएव, वह इस सुयोग से लाभ उठा कर अग्नि की उस झील से केवल स्वयं ही नहीं उबरना चाहता, प्रत्युत अपने साथियों की मुक्ति और उनकी क्षति-पूर्ति के लिये भी कुछ उपाय करना चाहता है और चल पड़ता है।

अब बिछुड़ती हुई लपटों के बीच, एक पास की पहाड़ी की ओर लम्बे डग भरता हुआ शैतान अपने चारों ओर घूरता है और चीख़-पुकार से भरे हुए इस स्थान के अंधकार की तुलना जगर-मगर करती हुई स्वर्ग की उस अलौकिक कान्ति से करता है, जिसका कि वह अब तक अभ्यासी रहा है। किन्तु इस भयानक विरोधाभास के रहते भी वह इस नतीजे पर पहुँचता है कि स्वर्ग में ग़ुलामी करने से नरक में राज्य करना कहीं अच्छा है। इसके बाद ही वह बियेलज़ेबब को पतित देवदूतों को बुलाने का संकेत करता है।

बियेलज़ेबब उसके आदेश का पालन करता है और उन सारे देवदूतों को पुकारता है जो कि उस झील पर पड़े हुये हैं और जो उतने ही सघन हैं जितनी कि 'वैलॉमब्रोसा'[1] के सोतों पर बिछी हुई पतझरी-पत्तियाँ। वे उसकी बोली सुनते हैं, सोते हुए पकड़े-गए सन्तरियों की भाँति ही हड़बड़ाकर उठ-बैठते हैं और प्रभु के चरणों पर शीश झुकाने के पूर्व मिश्र को तहस-नहस कर देने वाले टिड्डीदल की भाँति ही अगणित संख्या में नरक की छत के चारों ओर अपने पर फड़फड़ाते हैं। इनमें 'मिल्टन' कितनी ही अलौकिक-आत्माओं का भी वर्णन करता है जिनकी कि बाद में पैलेस्टाइन, मिश्र और यूनान आदि में पूजा भी हुई! इस समय कवि को शैतान की पृथ्वी की ओर झुकी हुई आँखें देख कर उसकी स्वर्ग में स्वाभिमान से चमकती हुई आँखें याद आ जाती हैं। इसके बाद वह बतलाता है कि वे देवदूत इस प्रकार शैतान की ध्वजा का अभिवादन करते हैं कि उनके नाद से नरक का वह प्रदेश ढह पड़ता है और इस प्रदेश के अतिरिक्त भी 'अशान्ति' और 'चिरन्तन रात्रि' का दिल दहल उठता है। उन सब की युद्ध-पताकायें हवा में फरफरा रही हैं कि वे स्वभावतः फैल जाते हैं और अब भी एक इतना बड़े और इतने शक्तिशाली दल को अपनी इच्छा पर निर्भर देखकर शैतान का हौसला बहुत बढ़ जाता है और वह घमंड से फूला नहीं समाता!

यद्यपि इस समय शैतान यह अनुभव करता है कि आकाश को उसका कहा करने के लिये विवश कर ये पतित देवदूत स्वर्ग को एक प्रकार का दंड ही दे रहे हैं, तथापि यह बात उसे बहुत नहीं खटकती वरन् उसकी बुद्धि को छूती हुई सी निकल जाती है। वह घोषित करता है कि उनके द्वारा मोल लिया गया संघर्ष न तो अनुचित है, न अप्रिय और न कम शानदार; बल्कि वह कि हार जाने पर भी वे एक बार फिर यत्न कर अपना खोया हुआ राज्य पुनः प्राप्त कर सकते हैं। इतना ही नहीं, बल्कि वह उन सब को सुझाता है कि अब वे अपने शत्रु की शक्ति का अनुभव कर रहे हैं और समझ रहे हैं कि उसे शक्ति से जीतना उनके वश के

[1] फ्लोरेंस के पूर्व की प्रसिद्ध घाटी और मठ-

बाहर की बात है, अतएव उन्हें 'सर्वशक्तिमान्' के द्वारा अभी-अभी बनाई गई नई दुनिया को बरबाद कर अपनी शक्ति का परिचय देना चाहिये, क्योंकि आत्मसमर्पण तो ऐसी दुर्बलता है जिसकी वह कल्पना ही नहीं कर सकता !

अब पतित देवदूत अपने रहने के योग्य उपनिवेश बनाने के लिए, 'मैमन'[1] के निर्देशन में, पास की पहाड़ियों की खानों से सोना निकालते हैं, उनसे ईंटे बनाते हैं और उनकी सहायता से शैतान और उसके सरदारों की राजधानी 'पैन्डिमोनियम' का निर्माण करने में जुट-जाते हैं ! वे पहिले बड़ी शीघ्रता से सुविधाजनक बड़े कमरे को पूरा करते हैं और उसे दीपों से इस प्रकार सजाते हैं कि वह जगमगा उठता है। इसके बाद अपने सहायकों के साथ शैतान उस बड़े कमरे में प्रवेश करता है, दूसरे पतित देवदूत बौनों के रूप में उसकी छत के नीचे इकट्ठे होते हैं और महान परामर्श आरम्भ होता है।

पर्व दो—

शैतान आँखों में चकाचौंध पैदा करने वाले एक रत्नजटित सिंहासन पर आसीन है और अन्य सरदार उसे चारों ओर से घेरे हुये बैठे हैं। वह अपने अनुयायिओं को सम्बोधित कर घोषित करता है कि सब से ऊँचा पद प्राप्त करने के लिये उसकी उन सबसे अधिक हानि हुई है और चूंकि वह उन सबसे अधिक कष्ट सहन करता-रहा है अतएव किसी को उससे या उसके सर्व-प्रमुख अथवा सर्व-प्रधान होने से जलन नहीं होनी चाहिये ?

इतना कहने के बाद वह अपने साथियों का अगला इरादा जानना चाहता है कि मोलॉक नामक देवदूत ईश्वर के विरुद्ध लड़ाई छेड़-देने के पक्ष में अपना मत देने के बाद एक इतना जोशीला भाषण देता है कि सारे उपस्थित लोगों की भुजायें लड़ने के लिये फड़क उठती हैं। बेलियल या बियेलज़ेबब, जो कि गंदी से गंदी बात को तर्क-संगत एवं सुन्दरतर रूप देने में पूर्णतया समर्थ हैं, अपने साथियों से आग्रह करता है कि चूँकि वे सर्वशक्तिमान की महान शक्ति का परिचय पा चुके हैं और जानते हैं कि वह बड़ी सरलता से उनकी सारी योजनायें मिट्टी में मिला सकता है अतएव उन्हें लड़ने की जगह छल-छद्म से ही काम लेना चाहिये ! फिर भी, बात यहीं समाप्त नहीं होती और दूसरी ओर से 'मैमन' का स्वर गूँज-उठता है। वह न तो युद्ध के पक्ष में है और न कपट-जाल के, प्रत्युत वह तीसरा ही प्रस्ताव सामने रखता है कि चूँकि इस प्रदेश में सोना-चाँदी और सारी धन-सम्पदा वहीं-यहीं फिर रही है, अतएव उन्हें सब कुछ भूलकर केवल सम्पदाओं और ख़ज़ानों की तहें लगाने में ही सन्तोष करना चाहिये !

किंतु पतित देवदूत 'माइकेल' की तलवार की काट से डरते हैं, इसलिए ही सब की बातें सुन लेने के बाद बियेज़ज़ेबब के प्रस्ताव का हृदय से समर्थन करते हैं, उसे प्रयोग में लाने की बात सोचते हैं और कहते हैं कि वे हाल की रची-गई नई दुनिया में और आराम से बसने की चेष्टा

---

[1] धन के देवता

करेंगे और देखेंगे कि ऐसा सम्भव भी है या नहीं ! इस पर शैतान उत्सुक दृष्टि से उनकी ओर देखता है कि उनमें से कोई आगे आये और इसके लिये आवश्यक योजना बनाने और उसे कार्य-रूप में परिणित करने का सारा बोझ अपने ऊपर ले ले। किंतु यह देखकर कि स्वेच्छा से कोई आगे नहीं आ रहा है शैतान घोषित करता है कि सबसे कठिन और सबसे संकटपूर्ण काम तो वास्तव में उसकी सम्पत्ति है और उसका अधिकार है, और ऐसा अनुचित भी नहीं है क्योंकि वह ऐसे ही कार्यों के लिये बना ही है। इसके बाद वह उन सबको चेतावनी देता है कि वे पूरी तरह चौकन्ने रहकर निगरानी करें, ताकि इस बीच में कोई और संकट उन पर न आये।

इस प्रकार मन्त्रणा समाप्त होती है। अब पतित देवदूत नरक में स्वाभाविक-रूप से आकर अत्र-तत्र-सर्वत्र फैल जाते हैं। उनमें से कुछ कितने ही गुप्त-स्थान ढूँढ निकालते हैं, जहाँ बड़ी-बड़ी नदियाँ हैं, आग और बर्फ़ के प्रदेश हैं और अति भयानक राक्षस हैं, दूसरी ओर कुछ पूर्वज्ञान, इच्छा, नियति और दर्शन के दूसरे प्रश्नों पर तर्क-वितर्क कर अपना समय व्यतीत करते हैं, और जो शेष बचते हैं वे कीर्त्तन में भाग लेते हैं।

इस बीच में शैतान अपनी भयंकर यात्रा पर चल देता है और सीधे नरक के फाटकों पर आता है, जिनके सम्मुख दो विकराल और घोर डरावने यमदूत खड़े हैं। इनमें से एक कमर तक स्त्री है और ऊपर एक परवाला अजगर, और दूसरा भयावना अस्थि-पंजर मात्र, जिसके सिर पर शाही ताज है और हाथ में एक चमचमाता हुआ भाला ! यह अस्थि-पंजर-मात्र शैतान को अपनी ओर आता देखकर उसे मार डालने की धमकी देता है कि शैतान भी उससे लोहा लेने को तैयार हो जाता है, किंतु इसी समय वह स्त्री उन दोनों के बीच में आ जाती है और वह प्राणघातक युद्ध बरका देती है। इसके बाद वह अपना परिचय देती है कि वह उसी शैतान की बेटी दुष्कृति या पाप है, जिसने एक बार अपने पिता से ही अनुचित यौन-सम्बन्ध स्थापित कर 'मृत्यु' नामक पुत्री को जन्म दिया है और जो अब इतनी सबल हो गई है कि वे दोनों मिलकर भी उसे किसी प्रकार जीत नहीं सकते। इतना कह चुकने के बाद द्वार खोलने की बात आने पर वह अपनी असमर्थता प्रकट कर कहती है कि उसमें द्वार खोलने की शक्ति नहीं है। किंतु शैतान फिर भी अनुरोध करता है और वचन देता है कि यदि वह उसे केवल उन द्वारों से होकर गुज़र जाने देगी तो वह उसे और उसकी पुत्री को नई दुनिया में मनमाने ढङ्ग से जीवन बिताने का पूरा अवसर देगा। इतना सुनते ही वह कुँजी लाकर उन भारी-भरकम फाटकों को इस प्रकार खोल देती है कि कोई नारकीय शक्ति उन्हें कभी भी दुबारा बन्द नहीं कर पाती।

अब इन चौड़े फाटकों से शैतान भीतर प्रवेश करता है कि दूर से ही उसकी दृष्टि [illegible] पर पड़ती है जहाँ गर्मी और सर्दी, नमी और खुश्की अपने-अपने प्रभुत्व और आधिपत्य के लिये एक दूसरे से झगड़ रही हैं। कहना न होगा कि यही वह स्थान है जहाँ विप्लव और [illegible] के तत्वों के बीच से होकर शैतान को उस स्थान तक पहुँचना है, जहाँ वह बन्दी बना दिया जायेगा।

× ×

इसके आगे का वर्णन सचमुच ही बड़ा चित्रात्मक और सजीव है। कवि बड़े कलात्मक ढङ्ग से बतलाता है कि कैसे कभी परों और कभी पैरों के सहारे लम्बी-लम्बी चहरदिवारियाँ और गहरी-गहरी खाइयाँ पार करता हुआ शैतान धीरे-धीरे उस स्थान की ओर बढ़ता है जहाँ 'अशान्ति' और 'रात्रि' सिंहासनों पर विराजमान उस दुनिया को लेकर विचारों में उलझी हुई हैं जो कि सोने की जंजीर के द्वारा स्वर्ग से नीचे की ओर लटकी हुई है। शैतान उनके समीप पहुँचता है और उन्हें सम्बोधित कर बड़ी सहानुभूति और समवेदना प्रकट करता है कि वे दोनों ओर से मारी गईं—एक ओर तो पतित देवदूतों का निवास स्थान 'टारटरस' उनके हाथ से निकल गया और दूसरी ओर नई दुनिया के ज्योति-प्रदेशों से भी उन्हें हाथ धोना पड़ा। इतना कहने के बाद वह ईश्वर के मनोरथों को विफल कर उनका यह राज्य-भाग उन्हें फिर से सौंप देने का प्रस्ताव करता है कि उनकी बाँछें प्रसन्नता से खिल उठती हैं और वे उसे शीघ्रता से पृथ्वी की ओर पहुँचा देती हैं। यहाँ धूर्त्ततापूर्ण प्रतिहिंसा और अभिशाप से बुरी तरह अंधा होकर शैतान बड़ी ही मनहूस घड़ी में आगे पैर बढ़ाता है।

पर्व तीन—

पाठकों को ज्ञात होगा कि इस महाकाव्य की रचना के बहुत पहले ही 'मिल्टन' की आँखें उसे धोखा दे चुकी थीं और ज्योति की किरणें उसके अन्धकारमय जगत से हमेशा के लिये विदा ले चुकी थीं, अतएव इस स्थल पर 'ज्योति' को स्वर्ग की पुत्री मानकर वह बड़े कारुणिक ढङ्ग से उससे सहायता की भीख माँगता है, ताकि दूसरे अन्ध-कवियों और भविष्य-द्रष्टाओं की भाँति वह भी अपनी उस दुनिया का विशेष सजीव, सफल और कुशल वर्णन कर सके जो कि सदैव ही उसके मानस की आँखों के आगे रहती-आई है। तदन्तर वह चित्रित करता है कि कैसे नीचे की ओर घूरते समय विचार-मग्न, चिन्तित 'परमपिता' की दृष्टि संसार या नव-निर्मित नरक और बीच के चौड़े दरार पर पड़ती है जहाँ अंधी और पवित्र वायु के मध्य में स्थित शैतान इधर-उधर मंडरा रहा है।

दूसरे ही क्षण ईश्वर अपने सारे भक्तों और अपने एक-मात्र पुत्र को अपने समीप बुलाता है। ईश्वर के इस पुत्र के स्वर्ग में आने के कारण ही शैतान ने विद्रोह किया है। अतएव ईश्वर उसे सम्बोधित कर उसके प्रतिद्वंदी की ओर संकेत करता है और कहता है कि शैतान बदला लेने पर तुला-बैठा है, किन्तु वह नहीं जानता कि इसका कुपरिणाम स्वयं उसे ही भोगना पड़ेगा। इसके बाद वह कहता है कि देवदूतों का पतन उनकी अपनी दुर्बुद्धि के कारण हुआ है और एक बार पतित होने पर उनकी मुक्ति की कोई भी आशा नहीं हैं, किंतु दूसरी ओर 'मनुष्य' का पतन शैतान से छले जाने के कारण ही होगा और इस प्रकार वह मर जायेगा, किंतु तो भी यदि कोई दूसरा उसके पापों का दंड भोग लेगा तो ऐसा नहीं है कि वह कभी भी क्षमा न किया जाय, और कभी भी उसकी मुक्ति न हो, प्रत्युत यह कि वह एक-न-एक दिन क्षमा कर ही दिया जायेगा और उसकी मुक्ति भी हो ही जायगी।

पर, कोई भी देवदूत इतना महान नहीं है कि मनुष्य के त्राण के लिये इतना बड़ा त्याग कर सके, अतएव 'स्वर्ग' इस विषय में मौन ही रहा-आता है। परन्तु शीघ्र ही 'ईश्वर का बेटा', जिसमें कि ईश्वरीय प्रेम की पूर्णता का निवास है, यह देखकर कि यदि उसने हस्तक्षेप न किया तो मनुष्य का अस्तित्व ही मिट जायेगा, घोषणा करता है कि वह 'मनुष्य' के लिये अपने को मृत्यु के हाथों सौंप देने को तैयार है। फिर भी, वह ईश्वर से प्रार्थना करता है कि वह उसे अँधेरी क़ब्र में ही न छोड़ दे, बल्कि विजयी के रूप में क़ब्र से बाहर आने की आज्ञा दे-दे ताकि वह पाप, मौत और नरक से मुक्त हुई सारी आत्माओं का नेतृत्व कर उन्हें स्वर्ग में ला सके.........।

'ईश्वर के बेटे' का यह प्रस्ताव सुन कर देवदूत उसकी प्रशंसा करते नहीं थकते। पिता-ईश्वर उस पर प्यार भरी दृष्टि डाल कर उसका आत्म-त्याग स्वीकार करता है और घोषित करता है कि वह यथासमय पृथ्वी पर अवतार लेकर मनुष्य-जाति के प्रथम पिता का स्थान ग्रहण करेगा, और जिस प्रकार 'आदम' में सब लोग खो गये उसी प्रकार उसके हृदय में निवास करने वाले सारे लोग पापों से, अथवा पापों का भोग भोगने से बच जायेंगे। इतना ही नहीं, प्रत्युत अपने 'बेटे' की आसक्ति और भक्ति देख कर वह बहुत प्रसन्न होता है और उसे वचन देता है कि वह सदैव ही उसकी-अपनी बराबरी से राज्य करेगा और इस प्रकार मनुष्य-जाति के भाग्य का फ़ैसला भी।

तदनन्तर ईश्वर स्वर्गीय विभूतियों की ओर मुड़ता है और उन्हें अपने नये स्वामी की आराधना का संकेत करता है। इस पर सारे देवदूत अपने चिर-विकसित फूलों और सोने के मुकुटों को सिर से उतार कर श्रद्धा और भक्ति से ईसा के सम्मुख नमन् करते हैं, और 'ईश्वर के-बेटे' को 'मनुष्यों का मुक्ति-प्रदाता' घोषित कर 'पिता और पुत्र' का गुणगान करते हैं।

इधर देवदूत इस प्रकार व्यस्त हैं और उधर शैतान 'अशान्ति' से होकर शीघ्र ही एक ऐसे स्थान से निकलता है जहाँ 'मूर्तिपूजा', 'अन्धविश्वासों' और 'मिथ्याभिमानों' का निवास है। इनमें प्रत्येक को निकट भविष्य में दंड मिलने वाला है। इसके बाद वह स्वर्ग को जाने वाली सीढ़ी के पास से होकर संसार को जाने वाले पथ की ओर पैर बढ़ाता है और उस तक पहुँचने के लिये कितने ही रास्तों की धूल फाँकता हुआ 'सूर्य्य' में पहुँचता है। यहाँ वह ठहर कर दम लेना चाहता है और एक लम्बे, छरहरे, जवान-देवदूत का रूप बना कर श्रेष्ठतर देवदूत 'यूरियल' से कहता है कि सृष्टि के समय अनुपस्थित रहने के कारण वह अब नई दुनिया को देखना और ईश्वर के प्रति सम्मान प्रकट करना चाहता है। इस पर घमंड से सिर ऊँचा कर कि उसने वह सारा दृश्य देखा है, 'यूरियल' विस्तार में वर्णन करता है कि कैसे ईश्वर की वाणी से अन्धकार मिट गया, कैसे सारे रोग देखते-देखते नक्षत्रों में बदल गये और कैसे अपने-अपने लिये पूर्व निश्चित ग्रह-पथों के चारों ओर घूमने लगे। इसके बाद 'यूरियल' इशारे से शैतान को नव-निर्मित पृथ्वी दिखलाता ही है कि वह दुष्टात्मा उस ओर बहुत उत्सुक होकर वेग से बढ़-चलता है।

पद्य सार—

यहाँ मिल्टन कामना करता है कि उसकी वाणी इतनी व्यापक हो जाये कि वह हमारे आरम्भिक जननी-जनक को भावी संकटों से सचेत ही न कर सके बल्कि उन पर टूटनेवाले संकट

के पहाड़ों से उनकी रक्षा भी कर सके। तदन्तर वह वर्णन करता है कि कैसे विद्रोही नरक हृदय में लेकर शैतान उस पहाड़ी से स्वर्ग में झाँकता है जहाँ कि वह अभी-अभी उतरा है। इस समय यह विचार उस पर बुरी तरह हावी है कि वह स्वर्ग और नई पृथ्वी दोनों से वंचित कर दिया गया है, अतएव इस बात पर एक बार उसकी आँखें भयानक क्रोध से लाल हो उठती हैं, और दूसरी बार हार्दिक क्षोभ के कारण उसके चेहरे का रंग उड़ जाता है। इस प्रकार क्रोध और क्लेश की गहरी अनुभूतियों के कारण उसकी आकृति इतनी विकृत हो-उठती है कि 'यूरियल' ये सारे परिवर्त्तन और मुख-मुद्रायें लक्ष्य कर उसके पीछे-पीछे उड़ने लगता है और पहली बार संदेह करता है कि सम्भव है कि यह कोई नरक का भागा हुआ पापी हो!... ..

अब कल्पना को पूरी छूट देकर अचरजभरे 'ईडेन' का चित्रण करने केबाद 'मिल्टन' बतलाता है कि कैसे बीच की दीवाल को पार कर शैतान 'ईडेन'[1] की सीमाओं में उतर जाता है और एक भयानक समुद्री चिड़िया के रूप में एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ जाता है। यहाँ उसकी दृष्टि निरावरण राजसी वैभव से सुसज्जित ईश्वर-जैसी दो मूर्त्तियों पर पड़ती है। ये दोनों आदम और ईव हैं। आदम ध्यान और शौर्य का अवतार है तो ईव कोमलता और शोभा की साकार प्रतिमा! ये दोनों एक पेड़ के नीचे बैठे हैं और पृथ्वी के सारे पशु उनके चारों ओर शान्तिपूर्वक मंगल मना रहे हैं। ये आदम और ईव ही वे जीव हैं जो कि स्वर्ग में शैतान के पिछले स्थान की पूर्ति करनेवाले हैं, अतएव शैतान उन्हें देखकर विस्मय करता है और उनकी सुख-शांति मिटा कर उन्हें शोक और दुख के हाथों सौंप देने का दृढ़ संकल्प करता है। वह यह सारा दुष्कार्य सर्वथा तर्कसंगत समझता है क्योंकि अपने विचार से वह अपने और अपने साथियों के और सुख से बस जाने के लिये ही यह सबकुछ कर रहा है। फलतः वह एक बार एक पशु का रूप धारण करता है और दूसरी बार एक दूसरे पशु का। इसके बाद वह अदृश्य रूप से आदम और ईव के समीप पहुँचता है और उनकी सारी बातचीत कान लगा कर सुनता है।

यहाँ शैतान को कितनी ही बातों का पता चलता है और उनके साथ यह भी कि ईव के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब पहली बार आँख खोलते ही अपने चारों ओर दृष्टि दौड़ाने पर उसने फूल-पौदे देखे, पानी में अपनी परछाईं देखी और एक अज्ञात वाणी सुनी जिसकी आज्ञा का उसने पालन भी किया। इस वाणी ने उसे उसके साथी से मिला देने का वचन देकर यह बतलाया कि उसका वह सहचर उसकी माँ को एक मानवी का रूप देगा। किंतु इस प्रकार-मिले-रूप ने यह प्रमाणित कर दिया कि वह अभी अभी पानी में देखे गये-रूप की अपेक्षा कहीं कम आकर्षक है, अतएव उसने उल्टे-पैरों लौटने का इरादा किया ही कि आदम ने उसे अपनी अर्द्धांगिनी के रूप में अंगीकार कर लिया। उस समय से अबतक वे दोनों इस उपवन में आनन्द से रहे-आये हैं! यहाँ एक विशिष्ट पेड़ के फल को छोड़ कर शेष हर वस्तु उनकी इच्छा की अनुगामिनी रही है।

---

[1]पृथ्वी पर स्थित आदम और ईव का निवास-स्थान, एक अलौकिक बाग़-पृथ्वी का स्वर्ग।

इस प्रकार शैतान को इस रहस्य का पता चलता है कि (हमारे प्रथम माँ-बाप) आदम और ईव को एक विशेष पेड़ के फल खाने की मनाही है। अतएव वह उन्हें यह विश्वास दिलाने की बात सोचता है कि भले-बुरे का ज्ञान होते ही वे ईश्वर के बराबर हो जायेंगे। उसका विचार है कि इस प्रकार उल्टा-सीधा समझाकर वह उन्हें ईश्वरीय आदेश का उल्लंघन करने के लिये विवश कर देगा, और वे उस विशिष्ट पेड़ का फल खाने को ललचा उठेंगे। इस तरह के विचार बुद्धि में आते ही उसे अपना अभीष्ट सिद्ध-हुआ दीखता है और वह इन विचारों को कार्य-रूप में परिणित करने के लिये चोर की भाँति चल देता है।

× ×

इसी बीच में देवदूतों का मुखिया स्वर्ग के पूर्वी द्वार के समीप उन देवदूतों का निरीक्षण करता है जो कि स्वर्ग की सीमाओं पर रात भर पहरा देने के लिये अपने-अपने स्थानों से निकल कर बड़ी प्रसन्नता से स्वर्ग की हर दिशा में बढ़ रहे हैं। इसी समय सूर्य्य की किरण पर हवा में उड़ता हुआ 'यूरियल' 'जेवरियल' के समीप आता और उसे सूचित करता है कि स्वर्ग से बहिष्कृत कोई ईश्वर-विरोधी पापी नरक से निकल-भागा है, जिसे उसने स्वयं दोपहर को स्वर्ग के फाटकों के पास देखा है। इस पर 'जेवरियल' उसे विश्वास दिलाता है कि इस प्रकार का कोई भी प्राणी उन फाटकों से नहीं निकला, फिर भी यदि कोई पापी अपनी सीमाओं से आगे बढ़कर इस प्रदेश में आ गया है तो, किसी भी रूप में क्यों न हो, प्रातःकाल तक निश्चित रूप से पकड़ जायेगा! इतना सुनते ही 'यूरियल' सूर्य-तल के अपने नियत-स्थान पर लौट आता है कि चितकबरी गोधूली चुपके-चुपके पृथ्वी पर बिछ जाती है। दूसरे ही क्षण 'जेवरियल' देवदूतों के दल-के-दल विरोधी दिशाओं में तैनात करता है और अपने दो सहकारियों को विशेष-रूप से आदेश देता है कि वे जायें और शत्रु की टोह लें!

× ×

अब प्रार्थना का समय होता है। आदम और ईव प्रार्थना में भाग लेने के बाद विदा हो रहे हैं कि ईव आदम से प्रश्न करती है कि तारे रात में ही क्यों आकाश में चमकते हैं जब कि वे सो जाते हैं और उनका सुख नहीं ले पाते। पाठकों को यह जानकर सन्तोष होगा कि ईव के सारे ज्ञान का स्रोत आदम ही है। अतएव आदम उसका प्रश्न सुनता और उत्तर देता है कि अन्धकार के प्रसार, विस्तार और प्रभुत्व में टांग अड़ाने के लिये ही तारे आकाश में जगमगाते हैं। यही नहीं, वह उसे विश्वास दिलाता है कि उनके सो जाने पर देवदूत उनकी रखवाली करते हैं और इसका प्रमाण यह है कि उसने आधीरात के समय प्रायः उनकी वाणी सुनी है। इसके बाद वे अपने निवास के लिये स्वर्गीय-माली के द्वारा चुने गये अपने कुँज में प्रवेश करते हैं। इस कुँज में अनेक मोहक फूल खिलते हैं और कोई पशु, पंछी या कीट इसमें प्रवेश करने का साहस नहीं करता।

इधर 'इथुरियल' और 'जेफ़ोन' नामक देवदूत शत्रु की खोज करते-करते इस कुँज में पहुँचते हैं और देखते हैं कि एक मेढक ईव के कान के पास दुबक कर बैठा हुआ है और

भाँति-भाँति के मायावी कौशल से उसकी विचार-शक्ति तक पहुँचने की चेष्टा कर रहा है।

यह देखते ही 'इथूरियल' उसे अपने भाले से छूता है और वह अधम जीव राक्षस का रूप धारण कर लेता है क्योंकि 'इथूरियल' के भाले की यह विशेषता है कि उसके स्पर्श-मात्र से सारी भ्रामक वस्तुयें अपने सच्चे और यथार्थ रूप में आ जाती हैं। 'इथूरियल' उसे तुरन्त ही पहिचान लेता है और उससे पूछता है कि वह कैसे निकल भागा और इस स्थान पर किस लिये आया। इस पर शैतान घमंड से उत्तर देता है कि कोई समय था कि शायद ही किसी में उससे इस प्रकार के अपमानजनक व्यवहार करने का साहस होता, उसका नाम पूछने की आवश्यकता तो कब और किसे पड़ती! शैतान के इतना कहते हीं 'जेफ़ॉन' अपने इस पूर्व अध्यक्ष 'लूसिफ़र' को तुरन्त ही पहिचान लेता है और उसके विगत यश और उसकी विगत प्रभुता का यह विकृत और धूमिल रूप देखकर बड़ा दुखी हो-उठता है। अब दोनों देवदूत बन्दी के रूप में उसे 'जेबरियल' के पास लाते हैं। 'जेबरियल' इस क़ैदी को पहिचान लेता है और वह भी उसके पिछले तेज और वैभव के उस विकृत, ग्लान रूप की आलोचना कर खेद प्रकट करता है। इसके बाद पास आ जाने पर वह शैतान को सम्बोधित करता है और प्रश्न करता है कि उसने निश्चित बन्धन क्यों तोड़े। इस पर शैतान उग्र हो उठता है और चुनौती सी देता-हुआ कड़े स्वर में उत्तर देता है कि निकल भागने की चेष्टा समान-रूप से सभी बन्दी किया करते हैं क्योंकि यातना किसी को भी नहीं रुचती, किंतु यदि ईश्वर की इच्छा है कि वह उन सबको अधम और पतित कहकर युग-युगों तक यानी चिरन्तन काल तक कारावास में सड़ाता रहे तो उसे द्वारों की सुरक्षा का और कड़ा प्रबन्ध करना चाहिये, उनपर और कड़ी निगरानी रखनी चाहिये! किंतु, 'जेबरियल' पर इसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता और वह उसे चेतावनी देता है कि उसकी आज्ञा का उल्लंघन कर उसने अब अपना दण्ड सात गुना कर लिया है। इस प्रकार 'टारटरस' से भाग निकलने पर भी शैतान की मुक्ति का कोई लक्षण नहीं दीख पड़ता, उसका यातना और दन्ड से पीछा नहीं छूटता।

अब 'जेबरियल' उस पर व्यंग्य करता है कि क्या उसके सहकारी यातना झेलने में उस से अधिक अभ्यस्त हैं या वह उन्हें भी धोखा देकर सदैव के लिये छोड़ आया है। इस पर शैतान की आँखें क्रोध से लाल हो उठती हैं और वह डींगें मारने लगता है कि लड़ाई में भयानकतम होने के कारण केवल उसमें ही इतना साहस रहा है कि वह यह यात्रा करे और निश्चित करे कि उन सबके रहने के लिये कोई और अधिक सुखदायक स्थान मिल सकता है कि नहीं। किंतु चूँकि इस उत्तर के सिलसिले में शैतान अभी-अभी कही-हुई अपनी ही बात का दूसरे वाक्य से विरोध करता है, अतएव देवदूत उसे झूठा और पाखंडी ठहराता है और उसे यह कहकर भाग जाने का आदेश देता है कि यदि वह दुबारा स्वर्ग के पास झाँक भी गया या छिपा हुआ पाया गया तो उसे घसीट कर नरक की तलहीन खाड़ी में ही न डलवा दिया जायेगा बल्कि उसे ज़ंजीरों से जकड़ भी दिया जायेगा ताकि वह दुबारा न भाग सके! इस धमकी के कारण शैतान में इतनी घृणा जाग जाती है और वह दूसरों के प्रति इतना अविचार शील हो उठता है कि देवदूतों का चेहरा क्रोध से आग की भांति लाल हो उठता है, वे उसे चारों ओर से घेर लेते हैं और अपने

भालों से मार डालने को तैयार हो जाते है। शैतान ऊपर की ओर दृष्टि करता है! वह देखता है कि स्वर्ग का पलड़ा भारी है अर्थात् यह कि लड़ाई की बात उठाकर वह अपनी ही जान ख़तरे में डालेगा, अतएव वह क्रोध में भर कर भाग खड़ा होता है!

कहना न होगा कि रात की मिटती हुई परछाइयाँ भी शैतान के साथ ही चली जाती हैं।

पर्व पाँच—

उषा की आँखें खुलती हैं और उसके साथ ही आदम की भी! वह स्वयं तो बड़ी स्फूर्ति का अनुभव करता है किन्तु दूसरी ओर देखता है कि उसकी सहचरि के गाल बुरी तरह तमतमाये हुये हैं और वह सब तरह अस्त-व्यस्त है। वह अधीर हो उठता है और उसे जगाता है! उसे पता चलता है कि उसने कोई स्वप्न देखा है जिसमें किसी अज्ञात ध्वनि ने उससे हठ किया कि वह उठे और उपवन में घूमे। इसके आगे ईव बतलाती है कि कैसे इस ध्वनि के कारण वह कितने ही पेड़ों के नीचे से होती हुई उस पेड़ के नीचे आ-खड़ी हुई जिसका फल खाना पाप है। यहाँ उसने एक परदार आकृति देखी जिसने उससे अनुरोध किया कि वह ज्ञान के वरदान का अपमान न करे और उस पेड़ के सेव का स्वाद चखे! यद्यपि इस सुझाव-मात्र से डर के मारे उसके हाथ-पैर ठंडे पड़ गये, फिर भी वह स्वीकर करती है कि उसने उसका कहना मान लिया क्योंकि उसने उसे विश्वास दिलाया कि एक बार उस फल का स्वाद पाते ही वह देवदूतों के भाँति ही आकाश में उड़ने लगेगी और सम्भव है कि सुयोगवशात् उसकी भेंट ईश्वर से भी हो जाय! अतएव इस विशेषाधिकार से लाभ उठाने की भावना उसमें इतनी बलवती हो उठी कि जैसे ही फल उसके ओठों से लगाया गया उसने उसे चख लिया और जैसे ही उसने उसे चखा वह ऊपर उठी किंतु फिर नीचे की ओर गिरने लगी कि इसके बाद ही आदम ने अपने हाथ के स्पर्श से उसे जगा दिया!

अब आदम अपनी संकटापन्न पत्नी को सान्त्वना देता है और उसे उपवन में लाता है कि वे अनावश्यक-रूप से सघन पेड़ों की डालें काटने और एक पेड़ से दूसरे पेड़ की लताओं को सजाने और संवारने में लग जाते हैं। इधर ये पति-पत्नी इस प्रकार व्यस्त हैं कि ईश्वर 'रैफ़ैल' नामक श्रेष्ठतर देवदूत को बुलाता है और उसे सूचित करता है कि शैतान नरक से छिप कर भाग निकला है और मानव के अपार आनन्द में बाधा-डालने के लिए किसी प्रकार 'ईडेन' में आ पहुंचा है। इसके बाद वह उसे उसी क्षण पृथ्वी पर जाने का आदेश देकर कहता है कि वह आदम से मिले, उससे उसी तरह बात करे जैसे कि एक मित्र दूसरे मित्र से करता है और इस प्रकार शैतान की सभी कृतियों की चर्चा कर उसे सावधान कर दे कि शेष उसके वश की बात है, वह चाहे तो अपने सुखमय जीवन को अनिश्चित कर दे और चाहे तो उसे स्थायी रूप दे-दे। किन्तु ईश्वर का कथन है कि उसे सचेत करना बहुत आवश्यक है अन्यथा अपनी इच्छा से पाप करने पर भी मनुष्य अपना सारा दोष उसी के सिर मढ़ेगा और उसका विरोध कर उलाहना देगा कि मुझे पहिले से किसी प्रकार की चेतावनी क्यों नहीं दी गई!

देवदूत संकीर्त्तन में निमग्न हैं कि 'रैफ़ैल' उनके समीप से निकल कर सुनहले द्वार से होता हुआ विशाल सीढ़ियों से उतरता है और उड़ना आरम्भ कर देता है। शीघ्र ही यह पटपंख, श्रेष्ठतर देवदूत पृथ्वी पर पहुँचता है। इस समय ऐसा लगता है जैसे कि इसके रंग-बिरंगे इन्द्र-धनुषी पर स्वर्ग के अपने रंगों में डुबो दिये गये हैं।

इस देवदूत को देखते ही आदम ईव ने अपने मन के थोड़े से फल इकट्ठे करने को कहता है। इधर इतना सुनते ही ईव आतिथ्य-सत्कार के लिये जल्दी-जल्दी फल बटोरने लगती है कि उधर आदम देवदूत के स्वागत के लिये आगे आता है। आदम जानता है कि वह देवदूत कोई ईश्वरीय सन्देश देने के लिये ही उसके पास आ रहा है।

देवदूत समीप आता है और ईव के अभिवादन का उत्तर उस सम्बोधन से देता है जिसका कि बाद में 'मेरी' के लिये प्रयोग हुआ! इसके बाद वह आदम के निवास-स्थान में जाता है! यहाँ वह आदम के साथ भोजन करता है और यह स्वीकार करता है कि स्वर्ग में देवदूत केवल आध्यात्मिक भोजन करते हैं, यद्यपि मनुष्य की सी इन्द्रियाँ उनके पास भी हैं!

थोड़ी देर बाद आदम को ज्ञात होता है कि अब वह उससे जो चाहे सो पूछ सकता है, केवल उन विषयों की चर्चा नहीं कर सकता जो कि थोड़े समय के लिये दबा दिये गये हैं। इस पर आदम उसके इस प्रकार कष्ट कर पृथ्वी पर आने का कारण जानना चाहता है। देवदूत उत्तर देता है और उसके वाक्यों से आदम यह निष्कर्ष निकालता है कि उसका और उसकी पत्नी का आनन्दमय जीवन संकट में है। किंतु 'रैफ़ैल' उसे आश्वासन देता है कि वह जब तक ईश्वर की आज्ञा का पालन करता रहेगा तब तक उस पर किसी प्रकार की आँच न आ सकेगी। इसपर भी उसे अपने भाग्य का चुनाव स्वयं ही करना चाहिये, क्योंकि स्वतन्त्रता देवदूतों की भाँति ही मनुष्य होने के नाते उसका भी जन्म-सिद्ध अधिकार है।

तत्पश्चात आदम स्वर्ग के समाचार जानना चाहता है और प्रश्नसूचक दृष्टि से 'रैफ़ैल' की ओर देखता है, किन्तु 'रैफ़ैल' उत्तर देने का विचार सामने आते ही यह नहीं सोच पाता कि वह कैसे देवताओं के लिये भी अबोधगम्य उपादनों को इस तरह समझा-दे कि वे मनुष्य की सीमित समझ में आ जायें और, यह कि, कुछ बातें रहस्य भी हो सकती हैं, जिनकी चर्चा सम्भव है न्यायसंगत न हो! फिर भी, यह समझ कर कि स्वर्ग की सारी घटनाओं की संक्षिप्त रूप-रेखा-मात्र का ज्ञान करा देना अधिक अनुचित नहीं है, वह आदम को बतलाता है कि कैसे ईश्वर ने 'बेटे' की सृष्टि की और इस सृष्टि के बाद देवदूतों को आदेश दिया कि वे उसका अभिवादन कर उसकी पूजा करें! इसके बाद वह कहता है कि 'लूसिफ़र' इस घटना से बहुत क्रुद्ध हुआ क्योंकि स्वर्ग में ईश्वर के बाद वह स्वयं ही सर्वश्रेष्ट और सर्वपूज्य माना जाता रहा है। अब रात होते ही 'लूसिफ़र' स्वर्ग के उस प्रदेश में आया जिसकी सुरक्षा का भार उसी पर रहा है और यहाँ आते ही उसने 'बियेलज़ेबब' से उस ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने का प्रस्ताव किया, जो कि अपने क्रीत-दासों की भाँति ही उनसे अपने पुत्र का सम्मान कराना चाहता है। यही नहीं, बल्कि इस तर्क के सहारे कि इस प्रकार धीरे-धीरे उन सब को दास बना लिया जायेगा, शैतान स्वर्ग के

एक-तिहाई लोगों को ईश्वर के विरुद्ध उभाड़ने में सफल हो गया और वे परमपिता के विरुद्ध ज़िहाद बोलने को तैयार हो गये, किन्तु उसके एक 'ऐबडियल' नामक अनुयायी ने उसकी चिकनी-चुपड़ी बातों पर विश्वास नहीं किया। कहना न होगा कि ईश्वर का विरोध करने के प्रस्ताव-मात्र से उसका शरीर घृणा से आग की भाँति जलने लगा और शैतान को जी-भर बुरा-भला कह लेने के बाद ईश्वर के कानों तक सारा षड़यन्त्र पहुँचा देने के इरादे से उसने अपने साथियों से विदा ली। इन सारे विश्वासघातियों में केवल 'ऐबडियल' ही एक विश्वसनीय और स्वाभाविक देवदूत प्रमाणित हुआ, किन्तु शैतान और उसके अन्य साथियों को उसका यह रूप बहुत खला और, जैसे ही वह उनके समीप से निकला, ऐसा लगा कि वे उसे अपनी घृणा के अपार समुद्र में डुबा देंगे।

किंतु ईश्वर को 'ऐबडियल' की चेतावनी की क्या आवश्यकता, क्योंकि सर्वदर्शी होने के कारण उसने उसके पहुँचने के बहुत पहले ही सब कुछ देख-समझ लिया। इतना ही नहीं, प्रत्युत उसने अपने पुत्र ईसा को संकेत भी किया कि अहंकार का शिकार होकर 'लूसिफ़र' स्वयं उसके विरुद्ध विप्लव की बात सोच रहा है।

पर्व छः-

'रेफ़ैल' कहता रहता है कि यद्यपि 'ऐबडियल' ने बड़ी तेज़ गति से यात्रा की तो भी ईश्वर-विरोधी देवदूतों के प्रदेश और स्वर्गीय सिंहासन के बीच की मंज़िल तय करने में उसे सारी रात लग गई। चूंकि 'स्वर्ग' को उसके द्वारा लाये गये सन्देश की जानकारी पहले से थी, अतएव स्वर्गीय देवदूतों ने उसका बड़ी प्रसन्नता से स्वागत किया और उसे राज-सिंहासन तक पहुँचा दिया! ....।

अब ईश्वर ने 'माइकेल' को सम्बोधित किया और आदेश दिया कि वह सर्वशक्तिमान से स्वर्ग का राज्य छीन लेने के इच्छुक, मैदान में लड़ने के लिये तैयार शत्रुओं की संख्या के बराबर ही एक सेना तैयार करे और उसका नेतृत्व कर लड़ाई के मैदान में उनका सामना करे! यही नहीं, बल्कि परमपिता ने उसे यह भी आदेश दिया कि लूसिफ़र' का घमंड चूर कर वह उसे 'टारटरस' की खाड़ी में झोंक दे, जिसका अग्निमुख उसे अपने में आत्मसात् कर लेने के लिये तुरन्त ही फैल जायेगा। अब दूसरे ही क्षण 'स्वर्ग' रण-दुंदुभी के घोर निनाद से गूँज उठा और देवदूतों की संख्यातीत सेनायें ईश्वर और उसके 'पुत्र' के लिये लोहा लेने के विचार से एकत्रित होने लगीं। दूसरी ओर वे पतित देवदूत भी, जिनका यश [illegible] प्रभावित नहीं हुआ था, दल बना कर विरोधी-पक्ष के सम्मुख आये। इस समय सूर्य के समान चमकते हुये रथ पर सवार होकर शैतान उन सब के आगे बढ़ा और उस पर दृष्टि पड़ते ही [illegible] ने उसे देख कर आश्चर्य ही नहीं किया कि वह अब भी देखने में देवताओं-सा [illegible], बल्कि उसे संकेत भी किया कि उसे शीघ्र ही अपनी करनी का फल भुगतना पड़ेगा। [illegible] शैतान ने उसे विश्वासघाती की उपाधि देते हुये अपने हृदय की सारी घृणा

उस पर उद्दिष्ट थी। 'एब्डियल' ने इसकी तनिक भी चिन्ता न की क्योंकि उसका विश्वास था कि वह ईश्वर की सेना में रहकर शैतान से भी कहीं अधिक युक्त था।

तदनन्तर विरोधी-दलों का आमना-सामना होते ही कितनी ही देर तक दोनों परस्पर व्यंग्य करते रहे और तब कहीं युद्ध आरम्भ हुआ। किंतु 'एब्डियल' के पहले तीर पर ही शैतान पीछे ही नहीं हटा प्रत्युत प्रायः घुटनों पर गिर पड़ा। परन्तु जैसे ही 'एब्डियल' ने उसे जीत लेने का दावा किया, वह तुरन्त ही उठ खड़ा हुआ, अपने सैन्य-दल में लौटा और उसे शत्रु को मुँहतोड़ जवाब देने का आदेश देने लगा!………

इसके बाद इतना भयंकर युद्ध हुआ कि मानो स्वर्ग झनझना उठे। निस्सन्देह इस युद्ध में कितने ही ऐसे अपूर्व वीर-कृत्य हुये जिन्हें हम कभी भी भुला न सकेंगे और उसका कारण यह है कि शैतान वीरता में उस 'माइकेल' से किसी भाँति उन्नीस नहीं बैठा जिसने अपनी दो फलवाली तलवार के एक वार से ही सारी शत्रु-सेना का सफाया कर दिया! किंतु यह नियम है कि देवदूतों को घाव लगे नहीं कि पुरे, अतएव जो एक बार आहत होकर गिरे वे दूसरे ही क्षण फिर भयंकर युद्ध में जुट गये और एक वह क्षण भी आया जब 'माइकेल' की तलवार से शैतान की बगल में ऐसा गहरा घाव हो गया कि उसने पहली बार पीड़ा अनुभव की! उसे इस प्रकार गिरा-पड़ा देखकर उसके साथी उसे लड़ाई के मैदान से दूर उठा ले गये। परन्तु वह शीघ्र ही चंगा हो गया क्योंकि प्रत्येक अंग की संजीवनी शक्तियाँ पूर्णतया विनष्ट होने पर ही मर सकती हैं अन्यथा नहीं। इस बीच में अपने महानतम शत्रु को सामने न पाकर 'माइकेल' ने 'मोलॉक' पर हमला किया और दूसरी ओर 'यूरियल' 'रैफ़ेल' और 'एब्डियल' दूसरे शक्तिशाली विरोधियों का सत्यानाश करने पर तुल गये, जिन्होंने ईश्वर के विरुद्ध विद्रोह करने का दुस्साहस किया था।

इसके बाद यह वर्णन करने के बाद कि लड़ाई का मैदान टूटे हुये कवचों और रथों से उमड़ चला, 'रैफ़ेल' विरोधी-देवदूतों की सेना की अधीरता और घबराहट का चित्र खींचता है कि कैसे शैतान ने अपनी सेना लौटा ली ताकि दूसरे दिन शत्रु के दाँत खट्टे करने के लिये वह आवश्यक विश्राम कर ले!...

रात्रि की शान्ति में शैतान ने अपने साथियों से परामर्श किया कि यह भलीभाँति जानलेने पर कि शत्रु किसी भाँति स्थायी-रूप से आहत नहीं हो सकते, क्या किया जाय कि दूसरे दिन के युद्ध में उन्हें और अधिक सफलता मिले। इस पर कुछ दैत्यों ने पूर्ण विश्वास के साथ यह अनुभव किया कि और अधिक सफल शस्त्रों के मिलते ही वे कुछ विशिष्ट सफलता की आशा कर सकते हैं। इसके बाद जैसे ही उनमें से एक ने तोप ढालने का प्रस्ताव किया सब लोगों ने प्रसन्नता से उसके प्रस्ताव का समर्थन किया।

कहना न होगा कि शैतान के निर्देशन में शीघ्र ही कुछ देवदूतों ने पृथ्वी से धातु उपलब्ध की जिसने कि गलाये और साँचे में ढाले जाने के बाद उनके द्वारा इच्छित विनाश के यन्त्र का सच्चा रूप-धारण कर लिया। इसी बीच दूसरे लोगों ने लड़ाई के अन्य शस्त्रास्त्र बनाये

फल यह हुआ कि सवेरा होते-होते उनके पास कई अमोघ शस्त्र जुट गये। किंतु जैसे ही युद्ध के लिये वे आगे बढ़े उन्होंने ये सब नये अस्त्र-शस्त्र अपनी ओट में छिपा लिये!

इस प्रकार दूसरे दिन के धावे में, सहसा ही, शैतान के साथी एक किनारे हो गये और तोपों के सहारे अप्रत्याशित विनाश की तैयारी करने लगे। शीघ्र ही तोपें आग उगलने लगीं और ईश्वर-भक्त देवदूत बहुत बड़ी संख्या में धराशायी हो गये! किंतु इनके इस प्रकार गिर जाने के बाद भी तुरन्त ही दूसरे देवदूत बहादुरी से उछलते हुये आगे आये और उनका स्थान ग्रहण करने लगे! अब अपनी तोपों का चमत्कार देखकर शैतान और उसके साथी स्पष्ट-रूप से आनन्द मनाने लगे। दूसरी ओर यह देखकर कि उनके अपने अस्त्र-शस्त्र तोपख़ाने का सामना करने के लिये बिल्कुल बेकार हैं, सद्‌देवदूत बड़ी-बड़ी पहाड़ियाँ उठाकर अपने शत्रुओं पर फेंकने लगे और शीघ्र ही शैतान और उसके सारे साथी पहाड़ों के नीचे दब गये। वास्तविकता तो यह है कि यदि ईश्वर इस धार्मिक क्रोध के विस्फोट की रोक-थाम न करता तो वे सारे पिशाच निश्चित-रूप से इस तरह पहाड़ियों से लाद दिये जाते और इतने गहराई में गड़ जाते कि फिर कभी दुबारा नज़र भी न आते!

× ×

तीसरे दिन सर्वशक्तिमान परमपिता ने घोषणा की कि चूँकि दोनों सेनायें शक्ति में बराबर हैं, अतएव जब तक वह लड़ाई में हाथ न डालेगा लड़ाई कभी भी न रुकेगी!...... .. इस विचार से उसने अपने एकमात्र पुत्र ईसा को बुलाया और आदेश दिया कि वह रण में जाकर उसके अपने अस्त्र वज्र का प्रयोग करे! इस पर ईसा ने, जो कि अपने पिता की आज्ञा का पालन करने के लिये सदैव ही तत्पर रहता है, पिता का आदेश सिर-माथे लिया और द्वितीय कोटि के देवदूतों द्वारा खींचे जानेवाले रथ पर सवार होकर तुरन्त ही रण-क्षेत्र की ओर प्रस्थान किया। इस समय उसकी विजय के दर्शनाभिलाषी दो सहस्र संत भी उसकी सेवा में उसके साथ हो लिये। कहना न होगा कि उसे रण की ओर आता हुआ देखकर सद्‌देवदूत आनन्द से गद्‌गद् हो-उठे, किंतु धूर्त देवदूत हृदय में बुरी तरह डर गये, यद्यपि पीठ दिखाकर भाग खड़े होना उनकी समझ में नहीं आया और उन्होंने ऐसा करने में घोर लज्जा का भी अनुभव किया!

× ×

'ईश्वर के बेटे' रणक्षेत्र में पहुँचते ही ने अपनी दया से दीप्त आकृति क्रोध-मुद्रा में परिवर्तित कर ली और अपने साथ के देवदूतों से कहा कि वे ध्यान से देखें कि कैसे वह अकेला इतने सारे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। अब ईसा ने इस प्रकार शत्रुओं पर बिजली के वज्रों का प्रहार किया कि उन्हें पिछले दिन की भाँति ही पहाड़ों की आवश्यकता अनुभव हुई! वे कामना करने लगे कि वे पहाड़ उन्हें पूरी तरह ढँक लेते और इस प्रकार इन वज्रों से उनकी रक्षा करते! अब इस ईश्वरीय अस्त्रों की सहायता से ईसा ने बड़ी निर्दयता से शैतान और उसके साथियों को स्वर्ग की सीमाओं से परे, तलहीन खाड़ी के सिरे तक खदेड़ दिया। यही नहीं, बल्कि उन्हें उसमें ढकेल कर उसने आँखों में चकाचौंध पैदा करनेवाली बिजली के कौंधों के साथ दल-के-दल

गरजते हुये बादल भी उनके पीछे भेजे। किंतु इस समय उसने दयापूर्वक वज्रों का प्रहार बन्द कर दिया! वह विरोधियों को केवल स्वर्ग के बाहर खदेड़-देना चाहता था, उन्हें सदैव के लिये मिटा देना नहीं!

इस तरह कानों को बहरा कर देनेवाली चीत्कार के साथ शैतान और उसके साथी शून्य में झोंक दिये गये और नौ दिन बाद आग से भरी झील पर उनके पैर टिके! कहना न होगा कि बहुत दूर तक खदेड़ देने के बाद 'ईश्वर के बेटे' ने विजयी के रूप में स्वर्ग में प्रवेश किया। इस समय संतों ने स्तुतियों और प्रशस्तियों का गायन कर उसका हार्दिक स्वागत किया!

× ×

स्वर्ग की लड़ाई का वर्णन समाप्त होता है। अंत में 'रैफ़ैल' आदम को सूचित करता है कि यही पतित देवदूतों का नेता शैतान उसके आनन्दमय जीवन से बुरी तरह जलता है और इसीलिये उसे ईश्वर के साथ विश्वासघात करने के लिये उभाड़ने की एक योजना बना रहा है, क्योंकि वह चाहता है कि वह भी उसकी तरह चिरन्तन यातना भोगे!

पर्व सात—

इसके बाद आदम की प्रार्थना पर 'रैफ़ैल' सृष्टि-रचना का वर्णन करता है। वह कहता है कि चूँकि शैतान ने स्वर्ग के एक-तिहाई निवासियों को इस प्रकार बहका दिया, अतएव ईश्वर ने एक नई जाति की रचना करने का निश्चय किया, ताकि वहाँ के देवदूत उसके राज्य में आकर बस जायँ और उसके राज्य के रिक्त-स्थान की पूर्ति कर दें! इतना कहने के बाद 'रैफ़ैल' और सरल शब्दों में अपने भाव व्यक्त करता है और आदम को समझाता है कि कैसे एक दिन स्वर्ग के फाटकों से निकल कर ईसा अपरिमित और असीम खाड़ी के समीप आया और कैसे उसे देख कर उसके मन में यह भाव आया कि उसके तत्वों से वह एक सुन्दर वस्तु की सृष्टि करे! इसके बाद 'रैफ़ैल' आगे कहता है कि उसने सृष्टि का घेरा बनाने के लिये ईश्वर के शाश्वत कारख़ानों में तैयार किये गये परकालों से काम लिया और इस प्रकार सृष्टि की सीमायें निर्धारित कीं, जो कि मध्य-विन्दु से बराबर दूरी पर हैं! तदनन्तर उसने उस तलहीन खाड़ी पर बैठ कर संजीवनी उष्णता का संचार करना आरम्भ किया और यह वह तब तक बराबर करता रहा जब तक कि अशान्ति के सारे रचना-तन्तु अपना-अपना निश्चित स्थान खोजने नहीं लगे, और जब तक कि अपने केन्द्र पर अपने-आप सधी पृथ्वी स्वर्ग से नीचे लटकने नहीं लगी! इसके बाद गहराई से एक ज्योति का विकास हुआ जो पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ने लगी। इस ज्योति को देखते ही परमपिता ने उसके मंगलमय होने की घोषणा की!

दूसरे दिन सृष्टिकर्ता ने आकाश की सृष्टि की, तीसरे दिन जल और शुष्क स्थल की विभाजन रेखा खींची और चौथे दिन पृथ्वी को पेड़-पौदों से ढक दिया, जिनमें से प्रत्येक ने उन बीजों को जन्म दिया जिनके सहारे वह अपनी विशिष्ट जाति और प्रकार का प्रचार और प्रसार

कर सका ! अब दिन और रात पर राज्य करने के लिये सूर्य्य और चन्द्र की रचना हुई और इसके बाद अंधेरे और उजाले का अन्तर स्पष्ट करने के लिये तारों की ! तदनन्तर पाँचवें दिन ईश्वर ने चिड़ियों और मछलियों का निर्माण किया और उन्हें आदेश दिया कि वे तब तक अंडे देती रहें जब तक कि पृथ्वी उनसे भर न जाये। अंत में छठें दिन उसने सारे पशुओं और रेंगनेवाले जीवों में प्राण फूँके और वे पूर्ण-विकसित और हाथ-पैर से सम्पूर्ण होकर पृथ्वी से बाहर आये ! किंतु इन सब पर राज्य करने के लिये अब भी एक बुद्धि एवं तर्क-सम्पन्न प्राणी का अभाव था, अतएव ईश्वर ने मिट्टी से एक अपने ही रूप का मनुष्य बनाकर मनुष्य के नासिका-रन्ध्रों के द्वारा उसमें सांस फूँक दी ! इस प्रकार उसने मनुष्य और उसकी पत्नी, आदम और ईव, की रचना कर उन्हें आशीर्वाद दिया कि वे फलें-फूलें, संतान पैदा कर पृथ्वी को आबाद करें और पृथ्वी के प्रत्येक जीवधारी पर राज्य करें। इतने अधिक गुणी जीवों को जन्म देकर ईश्वर ने अब उन्हें स्वतन्त्र छोड़ दिया कि वे स्वर्ग की प्रत्येक वस्तु का उपभोग कर उसका आनन्द लें, किंतु केवल बुराई और भलाई वाले पेड़ के फल न खावें, क्योंकि जिस दिन वे उसे अपने ओठों से लगायेंगे, उसी दिन मर जायेंगे।

अब सृष्टिकर्त्ता का कार्य समाप्त हो गया और वह स्वर्ग को लौटा। वहाँ सातवें दिन उसने और दूसरे देवदूतों ने कोई काम न कर केवल विश्राम किया।

पर्व आठ—

इधर आदम और 'रैफ़ैल' की बातचीत चल रही है और ईव उधर कुछ दूरी पर खड़ी है, क्योंकि एक तो उसमें इन दोनों के संलाप में हस्तक्षेप करने का साहस नहीं है, दूसरे वह जानती है कि उसके जानने योग्य सब कुछ उसका पति उसे बतला ही देगा।

इसी बीच अपनी और अधिक उत्सुकता को शान्त करने के लिये आदम पूछता है कि कैसे सूरज और तारे अपने ग्रह-पथों के चारों ओर इतनी शान्ति से चक्कर लगाते हैं ! 'रैफ़ैल' उत्तर देता है कि यों तो स्वर्ग ईश्वर की पुस्तक है, जिसमें मनुष्य उसकी अचरजभरी कृतियों का विस्तृत वर्णन पढ़ सकता है तो भी किसी को विभिन्न ग्रह-पथों की दूरी की जानकारी कराना सरल काम नहीं है। इतना कह कर 'रैफ़ैल' क्षण भर को रुकता है, किंतु फिर भी आदम को उनका थोड़ा-सा परिचय देता है कि तीव्रगति वाला सूर्य्य भी प्रातःकाल स्वर्ग से रवाना होकर केवल दोपहर तक ही 'ईडेन' पहुँच पाता है। इसके बाद वह पृथ्वी के तीन परिभ्रमणों का वर्णन करता है, छः उप-ग्रहों के कार्य बतलाता है और आदम को विश्वास दिलाता है कि ईश्वर उन सब को अपने हाथ में रखता है और सब के लिये अलग-अलग रास्ते और अलग-अलग गतियाँ स्वयं निर्धारित करता है !………

अब आदम की बारी आती है और वह 'रैफ़ैल' का मनोरंजन करने के लिये उसे अपनी आत्म-कथा सुनाता है। वह उससे अपने विस्मय की चर्चा करता है कि कैसे एक फूलों से भरी हुई पहाड़ी के किनारे, सहसा ही, उसकी आँख खुली और आकाश, जंगलों और सोतों

को उसने पहिली बार देखा। वह कहता है कि जब धीरे-धीरे उसे स्वयं अपना और अपनी शक्तियों का परिचय प्राप्त हुआ, पशुओं के नाम ज्ञात हुये और स्वर्गीय स्वामी ने पृथ्वी के स्वर्ग, 'ईडेन' में ले जाकर उसे मध्योद्यान में लगे पेड़ को कभी न छूने का आदेश दिया तो वह आश्चर्य से अवाक् रह गया। इसके बाद वह अपने एकाकीपन का वर्णन कर कहता है कि सारे जीव-धारियों को अपने-अपने जोड़ों के साथ जाते देख कर उसने सृष्टिकर्त्ता से शिकायत की कि आखिर वह ही क्यों अकेला रहे! इस पर उसे गहरी नींद आ गई और उसकी इस अचेतन अवस्था में उसके पार्श्व से एक हड्डी निकाली गई! इस हड्डी से ईव का निर्माण किया गया। अब सृष्टिकर्त्ता ने स्वयं उसका ईव से संयोग कराया जो कि उसकी ही हड्डी और उसके ही मांस की मांस मानों उसके अपने ही शरीर का अंश है। इस प्रकार भेद भरी बातें बनाकर 'आदम' बड़े चाव से अपने आनन्दमय दाम्पत्य-जीवन की चर्चा करता है और बिना किसी प्रकार की कला के अर्थात् बड़े सीधे सादे ढंग से 'रैफ़ेल' से प्रश्न करता है कि क्या देवदूत भी विवाह करते हैं और क्या उनकी भांति ही वे भी विवाह में दे दिये जाते हैं। 'रैफ़ेल' तुरन्त ही उत्तर देता है कि प्रेम स्वर्ग में इस तरह विचारों का परिष्कार और हृदयों का विस्तार करता है कि वहाँ पूर्ण आनन्द की प्राप्ति के लिये आध्यात्मिक-सगाई के अतिरिक्त और किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं पड़ती।

अब यह देखकर कि सूर्य डूबने ही वाला है, 'रैफ़ेल' आदम से विदा लेता है और स्वर्ग को लौट पड़ता है। दूसरे ही क्षण मानव-जाति का पिता अपनी पत्नी से जा मिलता है। वह बहुत देर से उसकी प्रतीक्षा कर रही है।

पर्व नौ—

यहाँ कवि हमें सचेत करता है कि चूंकि 'ईडेन' में अधम अविश्वास घर कर गया है इसलिये अब मनुष्य और देवदूतों में और अधिक बातचीत न होगी और इसीलिये अब उसके काव्य में करुण-रस विशेषतया लक्ष्य किया जा सकेगा।

इसके बाद 'मिल्टन' वर्णन करता है कि कैसे 'जेबरियल' के द्वारा 'ईडेन' से निकाल दिये जाने के बाद शैतान सात दिनों और सात रातों तक बिना किसी प्रकार के विश्राम के पृथ्वी के चारों ओर चक्कर काटता रहता है और कैसे आठवें दिन भूमि के अन्दर स्थित नदी के मार्ग से कोहरे का रूप धारण कर फिर 'ईडेन' में प्रवेश करता है। यहाँ वह एक चिड़िया के रूप में अच्छाई और बुराई के ज्ञान वाले पेड़ पर जा बैठता है और एक बीभत्स सांप के रूप में आदम और ईव के समीप पहुँचने का निश्चय करता है। इस प्रकार वह अपना बदला चुकाना चाहता है, यद्यपि वह पूरी तरह जानता है कि इन सारे दुष्कृत्यों का भोग उसे स्वयं ही भोगना होगा। अतएव एक सांप को सोता हुआ देखकर शैतान उसके शरीर में प्रवेश कर जाता है और, इस आशा से कि आदम और ईव कहीं-न-कहीं अकेले-अकेले मिल ही जायेंगे, उपवन की पगडंडियों पर रेंगने लगता है। उसकी धारणा है कि इस प्रकार एक-एक कर उन दोनों का काम तमाम करना अधिक सरल और युक्तिसंगत होगा।

सवेरा होता है, आदम और ईव जगते हैं और नित्य की तरह ही प्रार्थना करने के बाद अपने उपवन की ओर चल पड़ते हैं। किंतु ईव हठ करती है कि जब वे साथ-साथ काम करते हैं तो बातें करने लगते हैं और इस प्रकार ध्यान बँटाकर एक दूसरे के काम में बाधा डालते हैं, अतएव, जब तक दोपहर न हो और भोजन के लिये वे एक-दूसरे से न मिलें, वे अलग-अलग अपना-अपना काम करें। यद्यपि आदम को इस प्रकार अपनी प्रियतमा से बिछुड़ने में आपत्ति और संकोच है, तथापि वह कुछ समय बाद ईव के तर्कों के सामने झुक जाता है और वे अलग-अलग काम करने लगते हैं।

अब उपवन में रेंगते हुये सांप की दृष्टि ईव पर पड़ती है। वह बिल्कुल अकेली गुलाबों से घिरी हुई खड़ी है। अतएव वह यह सोच कर बहुत प्रसन्न होता है कि अब अवसर है और वह पहिले-पहिल उस पर ही अपना हाथ साफ़ कर सकता है! ईव को वह अपेक्षाकृत दुर्बल प्राणी समझता है और उसका ऐसा समझना उचित भी है। यद्यपि ऐसा नहीं है कि इस समय वह किसी प्रकार की पीड़ा अनुभव नहीं करता फिर भी वह उसकी ओर बढ़ता है और उसे मानव-सुलभ वाणी में सम्बोधित करता है। वह पहले विस्मित होती है, किंतु दूसरे ही क्षण ही प्रश्न करती है कि यह कैसे सम्भव है कि कोई पशु उससे संलाप करे। इस पर वह शैतान-सांप उसे उत्तर देता है कि पहले वह भी दूसरे पशुओं के समान ही गूँगा था, किन्तु जैसे ही उसने एक विशेष फल चखा वह पहले की अपेक्षा अधिक ज्ञानवान ही नहीं हो गया, प्रत्युत वाग्शक्ति से भी सम्पन्न हो गया और मनुष्य की भाँति ही बोलने लगा! अतएव, यह सोच कर कि वह फल उसके लिये भी उतना ही लाभकारी प्रमाणित हो सकता है और इस प्रकार वह अपने करतार के, अनुमानतः, और बराबर हो सकती है, ईव स्वयं भी उसे चखना चाहती है। वह उस सांप के पीछे-पीछे उपवन के मध्य-भाग में आती है। किन्तु, जैसे ही शैतान उस निषिद्ध पेड़ की ओर संकेत करता है, वह हिचक कर पीछे हट जाती है। इस पर साँप उसे विश्वास दिलाता है कि ईश्वर की मनाही का यह मतलब कभी नहीं है कि उसका पालन भी किया जाय। इतना ही नहीं, वह तर्क करता है कि उसने भी वह फल चखा है, किन्तु इस पर भी वह जी रहा है, और जी ही नहीं रहा प्रत्युत जीवन की शक्तियों से और अधिक सम्पन्न हो गया है।

अब ईव को साँप की बातों पर पूर्ण विश्वास हो जाता है। इस प्रकार वह अपने प्रयास में सफल होता है और उसे उस निषिद्ध पेड़ के फल तोड़ने और खाने को प्रेरित करता है!

कहना न होगा कि जैसे ही वह उस फल को अपने ओंठों से लगाती है प्रकृति अनेकानेक [illegible] से उसे आगामी संकट से आगाह करती है। इसी समय साँप शीघ्रता से रेंग कर एक बार फिर झाड़ी में जा छिपता है और ईव को उस फल के स्वाद में अपूर्व हर्ष और सुख का अनुभव होता है। इसके बाद वह पेड़ की सुरक्षा का संकल्प करती है और इस संकल्प-विकल्प में पड़ जाती है कि क्या यह उचित है कि यदि उसके पति का उसके व्यक्तित्व में कुछ अन्तर लक्ष्य कर [illegible] हो तो वह स्वयं उसे सब कुछ बतला दे और उससे उस अपूर्व आनन्द की चर्चा करे, जिसकी प्राप्ति उसे अभी-अभी हुई है।

बात यहीं समाप्त नहीं होती। ईव आदम को इतना प्यार करती है कि वह उसके बिना न जीना पसन्द करती है और न मरना, अतः अब वह सोचती है कि कहीं ऐसा न हो मृत्यु के कारण उसका और आदम का विछोह हो जाय। यद्यपि इसपर वह पहले विश्वास करने को तैयार नहीं है तथापि यह विचार सम्मुख आते ही वह दृढ़ संकल्प करती है कि वह आदम को भी वह फल खिलाकर ही छोड़ेगी!

अब ईव शीघ्रता से आदम के पास जाती है और उसे बड़े भाव पूर्ण शब्दों में समझाती है वह पेड़ वैसा तो नहीं है जैसा कि ईश्वर ने चित्रित किया है, क्योंकि एक साँप ने इसका फल खाया और उसे खाते ही वह इस प्रकार बात चीत करने लगा कि वह स्वयं भी उसका स्वाद लेने को ललचा उठी!...! इतना सुनते ही आदम भय और संताप से बौखला-उठता है क्योंकि अब उसे अपनी पत्नी का पतन और विनाश निश्चित-से मालूम होते हैं। अब उसके सामने एक ही प्रश्न है कि वह बिना उसके जियेगा कैसे! किन्तु इतना सब कुछ सोचने और समझने पर भी आदम हैरान है कि उसकी पत्नी शत्रु के पहिले हमले का ही शिकार हो गई! इस प्रकार संताप का पहला ज्वार कुछ देर चलता है कि वह अपनी पत्नी के दुर्भाग्य में भागी होने का संकल्प करता है और सोचता है कि वह भी उसके साथ ही मर जायेगा। अंत में वह ईव का दिया हुआ फल स्वीकार करता है और एक बार फिर प्रकृति कुपित हो-उठती है, क्योंकि आदम और किसी धोखे में न आकर केवल ईव के स्नेह के कारण ही उस फल को खाने के लिये तत्पर होता है—

इस भाँति उस पेड़ का फल खाते ही दोनों पर उसके दुष्प्रभाव प्रकट होते हैं और उनमें वासना जाग उठती है! वासना उनके लिये एक सर्वथा नवीन अनुभव है! इस प्रकार उनके भोलेपन का अन्त हो जाता है।

दूसरा दिन होता है और मनुष्य को मिटा देने वाली लज्जा में नहाये हुये से आदम और ईव अपने कुंज के बाहर आते हैं। इस समय बुराई और भलाई के नये ज्ञान के सहारे आदम सारा अपराध अपनी पत्नी के सिर मढ़ कर सिर धुनता है कि वे अब कभी भी ईश्वर के दर्शन न कर सकेंगे। इसके बाद वह अपने नंगे शरीरों को ढकने के लिये पत्तियों के कपड़े बुनने का प्रस्ताव करता है। अब यह प्रथम दम्पति अंजीर के पेड़ों से आवरण-वस्त्र तैयार करने के लिये एक झाड़ी छिप जाते हैं! वे इन्हें अपने चारों ओर लपेट लेते हैं और एक दूसरे को जी भर भला बुरा कहते हैं और निश्चय नहीं कर पाते कि वास्तव में किसके कारण उनका आनन्दमय जीवन सदा के लिये सपना बन गया।

पर्व दस—

इसी बीच में पहरा देने वाले देवदूत स्वर्ग में जाते हैं और ईश्वर को ईव के पतन की सूचना देते हैं। ईश्वर इन्हें एक बार फिर विश्वास दिलाता है कि उसे पता है कि शैतान का प्रयत्न विफल न होगा और मनुष्य का पतन हो जायेगा। इसके बाद वह निर्णय देता है कि चूँकि

मनुष्य ने उसकी आज्ञा का उल्लंघन किया है अतएव उसे दंड दिया जायेगा और यह कार्य मनुष्य का मध्यस्थ, उसका पुत्र ईसा करेगा क्योंकि वह इस काम के लिये सबसे अधिक उपयुक्त है ! पृथ्वी की भांति ही स्वर्ग में भी अपने पिता की आज्ञा का पालन करनेवाला ईसा विदा होता है और चलते समय प्रतिज्ञा करता है कि वह और जो कुछ करेगा वह तो करेगा ही, दया से न्याय का हृदय पिघलाने, के यत्न भी करेगा ताकि ईश्वर का मंगलकारी रूप सर्वथा स्पष्ट हो जाये ! इसके बाद, वह टूटी कड़ी जोड़कर, शैतान के भाग्य का निर्णय कर उसे भी समुचित दंड देने की बात कहता है !

× ×

इस तरह स्वर्ग के प्रवेश-द्वारों तक देवदूतों के द्वारा पहुँचाये जाने के बाद मुक्तिप्रदाता-ईसा अकेले पृथ्वी पर उतरता है। यहाँ वह संध्या के शीतल क्षणों में उपवन में आ-पहुँचता है और आदम और ईव को बुलाता है। वे उसकी बोली सुनते ही अपने गुप्त-स्थान से बाहर आते हैं। आदम लज्जा से दृष्टि नीची कर भेद खोलता है कि उनके इस प्रकार छिपने का कारण उनका नंगापन है। कहना न होगा कि उसके ये शब्द ही उसे अपराधी ठहराते हैं और ईसा प्रश्न करता है कि क्या उन्होंने निषिद्ध वृक्ष का फल खाया है ! इस पर आदम आज्ञोल्लंघन से इन्कार करने में अपने को असमर्थ पाता है और स्वीकार करता है कि अपने न्यायाधीश के सम्मुख खड़े होते समय वह अजब संकल्प-विकल्प का अनुभव कर रहा है क्योंकि या तो वह अपराध अपने सिर ले-ले जो कि असत्य है या वह अपनी पत्नी को को सारे अपराध के लिये उत्तर-दायी ठहराये जब कि दूसरी ओर उसकी रक्षा करना उसका परम धर्म है। फिर भी, वह कहता है कि ईव ने उसे फल दिया और उसने खा लिया। इतना सुनते ही न्यायाधीश कड़ा-पड़ता है और आदम से पूछता है कि क्या उसकी पत्नी की आज्ञा उसके लिये अलंघ्य थी, क्या यह आवश्यक था कि वह अपनी पत्नी की आज्ञा का पालन करता ही ! इस प्रश्न के बाद वह उसे यह याद दिलाकर कि पुरुष स्त्री पर शासन करने के लिये बना है, स्त्री पुरुष पर हुकूमत करने के लिये नहीं बनी, उसका अपराध घोषित करता है कि उसने निषिद्ध पेड़ का फल चखकर ईश्वर की आज्ञा का ही उल्लंघन नहीं किया बल्कि उसी के बराबर दूसरा अपराध यह भी किया है कि वह अपनी पत्नी के हठ के सामने झुक गया ! अब वह ईव की ओर मुड़ता है और चाहता है कि वह अपने अपराध के विषय में कुछ कहे। पर ईव का चेहरा लज्जा से झुक जाता है और वह स्वीकार करती है कि उसने वह फल अवश्य खाया किन्तु सारा अपराध उस सांप का था जो कि उसे तबतक बराबर फुसलाता और बहकाता रहा जबतक कि उसने वह फल अपने ओंठों से लगा नहीं लिया !

इस प्रकार दोनों अपराधियों की बातें अलग-अलग सुनकर न्यायाधीश प्रमुखतर-शत्रु सांप का दंड घोषित करता है, किन्तु उसके शब्द गूढ़ और रहस्यपूर्ण-से लगते हैं क्योंकि अबतक मनुष्य ईश्वरीय विधानों को समझने का अधिकारी नहीं बन सका है। अब वह ईव को सम्बोधित कर भविष्यवाणी करता है कि उसे बड़े दुर्दिनों में अपने बच्चों का लालन-पालन करना होगा और अबसे वह अपने पति की इच्छा की अनुगामिनी और दासी होकर रहेगी। अंत में

देकर आदम के भाग्य का निर्णय करता है कि भविष्य में उसे अपने शरीर का पसीना बहाकर अपनी जीविका चलानी पड़ेगी, क्योंकि इस क्षण के बाद पृथ्वी उसके लिये कोई ऐसे फल न पैदा करेगी जिसके लिये उसे परिश्रम न करना पड़े।

इस भांति अपना न्याय सुनाने के बाद न्यायाधीश मृत्यु-दण्ड अनिश्चित समय के लिये स्थगित करता है और हमारे इन प्रथम माता-पिता पर दया कर उन्हें पशुओं की खालें पहनाता है ताकि वे उस वायु का आघात सह सकें जिसका वे निकट भविष्य में अनुभव करेंगे।

× ×

इसी बीच में लौटते हुये शैतान की झांकी पाने के लिये 'दुष्कृति' और 'मृत्यु' नरक के खुले हुये रास्ते से बाहर दृष्टि दौड़ाती हैं। अंत में प्रतीक्षा करते-करते थककर 'दुष्कृति' 'मृत्यु' को सुस्त बैठे रहने के दुर्गुण समझाती है और प्रस्ताव करती है कि शैतान तो किसी भाँति असफल हो ही नहीं सकता अतएव तलहीन खाड़ी पर उसकी दिशा का अनुकरण कर एक सड़क का निर्माण किया जाये ताकि पृथ्वी से नरक और नरक से पृथ्वी आने-जाने का कार्य सरल हो जाय। 'मृत्यु' उसके इस प्रस्ताव का हृदय से समर्थन करती है क्योंकि वह इस बीच में एक विनाशकारी दुर्गन्धि का अनुभव करती है और पृथ्वी पर पहुँचकर सारे जीवधारियों का शिकार करना चाहती है। अब ये दो भयंकर सत्तायें बड़े साहस का परिचय देती हैं और थोड़े ही समय में नरक के प्रवेश-द्वारों से नव-निर्मित संसार की सीमाओं तक पत्थर और अस्फॉल्ट की एक दृढ़ सड़क बनाकर तैयार कर देती हैं।

'दुष्कृति' और 'मृत्यु' पुल का काम देनेवाली इस सड़क को बना कर पूरा भी नहीं कर पातीं कि शैतान, जो कि अब भी देवदूतों से बहुत-कुछ मिलता-जुलता है, उड़ता हुआ उनकी ओर आता है। कहना न होगा कि ईव को बहकाने के बाद वह वहीं उपवन में छिपा-रहा है और उसी स्थिति में उसने न्यायाधीश की तीनों घोषणायें सुनी हैं। वह भी औरों की भाँति ही अपना दण्ड नहीं समझ पाया है और उल्टा समझ-बैठा है कि सारी मानवता उसके वश में है। यही नहीं, बल्कि अपने साथियों को यह शुभ सूचना सुनाने के लिये ही वह शीघ्रता से नरक के निम्न प्रदेश 'हेटीज़' को लौट पड़ा है।

अब 'दुष्कृति' और 'मृत्यु' से उसकी भेंट होती है। उनसे मिलते ही ऐसी चातुराई से ऐसी सुन्दर सड़क बनाने के लिये वह उन्हें बधाई देता है, और दूसरे ही क्षण आदेश भी कि वे दुनिया में जायँ और जो चाहें करें। इसके बाद वह उनकी बनाई सड़क पर वेग से बढ़ता है क्योंकि वह अन्य पतित देवदूतों को भी सारी घटना से परिचित करा देना चाहता है।

शीघ्र ही वह अपने अभीष्ट स्थान के समीप आता है और देखता है कि उसके आदेश के फल स्वरूप ही कुछ देवदूत इस प्रदेश की रखवाली कर रहे हैं। किन्तु जब यह शैतान उनके देखते-देखते एक सेवक के रूप में उनके बीच से निकल कर अपने राज्य की राजधानी 'पैन्डिमोनियम' पहुँच जाता है तब कहीं उन्हें अपने अधिपति के आने की सूचना मिलती है। अब, यह जान कर कि वह एक बार फिर उनके बीच में आ गया है, वे सारे दैत्य गगनभेदी नाद से

उसका स्वागत करते हैं। इस पर शैतान विचित्र प्रभावशाली मुद्रा बना कर उन्हें शान्त होने का आदेश देता है और फिर अपनी यात्रा, अपनी सफलता और उस सुगम पथ का वर्णन करता है जो कि 'दुष्कृति' और 'मृत्यु' ने तैयार कर दिया है और जिसके कारण अब वे अनायास सुविधा से सर्वत्र पहुँच सकते हैं ! फिर भी उनके साथियों की तृप्ति नहीं होती और उनकी उत्सुकता को शान्त करने के लिये वह विस्तार में बतलाता है कि किस तरह उसने ईव को लोभ और लालच का शिकार बनाया ! इसके बाद वह कहता है कि अभिशप्त और पतित होने पर भी वह किसी प्रकार भयभीत या अधीर नहीं है। इतना सुनते ही शैतान के अनुगामी ऊँचे स्वर से उसकी प्रशंसा करना चाहते हैं, किन्तु अनुभव करते हैं कि वे सब साँप की तरह फुफकार रहे हैं और सर्प-योनि में बदल दिये गये हैं। अतएव अब परदार अजगर के रूप में शैतान उन सबको एक पास के कुंज में ले आता है। जहाँ वे सब पेड़ों पर चढ़ जाते हैं और 'सोडम' के सेवों का भोजन करते हैं। ये सेव देखने में सुन्दर हैं किन्तु खाने में राख के स्वाद के अतएव इन्हें खाते ही उन सब का मुँह बिगड़ जाता है। कहना न होगा कि उनका यह कृत्य प्रदर्शन का रूप धारण कर लेता है जो 'लोभ की वर्षगाँठ' पर प्रतिवर्ष किया जाता है।……

इसी बीच में 'दुष्कृति' और 'मृत्यु' 'ईडेन' में प्रविष्ट हो जाती है और, चूँकि मनुष्यों पर हाथ नहीं लगाने पाती अतएव छोटी-छोटी झाड़ियों, फूलों-फलों और अन्य जीवों का भक्षण करना आरम्भ कर देती हैं, जैसे कि ऐसा करना उनका अधिकार होने के नाते सर्वथा उचित भी हो। दूसरे ही क्षण ईश्वर रहस्योद्घाटन करता है कि यदि मनुष्य उसकी आज्ञा का उल्लंघन न करता तो नव-निर्मित संसार को यह दुर्दिन इन अत्याचारियों के हाथों कभी न देखने पड़ते, किन्तु चूँकि बात उल्टी ही हो गई है, अतएव अब वहाँ इनका तबतक पूरा बोलबाला रहेगा जबतक कि उस का 'पुत्र' स्वयं इन्हें 'हेडीज़' तक खदेड़ न देगा। इस पर देवदूत सर्वशक्तिमान के विधानों की प्रशंसा कर कहते हैं कि वे सदैव ही न्याय संगत होते हैं और ईसा का गुणगान करते हैं कि मनुष्य जाति का त्राण करने के लिये ही उसका अवतार हुआ है !

अब परमपिता आदेश देता है कि सूर्य की गति में ऐसा परिवर्तन हो जाय कि पृथ्वी पर क्रम से एक बार गरमी का राज्य हो और एक बार सर्दी का—इस प्रकार जाड़ा गर्मी का अनुसरण करे। यही नहीं, वह यह भी चाहता है कि अपनी ज़रा-सी झुकी धुरी के कारण पृथ्वी उपग्रहों के अशिव और घातक दुष्प्रभावों की शिकार हो, भयानक अंधड़ों और तूफ़ानों के द्वारा उजड़े और वीरान हो, और ऐसी हो जाय कि वहाँ के शान्त जीवधारी ईर्ष्या की ज्वाला से अपने-आप झुलसने लगें।……

ईश्वर के आदेशों का पालन होता है और इन सब के अनुभव से आदम को पूर्ण विश्वास हो जाता है कि ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन ही निस्सन्देह-रूप से इन सब का कारण है।

---

[1]सीरिया का एक प्राचीनतम नगर जिसके सेवों को बाहर से सुन्दर किन्तु अन्दर से राख का माना गया है।

अब उसे अपनी करनी पर इतना पश्चात्ताप होता है कि उसे ईश्वर की आज्ञा के अनुसार संतति-वृद्धि और संतति-विस्तार की भावना ही भयानक प्रतीत होने लगती है।……अब वह कितनी ही देर तक मन-ही-मन भुनभुनाता रहता है, किंतु थोड़ी देर में उसे बोध होता है कि उसे यह दंड देकर न्याय ही किया गया है, अन्याय नहीं, क्योंकि वह बुराई और भलाई दो में से किसी एक का चुनाव करने को पूर्ण स्वतन्त्र था, यह उसका अपना अपराध है कि उसने बुराई को ही अपने लिये चुना। अतः यह सत्य उसे कुछ भी सान्त्वना नहीं देता कि उसे न्याय के बाद तुरन्त ही अपना दण्ड नहीं भुगतना पड़ा, बल्कि अब तो वह चाहता है कि मृत्यु आये और उसके सारे पश्चात्तापों का अंत कर दे। दूसरी ओर, ईव अपने पति को इस प्रकार संतप्त देख कर विदग्ध हो-उठती है और न्यायाधीश को ढूंढ़ कर उससे प्रार्थना करती है कि वह कृपा कर ऐसा करे कि पाप का सारा दंड अकेले उसे ही भोगना पड़े। किंतु पत्नी के इस आत्म-त्याग के विचार-मात्र से आदम द्रवित हो उठता है और उत्तर देता है कि वे दोनों एक हैं और इस नाते एक-दूसरे के दुर्भाग्य में हाथ-बंटाना उनका अपना धर्म है।……

कुछ समय बाद एक दूसरा विषय उठ-खड़ा होता है और ईव ऐसी सन्तानों को जन्म देना अनुचित और आपत्तिजनक समझती है, जिनकी हर सांस एक नया संकट होगी और जिनकी हर चेतना एक नूतन मृत्यु! पर, आदम उसे सावधान करता और कहता है कि पश्चात्ताप और आज्ञा-पालन के द्वारा ही वे अपने न्यायाधीश का क्रोध शान्त कर उसे प्रसन्न कर सकते हैं, और किसी तरह नहीं।

पर्व ग्यारह—

इस प्रकार आदम और ईव आत्म-दंशन और पश्चात्ताप के दिन काट रहे हैं कि उनके प्रति सहानुभूति से भर कर मुक्ति-प्रदाता ईसा 'ईडेन' आता है। इस समय वे दोनों उससे इस प्रकार प्रार्थनायें करते हैं कि वह उन्हें 'परमपिता' के सम्मुख उपस्थित करता और कहता है कि ये उसके दया-रूपी वृक्ष के पहिले फल हैं।

कहना न होगा कि ईसा इतने प्रभावशाली और हृदय-वेधी ढंग से इन दोनों का पक्ष ग्रहण करता है कि ईश्वर वचन देता है और कहता है कि यदि वे हृदय से अपना अपराध स्वीकार कर लेंगे तो वे क्षमा के पात्र समझे जायेंगे और क्षमा कर दिये जायेंगे। किंतु उसका यह दृढ़ निर्णय है कि इस बीच वे पृथ्वी के स्वर्ग 'ईडेन' से बहिष्कृत रहेंगे। अतएव वह 'माइकेल' और दूसरे निम्न-कोटि के देवदूतों को आदेश देता है कि वे दिन-रात उनकी रखवाली करें, ताकि ऐसा न हो कि या तो शैतान दुबारा नई दुनिया में घुस आये या ये मानवीय पति-पत्नी फिर से कुंज में जाकर जीवन के पेड़ के फल खा लें और मृत्यु के दंड को बचा जायें।

अब इस स्थान से दूर ले जाने के पहिले 'माइकेल' आदम को उसकी जाति का भविष्य बतलाता है और इस बात पर बहुत ज़ोर देता है कि मुक्ति के बीज वह स्वयं ही बोयेगा। इस बीच में ईश्वरीय आज्ञायें मिल जाती हैं और श्रेष्ठतर देवदूत आदम और ईव के साथ पृथ्वी

घटनाओं की एक झाँकी उसे दिखलाता है! पहले केन[1] और ऐबल[2] आदम की आँखों के आगे से निकलते हैं, किन्तु मृत्यु इस अंश तक उसकी समझ में न आने वाली वस्तु सिद्ध होती है कि 'माइकेल' को उसे उसका अर्थ समझाना पड़ता है। इस पर आदम यह सोच कर सिहर उठता है कि उसके पतन के कारण ही ऐसी भयंकर सत्ता दुनिया में आई। यही नहीं बल्कि, जैसे ही देवदूत उसे मानव-जाति के सारे आगामी संकटों से परिचित कराता है और कहता है कि इनमें अधिकांश का कारण मनुष्य का तामसी-जीवन ही होगा, उसका हृदय एक बार फिर भय और चिन्ता से काँप उठता है। किन्तु दूसरे ही क्षण वह यह प्रतिज्ञा कर सन्तोष की साँस लेता है कि यदि ऐसा है तो वह आहार-विहार पर संयम रखने की पूरी चेष्टा करेगा! इस पर भी 'माइकेल' उसे सचेत करता है कि उसके इस प्रकार संयत होने पर भी मृत्यु के आगे-आगे दौड़ कर उसके आने की पूर्व-सूचना देने वाली वृद्धावस्था तो उसके जीवन में आयेगी ही!

इस प्रकार स्वयं सारी घटनाओं का केन्द्र-बिन्दु बन कर आदम[3] सारे उपादानों को देखता-समझता रहता है कि नोआ के समय की प्रलयकारी बाढ़ उसकी आँखों के आगे आती है! वह देखता है कि वह अपने लिये तो एक बड़ी नाव तैयार कर रहा है किन्तु उसके अन्य वंशज बाढ़ में बेरहमी-से बहे जा रहे हैं! अतः वह विलाप करने लगता है। इस पर 'माइकेल' उसे विश्वास दिलाता है कि उनमें से ईश्वर-भक्त आत्माओं का बाल भी बाँका न होगा, बल्कि यथासमय उनके द्वारा एक ऐसी जाति पृथ्वी पर जन्म लेगी जो ईश्वर के आज्ञाकारी पुत्रों का साकार-रूप होगी!

इसी समय एक कबूतर और इन्द्र-धनुष देख कर आदम कुछ शान्त होता है! उसे सान्त्वना देने के लिये 'माइकेल' परमपिता की योजना की चर्चा करता है और कहता है कि इस संसार के विनष्ट होते ही परमपिता नये आसमानवाली एक नई धरती की सृष्टि करेगा, जहाँ हर ओर केवल न्याय का ही राज्य होगा, अतएव इस समय के रात-दिन, बीज बोने के विभिन्न काल और फ़सलें काटने के विभिन्न क्षण अस्थायी होने के नाते कुछ अधिक महत्व नहीं रखते।

पर्व बारह—

एक संसार के विनाश और दूसरे संसार के पुनर्निर्माण का चित्र खींचने के बाद 'माइ-केल' आदम को दिखलाता है कि कैसे आदमी मैदान में आ-बसेगा और कैसे मिट्टी-गारे की

१-२-आदम के दो पुत्र जिन्होंने एक दूसरे को इसलिये मार डाला कि उनके विचार से परम-पिता एक को अधिक प्यार करता था और दूसरे को कम!

[3]पवित्र, बूढ़ा ईश्वर भक्त, जिसे सृष्टि का विनाश करते समय परमपिता ने आदेश दिया कि वह अपनी पत्नी और अपने ३ पुत्रों के साथ एक बड़ी नाव में स्थान ग्रहण करे और सृष्टि की हर चीज़ का एक जोड़ अपने साथ रख ले। ईश्वर की कामना थी कि उस नाव के प्राणियों के अतिरिक्त सारा संसार प्रलय में विनष्ट हो जाय!

सहायता से एक मीनार खड़ी कर स्वर्ग तक पहुँचने की चेष्टा करेगा ! इस पर आदम बड़ा असंतुष्ट और अप्रसन्न होता है कि उसकी जाति के लोग ईश्वर को चुनौती देंगे। किन्तु 'माइकेल' उसे विश्वास दिलाता कि विधि के विधान के विरुद्ध कुछ भी करने के विचार-मात्र से उसकी वर्तमान घृणा बहुत ही मंगलमय है। इसके बाद वह उसे धीरज बंधाता है और बतलाता है कि कैसे एक ऐसा पुण्यात्मा पुराने जगत से नये जगत में लाया जायेगा जिसके पुण्यकृत्यों के कारण ही सारे राष्ट्रों और सारी मानव-जाति का त्राण होगा !

इस पुण्यात्मा का नाम अब्राहम[1] बतला कर माइकेल उसके जीवन, उसके वन्दी-जीवन, उसकी विदाई और रेगिस्तान में बीतनेवाले ४० वर्षों का सविस्तार वर्णन करता है। इसके बाद वह आदम का ध्यान 'सिनाई पर्वत' पर स्थित 'मोज़ेज़'[2] की ओर आकृष्ट करता है। आदम देखता है कि उनके सामने अनेकों विधान फैले-पड़े हैं, और वह उनकी सहायता से इने-गिने ईश्वर भक्तों के लिये पूजा के विधान निश्चित कर रहा है। आदम नियमों की इतनी बड़ी संख्या पा आश्चर्य प्रकट करता है ! उत्तर में 'माइकेल' बात स्पष्ट करता है कि पाप के कितने ही रूप होते हैं, और निश्चित आत्म-त्यागों के रक्त से कहीं अधिक मूल्यवान रक्त बहा कर ही पापों का समुचित प्रायश्चित किया जा सकता है अन्यथा नहीं !

अंतिम स्वर्ग उसके अभी-अभी छूट-रहे स्वर्ग से कहीं अधिक आनन्द-प्रदाता होगा, आदम आनन्द से फूला नहीं समाता और घोषित करता है कि यदि उसके अपराध का फल इतना महान हुआ तो उसके पश्चात्ताप की कटुता सचमुच ही कम हो जायगी !

इसके बाद 'माइकेल' ईसा की मृत्यु और उसके दुबारा आगमन के बीच के समय का उल्लेख करता है और कहता है कि इस समय वह अपने 'त्राता' को प्रेम करने वाले लोगों के साथ संसार में वास करेगा और छलपाखण्डमय शैतान के हमलों का सामना करने में उनकी सहायता भी । इस प्रकार अपने मोह और लोभ के रहते भी कितनी ही पुण्यात्मायें मोक्ष लाभ कर स्वर्ग में पहुँचेंगी और बहिष्कृत देवदूतों का स्थान ग्रहण करेंगी ?

× ×

अब 'माइकेल' नहीं चाहता कि 'आदम' कुछ और प्रश्न करे, कुछ और जानने की इच्छा करे, अतएव वह उसे धैर्य, संयम और प्रेम के सहारे अपना ज्ञान बढ़ाते रहने का आदेश देता है और यह कह कर बात समाप्त कर देना चाहता है कि यदि उसने उसके आदेश का पालन किया तो पृथ्वी का स्वर्ग 'ईडेन' उसके हृदय पर राज्य करेगा ! इसके बाद वह 'ईडेन' के चारों ओर पहरा देते हुये देवदूतों की वायु में झूल-रही, लपलपाती हुई तलवारों की ओर संकेत करता है और आदम से कहता है कि समय हो गया है और अब उसे अपनी पत्नी को जगा कर उसे भी उन सारे विषयों से परिचित करा देना चाहिये जिनका ज्ञान उसे अभी-अभी प्राप्त हुआ है ।......

ईव आँखें खोलती है और उन्हें सूचित करती है कि ईश्वर ने उसे एक स्वप्न देकर बड़ा ढाढ़स बँधाया है और इस आशा से उसका हृदय भर दिया है कि यद्यपि वह स्वयं पापी और कुपात्र है तथापि उसकी सन्तान परमपिता की आज्ञाकारी होगी और इसीलिये सभी प्रकार सुखी और सम्पन्न भी !

× ×

अंत में देवदूत आदम और ईव का हाथ पकड़ कर उन्हें पूर्वी द्वार से संसार में ले आता है । इस समय वे दोनों बराबर मुड़-मुड़ कर पीछे की ओर देखते हैं और अपने 'ईडेन' को अपनी आँखों में लेना चाहते हैं । वे लक्ष्य करते हैं कि आग-सी तलवार से सुसज्जित एक देवदूत उस उपवन की रखवाली कर रहा है ।

इस प्रकार अपने दुर्भाग्य पर स्वाभाविक रूप से आँसू बहाते हुए, एक दूसरे का हाथ अपने हाथ में लेकर वे इस जगत में आ पहुँचते हैं और विश्राम के स्थान की खोज करते हैं !

कहना न होगा कि इस समय 'सर्वशक्तिमान' ही उनका पथ-प्रदर्शन करता है ।
